विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

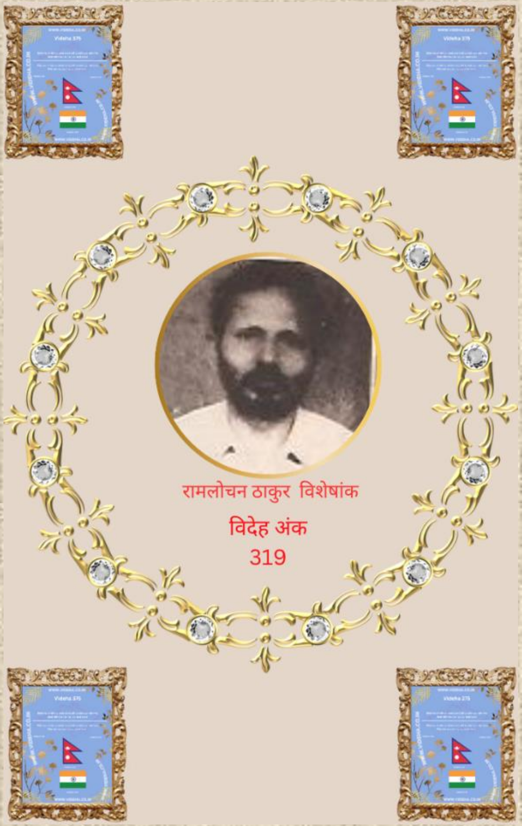

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA RAMLOCHAN THAKUR SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur
ISBN No: 978-93-5967-988-4

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ **"**ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी**"** मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)* माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ƒ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्वश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্ৰিশ্বে দেৰা: শান্তির্ব্রঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুনোকমে, খ্বংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জনমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে খ্বা ব্রঁহ্মমে শাংতি হুখ্বয।

ওঁ-ব্রঁহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, খ্বংতৰিক্ষ- পৃথ্বী খ্বা দ্যূনোকক ৰীচ, খ্বাপ:-জন, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্রঁহ্ম- সর্জক।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

𑓇, 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩𑒰↑ 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑𑒭𑓁। 𑒮↓𑒯↓𑒮𑓂𑒩𑒰↓𑒏𑓂𑒭𑓁 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩𑒰↑ 𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ Ẇ 𑒫𑒱↓ 𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑ 𑒞𑒱𑒭𑓂𑒜𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓ 𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

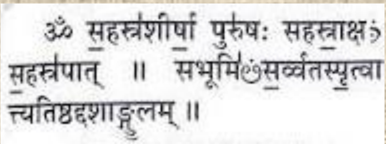
ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ॥ स भूमि॑ᳪ सर्व॒तस्पृ॒त्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॑ शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

ꢀ

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

৵ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑖭𑖰𑖟𑖿𑖠𑖰𑖨𑖭𑖿𑖝𑖲, 𑖭𑖰𑖟𑖿𑖠𑖽 Devanagari Anji)

৭ (Bengali Anji, Siddham)

ꢀ (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही- “.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

प॒द्भ्याग्ँ शू॒द्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14
(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)
Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri
60. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.
Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.
भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथि: धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।
Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)
Purusha Devata, Narayana Rshi
6. Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.
Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.
ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)
Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.
O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).
हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)
CHAPTER- VIII
30. (Dampati Devata, Atri Rshi)
Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.
शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथिः एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- कैँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकैँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- कैँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ कैँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of 'asuva' and 'parasuva' from mantra 3, which means: 'Give us, we pray, what is good', and, 'Remove, we pray, what is evil'. This is the prayer. Also, there are echoes of 'havamahe' from mantra 4, which means: 'We invoke and develop', and, 'we challenge and fight out'. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक विभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ कैँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकैँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि,

जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- कैँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7,

6: ‘Svayam yajasva’, and yajurveda 4, 13: “Iyam te yajniya tanu”, which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछिः 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैँ विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-

EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney’s translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

“Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me.” I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

“Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me.”

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

“Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me.”

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

“Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God’s dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me.”

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted (Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ß

'विदेह' ३१९ म अंक ०१ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३१९)

रामलोचन ठाकुर विशेषांक

२

'विदेह' ३२० म अंक १५ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३२०)

रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

अनुक्रम

१

'विदेह' ३१९ म अंक ०१ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३१९)

रामलोचन ठाकुर विशेषांक

२.१.ठाकुरजीक संक्षिप्त परिचय (पृ. ३-१३)

२.२.प्रस्तुत विशेषांकक संरचनाक संदर्भमे (पृ. १४-१५)

२.३.एहन जड़िआयल समाजमे महिला कोना उतरतीह मैथिली रंगमंचपर: रामलोचन ठाकुर प्राश्निक- डा. वन्दना कुमारी (आब डा. वन्दना किशोर) (पृ. १६-२५)

२.४.रामलोचन ठाकुर जीक अनुवाद- अमरकान्त लाल (पृ. २६-२८)

२.५.गीतकार रामलोचन ठाकुर- प्रदीप पुष्प (पृ. २९-३१)

२.६.एकटा खाँटी मैथिल : रामलोचन ठाकुर आ हुनकर काव्य संसार- शैलेन्द्र मिश्र (पृ. ३२-४२)

२.७.बचा दिअ भाइकेँ- भीमनाथ झा (पृ. ४३-४७)

२.८.माटि परहक लोक- महाकान्त ठाकुर (पृ. ४८-५०)

२.९.अपूर्णता जखनि नियति हुअए [सन्दर्भ:रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास]- अरविन्द ठाकुर (पृ. ५१-८४)

२.१०.सत्यक एकपेरिया पर काव्य वितान- आमोद झा (पृ. ८५-९१)

२.११.प्रतिरोधी साहित्यकार रामलोचन ठाकुर- चन्द्रेश (पृ. ९२-९९)

२.१२.रामलोचन ठाकुरक 'बेतालकथा'- शिवशंकर श्रीनिवास (पृ. १००-१०७)

२.१३.एखनो माँगि रहलए उत्तर -' लाख प्रश्न अनुत्तरित'- दिलीप कुमार झा (पृ. १०८-१२०)

२.१४.रामलोचन - हमर नजरिमे- नचिकेता (पृ. १२१-१२५)

२.१५.हमरा नजरिमे: श्री रामलोचन ठाकुर- नबोनारायण मिश्र (पृ. १२६-१३०)

२.१६.राम लोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत- अशोक (पृ. १३१-१४४)

२.१७.विरोध आ अनुरोधक कविता-नारायणजी (पृ. १४५-१४९)

२.१८.देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुर प्रसंग- भ्रमर (पृ. १५०-१६०)

२.१९.अपूर्वा- जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (पृ. १६१-१७२)

२.२०.भाषा-संस्कृतिक आस्था आ नव-निर्माणक संकल्प- संतोषी कुमार (पृ. १७३-१७९)

२.२१.एक सुच्चा कवि: रामलोचन ठाकुर-केदार कानन (पृ. १८०-१८७)

२.२२.संवेदनाक सीढ़ी पर ठाढ़-" ताल बेताल- मुन्नाजी (पृ. १८८-१९१)

२.२३.मैथिली सेवी कवि श्री रामलोचन ठाकुर जी- सुरेन्द्र ठाकुर (पृ. १९२-१९८)

२.२४.रामलोचन ठाकुरक व्यक्तित्व : एक दृष्टिकोण- वियोगी (पृ. १९९-२०३)

२.२५.मशाल लेने चलैत अग्रदूत- बिहारी (पृ. २०४-२०९)

२.२६.श्री रामलोचन ठाकुर आ हुनक व्यापक काव्य संसार: कामेश्वर झा "कमल" (पृ. २१०-२१८)

२.२७.रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना- डॉ कैलाश कुमार मिश्र (पृ. २१९-२२७)

२.२८.मैथिली कविताक विद्रोही स्वर रामलोचन ठाकुर- रमण कुमार सिंह (पृ. २२०-२३५)

२.२९.कोलकाता परिसरक मैथिलीक मणि श्री रामलोचन ठाकुर: डॉ अनमोल झा (पृ. २३६-२४२)

२.३०.रामलोचन ठाकुरक काव्य-युद्ध- रमेश (पृ. २४३-२४८)

२.३१.पारंपरिक-प्रगतिशील- आशीष अनचिन्हार (पृ. २४९-१७२)

२

'विदेह' ३२० म अंक १५ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३२०)

रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

२.१.महेन्द्र हजारी- से छथि रामलोचन (पृ. २५६-२५७)

२.२.नारायणजी- श्रद्धेय रामलोचन ठाकुरकें स्मरण करैत (पृ. २५८-२६०)

२.३.विनोद कुमार झा- राम लोचन हमर प्रेरणा (पृ. २६१-२६३)

२.४.बिनय भूषण- रामलोचन ठाकुरक झिझिरकोना आ... (पृ. २६४-२७९)

२.५.आशीष अनचिन्हार- अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकुर (पृ. २८०-२८३)

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’- राम लोचन ठाकुर प्रसंग (पृ. २८४-२८५)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/** **ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।**

'विदेह' ३१९ म अंक ०१ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३१९)

रामलोचन ठाकुर विशेषांक

ठाकुरजीक संक्षिप्त परिचय

सितम्बर 2020कैँ विदेह 'रामलोचन ठाकुर विशेषांक' प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि घोषणाकैँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा एहिठाम प्रस्तुत अछि ठाकुरजीक संक्षिप्त परिचय। निच्चा हिनकर नामपर क्लिक करबै तँ हिनकर विकीपीडिया पृष्ठ खुजि जाएत।

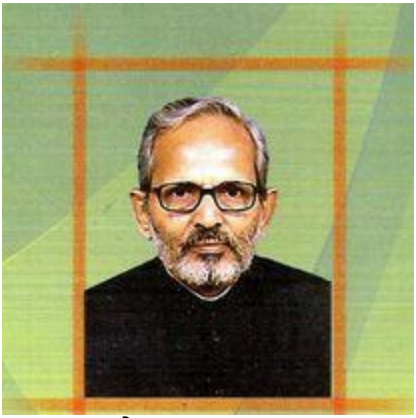

नाम : रामलोचन ठाकुर

अन्य साहित्यिक नाम : अग्रदूत, कुमारेश काश्यप, मुजतबा अली

माता-स्व. शारदा देवी

पिता-स्व. सुरति ठाकुर (सुरति ठाकुर नाम रेकार्डमे अछि। इएह नाम नबोरायाण मिश्रजीकैँ रामलोचनजीक बालक पुष्टि केलखिन ।तँइ ई प्रमाणिक अछि।)

जन्म 18 मार्च 1949, जन्म भूमि : ग्रा.+पत्रा. - बाबूपाली (पाली मोहन), खजौली, मधुबनी, मिथिला, हुनक प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत टोल पाठशालामे भेलनि। 1963 मे कलुआही हाइस्कूलसँ मौट्रिक पास केलाक बाद ओ नोकरीक खोजमे कलकत्ता चलि एलाह। तखन ओ पंद्रहे बर्खक छलाह। कतहुँ-कतहुँ हिनक जन्म बर्ख 1948 लिखल जाइत अछि। मुदा नबोरायाण

मिश्रजीकेँ रामलोचनजीक बालक बर्ख 1949 पुष्टि केलखिन ।तँइ ई प्रमाणिक अछि। साहित्यसँ पहिने रामलोचनजीक रंगमंच आ रंगमंचसँ पहिने मैथिली आंदोलनसँ जुड़ल छलाह। आ एकर विस्तृत चर्च सभ प्रकाशित अछि।

अन्य पारिवारिक सदस्य-

पत्नी-श्रीमती सीता देवी

संतान-तीन पुत्र ओ दू पुत्री (पुत्र-स्व. उगन ठाकुर, श्री अरुण ठाकुर एवं श्री ललन ठाकुर), (पुत्री-स्व. कविता ठाकुर एवं श्रीमती सविता ठाकुर)

वर्तमान पता- 2M, चिराग अपार्टमेंटस्, 4, इटालगाछा रोड, कोलकाता-700028

लेखन /प्रकाशन (एहिमेसँ बहुत रास पोथी विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ तकर लिंक जे पोथी छै ताहीमे छै ओकरा क्लिक करबै तँ पोथी खुजि जाएत)

1) इतिहासहंता (मौलिक, कविता ,1977)

2) बेताल कथा (मौलिक, व्यंग्य, 1981)

3) प्रतिध्वनि (अनुवाद, काव्य, 1982)

4) जादूगर (अनुवाद, नाटक, 1982)

5) मैथिली लोककथा (संकलन-संपादन ,1983) पुणर्मुद्रण-2006

6) आजुक कविता (संपादित, कविता,1984)

7) माटि-पानिक गीत (मौलिक, कविता ,1985)

8) देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (मौलिक, कविता ,1986)

9) अपूर्वा (मौलिक, कविता ,1996)

10) फाँस (अनुवाद , नाटक, 1997)

11) जा सकै छी किन्तु कियै जाउ (अनुवाद , कविता, 1999, भाषा-भारती सम्मानसँ सम्मानित)

12) कविपति विद्यापति मतिमान (संग-संपादन , आलेख , 2000)

13) लाख प्रश्न अनुत्तरित (मौलिक, कविता , 2003)

14) <u>स्मृतिक धोखरल रंग</u> (मौलिक, आलेख, 2004)
15) रिहर्सल (अनुवाद , नाटक, 2004)
16) <u>आँखि मुनने आँखि खोलने</u> (मौलिक, आलेख, 2005)
17) युगप्रवर्तक कवीश्वर चन्दा झा (संपादित, आलेख, 2007)
18) <u>पद्मा नदीक माँझी</u> (अनुवाद , उपन्यास , 2009)
19) नन्दितनरके (अनुवाद , उपन्यास, अंतिकामे 2009, पोथी-2011,मैथिलीमे) नन्दितनरके (बया-2009,पोथी 2010-हिंदीमे),
20) जयकांत मिश्र समज्ञा (संग-संपादन , आलेख , 2016)
21) कठपुतरी नाचक इतिकथा (अनुवाद, उपन्यास , 2016)
22) सागर लहरि समाना (आत्मकथा-आत्मसंस्मरण, 2017)
23) अयाची संधान (अनुवाद , उपन्यास, मूल विभूति भूषण मुखोपाध्याय, प्रकाशक किसुन संकल्प लोक, 2018),
24) रानी गाइदिन्ल्यू (अनुवाद , उपन्यास , मूल जगदम्बा मल्ल, प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट- 2020)
25) चारि पहर (अनुवाद ,नाटक, मंचित, अप्रकाशित)
26) किशुन जी विशुन जी (अनुवाद, नाटक, मंचित, अप्रकाशित)
27) बाह रे बच्चा राम (अनुवाद, नाटक, मंचित, अप्रकाशित)

एकर अतिरिक्त बहुत रास रचना ओ विभिन्न पत्रिकाक संपादकीय छनि जकरा पोथी रूपमे आनब बाँकी छै।

संपादन-

1) अग्निपत्र (1973, डा. वीरेन्द्र मल्लिक आ सुकान्त सोम संग)
2) मैथिली रंगमंचक मुखपत्र "रंगमंच" (1974)
3) "सुल्फा" नामसँ हस्तलिखित पत्रिका (1975)
4) "मैथिली दर्शन" (पुनः प्रकाशन जनवरी 2005सँ मार्च 2006 धरि)
5) मिथिला दर्शन (मई-जून 2009 सँ लऽ कऽ जनवरी 2020 धरि)

एकर अतिरिक्त "देसकोस" (1981) जकर संपादकमे नाम छल विनोद कुमार झाक मुदा संपादन केर अधिकांश काज रामलोचन ठकुरजी द्वारा संपादित होइत छल। एहने एकटा आर पत्रिका छलै "देसिल बयना" (Oct-1981) जकर संपादकमे नाम छलन्हि जनार्दन झाक मुदा काज रामलोचने जी करैत छलखिन।

सम्मान-

1) CIIL द्वारा अनुवाद लेल “भाषा-भारती सम्मान” (2003-4)

2) विदेह पत्रिका द्वारा संचालित 2011-2012 केर “विदेह सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार)”क अनुवाद पुरस्कार

3) प्रबोध साहित्य सम्मान (2012,चंद्रभानु सिंहजीक युग्म रूपे),

4) किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान, उजान द्वारा “किरण साहित्य सम्मान” 2015

5) चेतना समिति, पटना द्वारा “यात्री-चेतना पुरस्कार”-2017 आदिसँ सम्मानित।

6) विशेष सम्मान- सितम्बर 2020मे हिनक नामक उपर मैथिली गजलमे आएल एकटा नव बहरक नाम "बहरे लोचन" रखबाक घोषणा भेल। ई घोषणा देखबाक लेल क्लिक करू 'बहरे लोचन' ई बहरे लोचन की छै एकर पूरा जानकारी लेल क्लिक करू "बहरे लोचन"

एकर अतिरिक्त कलकत्ताक किछु संस्था द्वारा अभिनंदन सेहो भेल छनि जेना मिथिला सांस्कृतिक परिषद् ओ अन्य।

लगभग 2019 सँ रामलोचन ठाकुर अल्जाइमर बिमारीक चपेटमे छथि, एहिमे लोक बिसरए लागैत छै आ से सभ चीज जेना अपन परिचय, पता-ठेकाना सभ। 12 फरवरी 2021, शुक्र दिन भिनसर 9.30 बजे रामलोचन ठाकुरजी अपन घरसँ कतहुँ निकलि गेलाह आ तकर बाद एहन धरि हुनकर कोनो पता नै चलि रहल अछि। ठीक एहने दुर्दिनमे हमरा लोकनि ई विशेषांक प्रकाशित कऽ रहल छी। बहुत आलेख एहि घटनासँ पहिने आबि गेल छल तँ

किछु आलेख एहि घटनाक बाद आएल अछि।

रामलोचनजीक फोटो (पारिवारिक सहित) आ बहुत रास जानकारी नबोनारायण मिश्रजीसँ प्राप्त भेल अछि)।

पुनःश्च- ई अंक अपन समय 1 अप्रैल 2021 केँ प्रकाशित भेल मुदा 6 अप्रैल 2021 केँ कलकत्ता पुलिस द्वारा रामलोचनजीक परिवारकेँ सूचना देल गेलै जे नीलरतन सरकार अस्पतालमे एकटा शव छै। परिवारक लोक ओहिठाम पहुँचलाह आ ओहि शवकेँ रामलोचन ठाकुरजीक रूपमे चीन्हल गेल। अस्पतालक रेकार्ड मोताबिक हिनक मृत्यु 25 मार्च, 2021 केँ भेलनि आ मृत्यु प्रमाणपत्रमे इएह 25 मार्च लिखल छनि। 6 अप्रैल 2021 केर रातिमे हिनक संस्कार कलकत्ताक निमतल्ला घाट (भूतनाथ मंदिर)मे भेलनि।

उपरोक्त सूचना विदेह द्वारा 14 अप्रैल 2021केँ जोड़ल गेल अछि।

रामलोचनजीक किछु पारिवारिक चित्र

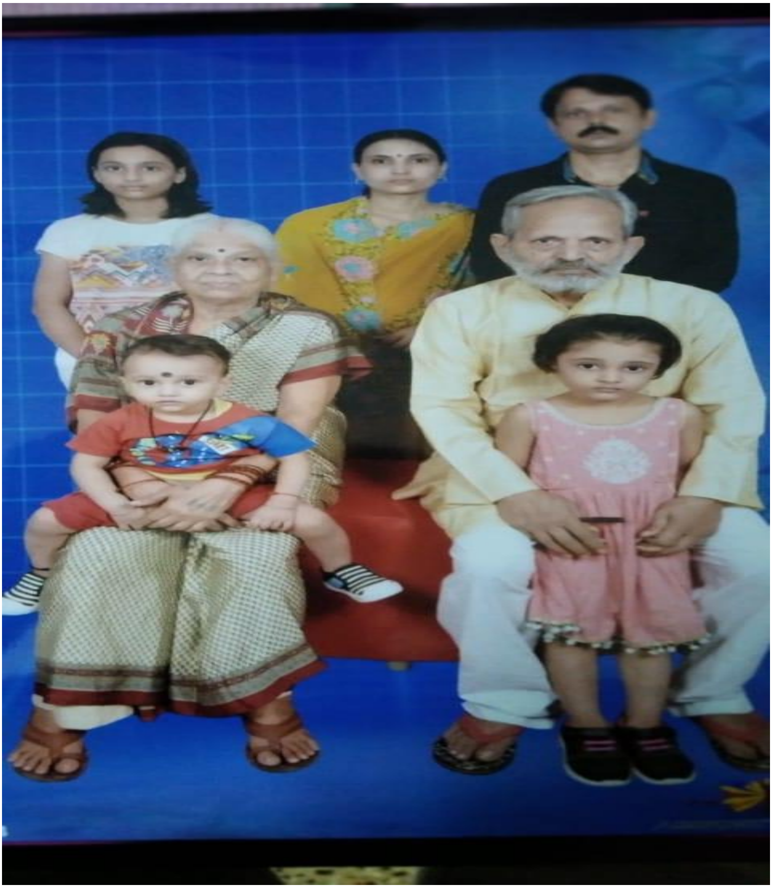

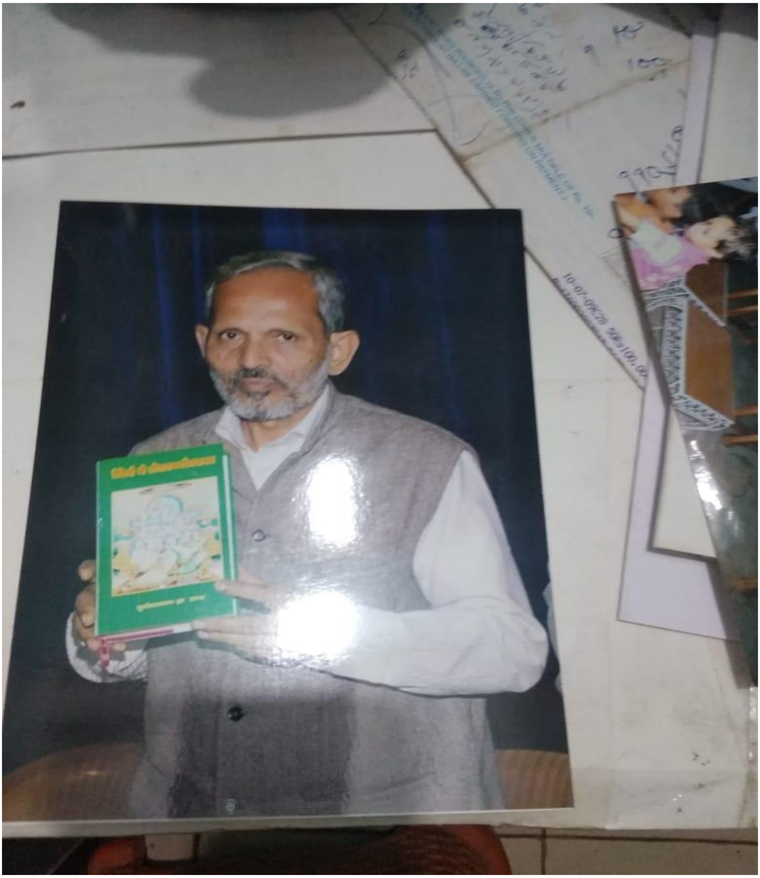

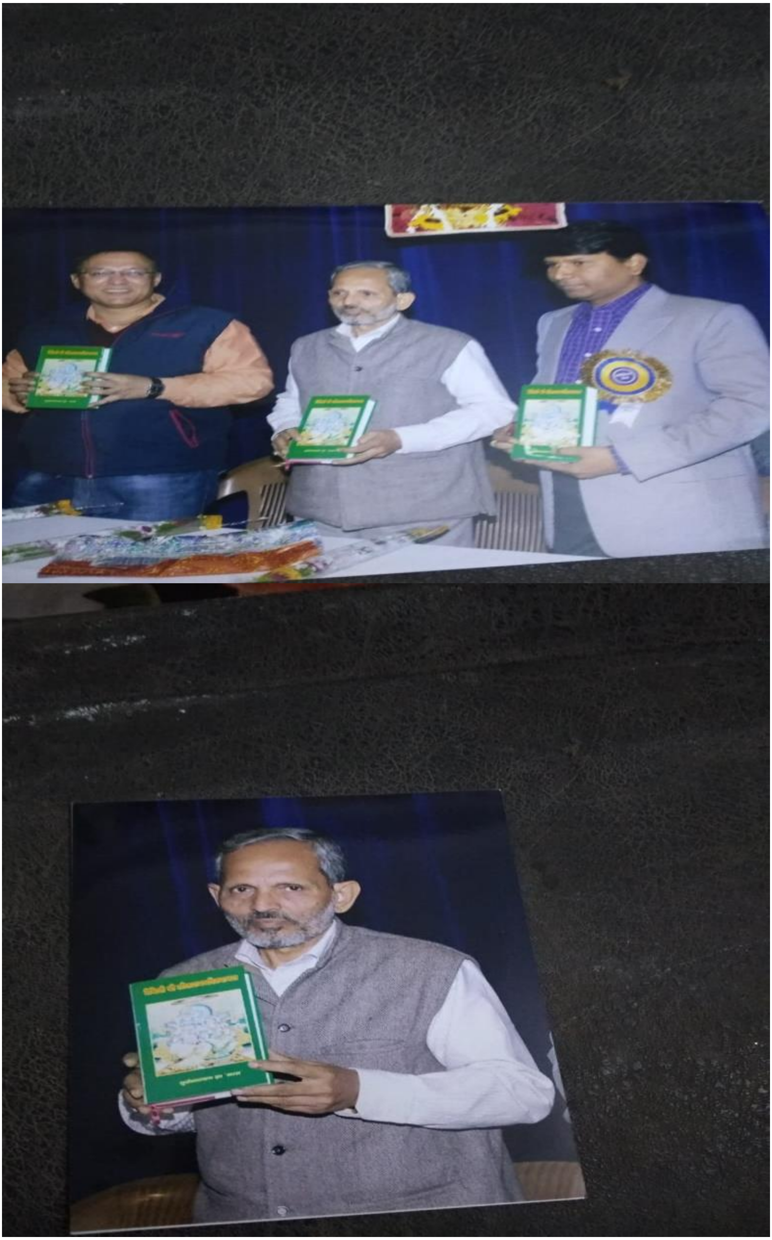

अंक प्रकाशन केर घोषणा

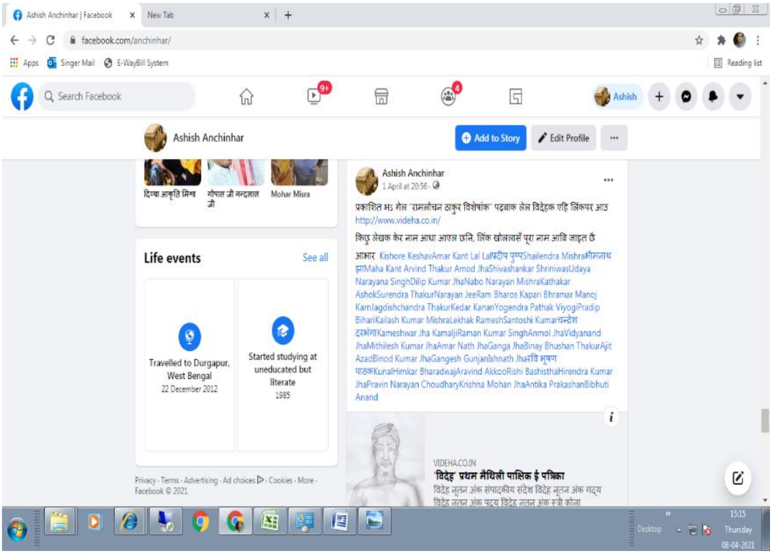

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रस्तुत विशेषांकक संरचनाक संदर्भमे

एहि विशेषांक केर शुरूआत एहन साक्षात्कारसँ कऽ रहल छी जे कि लेल गेलै बहुत पहिने मुदा एखन धरि अप्रकाशित छल, तकर बाद तीन एहन नव समीक्षकसँ आलेख खंड केर शुरुआत कऽ रहल छी जे कि मूलतः मैथिली समीक्षा-आलोचना क्षेत्रमे नै छथि। ताहूमे अमरकांत लाल तँ एहन रचनाकार छथि जे मैथिलीक कोनो पहिल पोथी पढ़लथि सेहो रामचलोनजीक पोथी आ रामलोचनजीक अनुवाद अमरकांतजीकेँ केहन लगलनि ताहिपर हुनक विचार छनि। दोसर लेख प्रदीप पुष्पजीक छनि आ ई मूलतः गीतकार-गजलकार छथि। तेसर शैलैन्द्र मिश्र छथि। उम्मेद जे भविष्यमे ई तीनू समीक्षा क्षेत्रमे सक्रिय रहताह। तकर बाद नव-पुरानक फेंटि कऽ क्रम बनाएल गेल अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिकाक होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक

केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा समाग्रिए नीक नै रहत वा बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

जेना कि उपर परिचय बला पन्नापर सूचित केलहुँ जे फरवरीमे रामलोचनजी अपन घरसँ जे निकललाह से फेर घूमि कऽ एखन धरि नै एलाह अछि। एहि विशेषांक केर किछु लेखपर एकर असरि भेटि सकैए।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

वंदना किशोर

सम्पर्क : विभागाध्यक्ष , मैथिली विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना मो.: 8789819363 / ह्वाट्सएप : 9430082208

एहन जड़िआयल समाजमे महिला कोना उतरतीह मैथिली रंगमंचपर: रामलोचन ठाकुर

प्राश्निक- डा. वन्दना कुमारी (आब डा. वन्दना किशोर)

मिथिलांचलसँ बाहर कलकत्ता (कोलकाता) ओ पहिल स्थान अछि, जतए आधुनिक भाव-बोधक समसामयिक मैथिली नाटकक मंचन प्रारंभ भेल। स्वतंत्र नाट्य संस्था सब अस्तित्वमे आयल। निरन्तर नाट्य-गतिविधि चलल, जे आइयो चलि रहल अछि। मूलतः प्रवासी मैथिल लोकनिकेँ एकजुट करब तथा मैथिली आन्दोलनकेँ आगू बढ़ायब तहिया एकर लक्ष्य छल। कलकत्ताक मैथिली नाट्य आन्दोलनक आब सुदीर्घ इतिहास अछि। कतोक स्वर्णिम उपलब्धिक गवाह अछि कलकत्ता। बादक समयमे एकरे देखा-देखी देशक आन शहर आ गाम सबमे सेहो मैथिली नाटकक संस्था सब बनल तथा रंगमंचीय गतिविधि सक्रिय भेल। कलकत्तामे मैथिली रंगमंचक न्यों रखनिहार

तथा निरन्तर सक्रिय रखनिहारमे जाहि किछु नामक उल्लेख अनिवार्य भऽ जाइछ, ताहिमे एकटा प्रमुख नाम अछि-रामलोचन ठाकुरक, जे बादमे नाटक छोड़ि कथा-कविता आ साहित्यमे रमि गेलाह। परंच परोक्ष रूप ओ एखनो कलकत्ताक मैथिली रंगमंचसँ सम्पृक्त छथि। रामलोचन ठाकुर अभिनय तँ करबे करथि, कतोक नाटकक अनुवाद आ निर्देशन सेहो कयलनि। मुदा हुनक योगदान के एतबे धरि सीमित नहि कयल जाय सकैत अछि। ओ एकटा महत्वपूर्ण संगठनकर्ता आ समन्वयक सेहो रहथि जकर योगदान गतिविधिक सक्रियता आ तकर निरंतरता बनौने रखबाक लेल जरूरी अछि।

८ मार्च २००५ कैँ रामलोचन ठाकुर पटनामे रहथि। ओ प्रबोध साहित्य सम्मान २००४क निर्णायिक मंडलक बैसारमे आएल रहथि। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आ महाशिवरात्रि पाबनिक हूलि-मालिक बीच संध्या ८ बजे फ्रेजर रोड स्थित प्रेसीडेंट होटलक कमरा न. ४०५मे हुनकासँ ध्वन्यांकित साक्षात्कार कएल गेल। ई साक्षात्कार वस्तुतः "नाटक आ नारी" विषयक वृहद शोधक क्रममे कएल गेल छल। शोध कार्य पूरा भऽ अपन निष्पत्ति प्राप्त कऽ चुकल अछि। मुदा ई साक्षात्कार आद्यावधि अप्रकाशित छल। आब पंद्रह वर्ष बाद एहि विशेषांक लेल ई उपलब्ध कराओल गेल अछि। कृप्या पाठक गण एहि साक्षात्कारमे आएल तथ्य आ विचार आदिकैँ साक्षात्कारक समय-तिथि दर्पणमे देखबाक प्रयास करथि। प्रस्तुत अछि ४० मिनटक एहि ध्वन्यांकित साक्षात्कारक प्रमुख अंश--

अपने कलकत्ताक मैथिली रंगमंचमे खूब सक्रिय रहलहुँ अछि। लगसँ एकर गतिविधि देखैत रहलहुँ अछि। कहू जे कलकत्ताक मैथिली रंगमंचमे महिला कलाकारक केहन भूमिका रहल अछि? सुनल अछि जे बंगला भाषी स्त्रीगण लोकनि मैथिली नाटकमे अभिनय करैत रहल छथि ?

कलकत्ताक मैथिली रंगमंचकैँ दू भागमे बांटू-1953सँ 1976 धरि आ फेर

1983सँ अद्यावधि। 1976मे हम सब नाटक करब छोड़ि देलौं। तहिया धरि हमरा सबकेँ जतेक महिला कलाकार भेटलीह, सब बंगला रंगमंचक कलाकार छलीह, एहिमे कोनो शक नै। मैथिलानी मंचपर नै उतरै छलीह, आइयो नै उतरै छथि। एकरा एना बुझियौ जे सय वर्ष पहिने जखन गिरीश घोष बंगालमे नाटक शुरू केने रहथि, तखन पुरूषे महिलाक रोल करैत छल। बादमे एकटा वेश्या के प्रथम बेर ओ मंचपर उतारलनि, नाम रहैक नटी विनोदिनी। यह स्थिति कम की बेसी मैथिली नाटकक आइयो अछि। 1976क बाद बंगालमे मैथिली नाटकमे ब्रेक लागि गेलै। 1983सँ फेर दोसर चरण शुरू भेलै। एहि खेप किछु मैथिलानी मंचपर अयलीह। दू-एक टाक नाम कहब, नीक अभिनेत्री छथि (नाम मोन पाडैत, परंच मोन नहि पडै छनि), महेश झाक ननकिरबी रहै। विवाह भेलै तँ नाटक छूटि गेलै। सामाजिक बंधन छलै। पतिदेव नाटकमे नै उतरय देलथिन। दोसर श्रीमती वन्दना झा, बड़ नीक अभिनेत्री, एखनो करैत छथि। मुदा हुनका रंगमंचसँ कम प्रेम छनि-ग्रुप (संस्था)सँ बेसी। जाहि ग्रुपसँ ओ जुड़ल छथि-तकरे टाक संग नाटक करैत छथि- दोसर ठाम नै करैत छथि। एकटा आर घटना कहब। भरिसक 1983क बात थीक। हम सब मुंशी रघुनन्दन दासक नाटक 'मिथिला नाटक' कलकत्तामे खेलायल रही। एहिमे सात टा महिला रहै, प्रस्तुतकर्ता रहै-कर्ण गोष्ठी-कायस्थक संस्था छियै, बुझिते छियै। सात टा महिला आयल रहथि, नाटक कयलनि। तकरा बाद दोसर नाटक लेल उपलब्ध नै भेलीह। ई तँ विडम्बने ने भेल।

बंगला भाषी अभिनेत्री रहलासँ मंचनमे दिक्कत नै होइत रहए ?, प्रस्तुतिक गुणवत्ता नै प्रभावित होइ ?

खूब बाधा होइ। हालमे 6 मार्च के कलकत्तामे एकटा नाटक भेल-'भफाइत चाहक जिनगी'(लेखक-सुधांशु 'शेखर' चौधरी)। एहिमे बंगला भाषी

अभिनेत्री छलीह। ठीकसँ उच्चारण तक नै कऽ सकलीह। आब अहाँ नाटकमे ठीकसँ बजबे नै करबै तँ......?

अपन व्यवहारिक अनुभव कहू ? अहाँ लोकनि कोना तैयार करियै बंगला भाषी अभिनेत्री के?

ओना तँ सब गोटे मुदा विशेष रूपसँ- हमरा सबहक बीच लक्ष्मीनारायण मिश्र नामक एक व्यक्ति रहथि, जे आफिससँ छुट्टी लऽ लऽ भरि दिन अभिनेत्रीक डेरा जा हुनका मैथिली बाजब सिखाबथि, पार्ट घोखबथिन। मैथिली संवाद के बंगला लिपिमे लीखि कऽ देथिन। तखन हुनकामे कोनो बातक पता नै चलै। हमरा सबहक संग जे-जे बंगला भाषी अभिनेत्री काज कयलनि से एहिना। दू टाक नाम लेब- श्रीमती वीणा राय आ चन्द्रकला किरण। ओकरा हम सब चिन्है छलियै जे ओ मैथिली भाषी नहि अछि, अहाँ नै चिन्हितियै। सिखबाक क्रममे दुनू के मैथिलीपर ततेक कमांड भऽ गेल रहै। ओ दुनू हमरा सबसँ मैथिलीयेमे गप्प-सप्प करैत छलीह। आब एखन ओतेक मेहनति होइते नै छै। हमरा सबमे प्रतिबद्धता छल। सिखबाक प्रयास करै छलिये। साँझ कऽ अड्डा दियै। एक टकाक टिकट कीनि-कीनि बंगला नाटक जा-जा कऽ देखियै, बंगलामे की नब भऽ रहलैए। महेन्द्र मलंगिया के पुछबनि, ओ कहताह। कलकत्तामे हुनका पकड़ि-पकड़ि हम सब नाटक देखाबी-चलू फल्लां नाटक देखा। एखनुका कलाकारमे ओ प्रतिबद्धता नै छनि। करऽ के अछि, कऽ लियऽ एकटा नाटक। नै किछु अछि तँ एकटा नाटके कऽ लिअ।

मैथिलानी नाटक करए मंचपर नै अबैत छथि तकर की कारण अहाँ के लगैए?

सामाजिक विडम्बना छै। हमर सबहक जे संस्कार अछि, गीतनाद-नृत्य-नाटककेँ हम सब हेयदृष्टिसँ देखैत रहलियै। आब यद्यपि नृत्यमे मैथिलानी आबि रहल छथि। हम नाम नै कहब, कलकत्ताक एकटा बड़ पैघ श्रेष्ठ

आन्दोलनी-साहित्यकार छथि, तिनकर ननकिरबी के एक बेर इच्छा भेल छलै नाटक करबाक-मुदा ओ अपन बचिया के नाटक नै करय देलथिन। अपने ओ भाषण दैत छथिन मंचपर महिला के अयबाक लेल। आइयो हम-अहाँ भाषण दैत छियै, लेकिन अपन बेटी-स्त्रीकेँ मंचपर उतारब से साहस हम सब नै करै छी। हमरा लोकनिक समाज एखनो पुरुष शासित अछि। जँ पुरुष Alow नै करथिन तँ महिला कोना मंचपर अओतीह? एहि स्थितिमे एखनो परिवर्तन नै अयलैए- हम सब भाषण जतेक झाड़ी।

अहाँ स्वयं नाटक करैत रही, प्रगतिशील विचारधाराक लोक रही, अहाँ अपन पत्नीकेँ किएक नै मंचपर अनलहुँ ?

हम एहि प्रश्नक अपेक्षा करैत रही अहाँसँ। देखियौ, हमरा पत्नी के पढ़हो नै अबैत रहनि। बाजहो-भुकहो नै अबैत रहनि। किए तँ पढ़ल-लिखन नै रहथि। बियाह भेल तँ कहलियनि-चिट्ठी-पुर्जी लीखू। तँ मात्रा छोड़ि अक्षर लीखब सीखि लेलनि। ओ जे एकटा कहबी छ जे एकटा पत्नी अपन स्वामी के चिट्ठी लिखलथिन-ट क प ठ ब त प ठ ब न त स ब म र ब (टाका पठायब तँ पठाउ नै तँ सब मरब)। तेहने लिखब सिखलनि हमर पत्नी-मात्रा ज्ञान नै भेलनि, हुनकर स्थिति आ स्तरक अनुमान कऽ लियौ। दोसर अपने कमजोरी किए ने कहि दी। अपने हम मैट्रिक पास कऽ कऽ गामसँ कलकत्ता गेल रही। नोकरी लागल। मुदा कॉलेजोमे नाम लिखौलौ। हमरा माय के बड़ इच्छा पढ़ऽ-लिखऽ के। पत्नी जे सुनलनि कॉलेज जाय वला बात तँ कहलनि-'एह आब धियापुता पढ़तै, तँ अपने कॉलेजमे नाम लिखौताह।' तँ ओहि पत्नी के हम कतेक दूर धरि आनि सकैत छलहुँ ? नै आनि सकलहुँ, हमरो कमजोरी अछि। एकटा बात आर कहब। कोनो प्रोग्राम होइ छै, नाटक होइ छै तँ ओहिमे कैक टा दर्शक स्त्रीगण रहैत छैक ? हम सब,सब, गोटे परिवारक संगे रहै छी, मुदा परिवार

लऽ कऽ प्रोग्राममे किए नै जाइ छी ?

कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक इतिहास लगभग पचास वर्षक भऽ गेल। तथापि स्थिति नै बदलल?

जड़िआयल सामाजिक संस्कार जाधरि नै बदलत, ताधरि....। आब देखियौ जे हमरा घरमे कोनो महिला आई.ए.एस. छथि तैयो भानसक दायित्व हुनके रहतनि। नोकरी ओहो करैत छथि- स्वामियो करैत छथिन, मुदा भानस स्त्रीये करतीह, पतिकेँ चाह बना कऽ वैह देथिन। स्वामी किएक ने करथिन ? एकटा स्त्री मृदुला गर्गक 'रुकोगी नहीं राधिका' सन उपन्यास पढ़तीह, मुदा मंचपर नै उतरतीह। हम सब (पुरूष वर्ग) Allow नै करै छियनि। पटनामे हम कहब जे हमरा लोकनिक सौभाग्य अछि जे प्रेमलताजी (प्रेमलता मिश्र 'प्रेम') सन वरेण्य आ सम्मानित अभिनेत्री एखनो सक्रिय छथि। ओ साहस कऽ कऽ मंचपर अयलीह।

मैथिलीक नाटक सबमे संख्याक दृष्टिसँ स्त्री चरित्र कम रहैए। एकर की कारण ? की महिला कलाकारक अभाव मात्र एहि लेल जवाबदेह अछि ?

तँ आर की ? महिला कलाकार छैके नै तँ नाटककार लिखिये कऽ की करताह? मंचने नै होयतनि। हम कहि सकैत छी जे कमसँ कम कलकत्ताक नाटककार जे नाटक लिखलनि से ओही हिसाबे। हम एकटा नाटक खेलायल रही- जादूगर आ रिहर्सल। अनुवाद नाटक छल। तँ हम तकैत-तकैत ओहन नाटक तकलहुँ आ अनुवाद कयलहुँ, जाहिमे महिला कलाकार छलैके नहि। नचिकेताक नाटक 'एक छल राजा'मे तीन टा महिला रहै। मुदा हमरा सब

लग रहथि दू टा महिला कलाकार। एक गोटेकेँ डबल रोल देलियै। तँ लोक चेहरा नै देखि सकै त एकटा रोलमे ओकरा चेहरा घुमा पाछू मुंह बैसा देलियै- अपन गीत गाउ आ चलि जाउ। ई तँ स्थिति अछि। कोना नीक नाटक लिखायत आ कोना तकर नीक मंचन होयत ? हमर स्पष्ट मत अछि जे महिला कलाकारक अभाव अछि तें नाटककार कम महिला चरित्र रखलनि, नै रखलनि। बिनु महिला पात्रक नाटक हो तँ उत्तम। आइयो जे नाटक लिखाइए- ताहूमे दू-तीनटासँ फाजिल नारी चरित्र कहाँ रहैए ? ई संकट सब ठामक छैक।

आब गोटपगरे सही, मैथिलानियो घरसँ बहरा रहल छथि। नोकरी, व्यापार, फैशन, खेल-पुलिस सब क्षेत्रमे। गबै छथि-नृत्य करैत छथि। तखन नाटक नहि करबाक पाछू की कारण लगैए रंगमंचक स्वयं केर स्थिति एहि लेल कतेक दोषी लगैए?

हम फेर कहब सामाजिक अवस्था दोषी अछि। ताहूमे पुरूष वर्ग दोषी अछि। स्त्रीक इच्छा रहितो छैक तँ पुरूष ओकरा Allow नै करै छ। तँ ओ नै अगुआइ छथि। ओहुना बंगालमे कि दक्षिण भारतीय भाषा सबमे कलाक प्रति जतेक आकर्षण छै ततेक हमरा सबमे नै अछि। एकदम्मे नै अछि। मिथिला पेंटिंग बंगाली सब बना-बना बेचि रहल अछि हम सब नै। मैथिलानी घर-घरमे पेंटिंग बनौतीह-मुदा प्रदर्शनीमे नै जेतीह, किए तँ परिवार Allow नै करै छनि। नाटको लेल सैह बात अछि। एखनो हमरा सबहक मानसिकतामे कहाँ परिवर्तन भेलए जे नाटक एकटा कला छियै। साहित्यक सबसँ सशक्त विधा छै नाटक, नाटक मात्र पोथी नै। एकटा समन्वित कला छै। एकर जे प्रभाव दर्शक-श्रोतापर पडै छै- से कथा-कविताक कहियो भइये नै सकै छै। मुदा हमरा सबमे तकर इमानदारी आ विचारक अभाव अछि। आब मल्ल कालक स्थिति तँ हम नै कहब। मुदा ओहू कालक नाटक सबमे नटी-सूत्रधारक परिकल्पना

छै, तँ महिला कलाकार रहल हेतै-से हमरा लगैए। ई बीचमे आबि कऽ मुसलमानी आक्रामणक बाद पर्दा प्रथा आयल। हमरा लोकनिपरम्परावादी सोचक लोक, ओकर रूढ़ि बना देलियै।

जतेक नाटक अहाँ पढ़लहुँ, कयलहुँ अथवा देखलहुँ-ताहि आधारपर कहू जे मैथिल नारीक केहन छवि नाटक सबमे आयलह अछि ?

पुरुष आश्रित नारीक छवि। नियमसँ बाहल, भनसाघरमे घोंसियायल, घरक काज करैत, पुरुषक सेवा करैत नारीक छवि। बहुत-बहुत पछुआयल नारीक छवि। पुरुषक समकक्षोक छवि नै बनल अछि। स्त्रीक स्वतंत्र अस्तित्व कहाँ कोनो नाटकमे आयलए ? अगुआयल चरित्र कहाँ आयलए? स्वावलंबनक भावना वला नारी कहाँ अनलनिहें नाटककार लोकनि नाटकमे ? हँ, गुणनाथ जी 'पाथेय' नाटकमे नारीक कनेक नीक छवि देखौलथिन।

की यह अछि मैथिल नारीक सम्पूर्ण छवि?

सम्पूर्ण छवि माने की ? मिथिलाक नारीक दू वर्ग अछि ग्रामीण स्त्री आ शहरी स्त्री। विडम्बना अछि जे मिथिलामे कलकत्ता कि पटना सन शहर नै छै। शिक्षित-बुद्धिजीवी गाम छोड़ि शहर आबि गेल। मुदा गामक स्त्री एखनो गोबर पथैए। शहरमे से तँ नै करैए, मुदा ग्रामीण संस्कारसँ एखनो मुक्त नै भेलैए। आब देखू, हमरा लोकनिक अधिकांश नाटककार शहरी छथि। ग्रामीण पृष्ठभूमिपर मलंगियाजी टा नाटक लिखै छथि। आब शहरमे रहि कऽ गामक नाटक लिखबै तँ से केहन हेतै ? शहरियाक मात्र स्मृतिमे गाम छैक। कैक दिन गाम जाइ छी हमरा लोकनि ? तें गामक बारेमे चिंतन सतही होयत-तँ से स्वाभाविके। तें नारीक जे यथार्थ छवि अयबाक चाही नाटकमे - से नै अबैए।

मलंगियाक नाटक 'ओकरा आंगनक बारहमासा, नसबंदी, जुआयल कनकनी'मे यद्यपि अयलैए।

स्त्रीक दुर्दशा लेल स्वयं स्त्री कतेक दोषी छथि ?

स्वयं स्त्री के सर्वांशतः दोषी नै मानल जा सकैए। हमरा लोकनिक समाज पुरुष शासित रहलए। हमरपरम्परा बहुत जड़िआयलपरम्परा अछि। एतय बुझबाक अछि जेपरम्परा नीक वस्तु अछि,परम्परा बनै छै मनुक्खे लेल-समाजक उन्नति लेल। लेकिन हमरा सबहक साहित्यमेपरम्पराक गलत व्याख्या कयल गेलए। जे रूढ़ि छै तकरा हम सबपरम्परा मानि लेलियैए। एहि रूढ़िसँ जाबे हमरा सब के मुक्ति नै भेटत-ताबे नारीक स्थिति , नै सुधरतनि। नारियो समाजमे जाबे बटसावित्रीक पूजा होइत रहतै आ मधुश्रावणीमे ठेहुन दगाइत रहतै-ताबे तक भरिसक नारी आगू नै आबि सकतीह। नाटकोमे यह स्थिति अछि। आखिर लेखको तँ ओही वर्ग आ समाजसँ अबैत छथि- प्रायः ओहो नारी के सामने नै आनय चाहैत छथिन। हमरा जनैत मलंगियाजी विशिष्ट वर्गक नाटके लिखैत रहलाह। ओहि विशिष्ट पिछड़ा वर्गमे नारी के विशेष स्वाधीनता छै। जकरा फारवर्ड कहैत छियै, ताहि वर्गक नारीमे बड़ कम स्वाधीनता छै। जखन कि फारवर्डमे नारी कम कि बेसी पढ़बो-लिखबो कयलनि। परंच संस्कार समकालीन नै भेलनि। सोच आधुनिक नै भेलनि। आधुनिकताक प्रभावसँ पाछू रहलीह।

की अहाँ के लगैए जे महिला नाटककारक अभाव रहलासँ नाटकमे महिलाक उचित प्रतिबिम्ब....

(बिच्चेमे बात लोकैत) नै-नै, ई कारण नै छै, बल्कि ई गलत धारणा छै। कोनो भाषामे एना नै छै जे महिला लेखिके महिलाक विषयमे बढ़िया लीखि सकैत छथि। नाटककार तँ सब भाषामे पुरुषे बेसी छथि। महिला लिखतीह तँ महिला

कलाकार भेटत अथवा महिलाक सम्पूर्ण समस्या आओत ई हम नै मानै छी। जेना, साहित्यमे आएल दलित साहित्य एकदम बकबास छै। साहित्य कतौ दलित होइ आ साहित्यकार कतौ दलित हुअय। साहित्यकार मात्र स्रष्टा होइ छै बस। देखू, दरअसल हमर नाट्य विधे कमजोर अछि। नाटक लिखायत मंचन लेल से कते मंच (नाट्य संस्था) अछि अपना सब लग? नाटक खेलाइ वला लोक नै अछि। मंचक (नाट्य संस्था) अभावक चलते नाटक कमजोर। कम लेखन। सय वर्षक आधुनिक मैथिली नाटकक इतिहास अछि-संख्यामे कतेक नाटक अछि ? 1953मे कलकत्तामे हम सब मैथिली नाटक करब शुरू कयलहुँ। तँ 51-52 सालमे कलकत्तामे एखन तक मात्र 51 टा मौलिक मैथिली नाटक आबि सकल-बाकी अनुवाद अछि। जखन कि कलकत्तासँ हम सब एखन धरि 250सँ 300 पोथी छपलहुँ, ताहिमे मात्र 51 टा मौलिक नाटक। हमरा सब लग नाटककारोक अभाव रहल अछि। नाटक लीखब परिश्रमक काज अछि। ओकरा मंचक ज्ञान होइ। नाटक एक बेर लिखायल, पाठ होयत, फेर काँट-छाँट। फेर लीखू। तखन रिहर्सल। रिहर्सलमे फेर चेंज होयत। तखन मंचन। फेर काटपीट, तखन प्रकाशन। एतेक परिश्रम करबाक लेल लोक तैयारे नै छथि। डैराइ छथि। उपन्यासोमेहनत मंगैत छै तें मैथिलीमे उपन्यासो कम छै। सबसँ बेसी कविता लिखा रहलए सेहो हम कहब छंदक बंधन टूटि गेलै तें। हमरा सब लग प्रतिबद्ध आ परिश्रमी लेखकक अभाव अछि। फेर लेखनसँ पाइ तँ भेटै नै छै। तें ई 'पार्ट टाइम' जॉब जकाँ लोक करैए? थोड़े नाटक नचिकेता लिखलनि। आब एखन तँ मलंगिया छोड़ि कियो नै। बाबू साहेब चौधरीक एके टा नाटक अछि-'कुहेस'। हमरा बुझने दहेज प्रथापर मैथिलीमे सबसँ नीक नाटक अछि। किएक तँ ओ 15-20 टा नाटकमे स्वयं अभिनयो कयने रहथि आ नियमित बंगला नाटक देखितो छलाह।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अमरकांत लाल-संपर्क-7091529835

रामलोचन ठाकुर जीक अनुवाद

रामलोचन ठाकुर जीक पोथी प्रतिध्वनि पढ़बाक प्रयास कऽ रहल छी , पढि नहि पाबि रहल छी कारण ,पढबा काल मोन सदति पूर्वाग्रहसँ भरल रहैछ, रामलोचन ठाकुर जीकेँ पढबा लेल लगैछ जे हमरो निर्द्वन्द ,निर्लेप होयबाक चाही। अनुवाद पहिनहु पढ़ने छी मुदा एहन अनुवाद कम्मे भेटल जाहिमे ईशा अपन आत्मा जनक आ जानकीमे समाहित कऽ देने होथि , ठाकुर जी के पढबा माने सर्वहारा मैथिलक संस्कारमे डूबकी लगैब ,जत्त दुख तकलीफ सेहो आध्यात्म आ दर्शनक समुद्रमे समाहित अछि। धनकुटनी पढबाकाल "ढेकीमे धान कतेक कष्ट पबैछ" .... विपत्तिक कारखानासँ रत्न भऽ बाहर अबैछ । एहि पाँतिमे उपदेश प्रेरणा, सत्य सभटा एक्कहि संग अगल,बगल ठाढ़ भेल अछि, ठाकुरजीक विषयमे हल्ला छैक ओ हरा गेलाह, हमरा जनतबे ओ मैथिली छोड़ि कत्तहु ने हरा सकै छथि। श्रीमानक रचना सदति खेत खरिहान ,वंचितक आँगन घर सौंसे ठाढ़ भेटत ओ अनुवादे किएक नहि हुए मुदा निर्विवाद रुपमे अनुवाद कत्तहुसँ अनुवाद नहि मैथिलीक सुच्चा माटि-पानि संग ओही स्वादमे ठाढ़ "वसुधैव कुटुंबकम" सन वसुधैव कष्ट एकदृष्टमक सूचना

दैत जागृत अछि।

बेसी काल रचना विन्दु आ रचनाकार एकाकार नहि भऽ पवैछ ,परंच रामलोचन ठाकुरजीक रचना कखनहुँ हुनकासँ फराक दृष्टिगोचर नहि होइछ। हुनक रचना बहुत संगठित लोकशक्तिक उदय आ' विस्तारक ओहि सम्भावनासँ परिचय करेबाक प्रयास करैत अछि जाहिठाम प्रतिफल विकासक बाटक प्रशस्त करत। विकाससँ सुख समृद्धि आ क्लान्त मुखमण्डल पर सुख उझलबाक काज रचना मादे कैल जा सकै छै एकर विश्वास हिनक रचना कैएक बेर दिएबामे सफल रहल।तखन ईहो कहब जे ओ इतिहास बिसरि गेल छलाह से नहि तँइ हुनका रचनामे क्रान्तिक ओ घवाह स्वर छैक जे अन्यत्र भेटब कम संभव वा ईहो कहि सकैत छियैक जे रचनाकार बेसी काल जाहिसँ परहेज करैए छथि। "आर जुनि उठा माथ बर्फ अम्बार नहि तऽ अइखन पकड़ब हम तरुआरि" जाहिमे सम्पूर्ण व्यवस्थाक प्रकृतिके विरुद्ध ठाढ़ होयबाक प्रयास जाहिमे वर्ग विशिष्ट नहि सभक लेल वर्तमानसँ संघर्षक घोष छैक , मैथिलीए नहि हिन्दीयोमे झट दऽ भेटब असंभवे बुझियौ। समृद्धिक फूहिआएब देखबामे अबैछ मुदा भाषा लेल भाषा समृद्धिक बरखा कम्महि भेटैछ। फूहीसँ सन्तोषक हरितिमाक विस्तारक आश मुदा स्थायी विस्तार लेल बरषा चाही ।जागरण, संगठन, सामाजिक दायित्वबोध आ' समन्वित राष्ट्रीय दृष्टिक विकासक विविध बाट आ ओहि बाटपर प्रमुख अछि, स्वर्णिम अतीतक अवदानक परिचय द्वारा लोककेँ उत्प्रेरित करब। मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास पराक्रमक गौरव गाथासँ परिपूर्ण अछि। मुदा ठाकुर जी ओहि गौरवगाथासँ फराक भऽ एकटा नव दृष्टिकोण ठाढ़ करबामे लागल छथि जे नहि तऽ राजनीति प्रेरित अछि आ नहि कूनू विशेष धारा वा विचारसँ हुनक स्वतः स्फूर्त भाव जे किनको कम्युनिस्ट वा वामपंथी लगौन्ह परंच ओ सदति मिथिला आ मैथिलीपंथी थिकाह जाहि विषयमे जनबाक अनेक स्रोत अछि।

ओ स्रोत सभ लिखित आ’ अलिखित दूनू अछि। जे लिखित अछि पढ़ल-लिखल लोक तकरा पढ़ि पढ़ि सामाजिक बोधसँ अभिभूत होइत रहलाह अछि आ जे लिखल नहि जा सकल, से लोक कंठहिक माध्यमे आइ धरि सुरक्षित रहि प्रेरणाक अजस्र स्रोत प्रवाहित करैत आबि रहल अछि। कूनू बेक्ति जखन कर्म आ दायित्व के चरम विन्दु तक पहुँचबाक प्रयास करै छथि तँ देखार होइ छथि। तहिना ठाकुरजीक रचना सेहो समाजक सभ वर्गक बोध पसारैत सभक लेल चेतौनीक काज सेहो करैए छथि आ अपना दिससँ संघर्षघोष सेहो।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रदीप पुष्प- संपर्क-7903496553

गीतकार रामलोचन ठाकुर

मैथिलीक आने विधाक अनुरूप मैथिलीक गीतक उपर आलोचक लोकनि कम्म ध्यान देलनि अछि। कविताकें विशेष महत्व द' मैथिली गीतक उपेक्षा कयल गेल अछि। यद्यपि मैथिली गीतक परम्परामे महाकवि विद्यापति जकाँ गीति-काव्यक पुरोधा नीक जकाँ मुखर छथि आ हुनका बाद सेहो बहुत नीक गीतकारक श्रृंखला रहल अछि, तथापि ई कहबामे कोनो अशौकर्य नहिं जे मैथिली गीत-विधाकें ओतेक मूल्य नहि भेटि सकल जे ओकरा भेटबाक चाही। यद्यपि भिन्न- भिन्न कालमे गीतकार- कवि द्वारा रचल सुमधुर गीत मैथिल जनमानसक कंठमे अपन माधुर्य संग लोकप्रिय होइत रहल मुदा गीतक आलोचना पक्ष आ अइ वास्ते अकादमीक सहयोगक दृष्टिकोणसँ गीत विधा कविता जकाँ जगह नै बना सकल।

मैथिलीक प्रसिद्ध कवि, रंगकर्मी, आंदोलनी, पत्र-पत्रिकाक माध्यमे मैथिलीक जन- जागरण कएनिहार श्री रामलोचन ठाकुर जीक साहित्यिक अवदान बेस व्यापक अछि। एकटा समर्थ कवि, मातृभाषा अनुरागी, आन्दोलन कर्मी, पत्रकार इत्यादि विभिन्न भूमिकाक नीक जकाँ निर्वहन करितो ठाकुर जी मूलतः मैथिलीक सुंदर भविष्य लेल, मिथिलाक उत्थान लेल चिंतित स्वप्नद्रष्टा छथि।

रामलोचन जीक गीत मूलतः मिथिलाक छायाचित्र अछि। व्यापक उद्देश्य सँ

रचल गेल गीतक कैनवास नमहर अछि आ आने गीतकार जकाँ वस्तुनिष्ठ आ सूक्ष्म नै भ' पबैत अछि। गीतकार ठाकुरजी निश्चित रूपेण प्रगतिशीलता प्रतिनिधि छथि। हिनक गीत यथार्थक भूमि पर ठाढ भेल मजगूत घर जकाँ अछि। अपना समयक समाज आ देशक समुचित चित्र उपस्थित करबाक सफल प्रयास ठाकुर जी कयने छथि। हिनक गीत समाजक वर्ग- संघर्ष कैँ, असमानताकैँ प्रतिध्वनि थिक। ई अपन गीतमे क्रान्तिक आह्वान करैत छथि। हिनकामे समतामूलक समाजक प्रबल भावना देखाइत अछि। हिनक गीत कोनो नवयुवतीक प्रति रचल गेल उपमा- उपमेय आ श्रृंगारक वर्णमाला नै, अपितु हिनक गीत भूख, ब्याधि, बेकारी, शोषण आ अपन भाषा- संस्कृतिक प्रति हिनक अगाध अनुरागक गान थिक। श्रमिक- मजदूर वर्गक आक्रोश, पलायन, भूखमरी, कृषकको अधोगति हिनक मूल- विषय रहलनि अछि।

अपूर्वाक भूमिकामे श्री नवीन चौधरी लिखैत छथि-"रामलोचन ठाकुर जीकैँ यशस्वी गीतकारक पतियानीमे देखब कोनो आलोचककैँ नै अघरतनि। एहि पोथीक गोटेक दर्जन गीतमे ओ सामर्थ्य छै।" हम आदरणीय चौधरी जीक एहि कथनसँ सहमति नै रखैत छी। यथार्थक तेहेन स्वर ठाकुर जीक गीतमे प्रमुखता सँ उपस्थित छन्हि जे निश्चित रूपेण हिनका अग्रणी गीतकारक रूपमे स्थापित करैत अछि। ठाकुर जीक गीत परम्परागत गीतसँ पृथक अछि। हिनक गीतक कथ्य आ शिल्प दुनू परम्परा सँ अलग अछि। उदाहरण लेल- हिनक गीत " उठ - उठ रओ बौआ"मे ठाकुर जी कहैत छथि-" काल्हि जनगणना थिक गामे पर रहब, ठीक - ठीक लिखाएब कने जेना - जेना कहब, माइक जे भाषा से मैथिली लिखाएब, देखब हिन्दी ने लिखए मुझौसा-"

एकटा दोसर गीतमे लोक गीतक शैली लिखल पर ई बेस चोटगर अछि_ " करिया झुम्मरि खेलै छी, ढील पटापट मारै छी, लीख पटापट मारै छी, शोणित पीबै जे मनुखकैँ, तकरे मारै - जारै छी,"

हिनक एकटा प्रसिद्ध गीत अछि-'बिढनी कटलकौ,तुम्मा फुलेलकौ, फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर'। ई गीत पाँच बरख पर नेतालोकनि द्वारा चुनाओ जीत

क' जन- समुदायक शोषण पर बेस धरगर प्रहार अछि। संगहि, गीतकार अइ गीतमे मतदान करय बला समुदायकेँ चेतौनी द' रहल छथि।

शिल्पक दृष्टिसँ गीत लेल आवश्यक छैक ओकर गेयता।ताहि लेल आवश्यक छैक जे ओकर अंतराक मीटरमे तारतम्य होइ जाहिसँ ओ प्रभावी रूपे गाओल जा सकय।मुदा ताहि दृष्टिकोणसँ हिनक गीत बेसी ठाम उपयुक्त नै लगैए।उदाहरण लेल-

"सखि हे हम की गायब गीत" शीर्षक मे कोनो अंतरा तीन पाँतीक अछि त' कोनोमे चारि -पाँच पाँतीक। तहिना -" इतिहास युग नवीन के" आ " क्रांतिक आह्वान " मे सेहो साम्यताक अभाव। हिनक बेसी गीतक शिल्प नजरिए ओतेक प्रभावी नै। पोथी 'अपूर्वा'क प्रारंभमे आदरणीय सुनील चौधरी ललन जीक ई कथन -" रामलोचन ठाकुर लग कतोक वस्तुक अभाव छनि। आलोचनाक निष्पक्ष कसौटी पर राखि क' देखल जाए त' किछु दोष अवश्य भेटत। ठाम - ठाम हुनकर मान्यतासँ सहमति होएब कठिनाह बुझि पड़त......। "सँ हमहुँ सहमति रखैत छी। प्रगतिशीलता आ यथार्थवाद केँ समेटैत,परम्परागत गीत-शैली केँ अनठबैत जँ अहाँ हिनक गीतक उद्देश्य आ विषय-वस्तुक प्रासंगिकता मात्र धरि ध्यान राखी त' हिनक गीतकारी नीक छनि आ मिथिला- मैथिल लेल प्रभावोत्पादक छनि। मुदा, ओइमे आन आवश्यक गुणक अभाव। रामलोचन जी बहुतो विधा पर अपन कलम चलौलनि।एकटा गीतकारक संभावनाक रूपमे जँ विचार करी त' ओ विषय - चयन आ तत्कालीन परिवेश (अखनहुँ प्राय: ओहिना) केँ चित्र उपस्थित करबामे सफल छथि मुदा गीतक आन तत्वक अभाव कारणे ओ बेसी काल धरि गीतकारक रूपमे आकर्षक नै लगै छथि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

शैलेंद्र मिश्र-संपर्क-7600744801

एकटा खाँटी मैथिल:रामलोचन ठाकुर आ हुनकर काव्यसंसार

आदरणीय रामलोचन ठाकुर मिथिला मैथिली मध्य एकटा ध्रुवतारा बनि चमकि रहल छथि ई कहबामे हमरा असोकर्ज नै भऽ रहल अछि किएक तँ भाषाक प्रति समर्पणता ओ त्याग बिरले व्यक्तिमे भेटत। ई कलकत्तामे मिथिला-मैथिलीक पर्याय बनि एकटा खाम्हक रूपमे विद्यमान छथि आ अपनासँ कनिष्ठ पीढ़ीक कतेको साहित्यकारकेँ साहित्य-साँचामे गढ़लथि। अपन बात–विचार स्पष्ट रूपसँ रखैत रहलाह अछि। एकटा विरल मैथिली आंदोलनकर्ता, कवि, गद्य लेखक, समालोचक, कुशल संपादक, नाटककार, निर्देशक ,रंगकर्मी ओ सफल अनुवादकक रूपमे प्रख्यात छथि। हुनकर रचना संसार ततेक विशाल छनि जे सम्पूर्ण कृतित्वकेँ एकटा लेखमे समेटनाइ कठिन अछि। अइ लेखमे हम हुनकर मात्र काव्य यात्रापर केंद्रित करब। हिनकर राजनीतिक विचार मार्क्सवादी –बामपंथी रहलनि आ हिनकर कविता सभमे सेहो मार्क्सवादक सौन्दर्य-शास्त्रक उदाहरण भेटैत अछि। लेकिन सिर्फ ककरो राजनीतिक विचारधाराकेँ केंद्रभूमिमे राखि कऽ मूल्यांकन केनाइ निश्चित रूपसँ त्रुटिपूर्ण साबित हएत किएक तँ अइ बातपर सबमे सहमति छै जे कोनो रचनाकार तखने पैघ बनैत छथि जखन ओ अपन विचारधाराकेँ

अतिक्रमण करैत अछि।हिंदी साहित्यमे भक्तिकालक एकर उदाहरण अछि जायसी तँ आधुनिक कालमे मुक्तिबोध। सूफी मतवादक अतिक्रमण कइए कऽ जायसी पद्मावत सन श्रेष्ठ रचना लिख सकलाह तँ मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधाराक अतिक्रमण कऽ सफल भेलाह। आलोचनामे एकटा प्रवृत्ति हावी रहलैए जे रचनाकारकेँ व्यक्तिगत राजनैतिक विचारधाराक आधारपर मूल्यांकन केनाइ लेकिन हमर कोशिश अछि जे रामलोचन जीके रचनाकेँ केंद्रमे राखि अपन विचार प्रस्तुत कऽ सकी। तखन ईहो बात सत्य अछि जे हुनकर कविता-संग्रहक अध्ययन केलाक बाद एकटा गीत स्वतः मोन पड़ि गेल –'दुखहि जनम भेल, दुखहि गमाओल' निराशा ,कष्ट ओ संघर्ष आदरणीय रामलोचन ठाकुर के कविताक केन्द्रीय भाव छै। जेना भगवान बुद्ध कहने छथिन –'संसारमे दुःख छै' लेकिन ओ दुःखक समाधान सेहो देने छथिन। ठाकुरजीक कवितामे दुःख तँ छै लेकिन समाधान नै छै। ई चिकित्सक जकाँ समाजक रोगकेँ उजागर करैत छथिन,ईहो गप्प सत्य जे कवि समाधान देबे करथि से आवश्यक नै।

रामलोचन ठाकुर जीक रचना संसारमे सब तत्व विद्यमान अछि काव्यक सब रस भेटैत अछि , सर्वगुण सम्पन्न हुनकर विद्वता ओ गहराइ के साधारण चश्मासँ किन्नहु नै देखल जा सकैत छै। हुनकर काव्य-यात्रा

एकटा मानव जीवन सन उभर –खाभर ओ वैविधतापूर्ण छनि। अपन कविता सबमे सब बात फरीछ कऽ कऽ रखने छथि। आदरणीय ठाकुरजीक व्यक्तित्व ओ कृतित्वमे बेसी अंतर नै छै। जएह हुनकर जीवन सएह हुनकर रचना संसार। हुनकर तेवर अप्पन पहिलुके कवितासँग्रह 'इतिहासहंता'मे देखल जा सकैत अछि जतऽ ओ मिथिला मैथिली के अस्मिताक नामपर चलि रहल खेल के अस्वीकार कऽ दैत छथि बहुत रास बिम्बक माध्यमसँ अप्पन गप रखने छथि। जखन ओ अपन पहिलुके कविता 'मैथिली'मे कहैत छथि "मैथिली कें बनसँ नै /नैहरेसँ /बलजोरी घिसियबैत /ल गेल छला राक्षस-राज /आ

औखन रखने छनि /अशोक बाटिका मे/शोकाकुल मैथिली जतय /कुहरि –कुहरि /अपन जीवनक अंतिम क्षणक /प्रतीक्षा क रहल छथि /की करती बेचारी /विदेह बाप पहीनहिं देह त्यागि चुकल छथिन /राम छथिन नपुंशक /आ /हुनकेसँ जनमल /लव आ कुश की वीर पुरुष हेथिन”।ई पढलाक बाद कविक प्रति आक्रोश स्वाभाविक छै किएक तँ राम भारतीय सांस्कृतिक एकटा उत्कर्ष पुरुख भेल छलथि आ हुनका ‘नपुंसक’ कहनाइ बहुत खेदक गप्प भेल। लेकिन उपरोक्त कविताकेँ कएक टा तह छै सतही स्तरपर जतय एकटा साधारण मैथिलक पीड़ा ओ आक्रोश नजरि परिलक्षित होइ छै किएक तँ सीता संग भेल दुर्व्यवहारक कारणे रामकेँ लोक कथा कहनाइ ,गारि पढ़नाइ एकटा स्वाभाविक प्रतिक्रिया छै। मैथिल संस्कृतिमे जमाए ओ ओकर सासुरक लोककेँ हास्य-परिहास केनाइ कोनो नब गप्प नै। तँइ कहल जा सकैए जे ओ आवेशमे आबि एकटा सीमाकेँ तोड़ि आगू बढ़ि गेल छथि ,परंच ओ नैहर पक्ष ओ मिथिलाक लोक के सेहो नै छोड़लखिन। लेकिन यदि दोसर तहकेँ देखल जाए तँ ओ मैथिली भाषाक मादे सेहो बहुत किछु कहि देने छथि जे एखनो प्रासंगिक अछि लगभग 40 वर्ष पूर्व जे मैथिली भाषाक दुर्दशा छल वएह एखनो अछि अष्टम सूचीमे शामिल भेलाक बादो कतेको विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे शामिल भेलाक बादो खाली मंच ,पाग दोपटा ओ विद्यापति पर्व-समारोहक भाषा बनि कऽ रहि गेल अछि। कतेक विश्वविद्यालयमे विद्यार्थीक अभावमे मैथिली विभाग बंद भऽ गेल तँ कतेको ठाम बंद होमए के कगारपर अछि। ‘नैहर’ के मतलब एतय राज्य राखि देल जे तैयो बहुत किछ फरीछ भऽ जाइ छै ,राज्यमे मैथिली के कोनो सम्मान नै ,ओइसँ बेसी त दोसर राज्य जेना झारखंड /दिल्लीमे बेसी छै।

हुनका सन मातृभाषा प्रेमी ओ युगपुरुष मैथिली भाषा साहित्यमे कम्मे भेटत किएक तँ ओ मिथिलाके भूगोल,सांस्कृतिक परिदृश्य, आर्थिक-सामाजिक परिदृश्यसँ पूर्ण रुपें परिचित छथि। ओ गन्हाइत व्यवस्थाक प्रतिवाद करैत छथि। ‘नाटक ,निर्देशक आ एक गोट कविता’ शीर्षक कवितामे माध्यमसँ

कटु सत के जगजियार करैत छथि –‘जखन मंच से उतरैए /कुनु एक कलाकार /दर्शक दीर्घा से ल जाइए /एगो युवती कें /प्रतिवादी भाईक हत्याक पश्चात /मंचपर कएल जाइए ओकरासँग /सामूहिक बलात्कार /अभिनय के नामपर /तैयो शांत –एकदम चुप्पी आ /आन्दोलनमत्त भेल अभिनेता सब /क रहलए गरंथिया नाच’। अइ कविताक माध्यमसँ रामलोचन ठाकुर बहुत किछु बात कहि दैत छथि ,ई कोनो मैथिले समाज नै अपितु अभिनयक नामपर व्याप्त स्त्रीक शोषण, फूहड़ता ओ लोकक असंवेदनशीलताकेँ प्रकट केने छथि। आइयो दृश्य-परिदृश्य वएह छै अइमे कोनो बदलाबक कल्पना केनाइ संभव नै छै।

अग्रजक नाम शीर्षक कविता –केहन लागत अहाँके /जे भनसाघर कुनू /कसाइ खाना-कम किचेन –कम रेस्टोरेंट /बनि गेल हो ,आ /अहाँक अनुजक ससड़ी काटल खलड़ी ओदारल /देह झुलैत हो पछुअतिमे /ओकर टटका मांसक कबाब, आ /टटका रक्तक शराब बेचल जाइत हो। ओ एकटा जनवादी-प्रगतिवादी कवि के रूपमे आमजनक व्यथा–कथाकेँ निष्पक्ष आ बिना कोनो लाइ–लपटाइ के राखि दैत छथि। ओ मार्क्सवादक प्रभावमे छलथि आ ‘इतिहासहंता’मे सबटा एहने –एहने क्रांतिकारी कविता सब के संकलन छै। लेकिन हिनकर मात्र एक गोट कविता-संग्रहकेँ पढ़ि कोनो टैग नै लगायल जा सकैए, लगभग 45 बरखक काव्य साधनामे बहुत रस ओ रंगक रचना केलथि। ओ सब तरहक रचना चाहे तुकांत हो वा अतुकांत ,सब तरहक रचना केलथि। हुनकर बादक कविता सभक विषय वस्तु सेहो भिन्न रहलनि। परंच ई बात सेहो सत्य जे हुनकर मूल विषय मिथिला ,मैथिली ओ मैथिले रहलनि। अपन दोसर कविता –संग्रह ‘देशक नाम छलै सोन चिड़ैया’ (अरुणोदय प्रकाशन,कलकत्ता 1986 ई)मे ‘सुच्चा मैथिल’ शीर्षक नामक कवितामे मैथिलक दुर्दशाक वर्णन केने छथि – आइ भारती /गुदड़ीसँ झपने अंग /दाबापर चिपड़ी पथैत छथि /हीरामनि सुग्गा /पहिलहि मरि चुकल अइ /आ

/तीन दिनसँ अन्हार /तौनीसँ बन्हने अपन पेट /बैसल छथि /एकजनियाँ एकचारीमे /महापंडित मंडन मिश्र /स्वतः प्रणाम /परतः प्रणामम रटैत /जानि ने /कोन शंकराचार्यक /प्रतीक्षा छैन’। वस्तुतः मिथिला /मैथिल भूतकालमे जीबए बला छी ,अतीत कतबो सोहनगर किएक नै रहल हो, वर्तमानसँ बेसी सुन्नर नै भऽ सकैए। पुरातन संस्कार तखने बचि सकत जखन हम सब साकांछ भऽ अपना के आर्थिक ,सामाजिक ओ राजनीतिक दृष्टिसँ मजगुत रहब। उपरका कवितामे बहुत रास बिम्बक माध्यमसँ ओ सूतल लोककेँ फेरसँ जगेबाक प्रयास कऽ रहल छथि। रामलोचन ठाकुर मैथिली –मिथिलामे एकटा पुनर्जागरण चाहैत छथि।

मैथिलीक उपेक्षा ओ राजनीतिक –आर्थिक रूपे जानि बूझि कऽ पाछा रखनाइ के खेल सदतिसँ चलि आबि रहल अछि जकर कारण मैथिल स्वयं छथि। मिथिला राज्य आन्दोलनक नामपर सेहो बहुत किछ भेल बादमे जा कऽ भारतक संविधानक अष्टम सूचीमे शामिल तँ भेल लेकिन ओ वस्तुतः बहुत दिनक संघर्षक परिणाम छल। रामलोचन ठाकुर अपन कविताक मादे चेतौनी सेहो देने छलखिन जे मैथिली के जदि अपन हिस्साक उचित सम्मान नै देल जायत तँ ई आंदोलन भीषण रूप लऽ सकैए। भाषाक अस्मिता आंदोलन केहन –केहन देशकेँ तोड़ि देलकै आ रामलोचन ठाकुर अइ बातक उल्लेख कऽ मैथिली /मिथिलाक नामपर दोकान चलेनहार नेता ओ दलाल सबकेँ सतर्क करैत छथि।

आबहुँ तों चेत/ रे पटना के पंडा /रे डिल्लीक दलाल /हिंदीके पोसा कुकूर –शैतान /जुनि करबा /इतिहासक पुनरावृत्ति /सम्मुख ज्वालामुखी /बढ़ा जुनि डेग /सावधान /नहि तई मिथिला देश /बनत विश्व कें /दोसर बांग्लादेश /दोसर वियतनाम।

अग्नि पीढ़ीक कवि होमए कारणे जोशमे ओ कनि दूर चलि जाइ छथि बांग्लादेश ओ वियतनामकेँ मात्र एकटा संकेतक रूपमे लेबाक चाही किएक तँ हुनकर देशभक्ति ओ मिथिला भक्ति दूनु एक दोसर के पूरक छै हुनकर

हुंकार तँ मात्र माँ मिथिलाक हेरायल स्वर्णकालक स्मृति दिअबैत छै। हुनका ई कनिको स्वीकार नै छनि जे ककरो फूसिक आश्वासनपर निर्भर रही ओ अपन अधिकार के माँगबामे नै बल्कि जरूरत पड़लापर छिनबामे सेहो विश्वास रखैत छथि।

रामलोचन ठाकुर सब तरहक प्रयोग सेहो केलथि अपन कवितामे कतेको तरहक ज्यामितीय आकृतिमे कविता सब लिखने छथि। एकटा और बात हिनकर रचना सबमे हमरा लागल जकरा व्यक्त करै के लेल एकटा अंग्रेजी शब्दक सहारा लेब ‘bravity’ अर्थात संक्षिप्तता। ओ शब्दक खर्चक प्रति बड्ड साकांक्ष रहलथि जतबी शब्दक खगता ओतबी शब्द खर्च केलथि। हिनकर कविता–संग्रह सभ सबटा पातर –पातर भेटत, कविता सब छोट ओ माँझिल आकारक लेकिन मारुख लौंगिया मिरचाइ सन। कोनो कवितामेसँ जँ एकटा शब्द निकालि देल जाए तँ ओ सर्वथा अपूर्ण लागत तहिना हिनकर कविता–संग्रह सब कोनो कविता के यदि छाँटल तँ संग्रह झुझुआन बुझि पड़त। यदि हिनकर बात किछु शब्दमे संप्रेषित भऽ जाइ छै तँइ अनेरो ओकरा दीर्घ नै बनबै छथि। किछु बात ई हाइकूमे सेहो कहने छथि जकर मारक –क्षमता किन्नहु कम नै छै। उदाहरण :- ईहो बर्ख /ओहिना बीति गेल/ बुढ़ अथबल सूर्य /बस गैरेजक /पछुआरमे डुबि गेल एवं लाहौर बस /कारगिलमे ध'स /बिजेपी बस (बर्खान्त, लाख प्रश्न अनुत्तरित, 2003)

अपूर्वा जे 1996 ईस्वीमे छपल कविता –संग्रह अछि ओइमे सबटा कविता सबमे रामलोचन ठाकुर जीक अलग रूप देखबामे अबैए। हमरा बुझने प्रत्येक मैथिली–मिथिलासँ प्रयोजन रखै व्यक्ति सबकेँ ई संग्रह पढ़बाक चाही यदि नै पढ़ि सकी तँ कमसँ कम शुरुआती पाँच टा कविता अवश्य पढैत। अहि कविता सभक पहिल विशेषता ई छै जे कविता सब तुकांत छै आ रामलोचन ठाकुरकेँ वामपंथी चश्मासँ देखनाहर लोक सब के लेल निराश करतनि। रामलोचन ठाकुरक विराट व्यक्तित्वक दर्शन होइत छै। ओ मैथिली–मिथिलाक निधि एवं

हुनकर कृतित्व सबकेँ प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत भावुक करैत छथि संगे समकालीन ओ कनिष्ठ पीढ़ीक लेल प्रशंसाक शब्द रखैत छथि। किछु पंक्ति सभ नीचा देल गेल अछि :-

धीरेश्वर धीरेन्द्र बनि धयल जनकपुर धाम। ठुमकि बहथु कमला भने ओ नहि घुरता गाम।।
माया मायानंद के पाथर बनले मोम। गीजि गीत गीतल बनल भांगक लोटा होम।।
पाथर जे पसिझैत अछि देखु कबिलपुर जाय। रामदेव कविएल छथि अजगुत कहल न जाए।।
गुंजन नहिं गंगेश ओ आइ भोर के आश। नाम उचितवक्ता हिनक लोक सुनु नवभास।।
बुद्धिनाथ मिश्रक सकल रचना अर्थ प्रधान। हिंदीमे तें गवै छथि सोहर आ समदाउन।।

रामलोचन ठाकुर वर्तमान राजनीति –व्यवस्था ,राजनेताक स्वार्थसँ नीक जेना परिचित छथि,ओ अइ बातसँ एकदम व्यथित भऽ जाइत छथि जे राजनीति जे एक समयमे देशक गरीब –गुरबा, दलित-शोषितक उत्थानक लेल एकटा पुनीत कर्तव्य छल आब ओ महज लूट-खसोट ओ पूंजीपति –वर्गक संरक्षणक एकटा साधन बनि गेल अछि। व्यवस्था सड़ि गेल अछि :-

दिल्ली आकुल अछि अगबे निर्यात लए
गामक चिंता दुनु साँझ बुतात लए
नेता लोकनिक नजरि विदेशी नोटपर

सत्य देश चिंता सीमित अइ मंच धरि
वास्तवमे सभ मरैछ अपन गतात ले (नेता ओ जनता, अपूर्वा, 1996)

एतेक बर्ख बितलाक बादो राजनीतिक रंग-रूप नै बदलल अछि। स्थिति दिनो दिन खरापे भेल जा रहल छै, तँइ रामलोचन जीक बात एखनो ओतबे प्रासंगिक अछि जते पहिले छल।

हमरो एकटा गाम छल ‘बरखामे बिलंब देखि /गमैया पुजाक सँगोर /जाट-जटिन खेलबामे व्यस्त/महिला समाज /तजियाकसँग /झरणीपर झूमैत किशोर ,तरुण दल /फगुआक अबीर / आ जुड़-शीतलक कादो-माटिकसँग /हमर गाम जीबैत छल .. हम ताकि रहल छी सएह गाम /अपन गाम ‘

उपरका कविताक विश्लेषणसँ लगैत अछि जे रामलोचन ठाकुर एक तरफ मिथिलाके समृद्ध देख’ चाहैत छथिन तखन जखन लोक बदलल गाम देख क ओ किएक ने हरखित छथि? जखन वैश्वीकरण/भूमंडलीकरण सब व्यवस्थामे परिवर्तन अनलकै तखन गाम कोना अपरिवर्तित रहि जेतै। मिथिलाक दुर्भाग्य जे लोक रोजी-रोटी ओ शिक्षा के लेल पलायन कऽ गेल। गाममे बूढ़ कि लाचार लोक भेटत गामक–गाम सुन्न। महल सब भम्म पड़ि रहल छै। गाम तँ ठीके हेरा गेल छै ,परंच बदलल गामकेँ सेहो स्वीकार करऽ पड़त। गाममे एखनो बड़ किछु बाँचल छै, गामकेँ मात्र पिकनिक स्पॉट के रूपमे नै देखबाक चाही, ओतुक्को लोकक जीवन स्तर बदललैए, सबके जीवन स्तर बढ़लैए नीक कपड़ा ओ नीक घर सबके छै।

रामलोचन ठाकुर एकटा क्रांति-धर्मी कवि रहितो एकटा खास दृष्टिकोणसँ आगू नै बढि सकला। संघर्ष के बाद आयल सुख के वर्णन नै करैत छथि। ई बात सत्य जे हिनकर कविता सब ओइ समयक वर्णन करैत अछि जाहि समयमे ज्ञान-विज्ञान, धन ओ शक्ति किछु खास लोक तक सीमित रहै आब समय बदललैए आब ओ बात नै छै सब पढै-लिखै छै। जाति-संघर्ष नै रहि वर्ग-संघर्ष छै –‘बीसम शताब्दीक शेषक / सभ्य सुशिक्षित मनुक्ख /शब्द के बना

लेने छी अस्त्र /अस्त्र विभाजनक /अस्त्र शोषणक /अस्त्र संहारक/ आइ शब्द स्नेह नहि /घृणाक करैत अछि सृष्टि-संसार------ शब्द आइयो अछि/ मुक्तिक हेतु कछमछाइत /आकुल-व्याकुल पेबाक लेल/ अपन हेरायल अर्थ/ तकैत अछि बाट/ कोनो वाल्मीकि,विद्यापति, कृतिवासक/ शब्द आइयो थिक ब्रह्म' (शब्द –लाख प्रश्न अनुत्तरित 2003) अइ कवितामे दू तरहक परस्पर विरोधी बात छै, अपनहि कहल गप्पकेँ अपनहिसँ कटैत कवि रामलोचन ठाकुर बात के विराम दै छथिन एक ठाम शब्दकेँ शोषणक पर्याय बनेने छथि त दोसर ठाम शब्दकेँ ब्रह्म। वास्तवमे ओ अपन मोनक भावकेँ खोलि कऽ राखि दै छथिन ,'पॉलिटिकली करेक्ट' हेबाक चेष्टा कखनहु नै करैत छथि किएक तँ हुनका पुरस्कार, मंच मालाक कोनो मनोरथ नै रखलथि। ओ कतियायल रहलाह कि राखल गेला से तँ नै बुझल अछि किएक तँ मैथिली साहित्यक हम बड नव विद्यार्थी ओ पाठक छी मुदा एतेक बात तँ कहि सकैत छी जे रामलोचन ठाकुर अपन विचार ओ क्रांतिधर्मिताक गुण किन्नहु नै छोड़ि सकलाह। उदासी, अनुचितक प्रतिवाद हुनकर स्थायी भाव बनि रहि गेलनि। रामलोचन ठाकुर वैश्विक राजनीतिक घटनाक प्रति सेहो साकांक्ष रहल छथि। 'नेल्सन मंडेला' नामक शीर्षक कवितामे ओइ विराट महामानव के लेल लिखने छथि जाहि समयमे ओ जहलमे छलथि –कोनो /रक्तबीजी बाजक /चांगुरसँ चोंचधरि किकियाइत /विगत छब्बीस बर्खसँ छटपटाइत /एकटा श्वेत कपोत - नेल्सन मंडेला। एतबे टा नहि ओ भारतक पड़ोसी देश अफगानिस्तानक बिगड़ैत परिस्थिति हुनकर कवि मोन के झकझोड़ि देने रहैन्ह जकर उल्लेख ओ 'ओइ दिन उगल नै छल सूर्य'मे केने छथि –' ओ देखलक / चौबटियाक बिजुलीक खम्हा से झुलैत/ एगो लाश /क्षत- विक्षत, सोणिते-सोणितान /अपन पोती के कोरामे उठबैत /फिसफिसायल रहमत - /"नाजीब !संयुक्त राष्ट्रसँघक सुरक्षामे तोहर ई परिणति !/ मौलवाद, युद्धवाद तालीबान/ जे गति हिनकर भेलनि/ सैह गति तोरो लोकनिक हो।"

अंतमे एतनी कहि सकैत छी जे रामलोचन ठाकुरक मैथिली, मिथिला ओ मैथिलक प्रति स्नेह, समर्पण ओ कर्तव्यबोध अविस्मरणीय छनि। आदरणीय ठाकुरजी एकटा क्रांतिधर्मी, आन्दोलनी ओ मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर के रक्षा केनिहार एवं निडर व्यक्ति रहलाह। जएह हुनकर जीवन सएह हुनकर रचना। जरूरी छै जे हिनकर साहित्यिक अवदानक और वृहत रूपमे चर्चा होय। हिनकर छपल कविता सभक संग्रहकेँ एकटा समग्र पोथी के आकार देल जाए किएक तँ हुनकर बहुत रास रचना सब यत्र-कुत्र पसरल छै। हुनकहि रचनासँ हम अइ आलेख के सम्पन्न कर' चाहब जे हुनका जीवनपर एकदम सटीक छै :-

कतौ रहब हम करब कुशलेक कामना
खगता हो शोर करी तेजी भूल भावना
हम ने बेर बीतल जे घूरि ने फेर ताकत (बाट अहाँक ताकत – अपूर्वा 1996)

संदर्भ :

1.इतिहासहंता,रामलोचन ठाकुर, शिखा प्रकाशन, कलकत्ता, 1978

2. देशक नाम छलै सोन चिड़ैया,रामलोचन ठाकुर, अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता , 1986

3. आजुक कविता,संपादक –रामलोचन ठाकुर, अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता,1984

4. अपूर्वा,रामलोचन ठाकुर,मिथिला समाद, कलकत्ता,1996

5. लाख प्रश्न अनुत्तरित,रामलोचन ठाकुर, अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता/ बाबुपाली ,2003

6. आँखि मुनने: आँखि खोलने, रामलोचन ठाकुर, अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता/ बाबुपाली ,2005

7. Contemporary Marxist Literary Criticism, Fancis Mulhem, Routledge, London, 1992
8. http://videha.co.in/

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

भीमनाथ झा-संपर्क-7482066855

बचा दिअ भाइकेँ

जड़ि तँ रामलोचनजी आ हमर एकै नर्सरीक गाछक अछि। मुदा हुनक थल्ला रोपा गेलनि कलकत्ता आ हमर रहि गेल गामेक कोनो छोट हत्तामे। माटि-पानिक भेद फलक स्वादमे जतबा अंतर आनि दैत छै से तँ छैके, ताहिसँ बेसी ई भेलै जे ओकर ताकुत केनिहार नीक भेटलै आ एम्हर ई एक हिसाबें अनेरुआ भऽ गेलै।
रामलचोनजीकेँ साहित्यिक प्रशिक्षण नीक भेटलनि आ हमर सोच विशृखंल भऽ गेल। ओ ओतए गोड़ी रोपि लेलनि आ हम बौआइत रहलहुँ बेगूसराय, बखरी, कुशेश्वरस्थान, राँची, पटना, दरभंगामे। ने हम कलकत्ता बेसी गेल छी आ ने वएह इम्हर अधिक अबैत रहथि। कवि सम्मेलनोक मंचपर दूनू संग-संग कदाचिते अभरी। कारण वएह दूरी। कलकत्ताक साहित्यिक समारोहमे हम चारि-पाँच खेप गेल हएब। ओहो इम्हर तहिना आएल हेताह जतए हमहूँ पहुँचल होइ। तँइ भेंट-घाँट सेहो हिसाबेंसँ होइत रहए। पत्राचार एहिसँ कने बेसी। पत्रलिकक्खड़ हम छी नहि।, ईहो नै छथि। हँ पत्र उत्तर अवश्य देबाक इच्छा रखैत छी। से इच्छा हिनको रहैत छलनि। पछाति फोन एलापर ओ तँ बंदे जकाँ ई कने ताहिसँ बेसी चालू भऽ गेल छल- कनियें बेसी ई जखन

'मिथिला दर्शन'क संपादक (कार्यकारी) भऽ गेला आ हम हिनक लेखक, तखन बेसी काल फोनक घंटी हमरे बाजए। दर्शनोक अवसर, हिनक गाम अबरजातिक क्रममे, कने बेसी पाबए लगलहुँ।जतेक सुविधासँ ई अपन विचारक प्रतिकूलो व्यक्तिसँ आत्मीयता स्थापित कऽ लै छथि, से हिनक व्यक्तित्वकेँ उदाहर आ भास्वर बनबै छनि। साहित्यक प्रति हिनक की विचार छनि ई सर्वविदित अछि। जकरा परंपरावादी सोच कहल जाइछ, तकर विरुद्ध युद्ध केनिहार दलक एक टुकड़ीक नायक ईहो मानल जाइत छथि। स्वयं 'इतिहासहंता'क रूपमे अपनाकेँ ठाढ़ करै छथि। अपन रचना लक्ष्यक उद्घोष करै छथि ई- "सरिपहुँ उगिलत आगि कलम/ हो चिनगीये/ रखने अपना अन्तरक मध्य/ क्षमता अजस्र/करबाक सृष्टि दावानलकेँ/ जे जरा करत सुड्डाह/ मात्र कूड़े-कर्कट नै/ घास-पात/ बँसबिट्टी-बेल-बबूर-बर-पीपरक गाछ"

आ सरिपहुँ हिनक लेखनी आगि उगिलललकनि, चिनगी उड़ि कऽ अग्रजक आंगपर पड़लै आ सट दऽ दागि देलकै-

"मुदा / अहां नञि / अहां सन नञि / अहां /हमरा सोझा सं फराक भ जाउ/ हम नञि देख' 'चाहै छी/

अहांक मुंह/ नञि सुन' चाहै छी/ अहांक मुंहे कुनू इतिहास/ ई एक-एक घटना/ एक-एक नाम/ की ताइ सं कम महत्वपूर्ण अइ/ कत्ते नीक होइत/ जे आइ/ अहूं बनि गेल रहितौं/ कुनू एगो घटना/

एगो नाम/ एगो इतिहास/ आ हमर छाती/ सूप सन भ गेल रहैत/ किन्तु अहां से नञि भेलौं/अहां से भइयो ने सकैत छी/ आ हम/ एखन नञि लिखि सकब/ करिया मोसि सं/ उजरा कागत पर/ कुनू कविता/ कथा/ इतिहास /अप्रयोजनीय/ अस्थायी / देखैत नञि छी / हमरा हाथमे / चमकैत पंचकमनियां भाला/ चलि पदल छी हम/ लाल टुह-टुह रक्त सं / पिरथीक विशाल वक्ष पर / लिखबा लेल एगो कविता / एगो कथा / एगो इतिहास"

हिनक मनोनुकूल हिनक अपन समाज, अपन लोक, अपन संस्कृति, अपन साहित्य "एगो घटना/ एगो नाम/ एगो इतिहास" नै बनि सकलनि तकर बड़ आक्रोश छनि हिनका, आ तें उताहुल छथि " स्वयं बनि जेबाक लेल एगो घटना/ एगो नाम/ एगो इतिहास" आ तें हिनक हाथमे जे कलम देखै छियनि से असलमे थिकनि "चमकैत पंचकमनियां भाला"।

हिनका के उत्तेजित करै छनि, आदर्श की छनि, तकरो खुलासा कऽ देने छथि- "फ्रांस रूस चीनक/ क्रान्तिक कथा/ वियतनाम लाओस कम्बोदिया/ चीली आ क्यूबाक/ संग्रामक कथा/ रूसो मार्क्स एन्जिल्स/ लेनिन स्टालिन माओ/ चू-ते होचिमिन्ह मारकुस/ नेरुदा सार्त्र चे-गुएवाराक नाम/ राजकमल सुकान्त गोर्की/ लू-सुन लुमुम्बाक मृत्यु सम्बाद/ हेमिंग्वेक आत्महत्या/ आर कते रास की...."

मानल बात थिक, जकरा ई सभ उत्तेजित करतै ओ क्यो रहय, ओकरा धर्म-कर्म, नियम-निष्ठा, अपन परंपरा, अपन संस्कार-व्यवहार-लोकाचार बलाय लागऽ लगतै, ताहिसँ ओ मुक्त होबऽ चाहतै, अपन सहगामी-अनुगामीसँ एहने अपेक्षा रखतै, ओकरा सभकेँ ताहि लेल प्रेरितो करतै। अदौसँ चल अबैत सिलसिलाक खिधांस करतै, ओकर दोष गनौतै।

तँ की से रामलोचन ठाकुर कयलनि? कहबा लेल जे कहि लेथु, मुदा हिनक पुष्कल रचना, एकाधिक पोथी एकर साक्षी अछि जे ई मिथिलाक लोकसंस्कृतिकेँ निकृष्ट नहि मानैत छथि अपितु अपन परंपरा हिनका उत्कृष्ट लगै छनि, आकृष्ट करै छनि। मैथिली काव्यक छंद, यति, लय, तुकपर ई हँसैत तँ नहिएँ छथि उनटे ओकरा स्वायत्त कयने छथि। जाहि कोटिक रचनाकेँ हिनक दलीय मित्र लोकनि परंपरावादी कहि तिरस्कार कहै छथिन, ताहू तूरक हिनक रचना थोड़ नहि छनि।

हिनक एक पोथी अछि 'माटि-पानिक गीत'। ओहि महक किछु पाँति देखल जा सकैछ-

"तीर पर अवस्थित पुनि यज्ञ तीर-तीर
पावन एहि धरतीक तीर्थ गाम-गाम
स्रष्ट जन पूजक आ पूजित हो सृष्टि
माटिक शिव बना पुनि प्रतिष्ठाक प्राण
महिमा गबैछ जकर उपनिषद् पुराण
मिथिले मम मातृभूमि तिरहुत ललाम
एक अन्य गीतक ई अंश सेहो द्रष्टव्य--

कुटिया पीसिया करैक माय नाम दुर्गादत्त
बेटाक कहू कथा ई न के जनैत छी?
एक चुरू पानि बरू डूबि मरू नीक थिक
मिथिलाक नामपर कलंक की मढ़ैत छी

एक अंश ईहो-

जाहि माटिसं जन्मलि सीता
सएह हमर ई धरती
यज्ञवल्क्य गौतम कपिल के
भूमि रहत नञि परती
सुग्गा शास्त्रक गप्प करै छल
तकरे गीत सुनाबै छी

एतबे नहि, ताहिसँ आर आगाँ छथि ई। मिथिलामे प्रचलित जे रंग बिरंगक लोककथा अछि-सुच्चा मैथिलीक लोककथा, तकर ई विलक्षण संग्रह कयने छथि। ई सभ कथा जे लुप्त भेल जा रहल छल, शहरी संस्कृतिमे पालित नेना-भुटका लेल जे अनचिन्हार भऽ गेल छल, मुदा जहिमे मिथिला बजैत अछि, जाहिमे अपन पूर्वज बजैत छथि, जाहिमे अपना लोकनिक समाजिक सांसकृतिक आर्थिक आ मानवतावादी आस्था संचित अछि, तकर वर्तमान आ भविष्य लेल जोगा कऽ राखि देलनि अछि रामलोचन ठाकुर। वएह रामरोचन ठाकुर जे कहै छथि हुनक हाथमे कलम नहि "पंचकमनियां भाला" छनि।

मुदा हमरा तँ बुझि पड़ै अछि, हुनक हाथमे कलम नहि, चंपा-चमेली, बेली-गेना, सिंगरहारक पंचसुगंधित माला छनि। ततबे नहि, वर्तमानन कालक लगभग समस्त प्रसिद्ध साहित्तिक व्यक्तित्वक परम्परित कुंडलिया छंदमे तथा सिद्ध-असिद्ध शतावधि लेखकक परम्परित दोहामे जे ई परिचय प्रस्तुत कयने छथि, सेहो हिनका मिथिलाक माटि-पानि आ परंपरासँ जोड़ै छनि। एकरा तँ हम कहब, हिनक हाथमे मैथिली कवि-पूजन लेल प्रस्तुत दही-धान-पान-मखान-मिठाइ पूरित चुमानक डाला छनि। रामलोचनजीक सोझाँ जखन हुनक एहि अंतर्विरोधकेँ रखै छलियनि, तखन ओ तेना मुस्किया उठथि जेना कहि रहल होथि- एत्ते सोझ नै छै बूझब। डूबऽ पड़ैत छै।

हमहूँ मुस्किया दियनि-डूमू अहाँ। डूमल तँ छीहे। जनिके रूचय तनिके गीत गाउ।...

मुदा नहि भाइ, अहाँ डूमू नहि। फेरसँ उगि आउ। अहाँ भने नहि मानियनु, हमरापर तमसाउ भने, मुदा हम तँ भगवानकेँ गोड़ लागि कऽ कहिते रहबनि-बचा दिअ भाइकेँ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

महाकांत ठाकुर-संपर्क

माटि परहक लोक

हमर पाली मोहन गाम, एहि अर्थमे उछितगर अछि जे पचीस टा जाति हीलि-मीलि कऽ रहि रहल छथि। गामक अपन इतिहास होइ छै। मुदा किछु सुकर्मी की किछु कुकर्मी ऐतिहासिक भऽ जाइत छथि। अइ गपकेँ कते सुंदर लोकोक्तिमे कहल गेल अछि- सुकर्महि नाम कि कुर्महि नाम। हमर पात्र काल्पनिक नहि छथि। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक गाम हुनका नहि जनैछ। ज्योतिरीश्वर चौक पाली, नहि जनैछ लोक । पाली मोहन, सेहो नहि। लोक जनैए: मरनी चौक, बाबू पाली। जे डाक घर कि कोनो सरकारी कागतमे नहि अछि। अही चौकसँ पूब, चारिम-पाँचम घराड़ीपर सूरति ठाकुर रहथि। निसंतान। ई घरारी नहि रहै, एकटा खत्ताक कातमे किछु धूर खाली जमीन रहै। सझिया आँगनमे भरत ठाकुर, घरक ठाकुर, सरक ठाकुर आदि पहलवान, बहलमाध ठाकुर सभ संतानहीन सूरति ठाकुरकेँ आँगनसँ बैला देलकनि। ई कहि जे कोन ठीक पिता बनि जेबें,जगह बदलने। मिथिलामे बड़ सुंदर चलन रहै। हगना नाम रखबहि कि कोनो तेहने सन, पपिआहा नाम तँ नेना जल्दी नञि मरतौ। बेसी दिन जीतौ । सूरति ठाकुर जेना तेना रहक ब्योंत केलनि एतय। रमलोचनाक जनम एतहि भेल रहै, महा दीदी कहलक। बेचन के बेचना, फेकन के फ़ेकना दुलारक नाम मानल जाइ। सूरतिकेँ सुरता, जीबछकेँ जिबछा, युगेश्वरकेँ जुगबा आदि भेटैत अछि। हरि गाममे पाँचे-दस गोटे साक्षर, सभ टोलमे एक टा कऽ अखाड़ा जरूर रहय। बारह-बरना गाम। बाहर, माने

गामसँ निकलक बाट बड़ विकट, थाल-पानि हेलू तँ निकलू। ओना कटही गाड़ी आबय जाय जोगर एकलिखा सड़क चारुदिश। थाना खजौली, जिला दरभंगा........। जमींदारक ड्योढीक गाम। मतलब बाभनक गाममे राड़-पँजियार । तें पाली मोहन आ ज्योतिश्वरकैँ हटा बाबू पाली बनाबक खेड़हा बराक....एतय राम लोचन ठाकुरकैँ लालन-पालन हेतनि/भेलनि।

सूरति ठाकुर बिना कोनो हील-हुज्जतिकैँ सपत्नी रहय लगला एहि तिनकोनमा घरारीपर। न्याय प्रिय समाजमे। संतानहीनकैँ कते सम्मान। मुदा नहि, किछुए बरखक पछाति ओ पिताक गौरवशाली पदपर प्रतिष्ठित भेला। पूरा समाज हर्षित। पत्नी कोकण बालीक खुशीक ठेकान नै। कोकण वाली (नाम मने शारदा देवी रहनि) केर सुखक हृदय नीकसँ भरलो ने रहनि कि पति परमेश्वर माने सूरति ठाकुर स्वर्गवासी भऽ गेला। चारुकात कनफुसकी शुरू भेल। शिशु माने चिलका बपखौका भेलै। बपटुग्गर नेन्नाक प्रति लोकक भाव बूझल जा सकैछ।

कोकण वाली कि दिआद-बाद अपनहि लल्ल। धन बीत आ विवेकसँ सेहो। तें जेना-तेना माय अपने आ नेनाक पेट भरि जीबि लेबाक दुस्साहस करैत रहली। बपटुग्गर बालक बटुक भेला। बगलक दिआद सुखदेव ठाकुरक पिता हल्ली ठाकुर ड्योढीक गुमास्ता रहथिन। ऊंचगर दलान आ परोपट्टाक मानल सम्मान संग किछु गोटेमे खिस्सा पिहानी बाँटथि। हुनका दलानपर दस-बीस गोटेक बैसार सदति रहिते छलनि। ओ कहिओ काल टोलक नेना सभकैँ भट्ठा पकड़ब सिखाबथि। कहय लय गाममे विद्यालय रहै पाँचवा धरि। मुदा मारिक डरे कम्मे बच्चा नाम लिखबैत छल। पढब-लिखब स्वान्त: सुखाय कर्म मानल जाइत रहै। माय-बाबू की समाजक कोनो आग्रह नञि पढ़य लेल। कारण पढ़क उपयोगिता बुझले ने ककरो। खनदानी कारबारमे संग पूरब नेन्नहिसँ शुरू होइ। कुम्हारक बेटा बासन गढ़यमे निपुण होबक प्रयास करैत छल तँ

बनियाक नेन्ना व्यापारमे। ई दुनु पड़ोसी एहि बालकक। हल्ली ठाकुरक दलान टापर रंग-बिरंगक गपास्टक होइत छल ।

एहन परिवेशमे पढ़य-लिखक प्रेरणा भेटक कारण कारण अज्ञाते। तथापि हमर बटुक शिक्षा आरंभ केलनि आ मारि नहि लागय, ताहि डरे, मोन खराब की बिकालो समयमे छुट्टी नहि करथि ।

लोक जीवित कोना रहता, पेट भरक कोन उपाय करय पड़त, तकर चिंता बेसी। उपजाबारी कम होइ । तीन-तीन बरख रौदी, महामारी, चेचक, हैजा, टीबी सन महामारीक प्रकोप। तँ ई मसोमातक बेटा पढतै। कथी करतै पढ़ि कऽ । इह........

मलखान की बबुआनक ढेकरबसँ भुक्तभोगिए टा नहि पूरा समाज डेराइत छल। बौना। भोजनमे की सभ छलैए? बात दाइल अल्लुक सन्ना। ऐ नारायणपुर बाली। कनी सुनू। ई मसोमातक बालक भात दाइलपर अल्लुक सन्ना भोजन केलक अछि। भगवान सबहक ने छथीन। अहीं टा नहि ने छी.....माटि परहक लोक लेल खाय-पीबय लय रहै भरुआ, अल्हुआ, खेसारी, इशारा, पोखरीक पाइन । तखन एक टा अनमोल वस्तु रहै, सभक हृदयमे प्रेम ठोरपर मुस्की, चून-तमाकूक स्नेह। माटिक मनुख सभ लग। तदपि कनैत नहि छल एना लोक। सागोभात अनूप ।मसोमात अपना बेटाकेँ महीसक चरवाह की घसबाह बनएसँ बचा कऽ रखलनि । खिस्सा-पिहानी, लिखना आ काज उदेममे निपुण कोकण वालीक पुत्र मैट्रिक पास केलकनि ।

(मैट्रिक धरिक खिस्सा एहि संस्मरणमे अछि आ तकर बाद संभवतः रामलोचन ठाकुर कलकत्ता चलि एलाह आ ओकर बादक क्रमबद्ध लेखन तँ नै भेल अछि मुदा अतेक तँ जरूर छै जाहिसँ रामलोचनजीक कलकत्ताक कालखंडकेँ नीक जकाँ देखल जा सकैए। एहिमे आएल नाम सभ ओहिना राखल गेल अछि-संपादक)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अरविन्द ठाकुर-संपर्क-9955155156

अपूर्णता जखनि नियति हुअए [सन्दर्भ:रामलोचन ठाकुरक काव्य-रचनाक मूल्यांकनक अपूर्ण प्रयास]

अहा कलकत्ता!

कलकत्ता! कोलकाता! पश्चिम बंगालक राजधानी!

तिरहुत जनपदक बेरोजगार सभक लेल मोरंगक बाद आ दिल्ली-पंजाब सं पहिनेक दालि-रोटीक ठिकाना।

जेकर नाम सं बहुत दिन तक कोनो रेलवे स्टेशन नहि रहए आ जेकर काम हाबडा आ सियालदह सं चलैत रहए।

जेतय हाल-हाल तक हाथ रिक्शा चलैत रहए,प्रतिबंधित भेलाक बादहु चलए छै आ जेकरा चलाबैक लेल पशुक नहि,मनुष्यक उपयोग(?) होइत रहए,होइ छै ।

जेकर भुइयां दिआ कहल जाइ छै जे ई भीतर सं फोंक छै।

एहन अमानवीय नगर,जेतय लोकक भीड़क बीच सड़कक पटरी पर कोय मरि जाइ,तखनिअहु रफ़्तारक बबन्डर मे उड़िआइत लोकसभ पर कोनो असर नहि,ओकरा भीतर कोनो उत्सुकता,कोनो संवेदना,कोनोटा भावना नहि जागए।

जेकर स्थापना 1690 मे मुट्ठी-भरि फिरंगी तिजारतीसभ कएने रहए,जे1772 मे अंग्रेजसभ द्वारा ‘भारत दैट इज इंडिया’क राजधानी बनाएल गेल रहए आ 15 अगस्त,1947 कें अंतिम अंग्रेज गवर्नर जनरलक विदा भए जएबा तक जे नगर/शहर भूमंडल पर राज करैक अंग्रेजी सपनाक प्रतीक रहए।

जे नगर हिंसा आ अराजकताक घर छै आ जेतहुका नागरिकगण आइयो एहि मिथकक भरोस करैत अछि जे साम्यवाद ओकर संरक्षण करत आ सभटा विघ्न-बाधा सं पार लगाए देत।

जाहि नगर पर डोमिनीक लापिएर ‘द सिटी आफ जोय’ नाम सं उपन्यास लिखि एकर घिनाएल बस्तीसभ कें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कलंकित कए साहित्यिक व्यावसायक कीर्तिमान बनएलनि आ ईसाइ धर्मक कृपालुता कें महिमामंडित कएलनि।

से,एहि कलकत्ता मे मधुबनीक बाबूपाली गाम सं आबि अपन जीवनक चारि दशक सं बेसीक अवधि बितैनिहार कवि छथि – रामलोचन ठाकुर। आ से सामान्य कवि नहि,घोषित रुप सं दुर्घर्ष (किताब पर ‘दुर्घर्ष’ लिखल देखाइत अछि,शुद्ध प्राय: ‘दुर्द्धर्ष’ हेतए) अग्निहस्ताक्षर छथि आ कविता नहि करए छथि,अग्निलेखन करए छथि।इतिहास कें पछाड़ैत,मिथिहास कें धकियाबैत मिथकक घटाटोप मे धावा मारए छथि आ शाब्दिक ताप एहन जे अपन पहिल काव्य-संग्रहक नामकरण “इतिहासहंता” करए छथि।

इतिहासहंता बनाम मिथकजीवी

रामलोचन ठाकुर स्वयं कें 'तामसक कवि'क रूप मे प्रस्तुत करबाक आग्रही छथि आ एहि विशेषण कें प्रमाणित करबाक क्रम मे अपन कविता मे आगि भरैक पुरजोर प्रयास त करितहि छथि,एहि बातक पैरोकारी करबाक लेल अपन अधिवक्ता सेहो नियुक्त कएने छथि।एहि प्रयासक क्रम मे हुनक बहुर रास कवितासभ कृत्रिम,सूत्रबद्ध किंवा 'लाउड' भए गेल अछि। किन्तु हुनक कवितासभक रचनाकाल कें देखैत एहि बातक प्रशंसा आ स्वागत कएल जएबाक चाही।मैथिलीक मसुआएल,मिझाएल परम्परावादी कविता-साहित्यक जे पथार ओहि काल-विशेष तक प्रकाश मे आएल छल,तेकर परिपेक्ष्य मे ई तेवर एकदम अभिनव आ क्रांतिकारी बुझाइत अछि।

'इतिहासहंता' काव्य-संग्रहक प्राकट्य-काल अछि उन्नैसम इस्वीक सातम दशक आ एहि मे 1972 सं 1977क बीच लिखल 'मैथिली' सं 'जेठुआ मेघ' तक एक सोरय(16 टा) कविता कुल 37 पृष्ठ मे समेटल अछि।प्रथम कविता 'मैथिलि' मे कविक शब्दसभ फुफकार छोड़ैत अछि।तामस उर्ध्वगामी भेल अछि – 'मैथिली कें वन सं नहि/नैहरे सं बलजोरी घिसिअबैत ल गेल छल राक्षसराज' वा 'विदेह बाप पहिनहि देह त्यागि चुकल छथिन' वा 'राम छथिन नपुंसक' वा 'हुनके जनमल लव-कुश की वीर पुरुष हेथिन' वा 'दशरथक बरखी मे मैथिलीक आपसीक सिपारिसक भीख मांगैत तीनू बापते' – पराकाष्ठा दिस जाइत।किन्तु तामसक ई पराकाष्ठा,ई उर्ध्वगामिता अपन वेध-आकांक्षा लेल की कोनो लक्ष्य सेहो निर्धारित कएने अछि?से निर्धारित अछि त देखाइ किऐ नहि पड़ैत अछि?आक्रोश कवि-कविताक आन्तरिक शक्ति होइ छै,किन्तु तखनि,जखनि ई सही मिकरात मे हुअए,संतुलित हुअए।संतुलन आ मिकरातक(मात्राक) एक रत्ती फ़र्क एहि आक्रोषक अभिव्यक्ति कें गारि मे बदलि दैत अछि,अभिजात्यक भाषा मे जेकरा शाब्दिक हिंसा कहल जाइ

छै।तामसक स्वर 'विध्वंस मात्र' मे सेहो छै,किन्तु हाहाकारी शीर्षकक बादहु एहि कविता मे 'नवनिर्माणक मार्ग प्रशस्त' हेबाक कामना सेहो छै।बढियां!

संग्रहक प्राय: प्रत्येक कविता कोनो ने कोनो सन्दर्भ सं जुड़ल बुझाइ छै,किन्तु जेंकि ई सन्दर्भसभ व्यष्टि-अंश अछि,समष्टि-अंश नहि,तें पाठक लेल सन्दर्भक अज्ञान कविता कें बुझबा मे बाधक होइत अछि।प्राय: इएह कारण सं 'नाटक,निर्देशक आ एक गोट कविता' किए ने किए हमरा जीवकांतक 'धार नहि होइछ मुक्त' संग्रहक स्मृति दिआए देलक,जे छपल त रहए सामान्य रुप मे,किन्तु पुरस्कारक प्रत्याशा मे ओकरा हार्ड बाउन्ड आ नवका कभर सं सुसज्जित कएल गेल रहए।'सर्वहारा टी स्टाल' मे पहिल बेर किछु कलकतिया दृश्यसभ आएल छै,किन्तु ओ कविताक भाव-मूल मे नहि छै।एहि कविताक अंत कविक स्वगत प्रश्न सं होइत अछि – 'त कि/हमरो लेल कविता लिखब/कुनू फैशन थिक वा आदति'।कविक अग्निलेखन एहन अतस्तितह मे किए पड़ि जाइत अछि?सर्वहाराक कविता बनैत-बनैत एकर परिणति आत्मरोदन मे किए होइ छै?एहने अतस्तितहक पुनरावृति 'अन्तरक ज्वाला हमर' मे देखाइ पड़ैत अछि जखनि कविताक प्रारम्भ मे कवि कहए छथि – 'जनै छी हम/शब्द मे नहि छैक ओ सामर्थ्य/क सकै जे सही व्याख्या भावना कें आइ/तद्यपि बन्धु!'।ई कविता बाद मे जाए कए सम्हरए छै,किन्तु हारल मन सं की कोनो जीतक आशा कएल जाए सकैछ?प्रथमे ग्रासे मक्षिका पात:।जखनि शुरुए मे शब्द कें सामर्थ्यहीन सकारि लेल गेल,तखनि बिगुल फूकए सं पहिने 'तद्यपि' त लगाबहि पड़त आ ई 'तद्यपि' तमाम हरबै-हथियार कें भोथ कएअहि देत,ताहि मे कोनो संशय नहि। 'अग्रजक नाम/प्रजातंत्र' वंशवादी राजनीतिक विरुद्ध अछि।एहि मे वंशवादक विरुद्ध कविक प्रतिवाद बहुत मुखर अछि।किन्तु जेंकि कवि मात्र अपन कविता मे नहि,अपन अस्तित्वक आन-आन उपस्थिति सेहो राखैत अछि – अपन वाचिकता मे,अपन गतिविधि मे;तें कवि सं ई अपेक्षा स्वाभाविक जे ओकर लिखित

रचना आ ओकर दैनन्दिनी अभ्यास मे एकरुपता रहए,विरोधाभास नहि हुअए।भारतीय साहित्यक लेखकसभक हमरा सभ लग जे मूल्यवान विरासत अछि,ओहि मे शब्द आ कर्म एकहि सिक्काक दू पहलू मानल गेल अछि।साहित्यक लोक(पाठक समाज) अधिकांशत: भारतीय लोकमतक प्रतिनिधित्व करैत अछि आ ओ लेखक आ ओकर रचना मे फर्क कए कए नहि देखैत अछि।एहन स्थिति मे ई बात बहुत अनसोहांत बुझाइ छै जे वंशवाद पर एहन तीव्र प्रहार करनिहार कवि कें वंशवादी मिथिला राजक पुनरावृतिक लिलसा किए छनि?एहि राजपरम्परा मे मात्र सीताक बाप जनक नहि,कराल जनक सन अत्याचारी-व्यभिचारी राजा सेहो भेल अछि।एहि कविता मे एक ठाम कवि कहए छथि—'ओना/यज्ञ आइयो होइ छै/छोट सं ल अश्वमेध पर्यन्त/मुदा पुरोहितक बदला/होइत छै प्राइवेट सेक्रेटरी'।उपरका प्रश्नक उत्तर की एहि पंक्तिसभ मे उपस्थित छै?ई क्षोभ पुरोहितसभक भाग(हिस्सा) छिनैबाक आधुनिक युगक उपक्रम सं उपजल त नहि छै?एहि कविता कें 'कवि सोमदेवक लेल' समर्पित करबाक प्रत्यक्षत: कोनो तारतम्य नहि बुझाइत अछि।सोमदेवक संग मैथिलीक प्रजातंत्रकालीन वंशवादी तत्व द्वारा कएल गेल अनदेखी वा तिरस्कार वा अन्यायक आकलनक समय आइ छै,तहिया नहि रहए जहिया ई कविता लिखल गेल रहए।'अग्रजक नाम/केहन लागत अहां कें' मे जेहन वीभत्स चित्रण अछि,से केकरहु रोइयां भुलकाए दए सकैत अछि। अवसरवादी-पराश्रयी लोकनिक एकटा विशेष सुविधालोलूप वर्ग होइत अछि,जे अवसर ताड़ैत रहैत अछि,अवसर पाबितहि अमरबेलक लत्ती जकां कोनो शक्तिशाली अस्तित्व पर पसरि/लतरि ओहि अस्तित्वक रक्त सं अपन पोषण-संवर्द्धन करए लागैत अछि।एहन वर्ग पहिनहु रहए,आइयो छै आ भविष्यहु मे रहतए।एहन सर्वज्ञात यथार्थ कें नव कलेवर मे चित्रित कए किछु प्रश्न ठाढ कए देब—कविक की एतबे टा काज छै?एहन परजीवी तत्वक ठोस आ स्पष्ट पहचान करए मे कविता किए चुकि रहल छै?एतय लेखनक अग्नि

मसुआएल किए छै? उनटे ई एहि कथन कें प्रमाणित कए रहल छै जे ‘कविता मानसिक व्यभिचारक लेल शब्दक यूटोपिया अइ’।‘अग्रजक नाम’ शीर्षकबला तेसर कविता ‘हम बिसरि गेल छी’ उपशीर्षक सं ‘कवि जीवकांतक लेल’ अछि।(अकस्मात मन पड़ल जे फेसबुक,ट्विटर आदि सोशल साइटसभ पर जेकरा कम मित्र व फालोवर रहए छै,ओ बेसी मित्र वा फालोवरबला कोनो व्यक्ति कें टैग करैत अछि,जाहि सं ओकर बात बेसी लोग तक पहुंचए) साहित्यक विभिन्न विधाक अतिरिक्त जीवकांतक धुरझारिता पत्र-लेखन मे सेहो रहल अछि।तें पत्र-लेखन सं सन्दर्भित कविता कें हुनक नाम सं जोड़ब प्रथमदृष्टया उचितहि बुझाइत अछि।ई अलग बात जे जीवकांतक लेखन(पत्र सहित) के केन्द्र मे और जे किछु हुअए,सिंगरहार,हीना,रजनीगंधा,कमल आ ओढ़ूलक फ़ूल वा खजन चिड़ैया सं महमह-चहचह करैत वातावरणबला नास्टेल्जिया नहि रहनि।एहिसभ प्रतीकक माध्यम सं कवि जं कोनो आन बात(आपकता,रसगर गपबाजी,ग्रामीण सौन्दर्य आदि-इत्यादि) कहए चाहए छथि त बात अलग।‘एहि जम्बूद्वीपक भारत खण्ड मे’ प्राचीन प्रतीकसभक माध्यम सं स्वतंत्रता आन्दोलन, स्वतंत्रता प्राप्ति,केन्द्रीय सत्ता-प्रतिष्ठानक निरन्तर सबल आ आमलोकक निबल होइत जाएब,लोकतंत्री संसद आ चुनावी प्रक्रिया पर प्रहार कएल गेल अछि।कविताक नकार-भाव त पचैत अछि,किन्तु एकर नैराश्य-भाव व्यथित-चिन्तित करैत अछि।स्वतंत्रता भेटब अपना-आप मे अनमोल वस्तु छै।स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सभ बेजायहि-बेजाय भेलए की?आ जं छुच्छे बेजायहि-बेजाय भेलए त की भविष्यक बेहतरीक कोनो छोट-क्षीण किरणहु बांचल नहि छै? जं ‘अहिना बितल जाइछ/दिन पर दिन/मास पर मास/बर्ख पर बर्ख’,त की ई मनि ली जे ई जम्बूद्वीप भारत खण्डक भुइयां वीर-विहीन भए गेलए? जं एना छै त दुर्द्धर्ष अग्निहस्ताक्षर लोकनि,हुनक सखा-समुदाय कोन बील मे नुकाएल छथि?जे शंखनाद ‘समानधर्माक नाम’ मे कएल गेल अछि;कर्ण,एकलव्य, शंबूक,शिव आदि मिथकीय पात्रक

माध्यम सं इतिहास-पुराणक होलिका-दाह करबाक,रामराज्य पर थुकबाक, पांडुक नपुंसकताक संग-संग ओकर जन्मक कथा,परीक्षितक दुराचारिता,रामक स्वेच्छाचारिता, आचार्यक कुकर्मक पर्दाफाश करबाक आह्वान कएल गेल अछि,वर्ग-संघर्ष आ संगठित शक्तिक चर्चा कएल गेल अछि,से 'एहि जम्बूद्वीप....' मे नदारद किए अछि?ई कविक द्वैध,कविक वैचारिक द्वैध त नहि अछि?अपन समकालीन परिदृश्यक अत्याचार-अनाचार पर नैराश्य-भाव सं गबदी मारि थस लए लेब आ बितलाहा कोनो मिथकीय युग पर फांड़ा बान्हि कए चढि दौड़ब दुर्द्धर्षक श्रेणीक विशेषता भए सकैत अछि की?आ की ई सम्मुख-संघर्ष सं सुविधाजनक दूरी बनाए कए स्वयं कें सुरक्षित राखबाक मनोवृतिक परिचायक अछि?द्वैध एतबे नहि छै।काव्य जीवन मे 'मिथिलाक पाहुन'क रामराज्य पर थुकबाक आह्वान आ व्यक्तिगत जीवन मे पाहुनक ससुरारिबला राजक मांग करब—द्वैधक पराकाष्ठा छै आ एहन भयंकर विरोधाभास कविक व्यक्तित्वद्वयक खण्डित छवि बनबैत अछि।'ओना होइत त इएह आएल अछि' वाक्य-खण्ड कें बेर-बेर दोहराएब आ अन्त मे बिगुल बजाए देब—ताहि सं अमृत-पानक समय आबि जेतए,ई आन त आन,कविक कोनो समानधर्मा-समानकर्मा कें सेहो एहन विश्वास हेतए—ताहि मे सन्देह।किन्तु कवि सेहो जिदियाह छथि आ एहि दुनू कविताक सभटा कोर-कसर 'अग्रजक नाम/इतिहासहंता' मे निकालबाक प्रयास करए छथि।'इतिहासहंता' कविता मे लाल भोर सं जुड़ल प्राय: प्रत्येक वाम शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि।एहि मे फ्रांस-रूस-चीनक क्रान्तिक कथा,वियतनाम-लाओस-

कम्बोडिया-चीली-क्यूबाक संग्राम कथा,रूसो-मार्क्स-एन्जिल्स-लेनिन-स्टालिन-माओ-चू ते-होचिमिन्ह-मारकुस-नेरुदा-सार्त्र-कैस्त्रो-चेगुएवारा आदिक नाम,राजकमल-सुकान्त-गोर्की-लू सून-लुमुम्बाक मृत्यु सम्वाद आदि-आदिक चर्चा भेल अछि।कविताक अंत 'देखैत नहि छी/हमरा हाथ

मे/चमकैत पंचकमियां भाला/चलि पड़ल छी हम/लाल टुहटुह रक्त सं/पिरथीक विशाल वक्ष पर/लिखबा लेल एगो कविता/एगो कथा/एगो इतिहास/आ स्वयं बनि जेबा लेल/एगो घटना/एगो नाम/एगो इतिहास।' सं होइत अछि।विलक्षण विरोधाभास! लाख मगजमारीक बादहु एहि अंत कें 'वक्रोक्ति' किंवा 'व्याज स्तुति'क रूप मानए मे भीषण सं भीषण साहित्याचार्य-संहिताचार्य कें संकोच हेतनि।'इतिहासहंता' द्वारा 'इतिहासजीवी' होएबाक कामना कल्पनातीत अछि,अविश्वसनीय अछि। 'अनुजक नाम/काज अहींक थिक', 'व्यवस्थाक नाम/चेतौनी' आ 'जेठुआ मेघ' छोट-छोट आ नीक कविता अछि। 'कंकावतीक कैबरे' मे ने कविता अछि,ने व्यंग्य,स्तरहीन टिप्पणी अछि। 'सांझ हमरा आंगन मे' कविता कोनो भांज सं अग्निलेखनक चौहद्दी मे नहि अंटैत अछि,किन्तु हम अधिकारपूर्वक एहि कविता कें संग्रहक सर्वश्रेष्ट रचना मानए छी,घोषित करए छी।

अग्निक पोस्टर आ मार्क्सवादक प्रहसन

समालोचनाक लेल कुछ सर्वस्वीकृत मान्यतासभ अछि। समालोचना दुराग्रह सं रहित,भावुकता सं बचल आ दलबन्दी सं उपर उठल हएबाक चाही।आचार्यलोकनि एक स्वर सं एहि काज लेल 'सहृदय हृदय' कें प्रामाण्य माललनि।ई 'सहृदय हृदय' की छिए?अभिनवगुप्तक मत सं जिनकर मन-रूपी मुकुर—मनोमुकुर,जे काव्यशीलनक अभ्यास सं स्वच्छ भए गेल अछि—मे वर्णनीय विषय मे तन्मय भए जएबाक योग्यता अछि,वएह हृदय-संवादक भाजन रसिकजन सहृदय कहाए सकए छथि।

ई संग्रह (इतिहासहंता) अपन अवलोकन-मनन लेल पाठक कें ई छूट नहि दैत अछि जे ओ अपन हिसाबें एहि मे डुबकी मारए,काव्य-सागर मे हेलबाक आनन्द लिअए,मन हुअए त एकाध घोंट पीबिअहु लिअए आ एकर पानिक तासीरक अपन ढंग सं आकलन करए।पाठकक एहि लोकतंत्री अधिकारक

स्वतंत्र उपयोग मे एहि पोथीक ब्लर्ब पर अंकित टिप्पणी कोनो रिंगमास्टर जकां बाधकहि टा नहि होइ छै,ओ कोड़ा फटकारैत ई निर्देश(आदेश) सेहो दए छै जे एकरा कोड़ाक लहरानक अनुपातहि मे पढल आ अर्थग्रहण कएल जाय।ठीक ओहिना,जेना वैदिक मंत्र कें बुझबाक,अर्थ-ग्रहण करबाक लेल उदात्त,अनुदात्त आ त्वरितक संकेत अंगुरीक माध्यम सं कएल जाइत छै।एना मे पाठकक संकट अपारताक पार चलि जाइ छै।पहिने त ओकरा खुलल आंखि सं देखबा पर प्रतिबन्ध लागलए,फेर ओकरा एकटा विशिष्ट उपकरणक माध्यम सं,विशिष्ट कोण सं,विशिष्ट स्थिति मे देखबा लेल बाध्य कएल

गेलए। परिणाम ई जे पाठक मूल-वस्तुक मौलिकता सं छत्तीस लग्गा दूर भए गेलए आ ओकर दृष्टि(विजन) कें

केलिडोस्कोपिक भ्रम गछारि लेलकए।(बहुत संभव जे हमहुं एहि पर लिखैत काल एकर मौलिक तत्व सं कतेको लग्गा हटि भ्रमित भए गेल होइ आ हमर 'सहृदय हृदय' कतहु लंक लए लेने होइ।)

ब्लर्बक टिप्पणी मे एक ठाम लिखल अछि – "हिनक(कविक) चिन्तन धाराक आधार अइ मार्क्सवाद,फलत: 'वर्ग-संघर्ष' आ तइ पर आधारित क्रान्ति,हिनकर रचनाक मूल होइए।" टिप्पणीकार जाहि विचार/चिन्तन धाराजनित रचनाक गप टीपए छथि,ओकर एकटा सुदीर्घ इतिहास रहल अछि,जेकरा मार्क्सवादी चिन्तक 'विश्व कविता' कहए छथि।एहि सं इतर कविता मार्क्सवादी दृष्टि मे 'बूर्ज्वा कविता' अछि।मार्क्सवाद आ मार्क्सवादी कविता दुनूक उद्घाटक स्वयं मार्क्स कें मानि सकए छी। मार्क्स,एंजेल्स आ लेनिन कें प्राय: राजनीतिक चिन्तन आ सक्रियताक लेल जानल जाइ छनि,किन्तु ओसभ अपन सामाजिक-राजनीतिक चिन्ता कें यदा-कदा कविताक माध्यम सं सेहो व्यक्त कएने छथि। मार्क्स लेल कवि-कर्म साभिप्राय रहनि।एक दिस ओ अपन पत्नी जेनी कें सम्बोधित प्रेम कविता आ

दोसर दिस चिकित्सा,आचार संहिता आ गणित सन शुष्क विषयसभ कें लए कए कविता लिखलनि। मार्क्स एकटा कविता मे कहए छथि –‘नष्ट कए देब ई संसार सदैवक लेल/किए त रचि नहि सकए छी नव संसार हम’। एंजेल्स लिखए छथि-‘प्राय: तिरोहित भए चुकल अछि दीप्ति पश्चिमक/धीरज राखह?/आबैत अछि नव श्रम-मुक्ति-दिवस/आरोहित हएत सूर्य फेर सदालोकित सिंहासन पर/और ई चिन्तासभ रातिक/अस्त भए जाएत’।लेनिन अपन एकमात्र कविता ‘संघर्ष’,जे ओ बाल्टीक नदीक कछेर पर स्थित एकटा गाम मे गुप्तवासक अवधि मे लिखने छला,मे लिखए छथि-‘बढल चलह भूखल लोकनि/बढल चलह/बढल चलह सताएल लोकसभ/आगू बढह अपमानित जन/मुक्ति-जीवन दिस/गरदनि पर राखने जुआ उच्चवर्गसभक/चलह लड़ाई मे सर्वहारा’। माउत्सेतुंग चीनी क्रान्तिक पहिने सं कविता लिखब शुरू कएने रहथि। हुनकर अनेक कविता नमहर अभियानसभक बीचक अछि।हुनक काव्य यात्रा 1925 सं 1965 तक जारी रहल।दुनियांक मजदूर-समुदाय कें एकजुट करबाक लेल जाहि अन्तर्राष्ट्रीय गीतक रचना विश्व सर्वहाराक इतिहास मे एकटा क्रांतिकारी भुमिका निभएलक,ओकर श्रेय पेरिस मे जनमल एजेन पोतिए कें जाइत अछि।‘इन्टरनेशनल’ शीर्षक सं प्रसिद्ध ई गीत 1871क मई मासक खूनी पराजयक बाद रचल गेल छल।वियतनामक होचीमिन्ह क्रांतिकारी योद्धाक संग-संग एक संवेदनशील कवि सेहो छला।हुनक कवितासभ हुनक पोथी ‘जेल डायरी’ मे संग्रहित अछि। ओ अपन ‘हजार कविक कविता संग्रह कें पढला पर’ शीर्षक कविता मे जनताक पक्षधर कविलोकनिक रचना-दायित्वक निर्धारण एहि पंक्ति मे कएने छथि – ‘रचबाक चाही गीत हमरासभ कें फौलाद ढालल/आ जानबाक चाही कविसभ कें हमला करबाक पैंतरासभ’। चीनक लू शून आ रूसक मायकोवस्की कें सेहो एहि क्रांतिकारी परम्पराक मानल जाइत अछि। तुर्कीक नाजिम हिकमत,चिलीक पाब्लो नेरुदा,जर्मनीक बर्तोल्द ब्रेख्त आदिक अतिरिक्त क्युबाक रेजिन आ निकोलस

गिल्यिन,ग्वाटेमालाक ओतोरेने कास्तील्यो,स्पेनिश कवि डेविड फ़ेर्नांदिस,बल्गेरियाइ कवि निकोला वाप्सारोव,इंग्लैंडक लुई मैकनीस आ चिलीक विन्सेन्त युरोवारो आ पैब्लोद रोस्य आदि अनेक नाम एहि परम्परा मे गिनाएल जाए सकैत अछि। अर्जेन्टिना मे जनमल चे ग्वेवेराक नाम आइयो क्रांतिक पर्याय मानल जाइत अछि।चिकित्सा विज्ञानक शिक्षा पूर्ण कए चे दक्षिणी अमेरिकाक यात्रा कएलनि। ग्वाटेमालाक सरकारक तख्तापलटक बाद ओ सीधा मैक्सिको पहुंचला,ओतय कैस्त्रो सं भेंट भेलाक बाद क्यूबा पहुंचि ओतहुका संघर्ष मे सम्मिलित भेला आ क्यूबाक नागरिक बनि गेला।बहुत गोटे कें ई अविश्वसनीय लागतनि जे चे ग्वेवेरा कवि-कर्म सेहो करैत छला। 'कैस्त्रोक लेल' शीर्षक कविता मे हुनक कुछ पंक्ति छनि—'पहिल गोली दगितहि/संपुर्ण वन जागतए विस्मय सं आ/ओतय ओहि क्षण एकटा शांत टुकड़ी/प्रकट हेतए, अहांक बाहु सं' आ 'आ जखनि बर्बर पशु चाटि रहल हएत/अपन घायल भुजा/चोट कएलक अछि जाहि पर क्यूबाई बर्छा/हएब हमसभ अहांक बाहु सं सटल/गर्वोन्नत छाती तानने'। दक्षिण अफ्रीकाक श्वेत(बोथा) सरकार सं मुक्ति-युद्ध मे शहीद भेल सोलोमन महलांगू आ बेंजामिन मोलाइस सन देशभक्त आ क्रांतिकारी कवि इएह परम्पराक रहथि।

विदेशक एहि तीव्र परिक्रमाक बाद अपन देश घुरिकए देखी त एतहु मार्क्सवादी-वामपंथी कविता आ कविक उपस्थिति भेटत। एहन कविसभ मे तेलुगुक सुब्बाराव पाणिग्रही आ चेराबंड राजूक संग-संग एम टी खान , निखिलेश्वर आ वरवरा राव; पंजाबक अवतार सिंह पाश,अमरजीत चन्दन,सुरजीत मोहनजीत,लाल सिंह दिल आदिक नाम लेल जाइत अछि। एहि आलेखक आलोच्य कवि जाहि बंगालक राजधानी मे चारि-पांच दशक गुजारलनि,ओहि बंगाल मे सेहो एहि क्रांतिकारी कविताक नमहर परम्परा रहल अछि। विद्वद्जन एकरा नजरुल इस्लाम सं शुरू मानए छथि आ एहि

कड़ी मे नवारुण भट्टाचार्य,सुकान्त भट्टाचार्य (जे 'पारपत्र' मे संकलित अपन रचनाक माध्यम सं जन-जागरणक शंखनाद कएने छथि आ जिनकर नामक चर्चा आलोच्य संग्रहक कविता 'इतिहासहंता' मे भेल अछि।),सरोजदत्त,द्रोणाचार्य आदिक नाम सम्मिलित करए छथि।

एतय मार्क्स सं लए कए द्रोणाचार्य तक के चर्चा एहि उद्देश्य सं कएल गेल अछि जे हिनका सभक क्रांतिकारी लेखनक योगदानक परिपेक्ष्य मे अग्निलेखनक,जेकर चिन्तनधाराक मूल मार्क्सवाद घोषित कएल गेल अछि,सही-सही वजन कएल जाए सकए; दुर्द्धर्ष अग्निहस्ताक्षर,अग्निलेखन आ ओकर पहिल दस्तावेजक उदात्त ,अनुदात्त, त्वरित कें सार्थकताक कसबट्टी पर परखल जाए सकए। ई आकलन कएल जाए सकए जे ई कवितासभ मार्क्सवादी परम्पराक बीच अपन उपस्थितिक संज्ञान कराबैत अछि की नहि? किन्तु एहि पर आगू बढए सं पहिने "देशक नाम छलै सोनचिड़ैया"क हवाई सर्वेक्षण आ "लाख प्रश्न अनुत्तरित" पर विहंगम दृष्टि फेरल जाय।

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

वर्ष 1986 मे प्रकाशित एहि संग्रह मे कुल 64 पृष्ट मे समेटल 'मैथिली सं' सं 'किछु क्षणिका' तक 21 टा कविता संग्रहित अछि।'इतिहासहंता' जकां एहि संग्रह मे कवितासभक रचनाकाल अंकित नहि अछि।

पहिल कविता 'मैथिली सं' मे कवि चारि कोटि लव-कुशक कुम्भकर्णी निद्रा मे सूतल रहबाक,चारि कोटि संतानक नपुंसक हेबाक घोषणा करैत मैथिली सं काली-कराली-खप्परवाली बनि एक बेर,मात्र एक बेर प्रलय मचाए देबाक आह्वान करए छथि,किन्तु हुनक संशयग्रस्त मन मैथिली कें वैकल्पिक प्रस्ताव दैत कहैत अछि—'जं से नहि क पाबी/त हमर अनुरोध/खा लिअ बिख/किन्तु/विदेहक नाम कें/बदनाम जुनि करी'।एहि कविता मे कवि

भाषाक शक्तिक प्रति एहन भयंकर रूप सं द्विधाग्रस्त किए छथि? हुनका धर्म कें अफीम मानबाक मार्क्सवादी मान्यता बिसारि काली-कराली-खप्परबालीक शरणागत हेबाक मानसिकता मे किए घुरियाबए पड़ल छनि? हुनका मैथिलीक बिख खाएब मंजूर छनि,किन्तु विदेहक नाम बदनाम हएब मंजूर नहि। किए? एकर की अर्थ? ओ मैथिलीक मूल्य पर मिथिला-राजक प्राप्ति वा पुनर्जन्मक महत्ता कें सन्दर्भित/प्रतिपादित कए रहल छथि की? 'सुच्चा मैथिल' कविताक प्रारंभिक पंक्तिसभ मे अर्थालंकारक 'व्याज स्तुति' भेद उपस्थित अछि,जाहि मे उपर सं देखला पर त ओ निन्दा बुझाइ छै,किन्तु ओ होइत अछि वस्तुत: प्रशंसा! कविताक द्वितीयार्द्ध मे उपमेय,उपमान, साधर्म्य,वाचक आदिक तेहन विचित्र धालमेल छै जे अर्थ मे अनर्थ आ अनर्थ मे अर्थक अनेकानेक विस्फोट होइ छै। 'गुदड़ी सं अपन अंग झपने दाबा पर चिपड़ी पथैत भारती,मरि चुकल हीरामनि सुग्गा आ तीन दिन(मात्र) सं अपन पेट कें तौनी सं बन्हने एकजनिया एकचारी मे स्वत: प्रमाणम परत: प्रमाणम रटैत महापंडित(?) मंडन मिश्र' तक त ई बुझाइ छै जे कवि पतनक दृश्य चित्रित कए रहल छथि,किन्तु कवितान्त मे 'जानि ने/कोन शंकराचार्यक/प्रतीक्षा छनि'क वक्रोक्ति माथ सं उपर बहि जाइत अछि।(ई पाठक/आलोचकक अपन बुद्धिक सीमा सेहो भए सकैत अछि)मैथिललोकनि केतबो गाल बजाबथि,शंकराचार्यक आएब कोनो शुभ आ स्वागतयोग्य बात त नहि भेल रहनि मंडन-भारती लेल! मंडन स्वयं पराजित भेल छला शंकराचार्य सं आ भारती द्वारा शंकराचार्य कें पराजित करबाक जे गौरव-गाथा बुनल गेल अछि,तेकर अन्तर्कथा त और ग्लानिदायक अछि।शंकराचार्य सन ब्रह्मचारी,उद्भट्ट विद्वान आ शास्त्र-मर्मज्ञ कें 'कोकशास्त्र' सन विषय कें माध्यम बनाए पराजित करब बहुत गौरवपूर्ण आ सम्मानजनक गप नहि अछि। कवि एहि कविताक माध्यम सं मैथिलक 'कोंढ मे खाज' बला मुहावरा चरितार्थ होइत देखबए चाहए छथि की? अपन शब्द-प्रयोगसभ मे कवि जाहि तामसक

प्रदर्शन करए छथि,तेकर आधार पर त इएह मानल जएबाक चाही,जं कविताक पुर्वार्द्ध कें व्याज-स्तुतिक श्रेणी मे नहि राखी त। ‘चेतौनी’ पोस्टर कविता अछि आ प्राय: तें अर्धवयस्क अंधोत्साह आ विवेकहीन धमकी-चमकी कें एकर अन्तर्वस्तु बनाएल गेल अछि—‘रक्तधार बहाएब/राष्ट्र की धो-धो चाटब?/बरू आगि लागौ एइ राष्ट्र/बिलटि जाओ भारत/अन्हरा धृतराष्ट्र/हिन्दी के पोसा कुकुर—शैतान/नहि त ई मिथिला देश बनत विश्व के दोसर बंगला देश,दोसर वियतनाम’। एहन शब्द,एहन भाव,एहन कथ्य,एहन भौंकी जं कविताक तत्व अछि त गाम-देहातक गमार स्त्रीगणक बीच होइबला राड़ी-बेटखौकी की भेलए? महाकाव्य? ई ठीक छै जे कथ्यक दबाव कवि कें उपयुक्त भाषा आ रूपक निरन्तर खोजक लेल बाध्य करैत अछि।प्रभावशाली भाषा आ रूपक ई खोज रचनाकार कें विभिन्न प्रयोग दिस प्रवृत करैत अछि।किन्तु ई खोज कविक असावधानीक स्थिति मे ओकरा भटकाबितहु अछि आ ई भटकाव ओकरा भाषाक अपव्यय दिस लए जाइत अछि।ई स्थिति खतरनाक होइ छै। भाषाक अपव्यय बड़बोलापन कें जन्म दैत अछि,जाहि सं कविताक स्वाभाविकता कें त क्षति पहुंचतहि अछि,कविक विचार मे सतही आस्था कें देखार सेहो करैत अछि। एहि पोस्टर कविताक अलगाववादी, क्षेत्रीयतावादी आ मिथकजीविताक उपनिवेशवादी मानसिकताक सन्दर्भ मे मन पाड़ैत चली जे पंजाबी कवि पाश अपन क्रांतिकारी सोच आ समझक तहत विश्वक व्यापक जनता आ सर्वहारा वर्गक पक्षधर हेबाक चलते संप्रदायवाद, अलगाववाद,क्षेत्रीयतावाद,जातिवाद आदिक खिलाफ अपन पत्रिका आ रचनाक माध्यम सं एकटा व्यापक मुहिम चलएने रहथि। ओ खलिस्तानक खिलाफ रहथि,तें हुनकर लड़ाई एकरहु विरुद्ध छल। इएह कारण रहए जे 23 मार्च,1988 कें खालिस्तानक पक्षधर लोकनि हुनका मारि देलक आ एहि तरहें पाश अपन क्रांतिकारी भुमिकाक कारण शहीदक मौत मरला। ’कहैत छला बाबा’ मे धर्म आ धर्मस्थलक यथार्थ पर बहुत कुछ कहबाक गुंजाइश रहए,किन्तु कवि एहि विषय पर समग्रता मे

समधानल प्रहार करबा मे हिचकिचाए गेल छथि आ बीध पुराबैक लेल एकरा मात्र छुबिकए छोड़ि देने छथि। धर्म आ धर्मस्थलक सभ सं बेसी विकृति एकर पंडा-पुरोहित व्यवस्था मे अन्तर्भूत छै,जेकर विरोध कए ओकरा निर्मूल करब कोनो प्रगतिशील व्यक्तिक/कविक काम्य हेबाक चाही। से कामना एतय अलोपित छै। एहि हिचकिचाहटिक पाछू कविक व्यक्तिगत पृष्टभूमिगत कोनो अवरोधक तत्व वा मानसिकता अछि की? 'भूख' कविता मे पेट आ सेक्सक भूखहिक सभकुछ हएबाक घोषणा आपत्तिजनक आ अस्वीकार्य अछि। जं इएह दुनू भूख सभकुछ छै,तखनि कवि कें कविता लिखबाक भूख किए जागलनि? मैथिली मे लेखन सेक्सक भूख त किन्नहु नहि अछि। ई त 'घर फूंक,तमाशा देख'बला काज अछि। हृदयक शोणित जराए रचना करू,अपन जोड़ल पाइ लगाए ओकरा प्रकाशित करू आ घर-घर जाए कए पढबाक आग्रह संग पोथी बांटि आउ।तें एकरा पेटक भूख सेहो नहि मानल जाए सकैछ। साहित्यकार जीवन कें देखैत अछि त जीवनक पार सेहो देखैत अछि,तें ओकरा सं एहन वक्तव्य एकदम अवांछित अछि। हिप्पी-संस्कृतिक उद्घोषक वा पैरोकार हएब कवि-कर्म नहि अछि। 'हमरा कने बिलम्ब हएत', 'भाइ!अहां घुरि जाउ', 'आगामी काल्हि हमरे सभक हएत', 'दोहाइ ओइ पारक छी', 'ओहू दिन एहिना भेल रहए', 'बिहाड़िक बाद आमक गाछी', 'कैफियत', 'ओ हमरे भाइ छल', 'आर कहिया धरि' आ 'मृत्यु अभिमन्युक' आदि कविता मे साम्यवादक मनोहर पोथीक शब्दावली सं लेल शब्दसभक खूब प्रयोग भेल अछि,पर्चा-पोस्टरबला उत्तेजना सेहो अछि,वर्त्तमानक प्रति असन्तोष आ भविष्यक लाल-बिहानक प्रति अंध-आशावादक फार्मूला सेहो अछि,किन्तु एहि सभ सामग्री कें काव्य-तत्त्व सेहो मानल जाएत,ताहि मे सन्देह अछि। आन-आन कलासभ जकां कविताक प्रकृति सेहो अधि भौतिक(मेटाफिजिकल) छै आ ओ मात्र तर्कक वा आक्रोशक स्तर पर प्रभावित नहि करैत अछि। बिना काव्य-तत्त्वक मात्र सपाटबयानी कोनो सोझ

प्रहार कए सकैत हुअए,ई सेहो सम्भव नहि अछि। त्वरित लोकप्रियता अर्जित करबाक लेल एना कएल जाए सकैत अछि,कएलहु जाइत अछि,किन्तु ई लोकप्रियता स्थायी नहि भए सकैछ। मार्क्सवाद एकटा क्रांतिकारी विचारधारा अछि। ई रचनाकार कें संघर्षधर्मी चेतना सं लैस करैत अछि। एकर माध्यम सं कोनो कवि अपन कविता मे विचार आ वक्तव्यक नीक समायोजन आ प्रभावशाली संयोजन कए सकैत अछि।किन्तु जीवन-जगतक यथार्थक गहन अवलोकन, जनजीवनक प्रति अनुभूतिगत संवेदना आ कल्पनाशक्तिक अभाव मे ओकर कविता दोहरौनीक शिकार भए जाएत। ई सेहो ध्यातव्य जे जं कोनो विचार नीक जकां अभ्यंतर मे घुलि-मिलि नहि गेल हुअए त ओ असन्तुलित आक्रोश अश्लील आ कुरुचिक रुप मे प्रगट होइत अछि आ ई सबलताक नहि,दुर्बलताक प्रतीक अछि। ‘हमरा कने बिलम्ब हएत’ मे ‘तानसेन’ आ ‘बाइजी’ कें अपन प्रयोजनक तरजू पर एक बराबर तौलब सामान्य पाठक कें की, कोनो परम-प्रयोगशील कविअहु कें अनसोहांत लागि सकैत अछि। ‘चारण हम ओकरहि छी’ मे कविता सं पूर्व कवि ‘धूमिल’क वक्तव्य उद्धरित देखि कविताक प्रति उत्सुकताक संग-संग अतिरिक्त अपेक्षा जागैत अछि।कवि एहि मे स्वयं कें श्रमजीवी समुदायक चारण घोषित करए छथि। स्वागत! कविता बेजाय नहि छै,किन्तु एहिमे ने अन्तर्वस्तुक नवीनता छै आ ने प्रस्तुतिकरण मे कोनो विशेषता। ‘एक टा सही कविता पहिने एक सार्थक वक्तव्य होइत अछि।‘ – धूमिलक ई प्रगतिशील-प्रिय कथन बेर-बेर दोहराएल गेल अछि आ हमरा सन-सन अनेक लोग एकर अन्तर्भाव सं सहमत सेहो छथि।किन्तु एकरा दोहरैनिहार द्वारा एकर आन्तरिक भाव कें की ठीक-ठीक आत्मसातहु कएल गेल अछि? धूमिलक ‘सही’,’पहिने’,’सार्थक’ आदि शब्दप्रयोगक निहितार्थ बुझने बिना हुनकर एहि कथनक आत्मा मे प्रवेश नहि कएल जए सकैत अछि। प्रगतिशील कविताक नाम पर छूछ नकल,नारा,फ़कराबाजी खूब भेल अछि,भए रहल अछि आ आगुअहु हएत,किन्तु एकर नियति मात्र अल्पजीवता अछि। मार्क्सवादी सौन्दर्य शास्त्र

सृजन प्रक्रिया कें अद्भुत आ अनायास या दैवी-कृपा नहि मानैत अछि,किन्तु एकर ई अर्थ नहि लगाएल जेबाक चाही जे ई ओकरा सायास आ यान्त्रिक मानैत अछि।ई सही छै जे रचना प्रक्रियाक कोनो निर्धारित विधि वा अवधि नहि छै आ ई रचाकारक आवेगक मुखापेक्षी होइत अछि,किन्तु एकरा पाछू विचार आ प्रेरणाक तत्व रहैत अछि,जे कवि कें मूर्त जीवन-जगत सं प्राप्त होइत अछि।रचनाकारक दृष्टि जं सोझराएल आ वैज्ञानिक चेतना सं लैस नहि हुअए त ओ वस्तु कें ओझराएल आ विकृत रूप मे देखैत अछि आ ओकरा तहिना व्यक्त करैत अछि।ई सभ बात धूमिलक संज्ञान मे रहनि आ तें ओ वक्तव्यक सार्थकता पर,विचारक प्राथमिकता पर जोर त दए छथि,किन्तु अन्तत: एहि मे काव्य-तत्त्वक अनिवार्यता कें सेहो रेखांकित करए छथि,जेकर उपस्थिति सं कोनो कविता 'सही' कविता बनैत अछि। संग्रहक अगिला कविता 'अजगुत देश' अजगुत छै—निस्सन्देह! ई कविता पढैत अनायास एकटा विदेशी लोक-कथाक नायक 'नारसिसस' मन पड़ि जाइत अछि,जे एकटा झील मे अपन अप्रतिम रूप देखि स्वयं पर एहि पराकाष्ठा तक मोहित भए गेल जे अपन सुध-बुध बिसारि ओहि झीलहि मे खसिकए डूबि गेल रहए। स्वमुग्धताक एहि चरम कें 'नारसिसस सिन्ड्रोम' कहल जाइ छै।जेना बताह सं बतहपनी बनए छै,तहिना एकरा मैथिली मे 'नारसिससपनी' कहि सकए छी। 'अजगुत देश' कविता आ एकर कवि एहि नारसिससपनीक प्रभावक उत्कृष्ट उदाहरण बुझाइत अछि।कविता मे युटोपिया,नास्टेल्जिया आ मिथिज्म (मिथकजीविता वा मिथकवाद) चरम पर छै।एहन चरम जे प्रगतिशीलताक आग्रही पाठक कें वितृष्णा सं भरि दए छै आ ई विश्वास करबाक यथेष्ट आधार प्रदान करए छै जे कवि अपन अन्तस मे मूलत: नारसिसक प्रतिरूप छथि। हुनक काव्य-जगत मे जेतय-जेतय मिथकक झील आबैत अछि,ओ अपन अपरूप रूप निहारि आत्मरतिक चरम पएबा लेल ओहि मे खसि पड़ए छथि।विचित्र बात ई जे झील मे देखाइत ई अपरूप रूप वर्त्तमानक नहि, कोनो

आन रचनाकारक रचित काल्पनिक अतीतक खिस्सा मे वर्णित रूप अछि। एतय रबीन्द्रनाथ ठाकुर मन पड़ि जाइ छथि जे एकठाम लिखने छला – ‘धुइयां आकाश सं शेखी बघारैत अछि आ छाउर पृथ्वी सं जे ओ अग्निवंशक अछि।‘ धुइयां आ छाउरक ई शेखी खूब शिद्दत सं एहि कविता मे उपस्थित आछि। ‘एहि संएतीस बर्ख मे’ एकटा लघुकथा कें कविता बनएबाक निष्फल प्रयास अछि। एहिमे रिक्शाबलाक पीड़ा अपेक्षित प्रभाव नहि उत्पन्न कए पाबैत अछि। आजादीक सैंतीस बर्ष बादहु देश मे सकारात्मक परिवर्तन नहि भेल आ गरीबक दुख-पीड़ा आ ओकरापर अत्याचारक यथास्थिति कायमहि अछि,इएह एहि कविताक मूल कथ्य अछि।कविता मे बेर-बेर ‘एहि संएतीस बर्ख मे’ वाक्य-खण्डक दोहरौनी एकर गंभीरता कें खण्डित करैत अछि।यथार्थ आ वस्तुस्थितिक चित्रण कवि सं अपेक्षित होइत अछि आ ओ यथार्थ आ वस्तुस्थिति बेजाय आ निराशजनक सेहो भए सकैत अछि। छूछ निराशावाद राजनीति मे जनाक्रोश जगाबए लेल त उपयोगी भए सकैत अछि,किन्तु कवि सं महत्तमक अपेक्षा होइत अछि जे ओ जनाक्रोशक सत्ती जन-चेतनापर अपन चेतना कें केन्द्रित राखथि। अगिला कविता ‘अनेकता मे एकता’ बहुत प्रयासक बादहु हमर समझदारीक सीमा मे नहि अंटि सकल,बाहरहि बाहर रहि गेल। अनेकता मे एकताक मखौल उड़ैबाक लेल नरभक्षी,पिशाच,कपिला गाय सन कंपैत माउग आदि-आदि प्रतीकक काव्यार्थ वा भावार्थ स्वयं कें बूझल जएबाक लेल कोनो गंभीर आ नामवर काव्य-अध्येताक मांग करैत अछि। संग्रहक शीर्षक-कविता ‘देशक नाम छलै सोनचिड़ैया’ कें वस्तुत: कुमारेश काश्यपक ‘बेताल कथा’ मे संग्रहित कएल जएबाक चाही छल। ई व्यंग्य-रचना प्राय: भूलवश कविताक रूप मे एहि संग्रह मे चलि आएल अछि।संग्रहक अन्तिम छहटा क्षणिका नीक अछि।

लाख प्रश्न अनुत्तरित

मैथिली दिवस(ई दिवस के बनएलक से नहि जानल),1410 तद्नुसार 11 मई,2003 कें प्रकाशित एहि संग्रहक एक सय पृष्ट मे ‘विख्याता भुवनत्रयम’ सं ‘बर्खान्त’ तक कुल 48 टा कविता संग्रहित अछि।

‘विख्याता भुवनत्रयम’,’बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी’,’हमरो एकटा गाम छल’ आदि कविताक विषय मैथिली मे बेर-बेर दोहराएल गेल अछि आ एकर प्रस्तुतिकरण मे सेहो कोनो नवीनता नहि छै। ‘विख्याता भुवनत्रयम’ मे जखनि कवि कोशी-प्रांगणक व्यथा लिखने चलि जाइ छथि,तखनि ओ निश्चित रूपसं वर्त्तमान मे उपस्थित छथि, किन्तु ‘जतए ने जाथि रवि,ओतय जाथि कवि’ कें चरितार्थ करैत ओ अकस्मात युग-शताब्दी कें हनुमत-वेग सं टपैत कंकालक देश अपन मातृभूमि तथाकथित विख्याता भुवनत्रयम मिथिला मे प्रगट भए जाइ छथि।ई काल-विसंगति कनेक नहि,बहुत विचित्र छै। जं मिथकहि कें आधार मानी त कोशी नदी मिथिलाक सीमांत मानल गेल अछि। ई नदी अपन प्रचण्ड हाहाकारी मुद्रा मे अपन पथ बदलैत रहल अछि। ई नदी आइयो अपन भौगोलिक-अस्तित्व मे उपस्थित अछि आ मिथिलाक मैथिल-मन छोड़ि और कतहु कोनो अस्तित्व नहि अछि।यथार्थ आ मिथक कें एना मिज्झर करब भूगोलहु कें टेढ-घोंच कए देत।कवि कें अपन कल्पनाक पसारक स्वतंत्रता छै,किन्तु इहो कविए कें देखए पड़तनि जे ई स्वतंत्रता आन भौतिकता कें क्षतिग्रस्त करबाक संग-संग स्वयं हुनकर अपनहि रचल कविता कें वायवीयतामय नहि कए दनि।कोशी-प्रांगणक व्यथा लिखैत काल एहि क्षेत्रक दुर्दमनीय जीजिविषा,अथक पुरुषार्थ आ श्रम-संस्कृतिक महत्ताक ठामपर जं कवि कें परजीविताक प्रतीक कोनो मिथकीय मकड़जाल मे मुक्ति वा त्राण देखाइ पड़ए लागए त ओकर सम्पूर्ण प्रगतिशीलता आ वामवादिता पर प्रश्नचिंह त लागितहि अछि, ओकर व्यक्तित्व पर छद्मक छटाक आभास सेहो दैत आछि। ‘एक फांक अन्हार:एक फांक इजोत’ मे गाम-शहरक तुलना इजोत-मात्र तक सीमित,सरलीकृत अछि आ तें अपूर्ण कविता अछि। ‘अपन

समाचार' कविक व्यंग्य रचना 'बेताल कथा'क लाट सं भटकिकए एम्हर चलि आएल अछि। 'शब्द' सचेत अवस्था मे लिखल कविता नहि अछि। ई अवचेत आ अचेतहु सं पारक कोनो चेतावचेताचेत अवस्थाक बियान अछि। शब्दक प्रति एहन भ्रम,एहन शंका,एहन अविश्वास कोनो कविक भाव अछि,से केकरहु भ्रम,शंका आ अविश्वास सं भरि दए सकैत अछि—एकदम अनसोहांत जकां। ई सम्भव छै जे कोनो क्षण-विशेष मे,क्षण-विशेषक उत्तेजना मे कविक शब्दास्थाक नींव डगमगाए जाइ,लेखन-कर्मक व्यर्थता-बोध सं भरि कवि स्वयंक प्रति ग्लानि सं भरि जाइ।एकरा कविक व्यक्तिगत आ मानवीय कमजोरी मानि तत्काल स्वीकार कएल जाइ सकए अछि।किन्तु जखनि ओ अपन समकालीन कविसभ कें निस्पृह,निर्विकार होएबाक आरोप सं लांछित करैत शब्द कें अपन हेराएल अर्थ पएबाक लेल भविष्यक नहि, अतीतक बाट दिस जएबाक प्रतिगामी गप करए त इ कवि-कर्मक प्रति अपराध-सदृश्य अछि।ठीक छै जे कविता कें जीवनक आन-आन भौतिक वस्तु जकां व्यवहृत नहि कएल जाए सकैत अछि। ई मनुष्यक लेल हवा,पानि आ भोजन जकां अनिवार्य नहि अछि। आस्कर वाइल्ड एकठाम कहने रहथि जे,'अन्तत: समस्त कलासभ सारहीन अछि'। तें कला-कविता कें महज उपयोगितावादी नजरिया सं देखब त ताहि सं कुछ हासिल होबएबला नहि अछि। अहां अपन व्यक्तिगत जीवन मे एहि बात लेल स्वतंत्र छी जे अहां अपन सुविधानुसार मार्क्सनामी चद्दरि ओढी/उतारी वा रामनामी चद्दरी ओढी/उतारी वा एकटा मूल्यहीन समाजक हिस्सेदारक रूप मे एकटा मरणधर्मा संस्कृति कें उघैत रही।किन्तु जेना राजनीतिक-सामाजिक सक्रियता कोनो व्यक्ति कें सार्वजनिक बनबए छै,तहिना साहित्यिक सक्रियता सेहो व्यक्ति कें सार्वजनिकता प्रदान करए छै।एना मे अहां रचनाक नाम पर एकालाप वा प्रलाप नहि कए सकए छी।एक बेर सार्वजनिक होइतहि अहां संलापक परिधि मे आबि जाइ छी आ तेकर पालन करब अहांक बाध्यता अछि। 'मैथिली मन्दिर मे दीप लेसैत', 'हम श्रद्धांजलि नहि द पाएब', 'नेल्सन मंडेला', 'नीक नहि कएल अहां' आदि

विभिन्न व्यक्तित्व कें समर्पित कवितासभ अछि। समर्पणक सभक अपन-अपन तरीका होइ छै,तें ओहिपर कोनो टिप्पणी नहि कएल जएबाक चाही।किन्तु सत्य कें ‘संदिग्ध’ आ गांधी कें ‘विखण्डित राष्ट्रक विकलांग पिता’ कहब; नेल्सन मंडेला कें ‘श्वेत कपोत’क उपमा देब कतेक गोटे कें ठोंठ सं गीरब पार लगतनि,से कहब कठिन। कविता कें जं विज्ञान सं परहेज होइ वा अविज्ञानी हएब कविक लेल अनिवार्य हुअए,तखनि त ‘धरती प्रतिकार करैछ’ कविताक विरोधक कोनो बात नहि; किन्तु इतर स्थिति मे ई प्रश्न उठब स्वाभाविक जे ज्वालामुखी भड़कए,अन्हर-बिहाड़ि उठए आ भूकंप होइ मे धरतीक कोन भुमिका,कोन अपराध?कोनो स्कूलक सामान्य छात्रहु कें ई तथ्य बूझल रहए छै जे धरती एहिसभ उत्पात कें सहैत-भोगैत अछि,एहि उत्पातसभक उत्पादक नहि अछि। ‘शहर शामियाना’, ’पन्द्रह अगस्त’, ’एक गोट राष्ट्रद्रोहीक वक्तव्य’ राष्ट्रीय विषय-घटनासभ सं जुड़ल कविता अछि। एहि कवितासभक रचाव मे अपेक्षित गंभीरता आ संवेदनाक अभाव एकरासभ कें अधसिज्झू व्यंजन जकां नीरस बनाए दैत अछि। ‘हम चाहै छी’ मे कविक काव्याकांक्षा प्रशंसनीय अछि। अजुका कविता ओहने हएबाक चाही, जेहन कविताक आकांक्षा एहि कविता मे कएल गेल अछि।नीक कविता। आब लाख रुपैयाक जिज्ञासा ई जे कविक ई आकांक्षा भूमिका-मात्र तक किए रहि गेल,एकरा हुनक तीन-तीन टा संग्रहक अन्तर्वस्तु बनाबए सं,एकरा क्रियान्वित करए सं के रोकलकनि? लेखन सं लए कए प्रकाशन तक सभ सरंजामक अछैतहु हुनक ई कामना फलीभूत किए नहि भेल? ई कविता अपनहि रचनाकार कवि सं एहि प्रश्नसभक उत्तर आ स्पष्टीकरणक मांग करैत अछि। ‘भगवान तथागत’, ’मनुक्ख आ ईश्वर’, ’दिनचर्या’, ’संवाद’, ’बसात’, ’कौआ’, ’मैना’, ’नव रचनाक मादे’, ’सोना आब नम्हर भ गेलए’ आदि कविताक अन्तर्वस्तु ओ नहि अछि,जेकर आकांक्षा कवि द्वारा ‘हम चाहै छी’ कविता मे कएल गेल अछि,किन्तु एहि कवितासभ मे काव्य-

तत्त्वक पुष्टता अछि आ कवि एतय सहज कवि-रूप मे उपस्थित छथि। एत्ते तक जे पत्रिका आ पोथीक चर्चा होइतहु 'संवाद' कविताक लय नहि टूटैत अछि,बरु ई चर्चा कविताक प्रभाव कें विस्तारित करैत अछि। ई बात एहि दिस इंगित करैत अछि जे रामलोचन ठाकुरक काव्य-विषयक प्राय: इएह स्वाभाविक क्षेत्र छनि,जेकरा ई कवितासभ छुबैत अछि। भ्रमण कवितासभ मे स्थलसभ कें देखबाक कवि-दृष्टि रुमानी अछि आ ई रुमानी-दृष्टि नीक लागैत अछि। चारि गोट मिनी कविता बहुत रास मैक्सी कविताक तुलना मे बहुत उत्तम अछि। क्षणिका भात मे आएल कंकड़ जकां अछि। अन्तिम आ संग्रहक शीर्षक-कविता 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' राह भटकि कए 'बेताल कथा' सं बिछुड़ि एम्हर चलि आएल अछि।

रहबर जखनि डगर भटकाबए

साहित्यक वाचिक/श्रव्य परम्परा आ आधुनिक लिखित/पठ्य परम्परा मे बहुत रास ढब-ढांचा आमूलचूल बदलि गेल अछि। अनेक सुविधा बढल अछि,त अनेक सुविधा विलुप्त भए गेल अछि।वाचिक परम्पराक कवि अपन श्रोता लग सदेह उपस्थित रहैत रहथि आ हुनका ई सुविधा रहनि जे ओ अपन हाव-भाव,अपन आंगिक प्रदर्शनक संग-संग मौखिकहु स्तर पर अपन काव्यक मूलार्थ वा गूढार्थ अपन श्रोता तक पहुंचाए सकथि।लिखित परम्परा मे कवि कें ई सुविधा नहि रहलए।पोथीक प्रकाशनक बाद ओकर रचनाकार विदेह (बिना देहक,अनुपस्थित वा अदृश्यक अर्थ मे,मिथकीय राजाक अर्थ मे नहि) भए जाइत अछि।कविक हाव-भाव,ओकर आंगिक प्रदर्शन आ मौखिक व्याख्या वा स्पष्टीकरणक क्षतिपूर्तिक सभटा दारोमदार पोथीअहि पर चलि आबैत आछि।तें संग्रहक (प्रकाशित पोथीक) अन्त्तर्वस्तु सं लए कए ओकर प्रस्तुतिकरण (कवर-डिजाइन,प्रकाशन-विवरण,ब्लर्ब पर देल रचनाकारक परिचय,फोटो वा टिप्पणी,समर्पण,भूमिका आ पोथीक पृष्ट आ मूल्य तक)

तक प्रत्येक वस्तुक अपन अर्थ होइ छै।ई सभटा वस्तु अपन-अपन दिस सं किछु ने किछु कहए छै,संकेतित करए छै,निरर्थक नहि होइ छै।उदाहरण लेल ‘इतिहासहंता’ पोथीक मुद्रित मूल्य (साधारण-दू टाका:विशेष-चारि टाका) कें ललका रोशनाई सं काटि पन्द्रह टाका लिखि ओकर नीचां कविक हस्ताक्षर करब सेहो बहुत बात कहि जाइत अछि।ध्यातव्य अछि जे सामान्य परम्पराक अनुसार पोथीक मूल्य निर्धारित करबाक अधिकार प्रकाशकक होइत अछि आ एहि पोथीक प्रकाशक कवि रामलोचन ठाकुर नहि,शिखा प्रकाशनक कुणाल-अग्निपुष्प छथि।किन्तु मैथिली त कोनो सामान्य भाषा नहि अछि।तें एतय प्रकाशनक नियमसभ सेहो असामान्य अछि।ललका रोशनाई सं कवि द्वारा संशोधित मूल्य मैथिली मे पोथी प्रकाशनक व्यवस्थाक पोल खोलैत अछि (ई पोथी विदेहपर डाउनलोड लेल कवि द्वारा देल गेल छै)।एहि पोथीक ब्लर्ब पर कुणालक टिप्पणि दर्ज अछि,जाहि मे ओ रामलोचन ठाकुर कें ‘दुर्घर्ष अग्निहस्ताक्षर’ आ एहि संग्रह कें ‘अग्निलेखनक पहिल दस्तावेज’ घोषित करैत दाबी ठोकए छथि जे ई दस्तावेज साबित करैए जे कविता मानसिक व्यभिचारक लेल शब्दक यूटोपिया नै अइ। आगू ओ ‘अग्निलेखन’क परिभाषा दैत लिखे छथि जे अग्निलेखन यथास्थितिक प्रति अतिशय असहिष्णु,आक्रोशक तीक्ष्ण भावाभिव्यक्ति,मार्क्सवादी चिन्तन सं संपृक्त संघर्ष चेतनाक निर्माता,स्व-निर्माणक प्रति घोर आस्थावान,तें विध्वंस कें आवश्यक मानैत कोनो तरहक सुधार कंह पूर्णत: अस्वीकार करैए; मानैए जे मनुखक जीवनक सुन्दरतम क्षण ओ हेतै जखन ओ क्रांतिक साक्षी बनत—सहभागी बनत आ तावत साहित्यक काज छै संघर्षक वैचारिक धरातल तैयार करैत रहनाइ जाइ मे मात्र स्थिति निरुपण नै,दिशाबोध भयंकर(!) रूप सं आवश्यक छै। आगू ओ कविक परिचय दैत लिखए छथि—“कवि,निबंधकार रामलोचन ठाकुर मैथिली साहित्यक सुपरिचित नाम अइ,अपन प्रखरता आ वैचरिक सुदृढता स एकटा फराक स्तित्वक मालिक सेहो। हिनक

चिन्तनधाराक आधार अइ मार्क्सवाद,फलत: ‘वर्ग-संघर्ष’ आ तइ पर आधारित क्रांति हिनकर रचनाक मूल होइए। हिनका अग्निलेखन के प्रपंच आ विकृति सं बचेबाक प्रमुख श्रेय छनि।...... स्वभाव सं उग्र,विचार सं परिपक्व आ व्यवहार स सर्वहारा.....”

दुर्द्धर्ष अग्निलेखकक अग्निलेखनक पहिल दस्तावेज ‘कविता मानसिक व्यभिचारक लेल शब्दक यूटोपिया नै अइ’ कें साबित करैत अछि की नहि,ताहिपर किछु चर्चा एहि आलेखक पूर्व मे भेल अछि,किछु आगू हएत।किन्तु ब्लर्ब पर कुणालक ई टिप्पणी,जे मौलवी-मुल्लासभक फतवाक हद पार करैत अछि,शब्दस: ‘मानसिक व्यभिचारक लेल शब्दक यूटोपिया’ अछि,से कहबा मे हमरा कनियहु संकोच वा संशय नहि। ई सम्पूर्ण मैथिली-जगत कें बूड़ि बुझबाक,अनकर माल पर फुटानी करबाक,मैथिली रचनाकार-समुदाय कें मानसिक,वैचारिक आ रचनात्मक स्तर पर परम पिछड़ल आ अपढ बुझबाक आ आत्मरतिक पराकाष्ठा सं उपजल अहंकार सं ऐंठल टिप्पणी अछि। ‘अग्निलेखन’ आ ‘अग्निहस्ताक्षर’क शिगूफा एहि एहि मानसिक व्यभिचारी यूटोपियाक प्रथम पौदान अछि।एकर बादक हुनक सम्पूर्ण टिप्पणी,जेकरा ओ स्वघोषित विश्वकर्मा जकां अपन आचार्यबोधत्वक प्रभाव मे अग्निदुर्गक निर्माणक संरचना बुझि लेने छथि,वस्तुत: यूटोपियाक पसरल मकड़जाल अछि,जाहि मे अपढ कीट-फतिंगा त ओझराए कए मरितहि अछि,स्वयं अतिविद्वान मकड़ा सेहो अधमरू होइत दिवंगतावस्था मे चलि जाइत अछि।शास्वत यथार्थ छै जे भारी-भरकम,महाकाय,विराटकाय पहाड़नुमा शब्दसभक ढेरी लगएला सं कोय वेदव्यास नहि भए जाइ छै। ’पहाड़ तोड़ि देबए’, ’भुइयां हिलाए देबए’ सन-सन हुंकारा देला सं कोय क्रांतिकारी वा पहलवान नहि भए जाइ छै,ठीक ओहिना जेना ‘आगि-आगि’ चिकरला सं मूंह नहि जरए छै।गांधी-नेहरूक नाम जपला सं जेना कोय कांग्रेसी नही भए जाइ छै,तहिना मार्क्स,एन्जेल्स आ लेनिनक नाम-जाप आ ‘वर्ग-

संघर्ष', 'बूर्ज्वा', 'सरमायेदार', 'भौतिक द्वन्द्ववाद', 'सर्वहारा', 'पूंजीवाद', 'सामन्तवाद', 'लाल सलाम', 'कामरेड' आदि शब्दक आडंबरपूर्ण व्यवहार सं कोय मार्क्सवादी नहि भए जाइ छै; आ ने 'पेरेस्त्रोइका' आ 'ग्लास्नोस्त'क रट्टा मारला सं सोवियत संघ विघटित भए जाइ छै।कोनो वैचारिकता कें ग्रहण करबाक लेल एकटा समझदारी सं ओतप्रोत निष्ठा चाही,वैचारिकताक सांचा मे स्वयं कें आपादमस्तक ढालि लेबाक अटूट जिद चाही।विचार चद्दरि जकां देह पार ओढल नहि,अस्थि मे मज्जा जकां आ नस-नस मे शोणित जकां प्रवहमान हएबाक चाही।संयोग कही वा कुसंयोग,सौभाग्य कही वा कुभाग्य,कुणालक फतवारूपी परिचय-प्रस्तावना आ रामलोचन ठाकुरक काव्य-जगत दुनू मे वैचारिकताक उपस्थिति देह पर ओढल चद्दरि जकां अछि,जेकरा निज सुविधा किंवा अवसरक अनुसार 'ज्यों की त्यों धरि दिन्ही चदरिया' कएल जाए सकैत अछि आ फेर दोसर क्षेत्र मे जाइतहि 'पुनर्मूषको भव:' भेल जाए सकैत अछि।एतय जे मार्क्सवाद अछि,से एकटा सजीव दर्शनक निर्जीव अ बचकाना समझ सं उपजल फसिलक रूप मे उपस्थित अछि।मार्क्सवाद अपन राजनीतिक इस्तेमाल मे विवाद,निन्दा आदिक विषय रहल अछि।एकर आधार पर बनल राजनीतिक संरचनासभ पर हिंसात्मक रवैया अख्तियार करबाक आरोप लागैत रहल अछि।किन्तु एहि विचारक वैज्ञानिकता पर प्रश्न ठाढ करबा सं एकर विरोधीअहुसभ परहेज कएलनि अछि।सोवियत रूसक विखण्डनक आलोक मे जे ई कहल गेलए जे ई मार्क्सवादक पराजय नहि,मार्क्सवादक नाम पर बनल राजनीतिक संरचनाक पराजय अछि,से उचित। चीनक वर्त्तमान पूंजीवादी वामपंथ सेहो विचारक नहि,संरचनाक दोष अछि। भारतीय वामपंथ त शत-प्रतिशत विदेशी नकल पर आधारित अछि।एतय एकरा लागू करबा मे एहि देशक सामाजिक संरचना,एकर सांस्कृतिक परम्परा, एकर भाव-भूमिक अनुरुप कोनो परिवर्तन/परिवर्द्धनक लेल भारतीय बौद्धिकताक प्रयोग कएलहि नहि गेल।

भारतीय कम्युनिष्ट परिदृश्य पर नजरि राखनिहार विचारकसभ कें देखल छनि जे एतय जोर वैचारिक दीक्षा देबा पर नहि,कैडरक नाम पर बंधुआ मजूर बनएबा पर देल गेल अछि।एतहुका विभिन्न कम्युनिष्ट पार्टी अपन-अपन बौद्धिक कुटीर उद्योगक लेल श्रमिक तैयार करबा लेल जे अक्षरबोध पाठशाला चलबैत अछि,ताहि मे चटियासभ कें मेधावी बनएबा पर नहि,रट्टू सुग्गा बनबए पर बेसी ध्यान रहैत अछि। एहन रट्टू सुग्गा,जेकरा राजनीतिक बोलचाल मे 'छोटभईया' कहल जाइत अछि। छोटभईया वा छुटभैया,जे अपन बुद्धि-विवेक कें ताल्लुक सं बाहर राखए आ ओतबे बाजए/लिखए जे ओकरा सिखाएल/रटाएल गेल अछि,ओतबे करए/चलए जे पोलित ब्यूरो लेल वांछित अछि।ओकर अवचेतनहु मे एहि प्रश्नक कल्पना तक नहि आबए जे मार्क्स त सर्वहाराक अधिनायकत्व पर बल देने छला,किन्तु लेनिन ओहि सिद्धांत कें साम्यवादी पार्टीक अधिनायकत्व मे बदलि देलनि,जे अन्तत: महासचिवक अधिनायकत्व मे बदलि गेल आ जेकर साक्षात रूप बचल-खुचल रूस,अगियाबैताल भेल चीन,लचरल बेनेजुएला आ मिझाइत क्यूबा आदि देश मे दृश्यमान अछि।भारतीय वामपंथ एहि सभक नकलची हएबाक फिराक मे आपादमस्तक भ्रमित भए ने घरक रहल अछि ने घाटक।एकरा पर स्वतंत्रता संग्रामक दौरान अंग्रेजक लेल स्वतंत्रता सेनानीसभक मुखबिरी करबाक आ गांधी-नेताजी आदिक प्रति अपशब्द आ अपमानजनक संज्ञासभ सं कलंकित करबाक आरोप रहल अछि।1940क दशक मे वामपंथीसभ द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'अनमास्क्ड पार्टिज एण्ड पोलिटिक्स' मे गांधीक संग-संग नेताजी कें 'आन्हर मसीहा' कहल गेलए(आलोच्य कविक गांधीक प्रति कएल एहनहि सन टिप्पणीक चर्चा पूर्व मे कएल गेल अछि)। सुभाषचन्द्र बोसक प्रति त वाम शब्दावली भयावह रूप सं अपमानजनक आ अश्लील भए गेल रहए। हुनका 'काला गिरोह', 'गद्दार बोस' आ 'हिटलरक अगुआ दस्ता' तक कहल गेलए।वामपंथी लोकनि द्वारा नेताजीक आजाद हिन्द फौज कें भारतीय भूमि पर लूट,डाका,विध्वंस मचैनिहार घोषित कएल गेल

रहए।1947 मे द्विराष्ट्र सिद्धान्तक समर्थन करब,1948 मे हैदराबाद मे भारतीय सेनाक विरुद्ध रजाकारसभक समर्थन करब,1962क युद्ध मे चीनक भाषा बाजि ओकर समर्थन करब,1967 मे हिंसक माओवाद कें जन्म देब,आपातकाल मे इन्दिरा गांधीक समर्थन आ जेपी आन्दोलन कें फासिज्म घोषित करब,कांग्रेसक संग मिलि फासिस्ट विरोधी सम्मेलनक सहभागी बनब आदि-आदि घटना भारतीय इतिहास मे दर्ज अछि आ भारतीय वामपंथक भ्रमित राजनीतिक चेहराक प्रमाण अछि।भारतीय वामपंथक ई हाल मात्र राजनीतिक स्तर पर नहि छै। प्रगतिशील लेखक संघक स्थापना जाहि परिस्थितिमे,जाहि लेखक लोकनि द्वारा भेल हुअए,कालान्तर मे ई कम्युनिष्ट पार्टीक एकटा विंग भए गेल। शोभा लेल भरतीक कुछ पद भनहि व्यक्तित्वक आधारपर भेटि जाइ,किन्तु एकर केन्द्रीय पदधारी बनबाक लेल पार्टीक कार्डहोल्डर हएब अनिवार्य अछि। प्रसिद्ध विचारक चौथीराम यादवक वामपंथी वैचारिकता पर हुनक दुश्मनहु कें कोनो शंका नहि भए सकैत अछि।किन्तु वएह चौथीराम जी कें प्रगतिशील लेखक संघक विलासपुर अधिवेशन मे खुलल मंच सं दुखी स्वर मे एहि बातक उपराग दिअए पड़लनि।हम स्वयं एहि संगठन सं जुड़ल रहल छी,बिहार राज्यक उपाध्यक्ष रहि चुकल छी आ एहि अप्रिय यथार्थक गवाह छी।एतेक चर्चा मात्र ई कहबाक लेल जे वैचारिक मार्क्सवादी हएब अलग बात छै,मार्क्सवादी कार्डहोल्डर हएब अलग बात।पहिल स्थिति मानसिक आ वैचारिक छै,उत्तम छै।दोसर स्थिति शारीरिक आ भौतिक छै आ वामपंथी राजनीति कें देखैत एकरा अधम कही,नहि कही,मध्यम कही,नहि कही,उत्तमक श्रेणी मे किन्नहु नहि अछि।एहि परिपेक्ष्य मे ई मानए मे कोनो संशय नहि जे कुणालक लिखल परिचय-प्रस्तावना मार्क्सवादी विचारक प्रतिफलन नहि,मार्क्सवादक प्रहसन अछि। हुनक लिखल टिप्पणीक एकहु टा अंशक पुष्टि ने एहि संग्रहक रचनासभ करैत अछि,ने रचनाकार।ई विचित्र स्थिति अछि आ एकर व्याख्या दू तरह सं कएल

जाए सकैत अछि।पहिल ई जे परिचय-प्रस्तावनाक रूप मे कुणाल जे गाइडलाइन देलनि,तेकर अनुपालन रामलोचन जी अपन रचना मे नहि कएलनि।दोसर ई जे रामलोचन जी जे कुछ लिखलनि,तेकरा कुणाल जी ठीक-ठीक बुझिकए व्याख्यायित नहि कए सकला।ओना एकटा तेसरहु स्थिति भए सकैत अछि जे ने कुणाल जी रामलोचन जी कें पढलनि आ ने रामलोचन जी कुणाल जी कें पढलनि।ई तेसर स्थिति कनी हास्यास्पद छै,किन्तु मैथिलीक परिदृश्य,जेतय कोय केकरो नहि पढैत अछि बल्कि कुछ गोटे त पढितहि नहि छथि, कें देखैत एहि तेसर स्थितिक स्थिति बेसी सटीक लागैत अछि।एतेक धरि अवश्य जे ई परिचय-प्रस्तावना अपन गब्बरीय अस्तित्व सं कोनो विमर्श ठाढ करबाक कुल दायित्व समीक्षक-समालोचक पर बलात आरोपित कए दैत अछि आ तेकरहु विचित्र पक्ष ई जे एहि विमर्श लेल समालोचक कें कविताक अन्तर्वस्तु, ओकर शैली-शिल्प दिस कम,कविता मे जे नहि छै वा जे हएबाक चाही छल,तेम्हर उन्मुख करैत अछि।ई कनी अनेरुआ सन चुनौती अछि,किन्तु मैथिली आलोचना-साहित्यक दरिद्रता कें देखैत एहि चुनौती कें स्वीकार करब मैथिली आलोचनाक हित मे अछि।ओना स्व-निर्माणक प्रति घोर आस्थावान(आत्ममुग्ध) व्यक्ति संघर्ष-चेतनाक निर्माता भए सकैत अछि;विध्वंस कें आवश्यक माननिहार,सुधारवाद कें पूर्णत: अस्वीकार करनिहार संघर्षक वैचारिक धरातल तैयार कए सकैत अछि – ई सभ ततेक हाई-लेवलक गप छै जे एकरा मैथिलीक पोलित-ब्यूरोक जन्मजात व्यास-महासचिवलोकनि बुझथु त बुझथु,सर्वहारा-समुदायक माथक केशक उपर सं उड़ियाइत चलि जाइत अछि।किन्तु जेंकि अग्निलेखन आ अग्निहस्ताक्षर नामकरण मार्क्सवादी कविताक पैटर्न पर कएल गेल अछि त ई देखब उचित जे एहि पैटर्न मे कोनो तथ्यगत,वस्तुगत संगत छै की नहि।

'मार्क्सवादी चिन्तन सं संपृक्त' कविता मार्क्सक अपनहि लेखन सं शुरु भेल आ विश्वक विभिन्न भागक क्रांतिकारी व्यक्तित्वसभ सं समृद्धि

पओलक।एहि पर पूर्व मे विस्तृत चर्चा कएल गेल अछि।मार्क्स,एन्जेल्स,लेनिन आदि मूलत: कवि नहि रहथि,राजनीतिक चिन्तक रहथि,अपन राजनीतिक उद्देश्यक पूर्तिक क्रम मे यदा-कदा किछु लिखैत रहथि।तें हुनकरसभक कविता मे काव्यक दृष्टिकोण सं नाराबाजी आ जोश रहए।माओत्सेतुंग आ होची मिन्ह सेहो एहनहि सन कवि रहथि,किन्तु हिनकादुनू मे कलात्मकताक संग-संग प्राकृतिक संवेदनाक सन्दर्भ बेसी रहए,जे हिनकासभक कविता कें तुलनात्मक रूप सं उल्लेखनीय बनबैत अछि।एतय बेसी विस्तार मे नहि जाए कए एतबे कहबाक अछि जे कम्युनिष्ट क्रांति सं जुड़ल बहुत रास लोग फुरसत मे कविता लिखलनि किन्तु ओसभ मूलत: कवि नहि छला। आगू जए कए एहि परम्परा मे एहन बहुत रास लोग अएला जे क्रांतिकारी गतिविधि सं जुड़ल त नहि रहथि,किन्तु एहि विचारधारा कें मानैत रहथि आ मूलत: कवि रहथि।एतय मात्र नाजिम हिकमतक चर्चा करैत चली,जे अपन देश तुर्कीए टा मे नहि वैश्विक स्तर पर चिन्हल गेला,प्रसिद्ध भेला। से हिकमत अपन ओहेन अनेकानेक प्रारम्भिक कवितासभ कें बाद मे खारिज कए देलनि,जे मात्र प्रोपगण्डा लेल लिखल गेल छल।किन्तु ई खारिजबला कार्रवाई ओ तखनि कएलनि,जखनि हुनक कविता उत्तरोत्तर विकास करैत गेल आ ओकरा 'मार्क्सवाद' सं बाहरहु स्वीकृति भेटलए।एतय कहबाक एतबे जे मार्क्सवादी कविताक दू धारा रहलए—एकटा प्रोपगण्डा कविताक आ दोसर शुद्ध (प्रोपगण्डामुक्त) कविताक। आब प्रश्न ई ठाढ होइत अछि जे आलोच्य कविक कवितासभ एहि दू धाराक कोन धाराक कविता अछि,कोनो धाराक अछिअहु वा नहि?वामपंथी धाराक आइ तक लिखल कवितासभ मे आलोच्य कवि कें एहन कोन तत्त्वक कमी बुझएलनि,जेकर पूर्तिक लेल हुनका स्वयं कविता लिखब आवश्यक बुझएलनि?हुनक अपन कविता एहि क्रांतिकारी विरासत मे किछु जोड़ैत अछि वा नहि?मार्क्सवादी चिन्तन मे सर्वहाराक शत्रु-समुदाय आ क्रांति-पथ मे बाधक तत्व कें सेहो

चिन्हित कएल गेल अछि।ई देखब आवश्यक जे अग्निहस्ताक्षर सेहो ओहि शत्रु-दल कें चिन्हलनि अछि की नहि, अग्निलेखनक लक्ष्य-वेधक वृत्त मे ओ शत्रु-दल आएल अछि वा नहि आ ओकरा पर समधानल प्रहार भेल अछि वा नहि?

अर्जुनक आंखि,माछक आंखि आ निशाना

भारतीय परिपेक्ष्य मे सर्वहाराक सर्वाधिक प्रबल शत्रु अछि—उपनिवेशवाद। एहन शत्रु जे मायावी अछि,मायाक बलें अपन रूप बदलि लैत अछि,माया पसारि लोक-डीठ कें भ्रमित कए सकैत अछि,मायाजाल सं अपन बहुरूप कें मनोवांछित विस्तार दए सकैत अछि आ निरन्तर शोषण करितहु पीड़ित कें शोषणक कनिकहु टा आभास नहि हुअए दैत अछि।उनटे पीड़ित कें अपन शोषण एकटा प्रभु-कृपाक आनन्ददायी रूप बुझाइत रहैत अछि।

अपन वर्तमान राजनीतिक,आर्थिक आ सांस्कृतिक निर्मिति पर सर्वहारा-प्रतिबद्धताक संग दृष्टिपात करी त एहिपर औपनिवेशिकताक घातक प्रहारक स्पष्ट निशानसभ देखाइ पड़त।दृष्टिक स्पष्टता हुअए त एकर बाह्य आ आन्तरिक घावसभ ठाम-ठाम उपस्थित देखाइत अछि आ हमरासभक मूंह दूसि रहल अछि।इएह 'घवाह निर्मिति' आइ अपनसभक राष्ट्र-समाजक निर्णायिक आ भाग्यविधाता बनल अछि।प्रकट रूप मे ई ब्रिटिश उपनिवेशक करतूत बुझाइत अछि आ बहुलांश मे ई सत्य सेहो अछि।मानल जाइत अछि जे ई देश जन्म-जन्मान्तर तक ब्रिटिश उपनिवेश बनल रहए,ताहि लेल अंग्रेजसभ एहि देश पर तीन चीज आरोपित कएलक—ब्रिटिश पार्लियामेन्टक नकलबला भारतीय लोकतंत्र,ब्रिटिश नौकरशाहीक प्रतिरूप घटिया शासनतंत्र आ तेसर फोंकाएल औद्योगिक सभ्यता। चाही त चारिम तत्त्वक रूप मे मैकालेक शिक्षा-पद्धति कें सेहो राखि सकए छी। अंग्रेजसभक ई प्रयत्न एतेक अप्रत्यक्ष आ सूक्ष्म रहल अछि जे एकरा पकड़ब कठिन।एकरा चिन्हबा मे

संकट ई छै जे औपनिवेशिक मंशा कें आधुनिक सभ्यताक अर्थक अढ मे झांपि देल गेल अछि। एकर व्यवहार उपर सं अतिशय सुधारवादी, लोकतंत्रात्मक आ प्रगतिशील रहल अछि।एकर सम्पूर्ण दमन-लूट-शोषणक तंत्र खूब महीन आ अप्रत्यक्ष रहल अछि। भारतीय बुद्धिवादक संकट ई छै जे एकरा थोड़-बहुत बुझितहु,एकर कम-बेसी विरोध करितहु ओ एकरा प्रति आकर्षित सेहो छै।स्वाभाविक छै जे चाहे हमरासभक लेखन हुअए,चाहे हमरासभक राजनीतिक दल हुअए,चाहे हमरासभक विभिन्न शासन-सत्ता हुअए,सभ एहि ब्रिटिश औपनिवेशिकताक अधीन विकसित भेल अछि आ हमसभ एकरहि प्रभाव मे यांत्रिक रूप सं प्रत्येक क्षेत्र मे क्रांतिकारी भेल छी।किन्तु ई सभ त एम्हर दू-चारि सौ वर्षक खेरहा अछि।

हजार-हजार वर्ष सं भारतीय राष्ट्र-समाज एहि ब्रिटिश औपनिवेशिकता सं बेसी भयंकर,बेसी घातक,बेसी जहरी औपनिवेशिकताक दंश सं पीड़ित रहल अछि।समकालीन भारतहु मे पुरातन भारतक औपनिवेशिकताक रक्तजीवी तत्त्व आइअहु कतेको धूल-धुसरित परत,गली-कोनटा,दीमकक भोज्य-अधभोज्य बनल पोथीसभ,बीहड़ जंगल-पहाड़ आ भुतिआएल-अनचिन्हार भेल खण्डहरसभ मे त अचेत-अवचेत अवस्था मे उपस्थित त अछिए, विरासतक स्वघोषित ठीकेदार बनल पण्डा,महन्थ,सन्तादिक पौरोहित्य-प्रवचन आदि मे खूब सचेत भेल हुंकार भरि रहल अछि।ई पुरोहिति उपनिवेश हजारक हजार वर्ष तक अपन घातकता सं जे कएलक से कएलक, ब्रिटिश उपनिवेशवादक संग नत्थी भए कए ई औरहु ज्ञानघातक भए गेल अछि।स्वतंत्रता आ संविधान-प्रदत्त अवसरक प्रभाव सं अधिकार-चेतनाक जे सुगबुगी-छटपटी-कछमछी अजुका सर्वहारा-समुदायक बीच जागल अछि,ताहि सं चौकन्ना भए उपनिवेशवादी तत्त्वक ई मिश्रित अभिजात्य-मानस नव-नव खटराग लए कए मंचस्थ भए रहल अछि।‘तिरहुता’क ‘मैथिली’ नामकरण मे सफलता पाबि आब एकरा संग ‘मिथिला-मैथिल’क

प्रपंचत्रयी रचि साहित्य-संस्कृतिक मंचसभ पर मैथिल ब्राह्मणक जातीय आ अणुष्ठानिक परिधान ‘पाग’ कें मिथकीय मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक कहि जे तमाशा ठाढ कएल जाए रहल अछि,से यजमानी उपनिवेशक डोरी ढील भेलाक बाद एहि क्षेत्र-विशेष (कोलकाता मे बसए सं पहिने आलोच्य कवि सेहो एहि क्षेत्रक रहवासी रहथि) कें अपन सांस्कृतिक उपनिवेश बनएबाक नवका उपक्रम अछि।ई पौरोहित्य-परम्परा जाति-वर्ण-धर्मक नाम पर मनुष्य-मनुष्य मे विभेद करबाक ,स्वयं कें उच्च आ आन कें नीच मानबाक मानसिकता कें पसारबाक अपराधी रहल अछि आ एकरा अपन भरण-पोषणक माध्यम बनएने रहल अछि।इएह पुरोहिती-उपनिवेशवादक परिणाम अछि जे ई राष्ट्र-समाज,एतहुका लोक-वेद कहियो एकजुट भए कए आततायी राजवंशसभक,विदेशी आक्रांतासभक विरुद्ध लामबन्द नहि भेल आ जं कहियो एकजुटताक प्रारम्भिक चरण अएबहु कएल त अगिला चरण मे एहि विभेदकारी तत्त्वक कुप्रभाव मे छिन्न-भिन्न भए गेल।

मार्क्सवाद वैश्विकताक पैरोकार अछि,किन्तु अपन मौलिक सोच मे क्षेत्रवादक घोर विरोधी अछि।एकर मानब छै जे क्षेत्रीयताक आग्रह सं सर्वहाराक एकजुटता खण्डित होइत अछि आ ई साम्यवादी राष्ट्रक निर्माण मे बाधक होइत अछि। क्षेत्रीयतावाद साम्राज्यवादक ओ हथियार अछि जे सामन्तवाद,राजतंत्रवाद आदिक रूप मे परिवर्तन, आधुनिकता,वैश्विक भाइचाराक धुर विरोधी होइत अछि,यथास्थितिक पोषक होइत अछि, अतीतोन्मुख होइत अछि,भविष्य-दृष्टि कें बाधित करैत अछि,चरित्र मे बूर्ज्वा होइत अछि आ सर्वहाराक गुलामीक मूल कारक होइत अछि।कोनो देशक कम्युनिष्ट क्रांति राष्ट्रनिर्माणहि लेल भेल अछि आ एहि मे राष्ट्रक प्रति घृणा,ओकर विखण्डनक कामना आ क्षेत्रीय राज बनैबाक लिलसा कतहु नहि देखाएल अछि।भारतक प्रगतिशील-जनवादी कविताक कविलोकनि लेल, पेरेस्त्रोइका आ ग्लास्नोस्तक परिणामस्वरूप विघटनक नियति कें प्राप्त होइ

सं पहिने तक,प्रिय यूटोपिया रहल सोवियत संघ एकर ठोस प्रमाण अछि।

ओना संज्ञा जे रहओ,उपनिवेशवाद,पुरोहितवाद,पुंजीवाद,सामन्तवाद सभ एकहि सिक्काक विभिन्न पहलू अछि, अपन मूल मे सर्वहाराक शत्रु अछि आ जातिवाद,सम्प्रदायवाद आ क्षेत्रीयतावाद आदि एकरहि बाइ-प्रोडक्ट अछि।

ओह,कलकत्ता !

[एतय आबि अकस्मात रामलोचन जीक 12 फरवरी,2021क भोर मे बिना केकरहु किछु कहनहि अपन घर सं बहराए जएबाक आ व्यक्तिगत,सामुहिक आ प्रशासनिक स्तर पर समग्र प्रयासक बादहु हुनक कोनो सूचना नहि भेटबाक स्तब्धकारी सूचना भेटैत अछि। कलम आ लिखबाक आवेग दुनू ठमकि जाइत अछि,आगू बढए सं नठि जाइत अछि। आ ई आलेख रामलोचन जीक जीवनहि जकां ....]

कलकत्ता !

जेकरा समक्ष बम्बई कें पिछड़ल शहर मानल जाइत रहए।

जे औषधि आ कपड़ाक अखिल भारतीय केन्द्र रहए।

जेतय आजादीक बाद भारतक शीर्ष कम्पनीसभक,मल्टीनेशनल कम्पनीसभक मुख्यालय रहए।

जेकर एयरपोर्ट सं भारतक समस्त एयरपोर्टक सम्मिलित उड़ान सं बेसी उड़ान होइत रहए।

जे एकटा अति-समृद्ध सांस्कृतिक विरासतक केन्द्र रहए आ विभिन्न संस्कृतिक समावेशी सेहो।

जेतय वामपंथी शासन अएलाक बाद सभटा उद्योग खण्ड-विखण्ड भए गेलए आ विभिन्न उद्योग कें ओतए सं अपन कारबार समेटए पड़ि गेलए।

जेतय हड़ताल सामान्य बात रहए आ अक्सरहां ई हिंसक रूप लए लैत रहए आ ताहि मे कतेकहु प्राण गेलए।

जेतय सं धीरे-धीरे राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनीसभ भागल,बौद्धिक आ कलाकार भागला आ साम्यवादी राजनीतिक क्रियात्मक रूप कतेक भयावह होइ छै,तेकर ओ प्रदर्श भेल।

जे वर्ष 2001 मे कलकत्ता सं कोलकाता भेल।

ताहि कलकत्ता कें कलकत्ता मे प्राय: पांच दशक बितैनिहार कवि रामलोचन ठाकुर एकाध ठाम बीध छोड़ि अपन रचनासभ मे कोनो मोजर नहि देलनि।

की हुनका ई बूझल रहनि जे ई कलकत्ता हुनक अज्ञात-यात्राक प्रस्थान-बिन्दू हएत?

(अपूर्ण)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

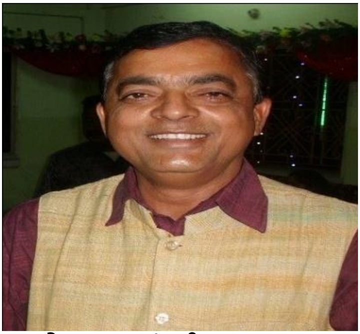

आमोद झा- संपर्क- 9433100407

“सत्यक एकपेरिया पर काव्य वितान ’’

मैथिली भाषा साहित्य ओ संस्कृतिक दृष्टिसँ सामाजिक भाव विकास कयनिहार, निरंतर मानव- जीवन मूल्यक आदर्श पर अग्रसर सामान्यतया यात्रीक समान धर्मा रचनाकार, ठेंठ शब्दक ठाठ कोमल उपयोग कयनिहार, काव्य बानाक अक्षर शिल्पी, श्रृजनात्मक साहित्यकेँ अभिव्यक्ति देनिहार, मनुष्य जीवनक कुत्सित मनोवेग के चिंतन आ व्यवहारमे वैयक्तिक चरित्रक निर्माणकेँ उजागर कयनिहारक नाम छनि बाबूपाली जिला मधुबनीक कोलकाता बासी श्री रामलोचन ठाकुर । आदरणीय ठाकुर जीक प्रसंगे आदरणीय विद्वान नवीन बाबू लिखैत छथि जे “ रामलोचन बाबूक काव्यमे निराशाक बिरड़ोमे आशाक नव आलोकक संधान कठिन, से मुदा हिनक काव्यमे भटैत अछि ”। एतद् कविक रचनामे कारुणिक मन:स्थितिमे नव कवितामे जे विद्रोह तकर बानगी पोथी नामे लिखल रचना शीर्षक “ लाख प्रश्न अनुतरित “मे अनुभव करी हम चाहै छी हमर कविताक भाव कोटि कोटि शोषित पीड़ित मनुपुत्रक परितोष नहि, आक्रोशक उपादान हो मुक्ति संघर्षक प्रेरणा, शक्ति सरंजाम हो हम चाहैत छी - - -!

एतद् निराशाक बिरोड़ोमे आशाक नव आलोक संधान केनिहार मुक्ति संघर्षक कवि श्री रामलोचन बाबूक| पोथी “ लाख प्रश्न अनुतरित ’’ अपन पाठकीयताक भाव-विचार ओ समीक्षात्मक अभिव्यक्ति लिखि रहल छी। ताहि प्रसंगे कही प्रस्तुत पोथीमे छोट पैघ कुल 48 गोट रचनाक दूरी कुल एक सय पेजक मध्य असीम शक्तिक संग नव निर्माणक ओ जागरूकताक संग प्रतिष्ठापन भेल अछि। सुधि पाठक कवि रामलोचन ठाकुर जीक हृदयमे वर्तमान परिवेशमे धन-पद-लोलुप प्रवंचक चाटुकार,ब्यवस्थाक प्रति अनास्था असंतोषक मोनमे हिलकोर मारैत छनि आ बनि जाइत छथि ब्यवस्थाक प्रति विद्रोही कवि । से देखू अपन बहीन तक के व्यवस्थाक प्रति अपन दायित्वक निर्वहण करैत “बहीनदाइक नाम एगो चिठ्टी”मे :

“कथमपि उचित नै कानब/ वरन चिन्हब अपन शक्ति आ बाहरोक शब्द के अकानब - - - आ एगो प्रण ठानब तऽ कालि - - - आगामी कालि हमरो एगो परिचय रहत बिरदानक हम हमर विरदावन”

कवि कुत्सित मनोवेग आ निराशाकमेघ जे आच्छादित तकरा आशान्वित करबाक धारणा छनि । आम जनकेँ अपन शक्तिसँ परिचय करायब आ अपन उदात भावमे अपन अतीत ओ सामाजिक व्यवस्थाक जे अतीत गौरव के निर्मित करब कवि अपन अभीष्ट सेहो रखैत छथि। अध्ययन कहैत अछि जे समालोचना शास्त्रक अंतर्गत समीक्षामे यथासाध्य सर्वांगीन परिचय प्रस्तुत करब आवश्यक मुदा से भऽ जाइत अछि व्यक्तिगत दकियानूसी विचार, इएह जे मैथिली साहित्यक समालोचना ओ समीक्षाक स्तर शनै:-शनै: समाप्तक कागारपर छैक परिणाम सृजनशील साहित्यक बेस कमी भेल जा रहल अछि । पाठकक कमी साहित्यक मनीषी लोकनि विमर्श कऽ रहला अछि, “ लाख प्रश्न अनुतरित” मध्य प्रत्येक रचना प्राय: स्व के चिन्हबाक प्रेरणा आ मिथिलाक संस्कृतिक चेतना आ समाज उत्थानक दर्शन करबैत अछि। मातृभूमिक स्वरूपक स्नेह जगबैत अछि ।कवि भोगल यथार्थ आ युग

परिस्थितिक ढकफेरीसँ उत्पन्न अविश्वास - अनास्था-अकुलाहटिसँ अपन अग्रज कवि जीवकांतक समीप जा आशाक संचार होइत शीर्षक “ वसंत गीतक मादे”मे:

"आउ ने हमरा लोकनि संग मिलि पटाबी -----आइ ने काल्हि एहिमे होएतैक नव पल्लव रंग बिरंगक फूल"
एतद काव्यकार सदैव साकांक्ष अपन शास्त्रीय काव्यक आंतरिकमे बसल सूक्ष्म भाव जे मुद्रित होइछ से पाठकक हृदय के गद-गद कऽ जाइत अछि। सहजातावादक प्रणेता सोमदेवसँ प्रभावित काव्य बानाक रूप लैत “ अपन समाचार “ शीर्षकमे मानवीय दुर्बलता ओ दृढताक समन्वित भाव भेंट-घाँट क्रमें अपन निजत्वक झलकैत स्नेह "हमरो एकटा गाम छल" गामक प्रति अगाध स्नेह, गामक सरलता भरल जीवनमे सोहर आ समदाउनक अतिरेक कविक मोन अपन गामेमे बसल रहैत छनि, ओना विद्वान नवीन बाबू के मैथिली कविता पर नॉस्टेलजियाक गंध अबैत रहै छनि, मुदा वर्तमानमे मैथिली कविताक स्वरूप बदलि रहल छैक। स्वतंत्रताक मानवीय शोषण आ गरीबीक पराभव आ गुनधुनियोमे गामक लोक श्रद्धा-स्नेहक बीच मस्त रहैत अछि। चरित्र निर्माणक भावमे कवि “ एक फॉक अन्हार : एक फॉक इजोत"मे गाम आ शहरक बीच अंतर के स्पष्ट करैत, समालोचनाक मादे जयधारी बाबू लिखैत छथि जे मनोवैज्ञानिक अपनत्व जखन रहि जाइत छैक तखन मानसिक शक्ति पर कलमक जोर मारैत छैक, तकरे फल कविक “ मैथिली – मंदिरमे दीप लेसैत” रचनामे आरसी प्रसाद सिंह जीक, “फूल जी पूजाक आनल पॉतीमे अपन भाव दीप जराय स्वगत स्नेह दर्शा रहलाह अछि । “शब्द” शीर्षकमे शब्द ब्रम्ह साधनामे लीन मानू कवि निज चिंतक भावमे सामान्य जन जीवनक कल्याणक कामना, ओना सब ठीके रहैक शीर्षकमे कवि भाव यतिक समरूपतामे ठाकुर जीक मुखर वाक्यांश जे हिनक विशिष्टता अछि। कविक

रचना मानू कवियेक पाँती मादे कविक “कीर्ति चमकैत चान-पुनिमक” अमर कीर्ति भावोद्रेक भेल अछि । कही तँ समालोचना शास्त्रमे साहित्यमे एकरा कलात्मक अभिव्यक्ति मानल जाइछ। कविक रचनामे नित नवीन प्रयोगसँ कवि रामलोचन बाबू अर्थानुसंधाता मात्र नहि अपितु काव्य जगतक संस्पर्श अनुभूति संड़्गाता बनि जाइत छथि। मैथिली काव्य जगतक बहुआयामी कवि “ओना सब किछु ठीक रहैक”।मे थिंक ग्लोबली एक्ट लोकली'क बौद्धिकता ओ चिंतनपूर्ण सत्यता पर आधारित कीर्ति छनि। कविक प्रत्येक सृजन क्षेत्रीय संस्कारसँ उपर उठल संवेदनाक गहनता पर आधारित अछि। श्रद्धांजलि नहि दऽ पाएबमे लिखै छथि:

"अल्ला ईश्वर तेरो नाम सस्वर गाओल जा रहल आ बढले जा रहल दिनानुदिन अल्ला ईश्वरक बीच व्यवधान "

एतद् पोथीक नेल्सन- मंडेला आदिक भाव कमोवेश एक्कहि सजगता संग आत्म निर्वासन भावसँ तँ “ नीक नहि कयल अहॉ” शीर्षकमे बंगला साहित्यक मर्मज्ञ कवि शक्ति चट्टोपाध्यायक अवसानक व्यथामे अपन

विशाल ह्रदयक आशय Oh dissection calendar भावक परिचय, 15 अगस्तमे रजनीतिक गिरावट संज्ञाहीन नेताक परिचय तँ एना नहि बुझाइए देशराग आ धरती प्रतिकार करैछ शीर्षकमे यथार्थवादी कवि यदुनाथ झा “यदुवरक” समीप अनैत छनि । कविक अपन भाषा साहित्यक प्रति असीम स्नेह आ अनुराग देखैत यदुवर जीक भावमे भाव “मातृभाषा आ मातृभूमि एके सम सेवथि। विवुद्ध त्यागथि अधम मलीन ।आशय ठाकुर जीक रचना परिधि अत्यंत विस्तृत इएह जे हिनक काव्य इन्फ्लूएन्स वर्तमान हिनक समकालीन कविक भीड़सँ फराक आनि ठाढ करैत छनि। वर्तमानमे अद्य पतन पर कतेक व्यथानुभूति भरल रचनाक बानगी:-

"महामान्य अदालत । ओना कहबा लय बहुत किछु अछि हमरा लग मानवताक आदिसँ अद्यपर्यन्त किन्तु सीताराम कह - - - आत्माराम रटाओल

पिजड़ामे बंद पाखीक- - -!"

उपर्युक्त रचना आदिमे कवि गुणीभूति ब्यंगकार कविक रूपे
" ओहि दिन उगल नाञि छल सूर्य" मे आंतरिक अंतर्विरोध अतीतक गुलामीक मानसिकतासँ मुक्ति संघर्षक संदर्भ,विकट द्वन्दसँ साक्षात्कार करबैत कवि के मनन करू:- नञि कथमपि नञि - - - - -वर्तमान स्वरमे बाजि उठल अतीत विप्लव की होइ छै बाबा ? कविक काव्यधारा एकटा प्रवाह अछि । अत्याधुनिक अकविताक प्रवाहमे कतेक यथार्थवादी मर्मस्पर्शी शहर शामियानामे अनुभव करी: कियो न्यायिक जाँच कऽ कियो स्मारक निर्माणक आ बात एतेक दूर तक गेलैक -- - - -गोली धरि चलि गेलैक ।परिस्थितिक भयंकरतासँ क्षुब्द कवि, देश आ समाजक उलझल समस्या के निदान तकैत दिशा लक्षित करैत "भगवान तथागत" शीर्षकमे बुद्धक मार्ग के आवलंम्बन करैत छथि । साहित्यमे कविक शील्प शैली जीवन्तताक प्रतीक मनुख आ ईश्वर शीर्षकमे समाजसँ आलोपित होइत मनुख माने मनुखता जाहिसँ चिंतित लिखैत छथि :

"मनुक्ख नहि रहल रहि गेल किछु हिन्दू - - - मुसलमान - - - सिख - - - क्रिस्तान"

कवि सदैव समाजक बीच कटु सत्य के उजागर करैत शासन आ व्यवस्था पर कड़गर चोट करैत छथि । काव्यमे व्यंग्यक एकटा सुदीर्घ परंपरा रहलैक अछि गाम कोतवाल शीर्षकमे व्यंग्य वक्रोक्ति उक्ति जतहि कोतवाल चोरक ततहि उपद्रव, तहिना महाश्मशानमे कवि सबहक अछैत जीवाक लिलसामे श्मशानमे बसल अछि: जीवाक लिलसामे पल-पल मरैत पल - घड़ी – दिन – गनैत लोकमानवीय संवेदनाक अपूर्व मिसरी घोरल काव्य सृजन,'क भावमे भीड़सँ बाहर करैत छनि एतद् रचनाक मादे सिद्ध होइछ कवि अपन समकालीन

कविसँ अत्यंत संवेदित छथि। अपन उदात् भाव ओ समभावमे “ अहाँ आ हम “ शीर्षकमे अपूर्व शब्द संधान करैत कवि हमरा मोन पड़ैत छथि सर्वमान्य आधुनिक कवि राम कृष्ण संग राजकमल जे कहलनि “ समय एकटा साँप “ कहलनि “सद्य: अनुभव करी: क्रोनिएक घूस खा मैच हारब थोरेक पाइपर बिका जाइछ समाचारसे नहि बनैछ समाचार चिंता जुनि करी - - -!
अस्तु कवि अपन अग्रज कवि सबहिक सदैव अनुज भावमे पाठक पबैत छनि जकर प्रभाव पाठक हुनक रचनामे स्पष्ट छाप देखैत अछि ख्यातिनामा कवि जीवकांत “ नाचू हे पृथ्वी “ वेद पुराण पर समसायिक विषमताक प्रभाव तहिना ठाकुर जीक रचनामे भेटैत अछि ।“ संवाद “ शीर्षकमे “ अग्निपुष्पक “ पत्र पाबि

कतेक आह्लादित छथि से देखू : "सहस्त्रबाहुक अभियानक शंखनाद थिक “संवाद” भाइ !मैथिली काव्यक नवताक पक्षधर कवि अपन रचना बसात, कौआ,मैना शीर्षकमे पारंपरिक दलान खसैत आ केबिन के गेट खुजैत, भाव बोधमे आधुनिक परिवेशक भयंकरतासँ सेहो चिंतित छथि । यथा टीड़ी शीर्षकमे नेता रूपी टीड़ी समाजिक भाव व्यवहार के चाटि जाइत अछि , नव रचना मादे भाइ कुलानन्द मिश्र कैँ संबोधित करैत लिखै छथि जे युगक धुआँमे लोक औनायल जकाँ, बुझू कवि नव तूरके एवाक आह्वान करैत , सोना आब नम्हर भS गेलैए शीर्षकमे जीवनक मार्गदर्शन कS रहला अछि। दिन एखनो बहुत बाँकी छै मे कवि कोनो धीरोदात वा धीरप्रशांत दैव गुण संम्पन्न नायक'क व्यंजना नहि अपितु ओ मनुक्ख जे अपन जन्म लग्नहिसँ संघर्षरत अन्हारक विरूद्ध कवि सदैव आगू बढ़बाक लेल प्रेरित करैत छथि । उनटा बसात शीर्षकमे व्यंग्य वक्रोक्ति शैलीमे कतेको समस्याक समाधान ओ जगजियार कयलनि करैत छथि । छोट-छोट सृजनमे तिस्ता नदीक समस्या, सिक्किम ओ गेंगटोक आदि-आदि स्थानक वर्णन आदिक संग किछु पाश्चत्य शैलीक हाइकू जे भारतीय काव्य परंपरामे प्रचलित किछु सृजनमे अपन भाव

अभिव्यक्ति खूब सुतरलनि अछि ।यथा: इहो बर्ख ओहिना बीति गेल बूढ अथबल सूर्य बस गैरेजक पछुआरमे डूबि गेल ।

एतद् “लाख प्रश्न अनुतरित” पोथीक अध्ययन - मनन – विश्लेशणसँ स्पष्ट अछि जे ठाकुर जीक काव्य परिधि विस्तारमे युग जीवनक गौरवगाथा संग प्राकृतिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक समसायिकताक उत्कर्ष - अपकर्ष संग साहित्य समाज महापुरूष संग व सामाजिक ब्यवस्था पर सौंदर्य चेतनामे लक्षणा व्यंजना अप्रस्तुत विधान सांकेतिक भाव करूण विवशता सामाजिक अंतर्विरोध द्वंदात्मक उन्मेष,वर्ग चेतनाक स्वरूप अशिक्षा-अविश्वास भुखमरी भ्रष्टाचार, चाटुकारिता,सँ टुटैत सामाजिक व्यवस्था पर कविक पाँति मोन पड़ैत अछि: आ एगो दीर्घ निसास छोड़ैत बाजल रामलाल बौआ ! एहि अस्सी बर्खक बयसमे हम तऽ खाली बेरबादिए देखैत आयल छी बौआ !उपर्यक्त पाँतीक संग कविक लाख प्रश्न अनुतरित रहैत छनि जे पोथीक नामके सार्थक ओ समीचीन सिद्ध करैत छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

चंद्रेश-संपर्क-9430640883

प्रतिरोधी साहित्यकार रामलोचन ठाकुर

रामलोचन ठाकुरक पहिचान प्रतिरोधी साहित्यकारक रूपमे। ओ सदैव संघर्ष चेतनासँ संपृक्त भऽ व्यवस्थामूलक विरोधमे अपन कलमकेँ हथियार बनौलनि। हुनका केखनो समझौतावादी गंध पसिन्न नहि छलनि। ओना किछु समझौता अबस्से जीवन संघर्षमे करए पड़लनि अछि जकरा मनुक्खक दुर्बलता ओ विवशता बूझि अवहेलित कएल जा सकैत अछि। ओ यथास्थितिवादकेँ तोड़बाक प्रयास अपन कथनी ओ करनीक माध्यमे अबस्से केलनि अछि।

ओ लिखलनि से जमि कऽ लिखलनि। हिनक दर्जन भरि मौलिक आ अनूदित पोथी आएल अछि। बहुत रास रचना पत्रिकाक पातपर अछि। एहि रचना सभमे हिनक मानसिक परिवेश आ अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक सत्य खूजि कऽ उभरल अछि से वैविध्य परिवेशमे विभिन्न छवि-छटा नेने विविध अर्थमयी भऽ आएल अछि।

ओ बौद्धिक रचनाकार छथि। हिनक भाषामे सहज सौंदर्यक दृष्टि अछि। ओ

विभिन्न वयक लोकक लेल विविधतामे रचना केलनि। एहिमे व्यवहारिकता सार्थकता आ स्वाभाविकता अछि तँ किछु रचना अबस्से गुरू गंभीरतामे आएल अछि। जखन जीवनक वर्तमान आ भविष्य डवाँडोल बुझाइत छैक आ अतीतक फरफराइत पन्ना मूँह दूसए लगैत छैक तँ स्वाभाविक थिक जे आँखिक आगा अन्हार या छापि कऽ इजोतकेँ मटियामेट करबापर तूलि जाइत छैक। एहने दुःस्थितिमे हिनक अनुभव,सोच आ दृष्टिसँ ओहि अन्हरियाकेँ फाड़बाक ब्योंत अपन रचनाक माध्यमे प्रस्फुटि भऽ करबैत अछि। ओ केखनो काल जँ गुम-सुम भऽ चुप्पी लाधितो छथि तँ ओ तैयो संकेतक भाषामे बहुत किछु कहि दैत छथि जे कहबे केलनि।

हिनक सभ हीत-मीत अछि आ केओ नहियो अछि। कारण आपकतामे रहितो ओ ओहि व्यक्तिकेँ चुट्टी काटबासँ परहेज नहि करैत छथि जनिक काज अनसोहाँत बुझाइत छनि। तें शत्रु बनाएब आ राखब हिनका पसिन्न छनि। कारण, दूमूँहा चरित्रकेँ उघार करबासँ ओ केखनो परहेज नहि करैत छथि। उदाहरणस्वरूप एकटा नहि बहुतो घटना घटित भेल अछि जे हिनक कलमक नोकपर चढ़ि कऽ कागतपर उभरल अछि। ओ विविधाकेँ दुविधा कहि प्रचारित-प्रसारित केलनि।

हिनका जखन जे आवश्यकता बुझेलनि से लिखलनि। गद्य ओ पद्य दूनू लिखलनि। ओ बात-बातमे बातकेँ रखलनि। कही तँ छिलका छोड़ा कऽ प्रस्तुत कऽ देलनि। अपने 'बेताल कथा' (१९८१) हास्य-व्यंग्य पोथीमे सात गोट आलेखक माध्यमे विभिन्न विषयादिकेँ उठा कऽ जीवंततामे चरित पुराणकेँ राखि देलनि। जेना 'कुर्सी महात्म्य'मे स्पष्ट रूपे लिखलनि अछि "विभिन्न जाति आ धर्मक बीच झगड़ा बझेबाक प्रयास हो। आ एहि सभ काजक लेल प्रचुर मात्रामे चमचा प्रोडक्सन हो। आर कतेक रास बात छैक जे तोरा ओ कुर्सी स्वंय सिखा देतह (२१)"। आजुक राजनैतिक परक स्थिति-पातकेँ उठा कऽ जे ओ व्यवस्थापरक छिद्रान्वेषणकेँ देखार केलनि अछि से वस्तुतः कोनो

निर्भीक साहित्यकारे इमानदारीपूर्वक दृढ़तामे कऽ सकैत अछि जे ओ केलनि अछि। आजुक भ्रष्ट सत्ता-व्यवस्था अपन तिकड़मी चालिमे बझबैत दूमूँहा चरित्रकेँ देखार करैत अछि। ई ओ विभिन्न अवसरपरक बहुत किछु खूजि कऽ वा मौन भाषामे कऽ देलनि अछि। हिनक भीतर जे जन-समाजक अपसंस्कृतिक गादि अछि तकरा ओ ताकि कऽ जमा केलनि अछि आ ओहि कूड़ा-कर्कटकेँ मानसिकतासँ बहरिया कऽ फेकि देलनि अछि। समाजक मूँहपर ओ समाधानपूर्वक थापड़क चोट देलनि अछि। ई सत्य अछि जे हिनक रचना जन-मानसक बातकेँ उठबैत जन-जीवनकेँ झकझोड़ैत अछि। ओ जन-जनक पीड़ाकेँ अपन पीड़ा बना सार्वजनिक कऽ देलनि अछि। ओ आत्मकथ्यकेँ जगतकथ्य संग सामंजस्य स्थापित कऽ सर्वजीन बनबैत छथि। किछु बात ओ व्यंग्यक माध्यमे सेहो चुप्पी सधैत संकेतक भाषामे कहि दैत छथि। तें ओ 'विद्यापतिक बर्खी'मे कहि उठैत छथि-"आजुक मैथिल जाति भूतजीवी आ भूत प्रेमी थिक, ओकरा वर्तमान आ भविष्यक कुनू संबंध-सरोकार नहि छैक। एहि प्रकारे ओ जे मैथिल जातिपर चोट केलनि अछि से कसगर चमेटा कसैत ओकर स्वाभाविक गुणकेँ निखारलनि अछि।

रामलोचन ठाकुर मूलतः आ प्रसिद्धतः कवि छथि। हुनक कैकटा मैथिलीक पोथी से कविता संग्रह अछि जेना इतिहासहंता, माटि-पानिक गीत, देशक नाम छलै सोनचिड़ैया, प्रतिध्वनि, अपूर्वा, लाख प्रश्न अनुत्तरित अछि। आजुक कविताकेँ ओ संपादित केने छथि। ओ कैकटा पत्रिका यथा रंगमंच विषयक पत्रिका रंगमंच, अग्निपत्र, सुल्फा, मैथिली दर्शन ओ मिथिला दर्शन आदिकेँ सफलतापूर्वक संपादित केने छथि। ओ रंगमंचक कलाकार रहथि। एहि क्रममे ओ किछु नाटकक अनुवाद सेहो केने छथि जे पत्रिकाक पातपर आएल अछि यथा जादूगर, फाँस, रिहर्सल अछि। ओ संस्मरण सेहो लिखलनि। स्मृतिक धोखरल रंग हिनक प्रमाण अछि। तहिना आँखि मुनने आँखि फोलने सेहो अछि। आँखि मुनने आँखि फोलने पोथीमे २४ गोट आलेख अछि। बुद्ध एवं अन्यान्य पादगणसँ लऽ कऽ दोषीक दोष धरि। एहिमे किछु नव-नव तथ्यक

खोज सेहो केलनि अछि। जेना पाद लोकनिमे २६ गोट पादक उल्लेख नाम सहित भेल अछि। मुदा एहि पाद लोकनिक जन्मस्थानक संबंधमे आ मैथिल हेबाक संबंधमे अर्थात प्रमाणिक विश्वसनीयताक उल्लेख नहि करब अबस्से कमी बोध देखबैत अछि। कहब जे कोनो एकटा निबंधमे सभटा बातक उल्लेख होइतो नहि अछि। जे स्वाभाविक थिक मुदा चौरासी गोट सिद्धमे कतेक मिथिलाक छथि ताहि प्रसंग सिद्ध नहि करब से आलेखकेँ हलुकाबैत अछि। तें की? ओ जतेक काज केलनि से तँ आधार भूमि देबे केलनि। ओ तँ स्वयं मिथिला विभूति महाकवि डाकक आलेखमे स्पष्टतः उल्लेख केलनि अछि जे हिनक (डाकक) जन्मस्थान तथा समयक संबंध एखनो धरि निस्तुकी नहि भऽ पाओल अछि। जे किछु, रचनाकारक इमानदारी स्पष्टतः लौकि जाइत अछि। २४ गोट आलेख जे एहि पोथीमे अछि से मुख्यतः मिथिला विभूतिक कहल जाएत। ओना एहिमे बेसी गुजरि गेल छथि मुदा सोमदेव छथिए। किछु आनो आलेख जेना समकालीन कथाक सौंदर्यबोध, मैथिली लोक साहित्यः उत्पति, उपयोगिता, अनुसंधान, नाट्यमंचक विकासमे पत्रिकाक योगदान, भतरस लेल भाषा आएल अछि। ओ लिखैत छथि, जतए विशेष छनि से प्रकट करैत छथि। मुदा हिनक आलेख सभमे ओ व्यापकता आ विशदता नहि भऽ पबैत अछि जे हेबाक थिक। कारण थिक संक्षिप्तता। ओ जनैत छथि जे एखन पैघ आलेख पाठक पढ़ए नहि चाहैत छथि। कारण, धैर्य ओ समयक अभाव कहि सकैत छी। मुदा नीक आलेखक पाठकक अभाव कहियो नहि रहल अछि। तैयो ओ जतबे जे किछु आलेख लिखलनि आ जाहि समयमे लिखलनि तकर मोल अछिए। समृतिक धोखरल रंगमे तँ कोलकाताक प्राचीन नाम कलकत्ताक विभिन्न विषयक योगदानपरक दस गोट आलेख अछि। कलकत्ताक साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयक बात-विचारकेँ बुझबाक लेल ई पोथी लाभप्रद अछि। कहब जे कविवर आरसी प्रसाद सिंहपर स्वतंत्र आलेख अछि आ ओ कलकत्ताकेँ अपन कर्मक्षेत्र नहि बनौलनि। स्पष्ट अछि

जे कोनो रचनाकार कोनो समय-क्षेत्र विशेषक होइतो हुनक रचनाक गमगमी दग्-दिगंतमे पसरैत अपन सार्थक अनुभूति करा जाइत अछि। ईहो सत्य अछि जे रामलोचन ठाकुर देखल-भोगल अनुभूतिक चित्रण करैत छथि। तें रचना सभमे अपन सार्थकताक बोध करबैत छथि। कहब जे कोनो रचनाकारकेँ अपन आत्मकथाक बोध नहि करेबाक चाही जे ओ करौने छथि। ई ओ एहि कारणे केने छथि जे हिनक व्यक्तित्व अपन कृतित्वक संगहि अछि जकरा ओ देखार केने छथि। ओ काज केने छथि से साहित्यधर्मिता ओ आन्दोलनधर्मिता निर्वाह करैत केने छथि। ई हुनक मिथिला-मैथिलीक प्रति पूर्णतः समर्पण भाव थिक। ओ विशुद्ध कवि छथि। हमरा जनैत नीक कविता लिखब बड्ड कठिन काज होइत अछि। कारण,नीक कविता ओ होइत अछि जकर अर्थ मात्र कवितेमे सीमित भऽ कऽ नहि रहि जाइत अछि। प्रत्युत ओकर मर्म पाठकीय अन्तर्मन धरि पैसि कऽ ओहि पाठकीय मानसिकताकेँ सदैव हौंड़ैत रहैत अछि। जतेक खेप पढ़ब ततेक नीक आस्वाद ग्रहण करैत जाएब। ईहो कहि देब अनर्गल नहि हएत जे कोनो कविक सभटा कविता नीके नहि होइत अछि। तखन अनुपातमे सम्मान देबेए पड़ैए। ईहो सत्य अछि जे कालजयी कृति अबस्से जटिल स्तरपर आधृत होइत अछि जे बेर-बेर पढ़लापर नव आस्वाद करबैत अछि। रामलोचन ठाकुर सभ तरहक आ सभ वयसक लेल कविता लिखलनि। तें बालसँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक कविता आएल अछि। एहिमे किछु नीक कविता अबस्से अछि। किछुमे आक्रोशमूलक स्वर विशेषे भऽ आएल अछि। खौंझाहटिमे लिखल गेल कविता कनेक विशेषे उग्र भऽ आएल अछि। किछु कवितामे बौद्धिकताक ताप अछि। जे गंभीरता लेने आएल अछि। मिथिलाक आचार-विचार ओ सभ्यता-संस्कृति सेहो कतिपय कवितामे अभिव्यक्त भेल अछि। सृष्टि विस्तारक क्रममे हिनक कविता सभ उत्थानपरक अछि। कैकटा कविताक सरलता ओ सहजता जे अभिधात्मकतामे अछि तँ सेहो ताहि ढंगे जाहि शिल्पमे रचित अछि से विशेषे बनैत अछि। ओ स्वयं स्वीकारने छथि जे –

--

हमरा सभकेँ अपने लिखबाक अइ
अपन इतिहास
जे सरिपहुँ थिक संघर्षक
वर्ग संघर्षक

(इतिहासहंता-समानधर्माक नाम)

हिनक छोट-छिन कविता सभ सेहो संघर्षक चुनौती दैत अछि। कविता छोट हो वा कि पैघ से ततेक महत्व नहि खैत अछि। महत्व अछि जे जन-संवेदनाकेँ झकझोड़बामे कोना की जीवन सत्यसँ साक्षात् करबैत अछि। समाजक विडंबना, विसंगति, विद्रूपता आदिकेँ को तरहें आ कोना कऽ प्रस्तुति कएल गेल अछि जे जन-जनक हियमे पैसिक कऽ अपन समार्थ्यबोध देखबैत अछि। समयबोध अबस्से निरखरि उठए एहि सभ बातकेँ रामलोचनक कवि हृद्य नीक जकाँ जनैत-बुझैत छथि। ओ नीक जकाँ जनैत छथि जे बिनु विचारें रचना भैए नहि सकैत अछि। हिनक रचनामे विचार आएल अछि से रचि-पढ़ि कऽ। कतहुँ जँ अलगलो अछि तँ तेना भऽ कऽ नहि। तें रचना विशेषे मूर्त अछि, अमूर्त नहि। ओ उदारीकरणपर चोट करेत लिखैत छथि-

"ई गिद्ध सभ नहि खाइछ माँस
माँसक दू टूक ल उड़ि जाइछ
दूर देश
बिना कोनो रोक-टोक निर्यात
उदारीकरण

(एहि महाश्मसानमे- लाख प्रश्न अनुत्तरित)

ओ स्वयं नाटककार छथि। नाटकीय कला-कौशल छनि। एहि नाट्य तत्वकेँ सेहो अपना रचनाक माध्यम बनौलनि अछि। नाटकीय गुण हेबाक फलस्वरूप हिनक कतिपय रचना उतार-चढ़ाओक क्रममे अछि। ओ अपन झिवनक खूजल पन्ना पढ़बाक लेल 'सागर लहरि समाना'(२०१७) लिखलनि अछि जे जीवनक पृष्ठ दर पृष्ठ अंकित भऽ आएल अछि। ई पोथी संस्मरणात्मक होइतो आत्मकथाक बहुतो अंशकेँ समेटने-बटोरने अछि। तें ओ आत्मकथात्मक पोथी कहल जा सकैत अछि। एहिमे मिथिला-मैथिलीक गतिविधिक बहुतो बात आएल अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रम, आन्दोलनपरक बात सभ आएल अछि। लोकक चरित्रकेँ नाँगट-उघार करैत ओ स्वयं लिखलनि अछि-

किछु लोक कूपक बेंग सन
संसारकेँ जनैत अछि
इतिहासकेँ आरंभ अपने
जन्मसँ मानैत अछि

ओ समय आ समाजपर कटाक्ष करैत बहुतो बात सभक जीवंत चरित्र चित्रण केलनि अछि। आपकताकेँ बचा कऽ रखबाक चिन्ता सदैव रहलनि अछि। ओ जखन कोनो दरंगी नीतिकेँ देखलनि आ से साहित्यकारगणमे महंथी साहित्यकारक कुत्सित क्रियाकलापकेँ देखलनि तकरा ओ खुजि कऽ उघार करबे केलनि। एकटा बात ईहो कहि देब आवश्यक बुझैत ची जे मेथिलीक बहुतो उर्जस्व रचनाकार लोकनि मैथिलीक महंथ लोकनिक खडयंत्रकारी नीतिसँ उबिया कऽ मैथिली लिखनाइ छोड़ि देलनि। फल भेल जे ओहन रचनकारक अमूल्य लेखन रत्न-मंजूषासँ सजग पाठक वर्ग वंचित रहल आ भ्रष्ट गोलौसीवाद महंथ लोकनिक अपन सड़ल-गलल रचना लऽ पुजबैत रहलाह, सम्मानित होइत रहलाह आ स्वार्थवादी नीतिमे पाठककेँ अपन रचना पढ़बाक लेल बाध्य करैत रहलाह। यैह सभ रामलोचन ठाकुरक रचनाकारकेँ ारो धधकबैत रहल। ओ स्वयं पजरैत रहलाह आ बहुत किछु लिखबाक लेल बाध्य होइत रहलाह।

ओ सफल अनुवादक छथि। जा सकै छी किन्तु किए जाउ, पद्मा नदीक माँझी, नंदितनरके आदिक सफल अनुवाद केलनि। हिनका जनसम्मान अबस्से बेटलनि। एहिमे भाषा-भारती सम्मान, प्रबोध साहित्य सम्मान किरण साहित्य सम्मान आ आनो संस्था सभक सम्मानसँ ओ समलंकृत भेलाह अछि।

अतेक तँ अवश्य कहल जाएत जे ओ लिक्खाड़ छथि। ओ जे किचु लिखलनि से अबस्से अपन जीवनमे भोगल यथार्थकेँ उभारलनि। संबंधक बदलैत दवाबमे समाजिक मुद्दा सभकेँ उठा कऽ रखलनि। हिनक दूरदृष्टि अबस्से रहल अछि जे सभ समाजिक दवाबमे लिखल गेल कही तँ प्रखर चेतनाक स्वर लऽ आएल अछि। एकटा बात ईहो कहब अनर्गल नहि हएत जे हीत-मीतसँ बेसिए ओ शत्रु बनौलनि। तैयो जे ओ हपन नव जमीन लेखनक उर्वराशक्तिसँ बनौलनि से अबस्से कहल जा सकैत अछि आ यैह बात हमरा नीक लगैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

शिवशंकर श्रीनिवास- संपर्क-9470883301

रामलोचन ठाकुरक 'बेतालकथा'

'बेतालकथा' रामलोचन ठाकुरक व्यंग्य रचना थिक, जकरा ओ "हास्य-व्यंग्य" विधाक रूपमे लिखलनि अछि। रामलोचन ठाकुरक अन्य नाम अछि- अग्रदूत, कुमारेश काश्यप ओ मजतबा अली। उक्त नाम सभ ओ अपन पोथी 'लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)' मे देने छथि। बेताल कथा कुमारेश काश्यपक नामसँ लिखने छथि किंतु किएक से एहि प्रसंग हुनक कोनो मंतव्य प्राप्त नहि अछि। एहि पोथीक प्रकाशन 'विदेह पबलिकेशन्स' कलकत्तासँ 1981 मे भेल अछि। व्यंग्य साहित्यिकविक विधा थिक, जकर अर्थ होइछ कटाक्ष करब जे शब्दक व्यंजना शक्तिसँ प्राप्त होइत अछि। हास्यक अर्थ उपहास होइत अछि जे कतौ ने कतौ व्यंग्यबोधक अछि। ओना हास्य हँसबाक लेल, मनोरंजन लेल सेहो प्रयुक्त होइत अछि। मिथिलामे संबंधनक अनुसार हास्यक परिपाटी रहल अछि जाहिमे उपहास कम संबंधबोधक मधुरता बेसी रहैत अछि। एहन हास्यमे मनोरंजनक उद्येश्य रहैत अछि।मैथिली साहित्यमे प्रो. हरिमोहन झाक विभिन्न विधामे लिखल हास्य-व्यंग्य भेटैए। हिनक साहित्यमे हमरा सभ दिन ओहि विधाक शिल्पमे हास्य बोड़ल भेटल मुख्य व्यंग्य अछि जाहि माध्यमे ओ (हरिमोहन झा) समाजमे सुधारक आकांक्षी

रहलाह आ लोकप्रिय भेलाह।

मिथलामे केकरोपर व्यंग्य करबाक हेतु मान चढ़ा कऽ बजबाक सेहो स्वभाव रहल अछि। जेना कि कहि रहल छी केकरो विषयमे आ ओकर अर्थ खुजि रहल छै केकरोपर। हमरा जनैत एहि पोथीक रचनामे कुमारेश काश्यप अर्थाप रामलोचन ठाकुर एहि स्वभावक अनुसार कथाक रचना करैत अपन रचनाक उद्येश्यक पूर्ति कयलनि अछि। आ ई बात हिनका हरिमोहन झासँ फूट करैत छनि।

एहि पोथीक नाम अछि "बेताल कथा'।

संस्कृत साहित्यमे बेताल भट्ट द्वारा लिखित 'बेतालपञ्चविंशतिका' कथा संग्रह प्राप्त होइत अछि। एहि पोथीक पचीसो कथामे विक्रमादित्यक न्याय प्रति हुनक दृढ़ता देखाओल गेल अछि। हिंदी साहित्यमे सेहो अनेक अपना-अपना ढंगक बेताल कथा विभिन्न नामसँ अछि। रामलोचन ठाकुरक 'बेतालकथा' पोथीमे पाँच टा बेताल कथा, एकटा तोता-मैना संवाद अथ कथा चमचा पुरणा प्रसंग ओ एकटा लालबुझक्कर विद्यापतिक बर्खी' कुल सात टा कथा अछि। 'तोता-मैना संवाद अथ कथा चमचा पुरणा प्रसंग ' उक्त संग्रहक पहिल कथा थिक। एहिमे रचनाकार अपन भाषाक चिन्ता करैत छथि, हिनक कहब अछि जे जावत मैथिली कार्यलयक भाषा पढ़ौनीक भाषा नहि हएत ताबत विभिन्न संस्थामे मात्र स्वीकृति भेलासँ मैथिलीक उचित विकास संभव नहि अछि। आ ई काज तखने हएत जखन जनता जागत किन्तु से कोना हएत? एहि भूमिक नेता एहि भूमिक रहितो दिल्ली दरबारक पूजामे रहैत अछि आ समाजक लोक बनि गेल अछि दरबारी जकरा ओ चमचा कहलनि अछि। वर्तमान स्थिति (रचनाकाल आ एखनो जे ओहिना विद्यमान अछि)केँ देखा कथाकार अपन कथाक इति करैत छथि। उक्त बात निश्चित रूपें समाज ओ एकर राजनीतिक पृष्ठिभूमिपर व्यंग्य अछि। अपन भाषाक प्रति अतेक

आस्था रखनिहार रामलोचन ठाकुर एहि कथाक नाममे सूगा बदला तोता लिखलनि। ओना सूगा आनो भाषामे प्रयोग होइत अछि किन्तु मैथिलीमे "सूगा", "सुग्गा" शब्द सएह प्रयोगमे रहल अछि। हँ, इम्हर आबि कऽ विभिन्न प्रभावे 'तोता' सेहो कहल जाइत अछि। किन्तु रामलोचन जी 'सूगा' नहि लीखि 'तोता' लिखलनि , ई नीक नहि लगैत अछि। भऽ सकैए जे हिन्दी भाषामे "तोता-मैना"क कथा जे गद्य ओ पद्यमे प्रसिद्ध अछि से हिनका सेहो नाम देबामे प्रभावित केने होइन।

'विद्यापतिक बर्खी' मे लेखक वर्तमान समयमे शिक्षा जगतमे होइत शोध-कार्यादिपर व्यंग्य केलनि, जे बहुत मार्मिक अछि। विद्यापति पदावलीमे जे मूल बात अछि, जाहि कारणे ओ जन-जनक कवि छथि ओहि सभसँ फफूट हुनका युग-चेतनाक रूपमे नहि अन्य विभिन्न रूपमे हुनक छविकेँ आधार मानि शोध प्रस्तुत करैत पी.एच.डी प्रदान कएल जा रहल अछि। लेखक अपन रचनाक बलपर नहि अन्य कारणे महान घोषित कएल जा रहलाहे। एहि सभपर हिनक व्यंग्य निश्चित रूपसँ सचेतक अछि। एहिठाम एकटा बात आरो हम कही जर व्यंग्य रचना जहिना साधारण पाठक लेल बहुत रुचिप्रद ओ प्रेरक होइत अछि ओहिना विसंगतिकारी लेल असह्य ओ त्याज्य। प्रो. हरिमोहन झापर सेहो परंपरावादी लोकनि विभिन्न तरहेँ अपन क्रोध प्रगट केने छथि।रामलोचन ठाकुरक रचना व्यंग्य रूपमे एतेक तीक्ष्णता संग आपकता रखने किंतु हिनका व्यंग्यकार रूपमे नहि चीन्हल गेल से आश्चर्य, जखन कि हिनक रचनामे समयक अद्भुत पकड़ अछि आ व्यंग्यक सटीक चमत्कार।

उक्त दूनू कथाक बाद हिनक शुरू होइत अछि- बेताल कथा। पहिल कथा अछि कुर्सीक महात्म्य।

हिनक बेताल कथा पारंपरिक बेताल कथासँ फूट अछि। एहि कथामे विक्रमादित्य छथि, बेताल छथि किंतु दूनू चरित्र पूर्णतः आजुक समयानुसार

नव परिधान ओ नव चिंतनमे अछि। 'कुर्सीक महात्म्य'मे विक्रम अपन कुर्सीक सुरक्षा चाहैत छथि।

एहि कथामे रचनाकार वर्तमान समयमे जे सत्तासीन नेताक चरित्र अछि ओ विक्रमादित्यमे आरोपित केलनि अछि। एहन विक्रमादित्य अपन परमप्रिय सलाहकार बेतालसँ मंत्रणा करैत छथि जे हुनक सिंहासन कोना बाँचल रहत। आ बेताल हुनका युक्ति बुझा रहलाह अछि। सत्तासिन व्यक्ति स्वाभाविक रूपसँ सामंती मनोस्थितिक होइत छथि। एहन लोक समाजमे पिछड़ल लोकक उत्थानसँ डेराइत छथि। उक्त कथामे दुसाधक बेटा न्याय-प्रक्रिया ओ समाजक ओहि दिस जाइत रुखिसँ विक्रम डेराइत छथि। आ, ओहिसँ चिंतित भऽ अपन सिंहासनक सुरक्षाक उपाय बैतालसँ पुछैत छथि। उक्त कथा कहैत अछि जे वर्तमान समय एहन भऽ गेल अछि जे राजनेता सत्ता पबैक लेल संपूर्ण देशक लोकमे महान बनबाक नाटक करैत अपन सुख-भोगमे लिप्त रहैत अछि आ सदिखन अपन कुर्सीक सुरक्षा हेतु अपन चमचा द्वारा अपन महिमाक गान करबैत रहैत अछि। उक्त कथा अतीतसँ वर्तमान अबैत अछि आ कहैत अछि जे एकटा समय आओत जे ई कुर्सी दिल्ली (भारतक राजधानी)मे रहत आ एहिपर बैसनिहार प्रधानमंत्री कहाओत। एहि तरहे लोकतंत्र शासनमे व्यक्ति-पूजाक खेलपर भयानक व्यंग्य अछि जे पाठककेँ समयसँ साक्षात्कार करेबामे समर्थ होइत सचेत करैत अछि।

कथा अछि 'विप्लव'। 'विप्लव' केर अर्थ होइत अछि-क्रांति, विद्रोह। राजसत्ता केखनो अपन समाजिक विद्रोह नहि चाहैत अछि। ओ एकरा दबेबाक लेल समाजक बीच एहन चुप-चुप कांड करैत अछि जाहिसँ समाजक ध्यान ओहि दिस बँटि जाइत छैक आ राजसत्ता स्वयं कांड कऽ कऽ ओहि घटित कांडकेँ निंदा करैत समाजक सहानुभूति लैत अपना प्रति होइत विद्रोहक धाराकेँ बदलि दैत अछि। एहि बातकेँ बेताल विक्रमादित्यसँ वनराज सिंहक

कथा कहैत छथि जे कोना सिंहक ' प्राइवेट सेक्रेटरी चमचा प्रधान श्रीमान शृंगाल शर्मा मंत्रणासँ बकरीक अपहरण कऽ ओकरा मारि खाएल गेल पुनः हरिणक अपहरण कऽ मारल गेल आ स्वयं शेर सिंह एहिपर दुख प्रगट करैत, भाषण दैत जानवर सभक सहानुभूति पौलनि। राजसत्ताक एहि भयंकर खेलकेँ उघार करैत उक्त कथा सत्तापर व्यंग्य तँ करिते अछि समाजकेँ सेहो सतर्क करैत अछि, जे ध्यान योग्य अछि।

रामलोचन ठाकुर जाहि रूपेँ जन-मानसिकतासँ अपन व्यंग्यमे राजसत्ताक चरित्रपर चोट करैत छथि ओ अत्यंत महत्वक अछि। हिनक खूबी अछि जे ओ बहुत सहजे प्राचीन युगक पात्रकेँ वर्तमान समयक राजनेताक चरित्रमे आरोपित कऽ अपन व्यंग्यात्मक विद्रोहक स्वर स्पष्ट करैत छथि जे अत्यंत महत्वपूर्ण ओ तथ्यपरक अछि। हिनक रचनाक आर खूबी अछि जे ई अपन व्यंग्यमे ने तँ लावधिक नाम लैत छथि आ ने नेताक किंतु हिनक कथाकालक ओ खास राजनेताकेँ सेहो इंगित करैत अछि।

भारतीय प्रजातंत्रक इतिहासमे इमरजेंसी (आपातकाल) २५ जून १९७५ सँ २१ मार्च १९७७ धरि २१ मासक अवधिक बीच छल। एहि बीच भारतीय नागरिक स्वतंत्रता छिना गेल छलैक। विद्रही नेता, पत्रकार ओ जनपक्षक लोककेँ जेल भऽ गेल छलनि। सत्ताक विरोधमे बाजबकेँ दंडनीय अपराध बूझल जाइत छल। देशद्रोह बुझल जाइत छल। ई बात वर्तमान समयमे सेहो कतेक प्रासंगिक अछि सहजहि बूझल जा सकैत अछि।

एहन समय हेबाक कारणमे जाहि रूपेँ 'ब्रह्माक श्राप' मे इंद्रक ताना-शाही, ॠषि-मुनिक कारागार ओ अन्य बात देखाओल गेल ओ अद्भुत रूपेँ देशमे भेल 'आपातकाल'केँ मोन पाड़ि दैत अछि। ओ समय आपातकाले थिक से आइ स्पष्ट होइत अछि जखन ब्रह्मा हुनका आगूक जन्म नारी हेबाक श्राप दैत छथि।

उक्त कथामे आपातकालक जन-दुर्दशाकेँ जाहि रूपेँ बेताल-विक्रमादित्यकेँ कथा सुना रहलैए ओ इंद्रक प्रशासनमे चलैत अछि। किंतु इंद्रकेँ नारीक श्राप जाहि कुशलतासँ ओकरा भेटैत छैक ओ सद्यः आपातकालक स्थितिक भऽ जाइत छैक। कोनो व्यंग्य अपन व्यंजना शक्तिक ई विशेषता थिक जकरा कहबी संग कहि सकैत छी जे 'घाओ' कत्तौ आ पह कत्तौ' आ से रामलोचनजीक रचनामे बहुत सहजता संग 'घाओ आ पह' दूनू चिन्हार होइत अछि।

एहि रूपेँ, अद्भुत रूपेँ आपातकालक विषम स्थितिपर टिप्पणी करैत उक्त कथा जन-चेतनाकेँ झकझोड़ि कऽ जगेबाक काज करैत अछि जे हुनक व्यंग्यकेँ सार्थक ऊँचाइ प्रदान करैत अछि। कोना लोक नायककेँ खलनायक, सद्गुणीकेँ दुर्गुणी लोक कहि अपना अनुसार समयकेँ देखि कऽ करैए तकर उत्तम उदाहरण अछि हिनक व्यंग्य 'उत्तर महाभारत'। जाहिमे बेताल पांडवकेँ अन्यायी, कृष्णकेँ कुटिचाली संबोधन कऽ कथा कहलनि अछि। ओना राजनीतिमे सभ किछुकेँ अपना हितमे सिद्ध करबाक बातकेँ सफल राजनीति कहल जाइत अछि, हमरा जनैत प्रकरान्तरसँ बेताल सएह कहै छथि।

'अमरावती उपकथा' अद्भुत कथा अछि। एहि देशमे आपातकालक बाद छठम आमचुनाव भेल। जाहिमे जनता पार्टी जीतल। कहल गेलै जे भारतीय जनताकेँ आब असल स्वतंत्रता भेटलैक किंतु की भेल? तकरे व्यंग्य कथा अछि उक्त कथा। उक्त कथा कहैत अछि जे पुनः जनता ठकल गेल। चुनावसँ पहिने नेता लोकनि बहुतो आश्वासन देने छलखनि किंतु सभ बिसरि जाइ गेलाह। बेतालक शब्दमे "कारण तखन ई लोकनि कुर्सी बिहीन छलाह। कुर्सी भेटिते बिसरि गेनाइ स्वाभाविक । आब कैसी तेरी रंगा ! दोसर बात जे इहो लोकनि त कुनू ने कुनू रूप मे पुरने दल सं सम्बद्ध छलाह। रक्त सम्पर्के ओही वंशक छथि ! आ तेसर बात जे बिलाड़ि जं माछक रखबार हो त परिणामक

कल्पना सहजहि कएल जा सकैए।"

एतावता ईहो लोकनि जनताकेँ भ्रमित करैत अपन स्वर्ग भोगमे लागि गेलाह। कथा स्पष्ट रूपसँ कहैत अछि जे एहि देशक जनता जावत स्वयं नहि जागत, तावत ओकर कल्याण संभव नहि छैक। एहि बातकेँ कहबाक लेल कथा जाहि तरहेँ व्यंग्यात्मक रूपें अपन बात कहैत भारतीय राजनीतिक दुर्दशाकेँ समक्ष करैत अछि, ओकर प्रस्तुतिक विलक्षणता बहुत प्रभावी अछि।

कथामे नेताक वेश-भूषा ओ ओकर प्रवृतिकेँ समक्ष रखबामे रचनाकार अत्यंत सफल भेलाह अछि ततबे नहि ओ जनताक सहिष्णु स्वभावकेँ सेहो आलोचना केलनि अछि। हिनक कहब अछि जे जनताकेँ अपन सहबाक सीमाकेँ सेहो बूझक चाही। अन्याय ओ शोषणक विरोधमे ठाढ़ हेबाक चाही। ओतबे नहि कथा अपन प्रसंगसँ स्पष्ट कहैत अछि जे जनता स्वयं अपन शोषणकेँ रोकि सकैत अछि, अपन स्वतंत्रताक द्वारि खोलि सकैत अछि।

एहिठाम एकटा बात हमरा कहब आवश्यक बुझाइए ओ ई जे मैथिली साहित्यमे व्यंग्यपरक रचनामे कतेको रचनाकारक रचना छनि जाहिमे प्रो. हरिमोहन झा, अमरजी, छात्रानंद आदि लोकनि प्रमुख छथि किंतु ई लोकनि कोनो खास विधामे व्यंग्यक समावेश केलनि अछि। हँ, एहिमे हरिमोहन झाक 'खट्टर खकाक तरंग' केँ छोड़ि कऽ। 'खट्टर ककाक तरंग' विभिन्न विषयपर लिखल संवादात्मक हास्य (मनोरंजन हेतु, हास्य उत्पन्न करबाक हेतु)-व्यंग्य रचना थिक जे कोनो खास विधाक अंतर्गत नहि रहितो अत्यंत मार्मिक अछि। एहिठाम हम ईहो कहि सकैत छी जे हरिमोहन झा उक्त रचना व्यंग्यकेँ स्वतंत्र विधाक रूप देलनि अछि।

किंतु रामलोचन ठाकुर 'बेताल कथा' मुख्य रूपसँ राजनीतिपर अपन रचनाकेँ केंद्रित कऽ हास्यकेँ उपहाेसक रूपमे व्यंग्यमे समाहित करैत अपन रचनाकेँ

व्यंग्य विधामे कायम केलनि अछि तें हम पहिनहुँ कहलहुँ अछि जे ई हरिमोहन झाक रचनासँ फूट अपन रचनाकेँ स्वरूप प्रदान केलनि।

हिनक पोथीक नाम थिक 'बेताल कथा'। हम सेहो हिनक रचनाक व्याख्या करैत कएक ठाम कथा शब्दक प्रयोग केलहुँ अछि किंतु हिनक रचना कथा नहि थिक। ओ सभ थिक व्यंग्यात्मक गद्य जकरा 'व्यंग्य रचना' कहल जाएत। तकर कारण अपन विधामे जाहि रूपें अपन घटनाक समापन संग कथ्यकेँ देखार करैत अछि से हिनक रचनामे नहि अछि। कथामे जँ कतौ मूल घटनासँ फराक लगैत विषय देखाइत अछि तँ ओ अंततः मूले घटनाकेँ स्पष्ट करैत ओहि संग समाहित भऽ जाइत अछि।

किंतु रामलोचन ठाकुरक उक्त रचनामे घटैत घटना ने कथा जकाँ क्रमशः सम्यक रूपें चलैत अछि ने कथ्य धरि जाइत अछि , अस्तु हिनक रचना प्रारंभेसँ अपन कथ्य कहैत पुनः चलैत आगू बढ़ैत अछि जे हिनक रचनाकेँ कथा नहि बनए दैत अछि, कतहुँ संवाद कतहुँ कोनो घटनाक वर्णन, कतहुँ कोनो सूचनात्मक वृतांत हिनक रचनाकेँ मात्र व्यंग्य रूपमे आगू बढ़बैत अछि। आ व्यंग्यक खास विधाकेँ जनपक्षधरताक दृष्टिएँ आगू बढ़बैत अछि जे हिनका महत्वपूर्ण व्यंग्यकारक रूपमे महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

दिलीप कुमार झा-संपर्क-6207627509

एखनो माँगि रहलए उत्तर -' लाख प्रश्न अनुत्तरित'

मैथिली कविताक जे प्रगतिवादी धारा भुवनजीसँ प्रारंभ भेल से यात्रीजी लग अबैत-अबैत बेस भकरार भ' गेल।रामलोचन ठाकुर जाहि प्रगतिवादी धाराक प्रतिनिधित्व करैत छथि से विश्वमे नित- नूतन होइत परिवर्तनसँ प्रभावित तँ अछिये,मिथिलाक जे आर्थिक ,सामाजिक दुर्दशा अछि से हिनक कविताक केन्द्र बिन्दुमे रहल अछि।एहि मामिलामे यात्रीजीक मैथिली कविता सेहो मिथिलाक सामाजिक ,आर्थिक परस्थितिकक गहन विश्लेषण करैत देखाइत अछि।राम लोचन ठाकुरक कविताक अभिष्ट एकटा सुन्नर दुनियाँ देखबाक अभिलाषी अछि,जाहिमे मानव मूल्यक कीमतपर कोनो समझौता नहि। हुनक कविताक केन्द्रमे एकटा विकसित,शिक्षित मिथिलाक परिकल्पना सेहो रहलनि अछि।कविक रुपमे कविता लिखलनि, ताहुसँ आगाँ

मिथिलाक भाषा - संस्कृतिक रक्षाक लेल, मिथिलाक अस्तित्वक फराक परिचिति बनल रहय ताहि लेल दरभंगा,पटना सँ कोलकाता धरि अनेको आन्दोलनमे भाग लेलनि। एकटा आन्दोलनी व्यक्तित्व छथि कवि रामलोचन ठाकुर।कविता लिखि क' सुति नहि रहलाह।अपन कविताकें क्रियाशीलनक अवस्थामे अनबाक जे कोनो प्रयास संभव छलनि से ओ करैत रहलाह खाहे ओ रंगमंचक माध्यमसँ हो वा पत्र -पत्रिकाक संपादनक माध्यमसँ।सम्प्रति किछु दिन पूर्वतक मिथिला दर्शन पत्रिकाक संपादन करैत रहलाह अछि।अपन प्रश्न सभक उत्तर हेरैत रहलाह अछि।एकटा तेज छात्र अवसर भेटितहि शिक्षकसँ अनेको प्रश्न करय लगैत अछि से रामलोचन ठाकुर अपन कविताक माध्यमसँ लाखों प्रश्न करैत छथि।हम बात क' रहलहुँ अछि हुनक कविताक संग्रह 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' के प्रसंग।एहि आलेखमे, संग्रहमे संग्रहित हुनक कवितापर किछु बात तँ करबे करब।हम एहु बातक पड़ताल करय चाहब जे एखन धरि हुनक प्रश्न सभक किछुओ उतारा भेटलनि की नहि!

कवि लिखबा लए बैसैत छथि गंगा अवतरणक कथा,लिखने चलि जाइत छथि कोसी- प्रांगणक व्यथा। कविकें मिथिलाक लोकक पीड़ा कखनो दोसर वस्तु सोचबा लेल पलखति नहि दैत छनि।ओ विश्वक चिंतन करैत छथि।दुनियाँमे अनेक रंगक संकट उपस्थित छैक ताहिपर कवि अपन चिंता व्यक्त करैत छथि मुदा फेर अनचोके बाजि उठैत छथि- रक्तहीन,मांसहीन/कंकालक देश/हमर मातृभूमि /मिथिला ई

विख्याता भुवनत्रयम्

बिसरल कि जाइत अछि।

कवि अपना देशमे प्रसन्नता तकै छथि।आजादीक बाद भारत कतेक तरक्की केलक? भारतक विकासमे मिथिलाक की हालति छैक तकर सेहो संगे -संग

पड़ताल करैत छथि।कवि कहि उठैत छथि- लिखबा ले बैसै छी

कथा आजादी के/ब्यथा बेरबादी के लिखायल चलि जाइत अछि।

सरिपहुँ कवि की लिखथि? कियेक लिखथि? तकर निर्णय नहि क' पबैत छथि कारण स्पष्ट छै।देश समाज दिन- दिन ओझारइते जा रहल अछि।अपने गाममे हमसभ अनठिया अनचिन्हार भ' गेल छी।जकर कोनो पता ठेकाना नहि बाँचल अछि।सरिपहुँ कतेक असहनीय पीड़ा होइछ कोनो संवेदनशील व्यक्तिक लेल जखन ओकर परिचिति समाप्त होब' लगैत छैक।मुदा ताहि लेल कवि कहैत छथि एकर समाधान बैसि क' कनलासँ नहि हैत।एकरा लेल करय पड़त उद्यम।चिन्हय पड़त अपन शक्तिकें।जाहिसँ एकटा समृद्ध ओ सुसंस्कृत भारत ओ मिथिलाक निर्माण क' सकी।

राम लोचन ठाकुरक जन्म गाममे भेलनि। नेनपनसँ किशोरावस्था धरि गामेमे रहलाह मुदा दरिद्रता मिथलाक लेल सभदिन अभिशाप रहलैक से युवा रामलोचन ठाकुर चलि गेलाह कलकत्ता ओतय जेना- तेना किछु उपार्जनक संग अपन आगाँक अध्ययन सेहो करैत रहलाह।मिथिलाक सोन्हगर माटिक सुगन्धिसँ शिक्त एहि कविक मोन- प्राण नहि रमलनि कोनो आन बाटपर ओ सदिखन ठाढ़ भेटलाह अपने माटिपर।ओ कलकत्तामे सेहो मैथिली बिषय पढ़लनि।ताहि दिन कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली पढ़ाइ होइत छलै।संगे संग मैथिलीमे लेखन दिस सेहो उन्मूख भेलाह।भारत गामक देश अछि आओर मिथिला गामक प्रदेश ,से गाम रामलोचन ठाकुरकें सभदिन आकर्षित करैत रहलनि।कविक मोनमे जे अनेक प्रश्न उमरैत - घुमरैत रहलनि अछि ताहिमे ईहो एकटा प्रश्न रहलनि जे भारत गामक देश अछि तँ भारतक विकासक मानचित्रपर गाम कतहुँ कियेक नहि देखाइत अछि? सभठां नगरेक चर्चा -

वर्चा अछि।नगरेक विकास लेल संसद आ विधानसभामे योजनाक निर्माण होइत अछि ।तखन खाली जबानी जमाखर्च सँ गामक विकास कोना हैत?गाम लगातार विकासक दौड़मे पिछड़ि रहल अछि।गामक लोक परा क' शहरमे शरणागत भ' रहल अछि।ताहि स्थितिमे कविक मोनमे ई प्रश्न घुरिआयब स्वभाविके छनि। जखन कवि अपन कवितामे बाजि उठैत छथि-

' किंतु श्रीमान्

अपने त' कहने रहिअइ

भारत गामक देश थिक

आ एहिठाम त' अगबे शहरे- शहर छै

गाम कहाँ छै,अपना सभक गाम...'

कविक मोनसँ एको पलक लेल गाम बाहर नै भ' पबैत छनि।रहैत छथि नगरमे, गाम बर्षमे एक दू बेर आबि जाइत हेताह सएह बहुत।चाही तँ अहाँ हुनका नास्टेल्जिक बुझि सकैत छी,मुदा से अपने जे बुझि कविक मोनमे गाम रचल - बसल छनि।कविक मानस पटलपर अपना गामक अनेक रंगक चित्र उभरैत छैक।हुनका मोन पड़ैत छनि अपना गामक शिव मंदिर,डीहबारक स्थान,मसजिद। माने सभ जाति धर्मक सदभावसँ बनल ,बसल गाम।हुनका मोन पड़ैत छनि-' पसरमे जाइत चरबाहक पराती

आ साँझ मे

दूर नदी कातसँ

बाध -बोनसँ भासल अबैत

बारहमासाक स्वर

आङनसँ

ढेकी जाँतक संगीतक संग

लगनीक स्वर

कहियो सोहर, कहियो समदाओन

कहियो तिरहुत जे

कहियो मिथिलाक गामक परिचिति छल'

एतबे नहि हुनका मानस पटलपर गामक संस्कृतिक सभटा रंग देखाइत छनि।गमैया पूजाक सड़ोर,

जट-जटिनक खेल,तजियाक संग झरनी गीत,फगुआ ,जुड़शीतल सहित सभटा पाबनि तिहारक पुरना स्वरुप आ गामक लोकक मेल मिलापक संग जीवन बितायब ।।गामक सामाजिकता ,एक दोसराक संग पुरब।सुख- दुखमे संग रहब सभटा मोन पड़ैत छनि।

कवि ताकि रहलाह अछि अपन ओहेन गाम।

एहि भूमंडलीकरणक दौड़मे आब ओ गाम भेटब मोशकिल छनि। एहि संग्रहक अधिकांश कविता भारतमे भूमंडलीकरणक आरंभिक समयमे लिखल गेल

अछि।आइ तीस बर्खक बाद कविताक अभिष्ट निजगुत बुझा रहल अछि।जं - जं दिन बितैत जाएत समय आर फरीछ होइत जाएत ।एहि भुमंडलीकरणमे सांस्कृतिक विविधताक लोप भ' रहल अछि।ओना तँ सगरे संसार एहि सांस्कृतिक ओ आर्थिक आक्रमणक शिकार भेल अछि मुदा मिथिला एकटा तन्नुक मनोस्थितिवला प्रदेश अछि, जे बहुत तीव्रतासँ दोसराक देखाँउस करैत अछि।कवि एहि प्रवृतिसँ दुखी छथि,चिंतित सेहो।आनक छिछा उतारबामे मस्त रहैत अछि।

'अए हओ बुढ़बा तों आजादी देखने छहक?

सत्त-सत्त कहिह'

ओ बकर- बकर ताकय लागल हमर मुह

'आजादी हओ आजादी देखने छहक?

हम ओकरा बुझबैत बाजल रही

आ एगो दीर्घ निसास छोड़ैत बाजल छल रामलाल--

'बौआ ,एहि अस्सी बरखक वयस मे

हम त'खाली बेरबादीए देखैत आयल छी

कहियो रौदी ,कहियो दाही

कहियो हैजा,कहियो मैया पपियाही

कहियो जमिंदारक जुलूम आ

आब त' ओकर संग पुरैत छै थानाक सिपाही'

से आजादी के पचहत्तरि बरखक बादो की हालति छैक देशक? आइ भीतरिया आ बहरिया दुनू कातसँ देशपर आक्रमण छैक।देशक संसाधनपर सीमित लोकक अधिकार छैक।राजनीतिज्ञ, अपराधी ओ व्यवसायिक तीन तरफा गठजोड़ सँ आम लोक त्रस्त अछि।पचहत्तरि बरखक आजादीक बादोआइ भारतक बच्चा सभकें गुणवत्तापूर्ण समान शिक्षाक अधिकार नै भेटि सकलै।भारतक शिक्षा केटेगरीमे बटल छैक।अमीरक लेल अलग शिक्षा आ गरीबक लेल अलग।एखन धरि सभक लेल स्वास्थ्य सुविधा सपने अछि।तखन एकटा आजादी तँ अवश्य भेटलैक अछि से बजबाक आजादी।जकरा जे फुरा रहल छैक से बाजि रहल अछि ।से लोकतंत्र आ देशक मार्यादाक उल्लंघन करब सेहो कोनो संवेदनात्मक बात नहि रहलैक। देश प्रेमक अतिवाद सेहो छैक तँ देशक विरोधमे , विरोधमे नारा लगेबासँ सेहो कोनो बन्हेज नहि,कोनो परहेज नहि।देशद्रोही आ देशभक्तक पहिचान करब एखनुका समयमे बड़ कठिनाह अछि।तें रामलाल बुढ़बाक बात एखनो प्रासांगिके अछि।

जाति आ धर्म शक माध्यमसँ सत्ता प्राप्त करब एखन देशमे बड़का खेल भ' गेल अछि।आम लोकक मौलिक आवश्यकताक कोनो मोल नहि।आब मनुक्खसँ बेसी जरुरी अछि जातिक विकास,धर्मक विकास।लोक सेहो आब अपना -अपना जातिक हिसाबें मतदान करैत आछि। साँच बजबाक आ साँच सुनबाक साहस प्राय: समाप्ते जकां भ'गेल अछि,तें जे हाल -चाल अछि एखन आजादीक नामपर से लगभग एहिना चलैत रहत।सार्थक विरोध करबाक साहस नै रहलै।आब यात्री,रामलोचन ठाकुर सन ठाँहि-पठाँहि कहैवला,कविता रचैवला तँ सेहो विरले छथि।अन्ध विरोध आ अन्ध समर्थकक बीच प्रतियोगितात्मक दौड़ चलि रहल अछि।तेहने परिस्थितिमे रामलोचन

ठाकुरक लाख बेर मोन पड़त लाख प्रश्न अनुरत्तरित!

रामलोचन ठाकुर अपादमस्तक मैथिल छथि।मैथिली भाषापर आसन्न संकटक निवारण लेल ओ सदति संघर्ष करैत रहलाह। एकटा विपन्न परिवारमे जन्म भेल छलनि।अभाव कें ल'ग सँ भोगने ओ देखने छलाह। मिथिलाक जनगणक पीड़ाकें अकानैत सदति मिथिलाक उन्नति,प्रगतिक कामनाक लेल चिंतित कवि ,नाटककार रामलोचन ठाकुर कवितामे एहने रंग भरैत छलाह जाहिमे सीदित पीड़ित मिथिलाक लोकक स्वर देबाक सदति चेष्टाक संग ओहि विपन्न समाजकलेल सशक्त स्वर छथि ,जे हजारो बर्षसँ सीदित अछि,पीड़ित अछि।भाषाक लेल सेहो एकटा मुखर स्वर छलाह। एकटा कविता छनि एहि संग्रहमे' अपन समाचार'।कियो परिचित मैथिल व्यक्ति हुनक समाचार पुछैत छथिन।उतारामे कहैत छथि-" समाचार तँ तत्काल एक्केटा

मैथिलीकें लोकसेवा आयोगक परीक्षासँ क' देलकयै बाहर

लल्लू सरकार.....

बेस सहजताक संग बाजल ओ--

"हँ,अखबार मे देखलए

आर अपन समाचार?

केना अछि डांड़?

एहि कविताक माध्यमसँ मैथिल समाजक असंवेदनशीलता नीकसँ देखार चिन्हार भेल अछि।एहि कवितामे कवि रामोलचन ठाकुरक भीतर मातृभाषाक अपमानक कतेक आगि छनि तकरो नीकसँ उभार भेल अछि? कवि

रामलोचन ठाकुरक मादे हुनक अग्रज पीढ़ीक साहित्यकार जीवकान्त लिखैत छथि," पच्चीस बर्ष पहिने रामलोचन ठाकुर भाषाक स्वयंसेवक छलाह।हुनक संगतुरिया मैथिलीक अनेक लोक महंथ भेल छथि। ओहो महंथ भेल रहितथि तँ हुनक प्रतिष्ठा घटल रहितनि।"

से राम लोचन ठाकुर अद्यावधि मैथिली भाषा आओर भाषाक लेल काज केनिहार मनीषी लोकनिक सम्मान करैत रहलाह।कवि आरसी प्रसाद सिंहक लेल एकटा कविता अछि एहि संग्रहमे 'मैथिली -मंदिरमे दीप लेसैत'

" मैथिली मंदिरमे दीप लेसैत

दीप,फूलडालीमे सजबैत।

फूल पूजाक मैथिली केर

प्रतीक्षा बाल रविक बिहुँसैत

बहाना मात्र सूर्यमुखि केर

बिसरि की सकत मैथिली पूत

रत्न मिथिलाक अनमोल अनूप

महाकवि आरसीक छबि,कृति

सौम्य सुन्दर आकर्षक रुप

करत सब बेर-बेर आवृति

रहत जा धरा-धाम मिथिलाक

पानि गंगा-कोशी-कमलाक

रहत ता नाम अमर कवि तोर

कृति चमकैत चान-पुनिमाक

मात्र आशीष तोर, प्रण मोर।

राम लोचन ठाकुर श्रमजीवी लोकनिक संघर्ष ओ पीड़ाकें उजागर करैवला महत्वपूर्ण कवि छथि मुदा कविक काज खाली आगिए उगलब तँ नहि थिक।प्रकृतिमे परसल नीक - नीक वस्तुकें देखब।पर्यावरणमे उपस्थित सौन्दर्य छटाकें निहारब ओहिमे श्रृंगार ओ सौन्दर्य बोधकें ताकब- हेरब सेहो कविताक काज थिक,से कवि रामलोचन ठाकुर सेहो कवितामे सौन्दर्यबोध अनबाक चेष्टा केलनि अछि ओ एहिमे कतेक सफल भेलाह अछि से पाठकक दृष्टिपर निर्भर करैत छैक।ओ वसंत गीत लिखय चाहैत छथि मुदा कखन?

'हमरा लोकनि संग मिलि पटाबी

गाछ सब एखनो अइ प्राणवंत आ

हमरा विश्वास अइ

आइ ने कालि

होएतैक नब पल्लव

रंग बिरंगक फूल

जकर मादक गंधसँ महमह करत परिवेश

पीबि मधु मातल मधुप गुंजन करत

तखन

हमहूँ लिखब

वसन्त गीत जे

आकाशक नहि

परिवेशक उपजा थिक।

कवि सौन्दर्य बोधक संवेदनाक लेल आर्थिक रुपसँ लोक सामर्थ्यवान हेबे करय से नहि मानैत छथि।ओ श्रमिक वर्गक सौंदर्यबोधक अलगे परिभाषा गढ़ैत छथि।जकर स्थिति नितह कमेनाय आ नितह खेनाय छैक से कतयसँ ताजमलक सैर करबा लेल जायत।खजुराहो वा कोणार्कक सूर्यमंदिर देखबाक लेल जायत मुदा सौन्दर्य बोध गरीबक लेल सेहो होइत छैक,जकर प्रकृतिसँ बहुत सन्निकटतासँ सम्बद्ध रहैछ।

कवि लिखैत छथि-

'ओना, हम देखने छी

साँझक मेघाच्छन्न आकाश

घर घुरल जाइत कोनो सारस- दम्पत्ति

हम देखने छी।

हम देखने छी

डबरी-चबच्चा मे

जलविहार करैत डुबैत -उगैत

हंस-दम्पत्ति हम देखने छी।

कवि भादवक अन्हरिया रातिमे ,पछुआरक बसबिट्टी आ करजानमे अनगिनत भोगजनीकें चमकैत देखने छथि। कविक आँखि एहने- एहन दृश्य सब देखबाक लेल औनाइत छनि।एहन सौन्दर्य छटा जे जन साधारण बिनु कोनो खर्चकें देखि सकैत अछि।

ओ अपन कविताक अलग सौन्दर्यशास्त्र गढ़लनि अछि।हुनक कविताकें पढलाक पछाति पाठककें एकटा खास तरहक सौन्दर्य बोधक आभास होइत छैक।जखन हुनक कवितामे ढेकि जाँतक आबाज,कनसारनिक लाड़नि,हट्ठामे आ पौरपर चलैत बड़दक गरदामीक बजैत घंटी -ध्वनि

लोहाड़क हथौड़ा आ मशीनक आबाजमे ध्वनिक सौंदर्य बोध भेटैत अछि तँ निश्चिते एकटा फराक सौन्दर्यक परिभाषा गढ़ैत अछि।

एतावता हम देखैत छी जे कवि रामलोचन ठाकुरक कविताक सौंदर्यबोध सेहो एकदम फराक अछि।निस्सन अछि आ शाश्वत सेहो।

एहि तरहें कविता संग्रह पढ़लाक पछाति ई नहिकहि सकैत छी जे कविता अप्रासांगिक भेल अछि।बीस बरखक बादो कविता सभ समकालीन स्वरसँ ओत -प्रोत अछि।कविताक माध्यमसँ उठाओल गेल अनेक प्रश्न एखनो उत्तर हेरि रहल अछि। कविक आज थिक आम जनक हितक लेल संवाद करब।प्रश्न उठायब।से एहि कविता संग्रहमे कवि सफलतापूर्वक उठौलनि अछि।जाहिमेसँ

कतेक प्रश्न उत्तर भेटल? कतेक एखनो अनुत्तरित अछि? कतेक नव प्रश्न सभ ठाढ़ भेल अछि? से सभक पड़ताल करब निश्चितरुपसँ वर्तमान समाजक अछि से साहित्यिक समाज लेल सेहो ।हँ,जे शासन सत्ताक हर लगातार जोति रहलाह अछि।जिनका लग सत्ताक सभटा कुंजी छनि हुनकासँ त' स्वाभाविके।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'-संपर्क-9434050218

रामलोचन - हमर नजरिमे

भारतीय नवजागरणक पृष्ठभूमिमे अप्पन देस-कोसक भाषा और साहित्यकें प्राथमिकता देल गेल छल। ई त' हम सब जनिते छी जे मैथिली आ’ बांगला – दुनू केर साहित्यक मध्य युगेमे वैष्णव और शाक्त सम्प्रदाय – दुनू सम्प्रदाय केर रचनाक प्रभावसँ सामान्य जनसँ ल’ कय कवि-विद्वान रचनाकार सब क्यो प्रभावित भेल छला। जाति प्रथा और भेद भावकें मेटा देबाक वाणी बजैत तकर पहिनहि चैतन्यदेव आर हुनक धार्मिक आन्दोलनक प्रभाव समग्र पूर्वी साहित्यपर पड़ल छल। विद्यापतिसँ एहन समन्वय केर चिन्ता शुरू भेल छलनि। उन्नैसम शतकमे आबैत-आबैत तकर सुदूर-प्रसारी प्रभाव हमर सोच-विचारपर पड़त आ' हमरा नव तरहसँ सोचै ले' वाध्य करत - से कोनो अनापेक्षित घटना त' नहिये छल। देखल जाइत अछि जे प्रारंभिके समयमे राष्ट्रीय चेतनाक जेना ज्वार नजरि आयल छल – जकर प्रभाव समग्र भारतीय जन-जीवनपर पड़ल – ई त' हम सब जनिते छी। उन्नैसम शतकमे, जखन बंगाल जागि रहल छल आ’ जखन हमर पड़ोसेमे साहित्यक इतिहासमे एकटा नवीन चेतना आबि रहल छल, तकर प्रभाव मिथिलापर पड़त ताहिमे आश्चर्य

की? मिथिलाक सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवनपर तकर बड्ड प्रभाव पड़ल। ओना त' मिथिलामे एहि विषयपर तत्तेक शोध आ' चर्चा भेल नहि अछि – मुदा रामलोचनजीक संगे हमर निकटता अथवा उर्दूमे कही त 'नज़दीकी' जे कैकटा कारणें भेल छल तकरामे प्रमुख ई छल जे हम दुनू बंगालमे रहि कय मैथिलीक चर्चा करैत काल इतिहासक एहि समझ अथवा 'पाठ'पर सहमत छलहुँ। सदा प्रयास ई रहैत छल जे कोना हमरा लोकनिकें इतिहासक गभीरता धरि ल' जायब संभव होयत। तैं आश्चर्य नहि जे हुनकर हाथसँ 'इतिहासहन्ता' सनक महापाठक निर्माण हेतनि।

ओना त' रामलोचन ठाकुर मार्क्सवादी विश्वदृष्टिसँ सम्पन्न रचनाकार छथि, जनिक काव्य-शिल्प लोकधर्मी छनि । अग्निजीवी काव्यधाराक प्रवर्तक कवि, अभिनेता-निर्देशक एवं कर्मठ भाषा आंदोलनी रहल छथि। हुनक लेखनी कत्तेक शक्तिशाली छनि तकर एकटा अंदाजा किछु पंक्तिसँ भेटि सकैत अछि -

“बन्धु !

एना होइत छैक

एना होइत छैक कहियो काल

भदवारिक सतहिया

माघक शीतलहरी

कोनो नव बात नहि

जखन दिनपर दिन सूर्यक अस्तित्व

रहैछ अगोचर

तें मानि लेब सूर्यक अवलुप्तिकरण

आलोकपर अन्धसकारक वर्चस्व

कत' क' बुद्धिमानी थिक

सामयिक सत्यस होइतहुं

शाश्वत नहि होइछ अन्धकार”

ओ हमरा सबकें सचेतक' दैत छथि - विश्व-बाजार केर चलि रहल खेल केर विषयमे, एहि तरहेँ -

“जखन पूंजीवादी विस्तानर लिप्साक'

जारज संतान वैश्वीकरण

वृहत विश्ववकें बाजार बना देबाक लेल

अछि उद्धत अपस्यांत

आवश्य्के नहि अनिवार्य भ' जाइछ

प्रतिकार शब्द-साधक लेल...”

मिथिला, मौथिली आ मौथिल संस्कृतिक प्रति अगाध प्रेम हुनका मिथिलाक पीड़ा आ आकांक्षाकें कवितामे करबा लेल प्रेरित कयने छनि। व्यंग्य, करुणा, विरोध आ ललकार हुनक प्रमुख काव्य-स्वर थिकनि। हुनक काव्य-शिल्प लोकधर्मी अछि।

पनरहे बर्खक उमरमे जखन ओ नोकरीक खोजमे कलकत्ता चलि आयल छलाह, जखन हुनकरआँखिमे कतेको सपना छलनि, तखनहि हुनका संग परिचय आ' मित्रता भेल छल – जे अटूट रहल। शिक्षाक प्रति जे अनुराग हुनकामे छलनि से चैन नहि लेबऽ देलकनि। स्थायी नौकरी शुरू करिते ओ सांध्यकालीन छात्रक रूपमे चारुचन्द्र कॉलेजमे प्रवेश लेलथि। ओ कलकत्ता विश्वविद्यालयक एहन स्नातक छात्र भेलाह, जिनका मौथिली पढ़बा लेल संघर्ष करए पड़लनि। ओ आयकर विभागसँ 2009 मे सेवानिवृत्त भेला। तखनहि हमहुँ सब 'मिथिला दर्शन'क पुनरुज्जीवनक योजना बना रहल छलहुँ, जकर ओ कार्यकारी सम्पादनक दायित्व ग्रहण कयने छला।

रामलोचन ठाकुर जखन छठमेमे पढ़ैत छलाह तखने गीत लिखब शुरू कयलनि। नौ टा मौलिक पोथीक अतिरिक्त दूटा संपादित तथा अनुवादक सात टा पोथी प्रकाशित आ कैकटा अप्रकाशित सेहो छनि। पाँच टा प्रकाशित काव्य संग्रह भेलनि : ‘इतिहासहंता’ (1977), ‘माटि-पानिक गीत’ (1985), ‘देशक नाम छल सोन चिड़ैया’ (1986), ‘अपूर्वा’ (1996) एवं‘लाख प्रश्न अनुत्तरित’ (2003)।`बेताल कथा` नामक एकटा हास्य-व्यंग्य कथा-संग्रह सेहो कुमारेश काश्यपक छद्म नामसँ 1981 मे छपल छलनि। एम्हर रामलोचनक दूटा संस्मरणात्मक पोथीअयलनि - `स्मृतिक धोखरलरंग` (2004)मे आ `आँखि मुनने : आँखि खोलने` (2005)। 1983 आ पुन: 2006 मे ओ `मौथिली लोककथा` छपौलनि जे लोकसाहित्यक पुनर्रचना अछि। अनुवाद लेल हुनका प्रतिष्ठित `भाषाभारती सम्मान`सँ अलंकृत कयल गेल छलनि तथा विदेह सम्मान सेहो प्राप्त भेल छनि। वर्ष 2012क लेल वरिष्ठ कवि एवं गीतकार चंद्रभानु सिंहक संग युग्म रूपमे रामलोचन ठाकुर कविताकें सेहो मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे सर्जनात्मक आ' अनुवादक काज लेल प्रबोध साहित्य सन्मान भेटल छलनि।

‘अग्रदूत’क छद्म नामसँ रामलोचन अनेक कथा एवं निबंध लिखलनि जे अद्यावधि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि- ओकरा एकत्रित क' कय क्यो प्रकाशित करय त' आर कैकटा पुस्तक बनि सकैत अछि; ओ अनेक पोथी आ पत्रिका कसंपादन सेहो कऽ चुकल छथि। `अग्निपत्र`, `रंगमंच`, `मौथिली दर्शन` आ `सुल्फा` सन स्तरीय पत्रिकाक ओ यशस्वी संपादक रहल छथि।जे क्यो अनुवाद-प्रेमी छथि, तिनका लोकनिकें हिनक अनुवाद-पुस्तक सब अवश्य मोन हेतनि - ‘प्रतिध्वनि’ (अनुदित कविता), ‘जा सकै छी, किन्तु किए जाउ’ (अनुदित कविता), ‘जादूगर’ (अनुवाद), आदि। जापानी पद्धतिमे ओ हाइकू कविता - 'किछु क्षणिका' केर रचना कयने छला - जे 'विदेह' मे प्रकाशित भेल छलनि –जेना कि - "भोजक पान/ सासुरक सम्मान/ पुनिमाक चान", वा "हाथीक कान/ नटुआक बतान/ एक समान", अथवा "दूरक चास/ गामक कात बास/ कोन विश्वास" – जतय पद्धति विदेशी अवश्य छलैक, मुदा स्वर सम्पूर्ण रूपेण 'मैथिली'येक।

१९५७ मे हरिमोहन झा, मणिपद्म-जी आ' लक्ष्मण झाजीक प्रेरणासँ अखिल भारतीय मैथिली संघ आ' मैथिली लोकसंघक विलय क' कय जे अखिल भारतीय मिथिला संघ बनल छल – जकर पुरोधा स्वरुप बाबूसाहेब चौधरी, प्रबोधनारायण सिंह आदिक संग रामलोचनक पितृव्य शुकदेव ठाकुरजी सेहो अत्यंत सक्रिय छला – आओर तरुण रामलोचन सेहो आगाँ चलि कय भाषा आंदोलनमे काफी सक्रिय भ' गेल छला। बादमे ओ बेसी इन्वोल्वड भ' गेल छला मैथिली नाट्य-आन्दोलनक संग। तकरहि संगे लेखन आ' सम्पादन त छलैये। स्वस्थ रहथि आ' सृजनशील रहथि, सैह कामना करब।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

नबोनारायण मिश्र- संपर्क-9330173348

हमरा नजरिमे: श्री रामलोचन ठाकुर

मिथिला-मैथिलीक उत्थान हेतु कलकत्ता सभ दिन अग्रगण्य रहल अछि। एकर अतीत वस्तुतः गौरवपूर्ण रहल अछि। हमर अग्रज लोकनि भाषा-संस्कृतिक हेतु सजग रहलाह आ एखनहुँ नव पीढ़ी अपन दायित्वक पालन करैत छथि। ताहि मध्य श्री रामलोचन ठाकुर जीक नाम विशेष लोकप्रिय रहल अछि।

श्री रामलोचन ठाकुरजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक समग्र मूल्यांकन करब हमर सामर्थ्य नहि तथापि जे हम देखल अछि से वर्णनातीत। मिथिला-मैथिलीक प्रति हृदयमे वेदनाकेँ ओ साकार करैत रहलाह अछि। मूल समस्याकेँ विभिन्न स्तरपर रेखांकित करैत रहलाह अछि। तकरे निमित्त मैथिली आंदोलन, मैथिली रंगमंच, काव्य आदिक सर्जनाकेँ माध्यम बनौलनि। मैथिली आंदोलन हुनक मूल अभिव्यक्ति छलनि। मैथिलीक अधिकार हेतु आंदलोन पक्ष रखैत 'देसिल बयना'मे हुनक संकल्प द्रष्टव्य अछि-

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जुआन

यद्यपि श्री ठाकुरजीसँ पूर्व परिचित छलहुँ मुदा हुनकर स्नेह-सान्निध्य १९९० ई.मे मैथिली नाट्य संस्था 'कोकिल मंच' के स्थापनाक पश्चात हमर सक्रियतासँ प्रगाढ़ भेल। हम हिनक मैथिलीक प्रति समर्पणसँ बहुधा प्रेरित होइत रहलहुँ। ताहि दिन कोनो एहन कार्यक्रम नै छल जाहिमे वक्ता ओ नै होथि। ताहि मध्य शिष्टाचारवश भेंट होइत रहल आ हम अपनाकेँ पारिवारिक सदस्य सन पाबि धन्य होइत रहलहुँ। कोकिल मंचक कोनो एहन कार्यक्रम नै जाहिमे ओ सम्मिलित नै भेल होथि। प्रत्येक वर्ष स्मारिकामे आलेख हेतु जखन कहलियनि से निरंतर महत्वपूर्ण आलेख दैत रहलाह। हुनक परामर्शसँ संस्थाकेँ सुयश प्राप्त होइत रहल।

एकटा उल्लेखनीय काजक चर्चा करब जरूरी बुझना जाइत अछि। श्री सूर्यनारायण झा 'सरस' रचित "मैथिली श्री सीताराम चरित मानस"केँ जखन कोकिल मंच दिससँ प्रकाशनक योजना बनेलहुँ आ तकर संपादनकेँ गुरूतर भार हुनका देल तँ ओ सहर्ष स्वीकार केलनि जे वस्तुतः बहुत श्रमसाध्य काज छल। ताहि अवधिमे प्रेससँ प्रूफ देखेबाक हेतु मित्रवर कुमरकांत झाजी (राघोपुर-बलाट)क संगे अनेको बेर हुनका घर जेबाक अवसर भेटल। महाजाति सदन प्रेक्षागृहमे मैथिली नाटकक मंचनकेँ अवसरपर एहि पोथीक लोकार्पण भेल जाहिमे मंचासीन प्रो. विद्यानंद झा आ रामचलोचन ठाकुरजीक सारगर्भित वक्तव्य आइयो प्रासंगिक अछि। एक दिन प्रसंगवश आग्रह केलियनि जे 'मैथिली रंगमंच आ कलकत्ता' विषयपर आलेख लिखू जे कोकिल मंचक स्मारिकामे देबाक अछि। ओ कहलनि जे जतेक बुझल अछि तकर अतिरिक्त कलकत्ताक आ उपनगरीय क्षेत्रक मैथिली रंगमंचक जानकारी अहाँ देब तखनहि संभव अछि। हम सहयोग केलियनि जे स्मारिकामे छपलै आ पश्चात जखन 'स्मृतिक धोखरल रंग' हुनकर पोथी छपलनि ताहिमे सेहो संकलति केलनि।

दोसर महत्वपूर्ण पक्ष जे मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति स्नेहक वशीभूत

विभिन्न पत्र-पत्रिकासँ संलग्न रहितो एकटा ठोस साहित्यिक मंच "संपर्क" केर ओ प्रणेता रहलाह अछि। ध्यातव्य जे उक्त संस्थामे एकटा पदाधिकारी "संयोजक" प्रारंभहिसँ ओ रहलाह अछि। एहि संस्थाक नियमानुसार साहित्यिक रुचि रखनिहार आ मैथिली सेवी भाग लैत छथि। एकर कोनो सदस्य नै बनाओल जाइत अछि। अपन रुचिकेँ अनुसार सम्मिलित व्यक्ति ओकर सदस्य भेलाह। मासक प्रत्येक दोसर रवि दिन साँझुक ४ बजेसँ कार्यक्रम प्रारंभ होइत अछि। सहभागी लोकनि अपन नव रचनाक संग उपस्थित होइत छथि जाहिपर उपस्थित लोक पठित रचनापर मंतव्य दैत छथि। आवाश्यकतानुसार आलेखमे संशोधन करबाक खगतापर सुझाव दै छथि। एहि प्रक्रियासँ साहित्यिक रुचि ओ गुणवत्तामे वृद्धि हएव स्वाभाविके। प्रत्येक संपर्कक प्रारंभमे उपस्थित लोक अपनेमेसँ एकटा अध्यक्ष चुनैत अछि जकर संचालनमे ई कार्यक्रम शुरू ओ अंत होइत अछि। मने हरेक संपर्कक अध्यक्ष अस्थायी होइत छलाह। ध्यातव्य जे अन्यान्य संस्था सभमे पदाधिकारी बनबाक लेल प्रतिस्पर्धा होइत अछि मुदा ताहिसँ अलग संपर्क अपन गतिविधि नियमित रूपें करैत अछि। मुदा आब ई कने अस्थिर भेल अछि। संपर्कक तत्वावधानमे जखन साहित्य अकादेमी पुरस्कार श्री कीर्तिनारायण मिश्र आ अनुवाद पुरस्कार श्री नवीन चौधरीकेँ भेटलनि ताहि उपलक्ष्यमे एकटा उल्लेखनीय सम्मान समारोह आयोजित भेल छल। नवीन जीक चर्च भेल तँ ई कहब उचित जे नवीनजी अपन पोथी "वर्ण वितान' केर भूमिकामे लिखै छथि जे "....श्री रामलोचन ठाकुरक सत्संग सँ साहित्य बुझबा आ लिखबाक अवगति भेल। आ संपर्क (सभ मासक दोसर रवि)मे निरंतर उपस्थिति सँ सूतल रहबाक मनःस्थिति एखन धरि नहि आएल...."। ध्यातव्य जे तीनू साहित्यकारक कर्मक्षेत्र कलकत्ता रहल अछि। अतबे नहि रामलोचन ठाकुरजी संपर्कक माध्यमसँ बहुतो नवयुवाकेँ प्रेरित केलाह ताहिमे एकटा आशीष अनचिन्हार सेहो छथि आ अनचिन्हारो अपन पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" एहि बातक चर्चा केने छथि। संपर्कक समयक आस-

पास बाहरसँ आएल कोनो साहित्यकारकेँ संपर्कक बैसारमे उपस्थित हेबाक आग्रह कएल जाइत रहल अछि। जाहिसँ बाहरी ओ स्थानीय साहित्यकार एक-दोसरसँ परिचित होइत रहलाह अछि। संपर्क एखनो धरि चलैत आबि रहल अछि जकर पाछू रामलोचने जीक बल छनि संगे-संग आनो लोकक। कलकत्तामे किछुए एहन मैथिल भेलथि जिनकर नाम लेलासँ कलकत्ताक बोध होइत हो। रामलोचनजी ओहि किछुमेसँ एकटा आइकन आ इनसाइक्लोपीडिया छथि से हम निश्चित रूपसँ कहि सकैत छी। एहन महान सर्जक, संपादक आ क्रांतिकारीकेँ पाबि हमरा सभकेँ सतत गौरव बोध होइत रहल अछि।

संपादकीय नोट- नबोनारायणजी द्वारा विदेहपर रामलोचन ठाकुरजीसँ संबंधित अन्य सामग्री।

2011 मे विदेह द्वारा संचालित “विदेह सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार)” 2011-2012 केर अनुवाद सम्मान रामलोचन ठकुरजीक अनुवाद पोथी पद्मा नदीक माँझी देबाक घोषणा भेलै। https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/147780938633376 आ एहि अवसरपर हमरा लोकनि नबोनारायण मिश्रजीसँ आग्रह केलहुँ हुनकर साक्षात्कार लेल। हमरा लग साक्षात्कार आएल आ ई विदेहक 15 जनवरी 2012 केर अंक संख्या 98 प्रकाशित भेलै। एहि समय धरि रामलोचनजी पूरा स्वस्थ छलाह। ई आलेख लेल विदेह अंक 98 डाउनलोड करू एहि लिंकसँ http://videha.co.in/new_page_15.htm एकरा एहू लिंकपर पढ़ि सकैत छी http://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-

post_09.html

एहि साक्षात्कार केर अतिरिक्त महत्व ई जे जाहि समयमे ई साक्षात्कार लेल गेलै ठीक ताही समयमे प्रबोध साहित्य सम्मान केर घोषणा सेहो भेल रहै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अशोक-संपर्क-8986269001

राम लोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत

रामलोचन ठाकुर मैथिलीक प्रसिद्ध कवि छथि। ओ एही संग आंदोलनकर्ता, रंगकर्मी ओ अनुवादक सेहो छथि। पोथी सभक संपादन केने छथि। व्यंग्य ओ लोकधर्मी कथा लिखने छथि। ओ एहन कवि छथि जिनक चेतना लोकोन्मुख आ अभिलाषा जनवादी अछि। ओ खाँटी मैथिलीक कवि छथि। हिंदीमे कहियो नहि लिखलनि। राम लोचन ठाकुर मैथिली साहित्कारक ओहि परंपराक लोक छथि जे परंपरा काञ्चीनाथ झा 'किरण'क अछि। मातृभाषाक विकास जिनकर लक्ष्य रहलनि। मातृभाषाक विकास एहि कारणे जे 'मातृभाषाक विकाससँ जन-जागरण होइत छैक ओ जागरण धन-कुल-जातिमूलक गरिमाकेँ चूरि दैत अछि'। रामलोचन ठाकुरक जन्म मिथिलामे भेलनि आ जीवन बंगालमे बितलनि। फलस्वरूप हुनक जे रचनाकार-व्यकतित्व निर्मित भेल से दून ठामक सांस्कृतिक चेतनाक समन्वयसँ निर्मित भेल। ई चेतना परिश्रमी ओ उत्पादक वर्गक संघर्षशीलतासँ उपजल छल।

रामलोचन ठाकुर अपन कविता आठम दशकसँ शुरू करैत छथि। मोटामोटी १९७० ई.क बादसँ लिखल हुनक कविता सभ चारि संग्रहमे संग्रीहत अछि।

'इतिहासहंता' (१९७७), 'देशक नाम छलैक सोन चिड़ैया' (१९८६), 'अपूर्वा' (१९९६) आ 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' (२००३)। ओ विभिन्न शिल्प-शैलीमे कविता लिखलनि अछि। छंदोबद्ध ओ मुक्तक दूनू रूपमे हुनक कविता उपल्बध अछि। दोहा, कुंडलिया, मुक्तक कविता, मिनी कविता, क्षणिका (हाइकू) सभ तरहक कविता। हुनक कविता सभहक क विशेषता ईहो अछि जे पूर्वजसँ लऽ कऽ समकालीन ओ अनुज धरिकेँ मोन पाड़ैत ओ संबोधित करैत हुनक बहुते रास कविता अछि। एहिसँ हुनक जुड़ाओ ओ प्रतिबद्धता प्रकट होइत अछि। समानधर्माक प्रति लगाओ हुनक एक फराकसँ रेखांकित करए बला प्रवृति अछि। रामलोचन ठाकुरक कवितामे समयक ताप ओ धाकेँ संग आर्थिक-समाजिक ओ राजनीतिक-सांसकृतिक परिदृश्य ओ प्रवृतिपर टिप्पणी, व्यंग्य, आक्रोश भेटैत छैक। हुनक कविता-यात्रामे पाठककेँ ओहि समयक स्थिति-परिस्थिति मूर्तिमान होइत छैक जखन ओ कविता लिखल गेल छल।

ई देश स्वतंत्रता बादसँ बहुतो झंझावात, आलोड़न-विलोड़न देखि चुकल अछि। स्वाधीनता प्राप्तिक जे उल्लास रहैक से क्रमशः थोड़ेक वर्षक बाद बिलाए लगलै लोककेँ लगलै जे ओकर दुख-तकलीफ कम नै भऽ रहल छै। सत्तामे गोर अंग्रेजक स्थानपर कारी अंग्रेज बैसि गेल अछि। मोह-भंगक संग साहित्यमे सेहो ओकर अनुगुंज सुनाइ दिअ लागल। शासन-सत्तासँ निराश आ हताश विपन्न लोक सभ आ एक जुट हुअ लागल। सत्ता परिवर्तनकेँ अनुपयोगी बूझि व्यवस्था परिवर्तन लेल ओ कृषक-मजदूर सभहक शोषणसँ मुक्ति लेल सशस्त्र संघर्ष बंगालक नक्सलबाड़ीमे शुरू भऽ गेल। रामलोचन ठाकुर अपन कविता यात्रा ओही उथल-पुथलसँ भरल समयक संग शुरू केलनि। मैथिलीमे अग्निजीवी कविक रूपमे तमाम भेद-भाव, शोषणकेँ देखि वर्ग-संघर्षक लेल पुरातन मान्यताकेँ अप्रयोजनीय, अस्थायी, उज्जर-कारी रचना, इतिहासकेँ तात्तकाल निरस्त कऽ शोषितक पक्षमे नव इतिहास बनेबाक लेल सशस्त्र क्रांतिक लेल डेग बढ़ा दैत छथि।

आ हम/ एखन नञि लिखि सकब/ करिया मोसि सं/ उजरा कागत पर/ कुनू कविता/ कथा/ इतिहास /अप्रयोजनीय/ अस्थायी / देखैत नञि छी / हमरा हाथमे / चमकैत पंचकमनियां भाला/ चलि पदल छी हम/ लाल टुह-टुह रक्त सं / पिरथीक विशाल वक्ष पर / लिखबा लेल एगो कविता / एगो कथा / एगो इतिहास / आ स्वयं बनि जेबाक लेल एगो घटना/ एगो नाम/ एगो इतिहास"

(अग्रजक नाम-इतिहासहंता)

व्यवस्था परिवर्तन लेल आरंभ भेल एहि प्रकारक संघर्षकेँ तँ तात्कालीन सत्ता द्वारा बलपूर्वक दबा देल गेल मुदा ई संघर्ष-चेतना जनतामे पसरि गेल। ई चेतना सामूहिक संघर्षक छल। मैथिली साहित्यमे सेहो चाहे कविता हो कि कथा कि उपन्यास एहि चेतनाक अभिव्यक्तिकेँ आठम-नवम दशकमे देखल जा सकैत अछि। ओहिसँ पूर्व मैथिली कविताक जे प्रवृति छल से आधुनिक दृष्टिसँ सम्पन्न रोमांटिक , प्रगतिवादी आ नव कविताक रूपमे अभिव्यक्त भऽ रहल छल। डा. हरिमोहन मिश्र अपन पोथी 'आधुनिक मैथिली कविता'मे लिखलनि अछि जे "रोमांटिक कवितामे प्रमुख रूपें सौंदर्यक वर्णन होइत छल। प्रगतिवादी कवितामे समाजिक वास्तव अर्थात समाजिक विषमता, समाजिक कुरीति, गरीबी, शोषण, अत्याचार आदिक वर्णन होबए लागल"। मैथिलीमे रोमांटिक कविता भुवनजीसँ, प्रगतिवादी कविता यात्रीजीसँ आ नव कविताक आरंभ राजकमल चौधरीसँ मानल जाइत अछि। नव कविताक प्रवक्ताक रूपमे रामकृष्ण झा 'किसुन'क योगादन महत्वपूर्ण रहल अछि। डा. हरिमोहन मिश्र ओहि पोथीमे ईहो कहै छथि जे "प्रगतिवादी कवि अतीतक विरोध करैत छलाह किन्तु भविष्यक प्रति पूर्ण आस्थावान छलाह कारण हुनका लोककनिक समक्ष भविष्यक कोनो एहन स्पष्ट चित्र छल। नव कविक समक्ष भविष्यक एहन कोनो स्पष्ट चित्र नहि अछि। तथापि ओ नवक स्वागत करैत छथि कारण जे ओ वर्तमानसँ अत्याधिक आशंकित ओ संत्रस्त छथि"।

पाश्चात्य साहित्यिक विभिन्न काव्य आंदोलनक प्रतिध्वनि भारतीय आ कि मैथिली कवितापर ओहि काल विशेषमे पड़ैत रहल। मोटामोटी कवितामे बहिरंग आ कि बाहरी यथार्थ आ अंतरंग आ कि आन्रिक यथार्थ, चेतन आ अवचेतनक अभिव्यक्तिक द्वंद प्रगतिवादी आ नव कविताक मूलमे रहल अछि। रामलोचन ठाकुरक कवितामे अवचेतन आ कि अंतरंगक विभिन्न मोनोग्राफिक चित्रण साधारणतया नै भेटैत अछि। हुनक कविता स्वाभाविक रूपसँ सहज भाषा ओ शिल्पमे लिखल गेल अछि। हुनक कविता प्रयोजनमूलक अछि, कलात्मकमूलक नै।

"अइ रातिक गुज्ज अन्हारमे
हमरा सभकेँ
तय क लेबाक अइ
बहुत रास बाट
पहुँचि जेबाक अइ
ओइ दिबड़ा भीड़ पर
जतय स
काल्हिक बाल सुरुजक संग
देबाक अइ नारा
बड़बाक अइ डेग
आजुक बुढ़बा सुर्य
मरि चुकल अइ
ई अन्हार रहौक अनके लेल
किन्तु आगामी काल्हि
हमरा सभक हएत
हमरे सभक हएत"

(आगामी काल्हि हमरे सभक हएत-- देशक नाम छलै सोनचिड़ैया)

ई जे आस्था आ विश्वास अछि जे आगामी काल्हि हमरे सभक हएत अर्थात

शोषित-दलित-परिश्रमी लोकक हएत से बिना भविष्यक चित्र स्पष्ट रहने नै भऽ सकैत अछि। ई कारपोरेटी व्यवस्था समाप्त कऽ उपेक्षित, हाशियापर ठेलल गेल लोकक नव, उर्वर ओ समानतापर आधारित व्यवस्था कायम करबाक लेल सामूहिक संघर्ष ओ एकजुटतापर संभव होयत। रामलोचन ठाकुरक कविकेँ ई सोच-विचार एकदम स्पष्ट छनि। हुनक कवितामे एहि भावक अभिव्यक्ति बेर-बेर होइत अछि।

रामलोचन ठाकुरक कवितामे एहि विचारधारक संग मिथिला ओ मैथिली लेल संघर्ष-चेतनाक अभिव्यक्ति सेहो भेटैत अछि। अपन धरोहरि अपन सांस्कृतिक-साहित्यिक थातीपर गौरव-बोध अछि तँ वर्तमान स्थिति प्रति असंतोष ओ आलोचनात्मक स्वर सेहो अछि। एही संग भाषिक चेतनाक लेल संघर्षक आह्वान अछि।

"स्त्री-पुरुष-जवान-बूढ़-बच्चा सभ चल
लाठी गड़ाँस भालामे शक्ति छै प्रबल
चूड़ी बजैत झन-झन नव चेतनाक स्वर
जय मैथिलीक नारा दए बज्र सन प्रबल
पटना दे पाटि दिल्ली धरि डगमगा पड़ै"
(इतिहास युग नवीनकेँ, अपूर्वा)

देशमे 1990 ई. बाद वैश्वीकरण आ कि भूमंडलीकरणक प्रभाव पड़ए लागल। शासन सत्ता सेहो मिश्रित अर्थव्यवस्था आ कि कल्याणकारी राज्यक नीतिसँ पृथक भऽ मुक्त बजार व्यवस्था जे उदारीकरणक नामसँ जानल जाइत अछि, केर रस्तापर चलए लागल। रंगीन टी.भी आएल आ ओही संग आएल रंगीन सपना देखबए बला जेबी कटू बजारक प्रचार-तंत्र। रूढ़वादिताक प्रचार-प्रसार बढ़ल। आम लोकक कष्ट आर बढ़ैत गेल। धनिक आर धनिक आ गरीब आर गरीब होइत गेल। जाति धर्म जे पहिनहिसँ जड़िआएल छल से आब खूब चतरि कऽ लोकक संकटकेँ बढ़ाबए लागल। सत्ता परिवर्तन होइत रहल मुदा लोकक

स्वाधीनता आ सत्तामे बैसल लोकक पूँजीवादी मानसिकतामे दूरी आ चौड़गर होइत गेल। जनताक मतसँ चुनल प्रतिनिधि ओ सरकार जनताक हितमे निर्णय नहि कऽ पूँजीपतिक हितमे निर्णय लिअ लागल। ई सभ वस्तुतः विदेशसँ आयातित अर्थव्यवस्थाकेँ आदर्श मानि लागू कएल जाइत रहल। विश्व बैंक एवं आइ.एम.एफ केर कर्जक बोझ जनतापर तेजीसँ बढ़ए लागल। तथापि लोकक आस्था आ विश्वास नहि डगमगाएल। नीक दिन आओत से विश्वास बनल रहलैक।

एहि महान देशक नब्बे कोटि जनताक
कमसँ कम कम नवम अंश लोक
सत्ता परिवर्तन आ स्वाधीनताक
मौलिक पार्थक्य पर विचारब
कऽ देने अछि प्रारंभ
विदेशसँ आयातित स्मृति नाशक औषधि
जे कीटनाशक नामे कैल जाइत रहल-ए प्रयोग
खेत-खरिहानसँ चूल्हि-चिनवार धरि
प्रभावहीन प्रमाणित भऽ रहल अछि
आ नेता लोकनिक माथमे लीख
आ कुरसी मे उड़ीसक संख्याक
दिन-प्रतिदिन वृद्धि भऽ रहल अछि।
तात्काल
संतोषक बात इएह टा अछि।

(१५ अगस्त, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

एही समयमे कंडल ओ कलंडलक आंदोलनसँ जातीयता आ साम्प्रदायिताक भावनाकेँ राजनीतिक सत्ता द्वारा मजगूत कएल जाए लागल। स्वाधीनता संघर्ज़क जे मूल्य सभ छल से तिरोहित हुअ लागल। देशक बँटवारा समय

हिंदू-मुसलमानक जे दंगा भेल, ओकरा महात्मा गाँधीक संग स्वाधीनताक नव विहानमे शासन सत्ता बुद्धिमत्तापूर्ण ढ़ंगसँ बिना कोनो साम्प्रदायिक भेद-भावकेँ शान्त करबामे सफल रहल छल। सामप्रदायिक ओ भावना मुदा समाप्त नहि भेल, फलस्वरूप महात्मा गाँधीक हत्या भेल। भितरे-भीतर सुनगैत ओ साम्प्रदायिक भावना भूमंडलीकरणक एहि अवधिमे छूटि कऽ खेलाए लागल। एहनमे कवि रामलोचन ठाकुर महात्मा गाँधीकेँ मोन पाड़ि बहुत दुखक संग ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे वर्तमानक सत्ता-संपोषित साम्प्रदायिक दंगाकेँ देखबैत छथि। अल्ला ओ ईश्वरक बीच बढल जाइत फाँकसँ ओ कराहि उठैत छथि।

अहाँक प्रियगान
'अल्ला ईश्वर तेरो नाम'
सस्वर गाओल जा रहल
आ बढ़ले जा रहल दिनानुदीन
अल्ला - ईश्वरक बीच व्यवधान
नोआखाली भनहि हो इतिहास
बम्बई अहमदाबाद थिक वर्तमान
हे राम!
अहिंसाक उपासक
(हम श्रद्धाञ्जलि नहि द' पाएब, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

रामलोचन ठाकुर अपन कवितामे ईश्वरक सत्ताकेँ नकारै नहि छथि मुदा ईश्वरक सत्ताक कारण विभिन्न धर्म संप्रदायकेँ बीच होइत बँटवाराकेँ मनुखताक विरुद्ध मानैत छथि। ओ एहि बँटवारा ओ एहि कारणे होइत वैमनस्य, कटुता, हिंसाकेँ एक मनुक्खक रूपमे न्यायोचित नहि मानैत छथि। एहिमे मनुख्ताक क्षरण देखैत छथि। वस्तुतः आब ओ मनुक्ख ओहेन नै रहल जे एहि विराट आ सुन्दर पृथ्वीपर आएल रहए। आब एहि कुरूप नृशंस भावनासँ विभिन्न

कोलामे बँटि मनुक्ख पृथ्वीकेँ छोट कऽ लेलक अछि।

पिरथी पर

एहि विराट सुन्नर पिरथी पर
ईश्वर नञि छला
मनुक्ख स पहिने
छल जंगल पहाड़
झरना नदी
पशु पाखी ....
प्रयोजन नजि छलै
ओकरा सभ के ईश्वरक
मनुक्ख के भेलै
आविर्भूत होमय लगला ईश्वर
एकक पश्चात् एक
राम
कृष्ण
ईशा
मुहम्मद
बुद्ध
मनुक्खक कल्याण हेतु
ईश्वर अविनश्वर
आबय लगला
रहय लगला
आलोपित होइत चल गेल मनुक्ख
एकक पश्चात् एक

मनुक्ख नजि रहल
रहि गेल किछु
हिन्दू
मुसलमान
सिख
क्रिस्तान...
एहि पिरथी पर एहि छोट-छीन पिरथी पर ।
(मनुक्ख आ ईश्वर,लाख प्रश्न अनुत्तरित)

ई पृथ्वी जे मनुक्खक लेल जीवन जीबाक आ प्रकृति समग प्रगति करबाक जगह रहए से क्रमशः कारी-गोर, नस्लीय घृणा, जातिसम्प्रदायक पारस्परिक हिंसक व्यवहार, राष्ट्र-उपराष्ट्रमे बाँटए लागल। मानवता पाछू छुटेत गेल आ राष्टवाद-अंधराष्ट्रवाद बढ़ैत गेल। मनुक्ख हिंसक होइत गेल, ओकरामे निर्ममता, वीभत्सा एहन बढ़ल जे लोकसँ लोक आतंकित हुअ लागल। विचार जे मनुक्खकेँ सुंदर, सहज बनेबाक लेल उत्पन्न भेल छल से विचारधारक रूपमे घृणा आ हिंसाकेँ संपोषित करए लागल। देशप्रेमकेँ स्थानपर राष्ट्र आ राष्ट्रवादक ज्वारि राष्ट्र सुरक्षाक नामपर युद्ध आ युद्धक आकांक्षाकेँ बढ़बैत गेल। अस्त्र-शस्त्रक होड़ बढ़ैत गेल। एहनमे जीवन सौंदर्यक उपासक, मानव-विकासक आकांक्षी कवि छटपटा उठल। मानवताक पक्षमे ठाढ़ लोकेँ सत्ता आब देशद्रोही मानए लागल। सत्ता-पुरुष आ सर्वोपरि होइत गेल। सत्ता द्वारा राष्ट्रद्रोहीक आरोप झेलैत एहन एक कविक आदलातमे देल बयानकेँ एहि कवितामे देखल जा सकैत अछि।

हे महामान्य अदालत !
जेना कि कहल गेलए
हम एगो कवि छी
सौंदर्यक उपासक

जीवनक कविता लिखैत छी हम
मृत्युक नहि
ओकर निर्ममता बीभत्सता आतंकित करैछ
हमरा
तें हत्यारा सँ घृणा करैत छी
घृणित कर्म मानैत छी
हत्या के
मानवताक विरूद्ध
एगो एहन अपराध
जकर क्षमा नहि
से हत्या ---
भनहि विचारक नामपर हो
एनकाउन्टरक नाम पर वा राष्ट्रक सुरक्षाक नाम पर .....
(एक गोट राष्ट्रद्रोहीक वक्तव्य, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

एहन कवि स्वाभाविक रूपसँ चाहैत अछि जे ओकर कविता उत्पादक ओ परिश्रमी लोकक श्रमसँ अर्जित चेतना-विचार ओ सौंदर्यबोधसँ जन्मय। पुष्पित-पल्लवित हो। ओ कवि ईहो नहि चाहत जे ओकर एहन कोनो कविता-गीत कोनो शीत-ताप नियंत्रित सभागारमे भद्र सुसज्जित सज्जन समुदायमे पड़ल जाए किएक तँ ओ लोकनि एकर निहितार्थ नहि बूझि सकता। वस्तुतः जे लोक परिश्रमी लोकक पक्षमे नहि अछि से निश्चित रूपसँ अन्ततः हत्यारा प्रजातिक संग धऽ लेत।

कविता हमर
कोनो मंदिर मसजिद वा
कोठा सँ नहि, मजूरक झोपड़ी सँ
कारखानाक जरैत चिमनी सँ खेत जोतैत हरक फार सँ
धीपल लोहा पर पड़ैत लोहारक हथौड़ा सँ

कुम्हारक चाक सँ चमारक टाकु सँ जनमओ
हम चाहै छी

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

हम चाहै छी हमर कविता
महानगरक कोनो शीत-ताप-नियंत्रित
सभागारमे भद्र सुसज्जित, सज्जन समुदाय
मध्य नहि पढ़ल जाय
कोनो कारखानाक गेट पर
मजूरक बीच, खेतक आरिपर
झहरैत मेधक बीच सारिबद्ध
धनरोपनी करैत श्रमिकक समक्ष हम चाहै छी
हम इएहटा चाहै छी
अपन कविताक लेल ।
(हम चाहै छी, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

देश-दुनियाँमे चलैत आ बढ़ैत भूमंडलीकरण वा बजारवादक एहन समयमे जतए गलाकाट प्रतियोगिता आतंकक सृष्टि, उधारीक नीति, बाबा नाम आ दादा नाम केवलम् चलि रहल अछि ओतए शोषित-दलित-परिश्रमी लोक जीवन-यापन लेल एम्हर-ओम्हर बौआइत, जीविका तकैत छिछिया रहल अछि। एहि स्थितिक बावजूद स्नेह करए बला गामकेँ, जीवनसँ लबालब गामकेँ बिसरि नहि पाबि रहल अछि। भले गाम बदलि रहल हो, शहरे भऽ रहल हो, भले गामसँ विस्थापित लोक लेल गाम अनचिन्हार भेल जाइत हो वा ओ स्वयं अनठीया भऽ रहल हो, ओ अनुभव करैत अछि जे ओकर परिचय

जेना छिना रहल छैक। मैथिली साहित्यक ई खास विशेषता रहल अछि जे एहिठामक साहित्यकार अपन रचनामे मिथिला भूमिक लोक हित-चिंतासँ विलग नहि भेल अछि। ओ चाहैत अछि जे मिथिलाक समाजिक-आर्थिक विकास हो जाहिसँ लोक पलायन लेल मजबूर नहि रहए। रामलोचन ठाकुरक कवितामे सेहो ई चिंता-बेगरता गामक स्मृतिक संग विभिन्न रूपे अभिव्यक्ति भेल अछि।

बहिन दाइ !
हम मानैत छी /
आ अहूं मानब जे आइ /
अपने गाम मे हम सभ छी अनठिया-अनचिन्हार
जकर नजि छइ कुनू पता-ठेकाना -
सरिपहुं कतेक असह्य थिक ई पीड़ा मुदा /
ताइ लेल कथमपि उचित नजि कानब /
वरन् चीन्हब अपन शक्ति
आ बाहरोक शब्द के अकानब-
आ एगो प्रण ठानब त
कालि-आगामी कालि
हमरो एगो परिचय रहत
बिरदावनक हम
हमर बिरदावन।
(बहीन दाइक नाम एगो चिट्ठी, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

वस्तुतः ई परिचय वैयक्तिक परिचयनहि थिक। सामूहिक परिचय थिक। मिथिलाक अपन धरती अपन देश अपन गामसँ जुडऽल रहि ओहि माटि-पानिसँ उर्जा पायब थिक जाहिसँ दुनियाँकेँ बदलि सकी। अपनाकेँ चिन्हबाक लेल आ अपन शक्तिकेँ बूझि समाज व्यवस्थामे परिवर्तन लेल सामूहिक रूपे सन्नद्ध होयब वस्तुतः अपन परिचय पायब थिक। एहि लेल शोषित-दलित

लोकक प्रति संवेदनात्मक स्तरपर जुड़ल रहल जरूरी अछि। तैं कवि कहि उठैत छथि।

लिखबा लेल बैसै छी
गंगा अवतरण कथा
लिखने चल जाइत छी
कोशी प्रांगणक व्यथा

विख्यात भुवनत्रयम्, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

रामलोचन ठाकुरक आठम दशकसँ पछिला शताब्दीक अंत धरि आ एहि शताब्दीक आरंभ धरिक कविता सभकेँ पढ़ि लगैत अछि जे एहि देश-दुनियाँक विद्रूपता, वैषम्य, असमानता, शोषणपर आधारित समाज आ सत्ताक परत दर परत उघरैत चल जा रहल अछि। एक आस्था विश्वासक संग व्यवस्था परिवर्तन लेल सोच-विचार ओ सामूहिक संघर्षक मानसिकता परिश्रमी लोकक हित-चिंता, पक्षधरताक संग संवेदनात्मक स्तरपर अपन छाप छोड़ि रहल अछि। हइए जे कविक संग कहि उठी-

आउ ने
हमरा लोकनि संग मिलि पटाबी
गाछ सभ एखनो अइ प्राणवंत आ
हमरा विश्वास अइ आइ ने कालि
एहि मे होएतैक नव पल्लव
रंग-बिरंगक फूल
जकर मादक गंध सं महमह करत परिवेश
पीबि मधु मातल मधुप गुंजन करत
तखन हमहूं लिखब
आ निश्चिते लिखब

वसन्त-गीत जे

आकाशक नहि

परिवेशेक उपज थिक ।

(वसन्त गीतक मादे, लाख प्रश्न अनुत्तरित)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

नारायणजी- संपर्क-9431836445

विरोध आ अनुरोधक कविता

कवि रामलोचन ठाकुर हमरा सभ दिनसँ आकृष्ट करैत रहलाह अछि। तकर आधार हुनकर ओ सुस्पष्ट वैचारिक लेखन थिक जे एक संग भाषा आ साहित्यक प्रति समान भावे एकल निष्ठा आ समर्पणकेँ दर्शाबैत अछि।

साहित्य साधनाक माँग करैत अछि। साधना लेल चाही एकांत। एकांत वैचारिक सुदृढ़ीकरण लेल अत्यंत आवश्यक मानल गेल। संगहि एकांत भाव आ शब्दक उपासनाक लेल सेहो अवकाश उपलब्ध करेबामे साहयक होइत अछि। मुदा भाषा लेल चाही आंदोलन। आंदोलन लेल एकांतसँ बहरा व्यक्ति आ व्यक्तिसँ जुटि एकटा सार्थक संगठनक खाहे तँ निर्माण करब होइत अछि अथवा निर्मित संगठनक संग भऽ अपन गति आ त्वरासँ संगठनकेँ दिशा देब थिक। रामलोचन ठाकुरक जेँ कि मैथिली भाषा आ साहित्य लेल सदा समर्पित रहलनि अछि, पौराणिककेँ वर्तमानमे साकार करबाक लेल समर्पित रहलनि अछि तेँ हुनका द्वारा रचित मौलिक साहित्यकेँ भाषा आंदोलन आ ताहि लेल उत्खनित-अविष्कृत विचार संग जोड़ि देखल जाएब आवश्यक अछि। हमरा एखन अपन कहियोक पढ़ल मोन पड़ि आएल अछि जे पानिक

अभावमे जखन सिंधुघाटी सभ्यता नष्ट भेल जा रहल रहै तखन सिंधु देवी एकटा प्रतिभाशाली तथा पराक्रमी युवकक सपनामे अवतरित भऽ जलक अविरल प्रवाह बनौने रहबाक लेल युक्तिक ज्ञान करबौने रहथिन। हमरा ईहो स्मरण भऽ आएल अछि जे मगध सम्राट अशोकसँ पराजित भऽ कलिंग कोना तीन सए बरखक उपरांत खाड़बेल (तात्कालीन कलिंग राजा) केर सपनामे देवी बनि प्रकट भए मुक्ति लेल प्रार्थना केने रहथि। आ ई स्मरण तँ भऽ रहल अछि जे लामा किछु मंत्र बिदबिदाइत छथि तकर आर जतेक आ जे किछु होइत हुअए मुदा एकटा आर अर्थ 'तिब्बत' होइतहिं टा अछि। तहिना रामलोचनजीक जतेक पत्र हमरा अबैत छल ताहिमे हमर नाम-गाम-जिलाक निच्चामे लिखल रहैत छल 'मिथिला'। मिथिलासँ बाहर रहैत रामलोचनजीक सपनामे 'मिथिला' साकार होएबाक अपन संपूर्ण कमनीय इच्छाक संग रहलनि।

रामलोचन ठाकुर मिथिलासँ बाहर रहैत अहर्निश मिथिला लेल चिंतित मिथिलाकेँ विकसित रूपमे देखबाक लेल जें कि आंदोलनक समग रहलाह, जन समुदायक संगे रहलाह तें अपन रचनाक भाषाकेँ अभिजात्य वर्गक भाषासँ यथासंभव दूर जनभाषक निकट रखलनि जे नहि सर्वजन-बोधगम्य छल अपितु भाषा द्वारा विचारकेँ सर्वग्राह्य बनएबाक लेल तथा जन समुदाय लेल, जनसमुदाय द्वारा अपेक्षित उत्तेजानक लहरि सेहो उत्पन्न करएमे सफल भेल अछि। संगहि मिथिलाक उद्धार लेल मिथिलाक निजी भाषा मैथिलीक उद्धार करबाक लेल भाषिक चिन्ता तँ हुनकर सर्वोपरि रहबे केलनि सभ दिन। उपर्युक्त चिंतासँ चिंतित अनेक मौलिक तथा अनूदित पुस्तकक रचयिता रामलोचन जीक १९९६ ई. मे प्रकाशित ४८ शीर्षकमे विभक्त कविता सभक संग्रह थिक "अपूर्वा" जकरा क्रांति-गीत कहब बेसी उपयुक्त हएत, एहि लेल जे एहि संग्रहक कविता सभमे विलक्षण गेयधर्मी गुण अछि जे कविक विशिष्ट छंद-तानकेँ उजागर करैत अछि, तथा जाहि कविता सभक पाँति सभकेँ नाराक रूपमे आंदोलन लेल मंचसँ कहल जा सकैत अछि एवं देबालपर

लिखल-साटल जा सकैत अछि।
रामलोचन ठाकुर मिथिलाक गरिमाक कवि रहलाह अछि। हुनकर कविता सभमे प्राचीन मिथिलाक ज्ञान-वैभव अनेक ठाम अनेक आवृति बनि आएल अछि, जाहि वैशिष्ट्यसँ परिचय करएब आजुक लोककेँ अनिवार्य बुझैत रहलाह अछि। ओ बुझैत रहलाह अछि जे गरिमामयी अतीत जे रहल अछि, अपन तकरा स्मरण दिअओलासँ वर्तमानमे एहिठामक निवासीमे ओहि मूल्यक प्रति जागरुक बनाओल जाए सकैत अछि जे कहियो छल से बूझब आवश्यक अछि-

"लक्ष्मी के बास जतए खेत-खरिहान
घर-घरमे सरस्वती गबै छथि साम।
स्रष्टा जत पूजक आ पूजित हो सृष्टि
माटिक शिव बना पुनि प्रतिष्ठाक प्राण।"

रामलोचन टाकुर मिथिलाक गरिमा आ ज्ञान-वैभव तथा स्वर्णिम अतीतक करैत आजुक समयमे मिथिलाकवासीक ओहि विवशताक अथवा ओहि निर्धनताक चर्च सेहो करैत छथि अपन कविता द्वारा जे हम सभ साग-पात खाए जिबैत छी की आ केहन अयाची छी?
रामलोचन ठाकुर मिथिलाक समुचित विकास लेल मैथिली भाषाक विकास बड़ आवश्यक मानैत छथि। एहि लेल जे भाषाक अभिव्यक्तिक एहन माध्यम थिक जाहि द्वारा जनसमान्यक नहि मात्र सुख-दुख टा बूझल जाए सकैत अछि अपितु जनसमान्यक सापेक्ष जीवन विकासमे ओकर इच्छा-आकांक्षाकेँ सेहो सरि भए बूझल जाए सकैत अछि। मुदा मिथिलामे पसरल तँ अछि हिंदी जे हमर शत्रु नहयो रहैत मित्र कखनहुँ नहि थिक। तें कवि आह्वान करैत छथि जे

जनगणनामे मैथिली लिखबाक-
"काल्हि जनगणना थिक गामे पर रहब
ठीक-ठीक लिखाएब कने जेना-जेना कहब
माइक जे भाषा से मैथिली लिखाएब
देखब हिंदी ने लिखए मुद्दैया"

उपर्युक्त काव्य-पंक्ति मिथिलामे भाषाक प्रति भेल अपसांस्कृतिक दृष्टांत उजागर करैत हिंदीक विरोधमे कविक व्यक्त विचार थिक।
रामलोचन ठाकुर अपसांस्कृतिकरणक बिहाड़िसँ मिथिलाकेँ बचएबाक लेल ने केवल निज भाषाकेँ बचएबाक लेल आह्वान करैत छथि अपन कविता द्वारा अपितु अपन परंपरासँ गाढ़ अनुराग देखबैत तकरा बचएबाक अनुरोध करैत छथि। मुदा एहि विलक्षण दृष्टिकेँ जतबेक प्रशंसा कएल जाए से थोड़ हएत। ओ परंपराकेँ बचएबाक जे अनुरोध कएलनि अछि से पाबनि-तिहार आ भक्ति-पूजा सन बुजुर्आ सौंदर्यबोधक पारंपरिक संस्कारक बचएबाक अनुरोध नहि, से थिक लोक-संस्कृतिकेँ बचएबाक लेल विकल अनुरोध। आ ताहि लेल मिथिलामे कहियो प्रचलित ओ खेल आ फकड़ा सभ थिक जे कहियो छल जकर आइ लोप भए रहल अछि। मुदा ताहि लोक-संस्कृतिक फर्मामे ओ समयकेँ जे देखओलनि अछि तकर मूलमे लोकधाराक लोकरसमे पागि अपन संदेश बिलहब थिक आ तकर बानगी देखल जाए सकैत अछि--'उट्ठी गोटी मोर पचास' शीर्षक कविता, 'आम छू अमरोरा छू' कविता, तथा 'फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर' कविता सभ थिक , जे सभ कविक अपन वैचारिक अनुरोधकेँ अपन राग-भासमे व्यक्त करबाक एक प्रकारक अनुरोध थिक।
रामलोचन टाकुर जाहि सकारात्मक निर्माणक योजनाक झलक संग मिथिलाक ओ रोग जे अपसांस्कृतिकरणक अछि तकर अपन कविता द्वारा विरोध कएलनि अछि ओतहि ओ अपन गौरवशाली परंपराकेँ बचएबाक लेल अनुरोध सेहो कएलनि अछि। आ हुनकर से सदिच्छा सर्वत्र हुनकर कविता

सभमे मुखरित भेल अछि। आ अपन ताहि विचारकेँ पुनर्जीवित रखबाक लेल अपन एहि करुण विनय संग मार्मिक अभिव्यक्ति देलनि अछि-

हम रही वा नर रही
याद हमर बाँचत
मओन सुन्न बाट जकाँ
बाट अहाँक ताकत

हमर विश्वास अछि जे रामलोचन ठाकुर सभ दिन रहताह, हुनकर कविता सभ दिन बाँचत। आ कवितामे अनुस्यूत हुनकर विचार मिथिलावासीकेँ सभ दिन दिशा प्रदान करैत रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रामभरोस कापडि भ्रमर-संपर्क-9854020889

देसिल बयनाक बहन्ने रामलोचन ठाकुर प्रसंग

ह्मरा मोन नहि अछि–रामलोचन ठाकुरसँ हमरा कहिया भेट भेल छल । तखन सभा समारोहमे निरन्तर कतेको ठाम भेटैत रहलहूँ अछि । आ से मात्र औपचारिक भेटमात्र । हुनका अनेरे बजैत रहबाक प्रायः आदतो ने छन्हि । नहि देखलियनि तेहन ।

हँ, तखन पत्र–पत्रिकाक माध्यमे काफी पहिनेसँ भेट रहल । हुनक लेखनमे व्यवस्था प्रतिक आक्रोशक हुनक लेखकीय स्वरुपकें जतेक प्रखर बनबैत छलन्हि, ततबे प्रभावकारी । आ हम से रुचिसँ पढी । एहि दुआरे नहि जे हमरा कोनो वाम–दहिन विचारधाराक प्रभाव गछडने रहे । एहि दुआरे जे खूलि कऽ अव्यवस्था आ शोषणके रखबाक हुनक साहस हमरा लग अनने छल ।

ई सम्वन्ध आर प्रगाढ भऽ गेल–कलकत्तासँ बहराइन त पत्र–पत्रिकाक माध्यमे । हम निरन्तर छपैत छलहुँ । दोसकोस भाई विनोद कुृमार झाक, देसिल वयना जनार्दनझाक सम्पादनमे छपैत आ एम्हर भाइ रामलोचन ठाकुरक सम्पादनमे छपैत 'मिथिला दर्शन'क साँग । 'मिथिला दर्शन'मे रचना

सभ छपिते छल, हमर एकटा स्तम्भ सेहो छपैत छल जे काफी समय प्रकाशित होइत रहल । कोनो खास रचनाक हेतु आग्रह, अथवा विशेष रुपें लिखल रचनाक प्रकाशनक विच सम्पादक वअस्था दुनूके निरन्तर जोडैत रहल छल ।

तकर अतिरिक्त भाइ रामलोचन ठाकुरक सँग हमर चेन्नईक भेटघाट संक्षिप्त मुदा सुखद अछि । हम, डा. रामावतार यादवक सँग ठाकुरजीक सँग विस्तृत गपसप आ फेर समुद्क किन्हेरमे सैर सपाटाक आनन्द, । ताहू क्रममे कतेको प्रसंगमे पोस्टमार्टम होइत रहल, हमरा सभक टोली आगा बढैत रहल ।

कम बाजब आ सटीक बाजब । लोक एकरा भले कडा, कठोर आ रसहीनताक आरोप लगाबे–लोक भाषामे एकरा ठाय–पटाका कहब कहल करैत अछि से ठाकुर जी कहैत अएलाह अछि ।

आब आबी बात करी देखिलवयनाक जे कलकत्तासँ १९८१ ई.मे बहार भेल छल । ई मासिक पत्र छल जे अखबारी साइजमे आठ पृष्ठक बहराइत छल । जँ कि ई मैथिली मुक्ति मोर्चाक मुखपत्र छल, तएँ एहिमे एकर संयोजक राम लोचन ठाकुर पृष्ट पृष्ट आ कही त पंक्ति पंक्तिमे बजैत छलाह । सम्पादक यद्यपि जनार्दन झा रहथि । मुदा देसिल बयनाक पृष्ट पर उभरैत विभिन्न नामी आ बेनामी रचना सभक चयन राम लोचन ठाकुरजीक सोचके अधीक सँ अधीक प्रतिनिधित्व करैत बुझाइक ।

तहिया हम जनकपुरधामसँ अर्चना द्वैमासिक रुपें निकालैत रही । जे तहिया डाक सुलभताक कारणे काफी ठाममे जाइक, कलकत्ता सेहो । दोसिल वयनामे तकर विज्ञापनो छपल करैक । हम प्रारंभेसँ देखिल वयनासँ जूडलहुं

। खूब लिखलहुँ आ खूब पढलहुँ । बरु कही त रामलागेचन ठाकुर जीक विचारसँ ताही पत्रिका माध्यमे अवगत भेल रही । ठायँ पटक्का बज बला मर्द मैथिल... ।

देसिलबयना हमरा निरन्तर अबैत छल । संग्रह अछियो । एखन जखन हुनकापर केन्द्रित लिखबाक हेतु विदेहसँ आग्रह आएल तं खोजल । एक–दूटा भेटल । आर खोजबाक हिम्मत नहि भेल । आधादर्जन अनबारीमे तहिआएल पुस्तकके कतौ पातर काया अदृश्य भऽ गेल छल । तखन विदेहक सहयोेगे आर किछु प्रति प्राप्त कएल । जकरा माध्यमे किछु लिखबाक आधार तैयार भेल अछि ।

से हम देसिल वयनाक वर्ष २, अंक ८ सँ किछु प्रसंग राख चाहब । ओ बाल गीत बरोबरि लिखैत छलाह । हम सेहो कहियो काल बालगित लिखैत छलहुँ । से हुनक बालगीत नीक लगैत छल । बच्चाके हुनके धुन आ शैलीमे अपन भाषा–साहित्यपर ध्यान केन्द्रित करबालेल कयल गेल आग्रह एत्त देखल जाए–

“झिझिर कोना झिझिर कोना, कोन कोना जाउ

मिथिलाके आंगनमे सभतरि खेलाउ

उत्तर हिमालय आ दक्षिणमे गंगा छइ

कोशी आ गंडकमे हेलु नहाउ !

उत्तर आ दक्षिणके भेद बिसराउ

मिथिलाके सन्तति छी मैथिल कहाउ

कन्हासँ कान्ह जोडि जाति–पाति अडि तोडि

मिथिलाके माटि उठा माथसँ लगाउ ।।”

ताही अंकमे एकटा कविता मीताक नाम छपल छन्हि । देखू–

“मानै छी मीत

सत्य सरिपहुँ आरोप तोहर

बीति गेल हमर समय

लिखि नहि सकैछी आब

व्यर्थ करैछी प्रलाप

संकुचित विचार बोध गहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम बाध्य छी

जरबय त चाहैछी आशक आलोक नव

निराशाक बिडरो

मिझओने चलि जाइत अछि

लिखबाले बैसैछी

कथा आजादीके

व्यथा बेरबादीके

लिखाएल चलि जाइत अछि... ।”

आजादीक सुखानुभूतिक पृष्टभूमिमे उगि आएल अव्यवस्था, अराजकताक प्रकोपेव्यथित कबि अपन लेखनीके अनायास अपन चिंतनक संवाहक बनएबा पर विवश भऽ जाइत छथि । आ हमरा जनिते जनवादी कवि रामलोचन ठाकुरक इएह सत्य थिकै, इएह अभिष्ट भऽ गेलै ।

‘कहलोचन कविराय’ स्तम्भमे रामलोचन ठाकुरक छव पतिया निरन्तर छपल करैन । आ ताहुमे ओ मैथिल, मिथिला आ मैथिली पर विचार, उद्बोधन रखबासँ पाछा नहि रहथि । आइयो हुनक एहि विचारमे कोनो परिवर्तन भेल छन्हि से बात नहि । तखन समय आ अवस्था ज्ञाने गति तेज आ मद्धिम होएब दोसर बात ।

तेहने एक ठाम ओ लिखैत छथि–

“बारिक पटुआ तीत आ, हो बाजारक मीठ

कुहरि रहल छै मैथिली, डनिया टेरय गीत

डेनिया रेरय गीत, नचैए पश्चिम गामक

चमक–दमकसँ मोहि, पुत सभ मिथिलाधामक

क्ह लोचन कविराय, कलंकक लेपल कारिख

मैथिल युवजन मानि, मैथिली पटुआ बारिक ।।”

(देसिल बयना, वर्ष २, अंक ५ फरबरी, १९८२)

बस्तवमे देसिल बयना पत्रिकाक लेखनक छांट देखलापर ई स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओहिमहक बहुतो आलेख÷टिप्पणी विभिन्न नामसँ ठाकुरजी स्वयं लिखैत छलाह । वाणीमे ओज, जखन नुकायल नामोक आवरणमे पत्रिकाके पन्ना पर उतरैत छै तं बेछप बेसी काल नहि रहि पबैत अछि । ओएह प्रखरता, सुपत–कुपत कहबाक हिम्मत आ लोक व्यवहारसँ लोहछल मन:स्थिति ।

से ओ प्रकारान्तरसँ स्वयं स्वीकार कयनहुँ छथि, तखन जखन देसिल बयना पंयिजकरणक कारणे देसकोस नामसँ बहरायल त तकर पहिल अंकमे सम्पादकीय लिखैत ठाकुरजी व्यथा व्यक्त करैत देसिलबयनाके साहित्य विशेषांक (अक्टुबर १९८२) क बाद बन्न हयबाक मूल कारण लेखकीय असहयोग कहने छथि ।

‘देसिल बयना’ एक वर्ष चलल । एहि एक वर्षक प्रत्येक अंकमे रामलोचन ठाकुरक उपस्थिति विभिन्न रुपमे देखबामे अबैत अछि । कतेको स्तम्भ सभ देखि पडैछ– सभक भाषा–बोलीमे ठाकुरजीक कलमक चमत्कार देखि पडैछ । मैथिली भाषाक उत्थानक हेतु गठित भेल मैथिली मुक्ति मोर्चाक क्रान्तिकारी उद्बोधन एहि पत्रिकाक स्वर सन्धान रहलैक आ तकर संरक्षक प्रेरक रहलाह रामलोचन ठाकुरजी । हमहँु एहि पत्रिकासँ जूडल रहलहुँ । मुदा कथा, कविता धरि मात्र नहि रहि पौलहुँ । देसिल वयनाक वर्ष १, अकंक २ नवम्वर १९८२ ई. क अंकमे तेसर पृष्टपर हमर एकटा लेख छपल–‘मैथिली आन्दोलन–मैथिलक आन्दोलन बनब पडत ’ । आइ जखन उनचालिस वर्ष पूर्वक अपन एहि लेखके पढैत छी त लगैए इहो ठाकुरेजीक रँगमे रंगल लेख छल, जे तहिया माने चारि दशक पूर्व आनायास लिखबापर बाध्य भेल रही । आ ताहि लेखक जे भाव अछि ओ आइयो मैथिली भाषा, साहित्यक्षेत्रमे ओहिना देखल जाइछ, कोनो परिवर्तन नहि, बरु संकुचन बेसी । आजुक भाषा

आन्दोलनक ओ पृष्टभूमि जकाँ लगैत अछि । भाषा आन्दोलनक चर्च जखन देसिल वयनाक पृष्ट पर देखैत छी त एखनो ओकर औचित्य बूझि पडैत अछि – आव ई स्पष्ट भऽ गेल अछि जे मैथिलक दूटा वर्ग अछि–समर्पित सेवीक आ सौदागरक । दुनूक अलग अलग उदेश्य छैक । मैथिलीके अपने बपौती बुझबला सौदागर वर्ग सदिखन मधुर झडबाक ताकमे बकध्यान लगौने रहैत अछि त दोसर दिस समर्पित लोक दिन राति रचनात्मक काजमे व्यस्त । ... सौदागर वर्ग समस्त सुख–सुविधा हथिया अपना स्वार्थ सिद्ध कऽ रहल अछि ।”

(बैद्यनाथ विमल, दैखिल वयना, वर्ष १, अंक ३, दिसम्वर १९८१)

‘देसिल बयना’क पृष्टपर अपन वास्तविक नामसँ उभरैत रामलोचन ठाकुर कखनो काल अत्यन्त कठोर भऽ उठैत छथि । अपन गामसँ, अपन सपनाक वृन्दाबनसँ जखन अर्थ आर्जन व्यथे शहर पकडबापर बाध्य होइत छथि त सामाचकेवा खेलाइत बहिनक भाइक अनुपस्थिति बोधसँ होइत पीडाक अनुभूतिके महशूस करितो ग्राम्य राजनीति प्रति अपना मोनमे बैसल अवसादके एना कऽ व्यक्त करैत छथि–

“बहिन दाई !

हम जानैत छी जे अहाँ एहु बेर

बनओने हएब शामा–चकेवा

तकने हएब हमर बाट

लगलापर आगि विरदाबनमे

आ नहि पाबि हमरा

भेल हएब उदास

बहल हएत आँखिसँ दहो–बहो नोर ।

किन्तु बहिन दाई !

अहाँ मानी कि नहि मानी

थिक धरि ई सत्य

जे कुनो दावानलके नहि मिझाओल जा सकैछ

सोबर्ना लोटासँ

आ, जेना अहाँ लिखने छी–

ठीके हम बड बदलि गेलौहें

हम बुझैछी÷जे विरदाबन÷ओ बिरदावन नहि रहि गेल–ए

आइ, एकटा नहि

हजारक हजाार चुगिला जनमि गेलए । आ

इएह बिरदाबन थिक ओकरा सभक आवास... ।”

एकर पुरान गाछ सभक धोधरिमे एकसँ एक अबोध विषधर करैए निवास

आइ

अइठामक बसातो अइ विषयुक्त

सांसो लेबाक अनुपयुक्त

तै

हमरा विचारे । एकरा जरिए गेनाइ थिक नीक

मिझेबाक प्रयास सर्वथा अनुचित...।”

(देसिलवयना वर्ष १ अकं २, नवम्वर १९८१)

‘देसिल वयना’सँ देसकोस धरिक यात्रापर फूटसँ कहियो लिखब । एखन एहि पत्रिकामे रामलोचन ठाकुरक व्यक्तित्वके खोजबाक प्रयास कएल अछि । एहिमे सावधानी इएह जे अनेको कठोर आ प्रतिरोधी विचारक प्रस्तुति सभ आएल अछि, जाहिमे हिनक नाम नहि छन्हि, तएँ हम उल्लेख नहि कएल अछि । ओहुना ओ व्यवस्था प्रति कठोर, अंवाछनीय गतिविधि प्रति अनुदार रह बला लोक छथि, आ ई कोनो दुर्गुण नहि, विरले भेटबला गुण होइछ । जे हिनकामे छन्हि ।

से एहि तरहे अपन सत्य तथ्यसँ लोकके तरंगित कैनिहार कवि व्यक्तित्व कखन सरस बनि प्रकृतिके सौन्दर्यमे अपनाके समर्पित कऽ दैत छथि देखी एकटा बानगी, हिनक चारिगोट मिनी कवितामे –

”

१. सूर्योदय

– माइक आंचर तरसं

बहार क क मुह अपन

बिहुसि देलक

शिशु अबोध !

२ राति

–दुरगमनिया कनियां बनि

बन्न साँझ महफामे

बेटी प्रत्येक दिन

चलि जाइछ

देने विछोह, व्यथा

पसारि मन पिरथी पर

कारी धन अन्धकार !

३ चन्द्रमा

–परदेशी पाहुन केर

जोहैत होथि बाट जेना

खिडकी लग ठाढि

कुनू राधिका !

४ बखान्त

इहो वर्ष

ओहिना बीति गेल

बुढ अथबल सूर्य

बस गैरेजक

पछुआरमे डुबि गेल !

(देसिल वयना, वर्ष २, अकं ४ जनवरी १९८२)

एहि तरहे देसिल वयना आ देसकोस पत्रिकाक माध्यमसँ अपन युवा आ उर्जावान व्यक्तित्वक छाप विभिन्न रचनामे छोडने छथि–रामलोचन ठाकुर । दोसर तरहें कही त एहि दुनू पत्रिकाक पृष्टपर राम लोचन ठाकुरक प्रतिबिम्ब झलकैत अछि ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'-संपर्क-8789616115

अपूर्वा

मैथिलीक पद्य साहित्यमे प्रकाशित पोथी सबहक सूचीमे एकटा पवित्र नाम अछि 'अपूर्वा' जे चर्चित साहित्यकार-सम्पादक श्री राम लोचन ठाकुर जीक 1970सँ 1995 धरिक रचनाक एक संकलन अछि | 'अपूर्वा'क प्रकाशन 'मिथिला समाद',कलकत्ता द्वारा 23 नवम्बर 1996 क' भेल अछि | 'अपूर्वा' एकटा वहुमुखी प्रतिभाक कवि-गीतकार-चिन्तककेँ पुनः लोकक सोझां अनलक | अइसँ पहिने हिनक सात टा पोथी आबि चुकल छलनि | उनासी पृष्ठक एहि पोथीमे उन्हत्तरि पृष्ठमे पद्य-रचना अछि जकरा निम्नलिखित भागमे बाँटल जा सकैत अछि :

(1)दोहा

(2)छओ पाँतिक छन्दमय कविता

(3)आठ पाँतिक छन्दमय कविता

(4)गीत

रचनाक विषयकें निम्निखित वर्गमे राखल जा सकैत अछि :

(1) मिथिला,मैथिली,मैथिल, मैथिलीक साहित्यकार, मैथिलीक समस्या |

(2) देश, देशक समस्या,देशक व्यवस्था,देशक जनप्रतिनिधि |

दोहाकसँख्या 110 अछि | 25 टा दोहामे गामसँ दिल्ली धरिक बात, राजनीति आ सामाजिक सरोकारक बात अछि | किछु दोहा / किछु पाँति देखल जाए :

'चालनि दूसय सूपके जकरा भूर हजार

पोथी के नहि मान अछि थोथी चलय बजार'

'कान छैक पर सोन नहि सोन छैक नहि कान

वाणिक पूत झखैत छथि उल्लू लक्ष्मीवान'

'भाइ-भाइमे शत्रुता पुजा रहल आइ सार'

'विद्यापति केर पर्वमे विद्यापति टा बाद

सभ अपैत पति मंचपर व्यर्थक वाद विवाद'

'राजनीतिसँ नीतिकें कहियो भेल न मेल

विजयश्री तें पार्थ लए कर्ण पराजित भेल'

कोनो साहित्यकारकें एकटा दोहामे व्यक्त करब कठिन काज अछि, तथापि ओहि समय तक चर्चित 85 टा साहित्यकारकें एक-एक दोहामे व्यक्त करबाक प्रयास कएल गेल अछि जाहिमे कतहु-कतहु हास्य-विनोद आ कतहु व्यंग्य सेहो अछि | साहित्यकार लोकनिक एहि सूचीमे महामहोपाध्याय

मुरलीधर मिश्र,भाषाविद ग्रियर्सन, नगेन्द्रनाथ गुप्त, जीवन झासँ ल' क' प्रदीप, वियोगी, रमेश, चन्द्रेश, विभूति आनंद,अरविन्द ठाकुर,नारायणजी, केदार कानन, सुस्मिता पाठक धरि छथि | दोहामे साहित्यकारक कोनो पोथी अथवा हुनका सम्बन्धमे कोनो घटनाक संकेत मात्र अछि | बानगीक रूपमे किछु दोहा प्रस्तुत अछि :

'नाचू हे पृथ्वी अहाँ जीवकान्त केर वस्तु

धार मुक्त नहि होइत अछि नहि कतहु नहि अस्तु |'

एहि दोहामे 'नाचू हे पृथ्वी' आ 'धार नहि होइछ मुक्त' जीवकान्तजीक कविता संग्रह, 'वस्तु' कथा संग्रह आ 'नहि कतहु नहि' उपन्यासक नाम अछि |

'हमरा लग रहबै अहाँ पुछने फिरथि प्रभास

कथा प्रभासक की कही भेला हतो-प्रत्याश |'

प्रभास कुमार चौधरी पर एहि दोहामे हुनक चर्चित उपन्यास 'हमरा लग रहब'क चर्च अछि |

'राजमोहनक मोहमे आरंभक अछि अन्त

गलतीनामा जपै छथि कथा जगत के सन्त |'

एहि दोहामे 'आरम्भ' राजमोहनजी द्वारासँपादित पत्रिकाक नाम अछि आ हुनक आलोचनात्मक निबन्धक एक पोथीक नाम अछि 'गल्तीनामा' |

'छोडल जे आनन्दकेँ जोड़ल भारद्वाज

तोड़-जोड़मे अनवरत मोहन भारद्वाज |'

मोहन भारद्वाजक मूल नाम छनि आनन्द मोहन झा, यैह एहि दोहामे कहल गेल अछि |

‘बुद्धिनाथ मिश्रक सकल रचना अर्थ प्रधान

हिन्दीमे तें गबै छथि सोहर आ समदाउन |’

सभकें बुझल अछि जे मिश्रजी हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे गीत रचना करैत छथि |

साहित्यकार रमेश आ महेन्द्र मलंगियाक लेल लिखल दोहा देखू :

‘सँच मंच भ’ मंच तजि लेखन करथि रमेश

गीत-गजल-कविता-कथा नित नूतन सन्देश’

‘नसबन्दी के डरसँ तेजि मलंगिया गाम

बारहमासा गबै छथि बैसल धनुषा धाम’

‘ओकरा आंगनक बारहमासा’ नाटककार महेन्द्र मलंगिया जीक चर्चित कृति अछि |

कतहु-कतहु बहुत कंजूसी कएल गेल अछि, एकर उदाहरण अछि ई दोहा :

‘लिली रे उषा किरण शान्ति सुमन नहि थोड़

नीता पुनि शेफालिका पसरल नवल इजोर |’

एतय चारिटा साहित्यकारकें एक दोहामे व्यक्त कएल गेल अछि | निम्नलिखित साहित्यकारकें छओ-छओ पाँतिक छन्दमे व्यक्त कएल गेल

अछि :ज्योतिरीश्वर, महाकवि डाक,विद्यापति,चन्दा झा, लाल दास, कवि शेखर, सीताराम झा,भोला लाल दास,सुमन जी,मधुप जी, किरण जी, यात्री जी,मणिपद्म जी, हरि मोहन बाबू, आरसी प्रसाद सिंह,राघवाचार्य,ललित,किसुन आ राजकमल |

दोहाक तुलनामे छओ पाँतिक कविता सभ द्वारा सम्बन्धित साहित्यकारकें बेशी नीक जकाँ प्रस्तुत कएल जा सकल अछि | बानगीक रूपमे प्रस्तुत अछि हरिमोहन बाबू पर ई कविता :

‘हरिमोहन हरि लेल मन हास्य-व्यंग केसँग

कन्यादान द्विरागमन खट्टर कका तरंग

खट्टर कका तरंग रंगशालाक रंग मे

पढुआ अपढ़ जुआन बूढ़ सभ सम दर्पण मे

कह लोचन कविराय युग पुरुष युग मनमोहन

हास्य-व्यंग्य सम्राट अमर स्रष्टा हरिमोहन’

विशिष्ट छन्दमे लीखल एहि तरहक रचना सबहक पांचम पाँतिमे ‘कह लोचन कविराय’ नीक लगैत अछि | कवि मिथिलाकसँस्कृतिक अनमोल धनक स्मरण करैत वर्तमान स्थितिपर दुख प्रकट करैत कहैत छथि :

‘जइसँ छल विख्यात किछु नै मिथिलामे

वसुधा एव कुटुम्ब घोषणा भेल जतय

भाइ-भाइ दिन-राति लड़ैए मिथिलामे

सुग्गो शास्त्रक गप्प करै छल के मानत

लाठी-बम-बन्दूक चलैए मिथिलामे

कुल देवी बनि पुजा रहल अछि सुपनेखा

मैथिलीक कौचर्य होइत अछि मिथिलामे’

मिथिलाक महिमाक वर्णन करैत एकठाम कवि कहैत छथि :

‘एकर सिया धिया के बल पर

राम काल भगवान |’

दोसर ठाम देश-दशामे मिथिलाक वर्तमान स्थिति पर दुखी होइत कहैत छथि:

‘नढ़िया–कुकुर तीन कोटि छइ

सिंहक नाम बिला गेलै

ठोहि पारि कै कनइ मैथिली

की छलै आ की भेलै’

मिथिला-मैथिलीक लेल कर्तव्यक बोध करबैत कहैत छथि :

‘हम नव मिथिला निर्माण करब’

एहि लेल वैचारिक क्रान्तिक बात करैत कहैत छथि :

‘क्रान्तिक आह्वान थिक

शान्तिक सम्मान हेतु’

ई संकलन ओहि समयक थिक जखन मैथिलीकें संविधानमे स्थान नहि भेटल छलै आ मिथिला-क्षेत्रमे एहि बात लेल अपन नेता-स्थानीय नेता सभपर आंगुर उठाओल जाइत छल | लोकक खीझकें स्वर देल गेल अछि ‘किछु लोक’ शीर्षक रचनामे :

‘किछु लोक मैथिलीकें धन्धा बना लेने अछि

चन्दा उगाहि पालि रहल पेट किछु लोक

बजारमे निलाम करै माइक जे लाज

तकरे विभूति मानि रहल पूजि रहल लोक

वर्खोसँ ठकि रहल जे सांसद, हमर विधायक

तकरेपर फूल माला बरिसा रहल-ए लोक’

कविकें ओहेन पढ़ल-लिखल मैथिल लोक सबसँ दुःख होइत छनि जे मैथिलीक शब्द सभकें बिसरल जा रहल छथि | देखल जा रहल अछि जे ‘जलखै’ शब्दक स्थानपर लोक ‘नाश्ता’ शब्दक उपयोग क’ रहल छथि | अहिना और शब्द सभ अछि जकर उपयोग कम भ’ रहल अछि | एहिपर ‘छुबुध लगैए’ रचनामे कहल गेल अछि :

‘पढुआ लिखुआक एहेन अवस्था की पुछै छी

सोचि भविष्य मैथिलक सरिपहुं छुबुध लगैए’

ई काव्य-संकलन देशमे ओहि समयक जे सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक

स्थिति रहै, तकर गवाह अछि | देशमे गरीबी, महगी,बेरोजगारी छल,मंडल आयोगक क्रियान्वयनसँ समाजमे उथल -पुथल छल |'चित्र-विचित्र' शीर्षकसँ एहि सभ विषयपर छओ-छओ पाँतिक चौदहटा रचना अछि|

महगीपर एहि छन्दमे लिखल एकटा रचना देखू :

'जनताले' ई देल अछि नव बर्खक उपहार

कोयला चाउर गहूमके दाम बढ़ा सरकार

दाम बढ़ा सरकार बन्द केलक कत गाड़ी

विदा नीति के तहत बन्द उद्यम सरकारी

कह लोचन कविराय देश के भाग्य विधाता

की की खेल देखौत जीत जौं देखत जनता'

अही छन्दमे देशमे लोकतन्त्रक स्थितिपर कहल गेल एक कविताक दू पांती देखू :

'कह लोचन कविराय राज ई लाठी तन्त्रक

लल्लू पप्पू चला रहल गाड़ी गणतंत्रक'

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद जतेक प्रगतिकेर आशा लोक करैत छल,से नहि भ' सकल छल|

'चरैवेति' शीर्षक रचना कहैत अछि :

'फूसि सभ प्रगति कथा, फुसियाही ई विकास

अन्न-वस्त्र जुटा पाएब, एखनो त बांकी अछि'

सामान्य जनक कष्टक लेल देशक नेतासभकें दोखी मानैत 'नेता आ जनता' शीर्षकसँ कहल गेल अछि :

'नेता लोकनिक नजरि विदेशी नोटपर

जनताक आँखि नचैए रोटी-भात लए'

विकासक स्थितिपर 'के हिसाब देत' शीर्षक रचनामे कहल गेल अछि :

'दसमहला-बिसमहला बनय रोज सत्य बात

खोपड़ि कतेक रोज खसय के हिसाब देत'

'नेता कहैछ देश उन्नति के शिखर चढ़ल

अवनति ककर कतेक भेल के हिसाब देत'

लोक नेता चुनैए, आशा करैए जे हमर आवाजसँसदमे उठौताह,मुदा जौं नेतासँसदमे लोकक व्यथाकें व्यक्त नहि करताह, तं कविक शब्द बाजत,से कहल गेल अछि :

'नांगरि दबा रहै छथि दुबकल जेसँसदमे

सएह चुनावक बेर गाममे गरजि रहल अछि'

'उदार नीति' शीर्षकसँ व्यवस्थापर जे कहल गेल अछि, से देखू :

‘अरथी अर्थक आजादीकेर कान्ह उठौने

कीर्तनियां दल राम नामक’ सत्य चलल अछि

थपरी झलिबज्जा ढोलबज्जा पोन पिटैए

चिकड़ि गबैए भांट सूर्य दिस देश बढ़ल अछि’

जाहि समयक गवाह अछि ई संकलन ओहि समयमे देशमे राजनीतिमे जे दू टा धारा जोर पकड़ने छल, तकरा एना व्यक्त कएल गेल अछि :

‘मण्डल आर कमण्डल केर एहि राजनीतिमे

जनता भेल तबाह आ नेता मौज करैए

भाइ-भाइ केर जानी दुश्मन घात लगौने

घृणा द्वेष ज्वालामे गामक गाम जरैए’

बिहारक जे स्थिति ओहि समय छल तकर साक्ष्य अछि रचना ‘फेर पाटलिपुत्र’|

कविता कहैत अछि :

‘वसुधा एव कुटुम्ब सगर्व जतए घोषित छल

वर्गवाद के अगराहीमे आइ जरैत’छि

अत्याचारी शासकसँ मुक्तिक निमित्त तें

फेर पाटलिपुत्र कोनो चाणक्य तकैत’छि’

जाहि समयक ई संकलन अछि ,ओहिमे एहनो एकटा काल-खण्ड आएल छल, जे लोककें बौक बना देने छल आ तकर अभ्यास बहुत दिन लागल रहै| ’अद्भुत देश’ शीर्षकक अन्तर्गत ई पाँति देखू :

‘शब्द ब्रह्म थिक किन्तु अर्थपर अटकि जाइत अछि

आइ सत्यके सत्य कहब अपराध भेल अछि’

पोथीमे व्यवस्थापर आंगुर उठबैत पीड़ित वर्गक टीसकें ‘धनकटनीक गीत’ शीर्षक रचनामे व्यक्त कएल गेल अछि:

‘हम सभ कमाएब आ खाएत कियो आन

लगैए छगुन्ता ई छै केहेन विधान’

आ अधिकार लेलसँघर्षकसँकल्पक ध्वनि सेहो व्यक्त भेल अछि :

‘रोपने छी कटबै आ घर अपन भरबै

अन्नक अभावे ने आब हम मरबै’

‘चैत कबड्डी’,’हुक्का लोली,दीप जराउ’,’अटकन-मटकन’,’उठ रौ बौआ’, ’झिझिर कोना’,’करिया झुम्मरि’,’फेर कनुआइ छौ तोरे पर’,’आम छू अमरोरा छू’,’छै तकरे इतिहास’, ‘ताक धिना धिन’,’उट्ठी गोटी मोर पचास’,’मिथिलाक महिमा’,’मिथिलाक वसँत’,’देश महान छै’,’इतिहास युग नवीन के’,’हम मिथिलावासी’ आदि गीत मे मिथिलाक महानता, सम्पूर्ण देशक महानता,सँस्कृतिक विशेषता, आपसी स्नेह आ मेल-जोलक आवश्यकता,जन -जनक सुख आ समृद्धिक कामना आदि बातक उल्लेख बहुत सुन्दर आ सरल शब्द सबहक माध्यमसँ भेल अछि | ‘लेनिन’कैं बहुत

सम्मानपूर्वक अभिनन्दन कएल गेल अछि | एहि संकलनमे कयटा रचना एहेन अछि जे गजल जकाँ लगैत अछि, किन्तु गजल बनि नहि सकल अछि| किछु रचनामे पहिलुक शेरमे गजलक गुण अछियो त बादक पाँति सभमे तकर अभाव अछि | बानगीक लेल देखल जाए ई रचना :

‘किछु गीत एहन होइ छइ गाओल ने जाइ छइ

किछु चीज एहन होइ छइ पाओल ने जाइ छइ

टहकैत रहै छैक कोंढ़मे करेजमे

किछु घाव एहन होइ छइ देखल ने जाइ छइ’

काव्य-दृष्टिक विविधताक कारणे एहि संग्रहकें कोनो एक ‘वाद’मे नहि राखल जा सकैछ | ई संकलन मैथिली साहित्यमे उपलब्ध पद्य संकलन सबहक मध्य एकटा विशिष्ट स्थान पर रहबाक पर्याप्त योग्यता रखैत अछि |

हिनक रचना संसारमे गीत अछि, कविता अछि, कथा अछि, हास्य-व्यंग्य अछि, अनुवाद अछि, संकलन-संपादन अछि । चिन्तन लेल मिथिला अछि, मैथिली-आन्दोलन अछि, देश अछि, देशक राजनीतिमे नैतिक आन्दोलन अछि। 'माटि-पानिक गीत'क बाद हिनक एहि संग्रहमे हिनक गीत रचना सभ अछि। गीत सभमे हिनक चिन्तन, सुन्दर सरल, लोकप्रिय शब्द सभ,स्वच्छ आ स्वस्थ दृष्टि देखि कहल जा सकैछ जे 'लोचन'जी जौं गीते टा लिखितथि तँ मैथिली भाषाक गीत कारक प्रथम पांतिमे हिनक स्थान सुरक्षित रहितनि ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

संतोषी कुमार-संपर्क-7562878005

भाषा-संस्कृतिक आस्था आ नव-निर्माणक संकल्प

‘‘ईर्षा-द्वेष हटाबै छी
घृणा विभेद मेटाबै छी
बुद्धि विवेकक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी
करिया झुम्मरि खेलै छी।’’

मिथिला संस्कृति मे आस्था आ नव-निर्माणक संकल्पक समन्वय करैत कवि रामलोचन ठाकुरक पाँती मैथिल जन-मन लेल प्रेरणादायक अछि। मैथिली साहित्य जगतक कवि-निबंधकार (रामलोचन ठाकुर), कथाकार (अग्रदूत) आ व्यंग्यकार (कुमारेश काश्यप) मैथिल सामान्य लोक लेल ‘‘माटि पानिक गीत’’ आ गेय-काव्य ‘‘अपूर्वा’’ सन कविता-संग्रह लिखैत छथि। दोसर दिस ‘अग्निलेखन’ धर्मी बनि ‘‘इतिहासहंता’’, ‘‘देशक नाम छलै सोन चिड़ैया’’ आ ‘‘लाख प्रश्न अनुत्तरित” कविता-संग्रहक रचना करैत छथि, जाहि मे यथास्थितिक प्रति असहिष्णु, आक्रोशक तीक्ष्ण भावक अभिव्यक्ति, मार्क्सवादी चिंतन सँ सम्पृक्त, संघर्ष चेतनाक निर्माता आ स्व-निर्माणक प्रति

घोर आस्थावान, तैँ विध्वंस कैँ निर्माणक आवश्यकता मानैत छथि। हुनक मंतव्य अछि जे मैथिली आन्दोलन आ अफ्रीका वा फिलिस्तीनक मुक्ति आन्दोलन मे कोनो पार्थक्य नहि छैक। सभ ठामक जनता अपन भाषा-संस्कृति आ जातीय मुक्ति लेल एकरंग आकुल-व्याकुल आ संघर्षरत अछि। आ तैँ अफ्रीका हो वा फिलिस्तीन, पाकिस्तान वा मिथिला सभक कविताक कथ्य आ स्वर एक्के छैक। एहि पृष्ठभूमि मे अन्यान्य देशक/भाषाक कविक कविताक मैथिली अनुवाद ओ ‘‘प्रतिध्वनि’’ मे कएने छथि। सर्वहारा ओ शोषितक पक्ष मे अपन लेखनी कैँ प्रतिबद्ध रखैत छथि। सर्वहारा ओ शोषितक लेल तऽ विश्व-बंधुत्वक अवधारणा रखैत छथि, मुदा व्यवसायीक वैश्वीकरण अनुबंधक प्रतिरोध स्वरूप अपन कविता-संग्रह ‘‘लाख प्रश्न अनुत्तरितकैँ समर्पित करैत छथि।

ठाकुरजी मिथिला-मैथिली प्रेम लेल प्रतिबद्ध छथि, जे हुनक कविता मे स्मृति, परिचय, वर्णन वा कटाक्ष रूप मे प्रतिचित्रित भेल अछि। नव-निर्माण लेल ध्वंस कैँ आवश्यक माननिहार कवि, मिथिला मे पसरि गेल असंख्य कुत्सित प्रवृतिक लोक सँ अपवित्र भेल बिरदाबनक जड़नाइ उचित बुझैत छथि। एकरा सम्हारब व्यर्थ मानैत छथि। संगहि अपन श्रम सँ नव बिरदाबन (नव मिथिलाक) कल्पना करैत छथि, जाहि मे सभक आश पूर करबाक क्षमता हो –

‘‘हजारक हजार चुगिला जनमि गेल-ए आ
इएह बिरदाबन थिक ओकरा सभक स्थायी आवास
एकर पुरान गाछ सभक धोधरि मे
एक सँ एक विषधर करैयै निवास
...... एकरा जरिए गेनाइ थिक नीक
मिझेबाक प्रयास सर्वथा अनुचित
शक्तिक अपव्यय

जे करबाक थिक संचय
आगामी कालिक निमित्त
जखन कि हमरा लोकनि लगाएब
निश्चिते लगाएब/एगो नव बिरदाबन
पटाएब/कुनू डबरीक पानि सँ नइं
अपन घाम सँ/ आ फुलाएब
रंग-बिरंगक फूल/अपन आशाक अनुकूल
अपन कल्पना कें देब वास्तव रूप।''

अपन आशा-आकांक्षाक प्रतिपुर्ति करबा योग्य मिथिलाक कल्पना मे ओ युवकक भूमिका महती मानैत छथि। मैथिली युवा लेखनक संकलन सँ प्रकाशित पत्रिका ''अग्निपत्र''क सम्पादन कएने छलाह। मैथिली भाषा कैं संविधानक अष्टम अनुसूची मे संलग्न करबाक आन्दोलनक समय लिखल गेल हुनक पाँती कोना बिसरा सकैत अछि -

''संविधान बिनु मैथिलीक आ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब
हम मिथिलाक जुआन।''

हम श्री ठाकुरजी कैं ''मिथिला दर्शन'' पत्रिकाक सम्पादक रूप मे सम्पादकीय आलेख पढ़ैत चिन्हबाक-जनबाक प्रयास कएने छी। 'मिथिला दर्शन'क जिज्ञासु पाठकक रूप मे हुनक आलेख गंभीर चिंतनक हेतु अग्रसर करैत रहल। कोलकाता प्रवासक समय हुनका सँ पहिल व्यक्तिगत भेंट ''सम्पर्क'' मे भेल छल। ओतहि ओ अपन 'भिजिटिंग-कार्ड' देने छलाह जाहि पर हुनक परिचय मे कवि (poet) अंकित छल। पश्चात् हुनक कविता सभ पढ़बाक सुयोग भेल। सत्ते ओ नैसर्गिक कवि छथि जिनक शब्द आ काव्य अपना मे

सर्वहाराक दुःख प्रतिचित्रित करैत व्यवस्था सँ संघर्ष करैत अछि। काव्य ‘‘सर्वहारा टी स्टॉल’’क नाम सँ लिखाइत अछि। हुनका लेल साहित्यक सौंदर्य-बोध, असहाय-नचारक स्थितिक वर्णन-विश्लेषण मे अछि।

अपन नाट्य साहित्यक अध्ययन-अनुशीलनक क्रम मे कोलकाता मे मैथिली नाटक आ रंगमंच लेल कएल गेल कार्यक पर्यालोचन करैत छी, तऽ ओहि मे श्री ठाकुरजीक नाम श्रेष्ठ स्थान मे देखाइत अछि। कलकत्ता(आधुनिक कोलकाता) आरंभहि सँ मिथिला-मैथिली आन्दोलन लेल अग्रसर रहल अछि। आन्दोलनाकार लोकनि सामान्य मैथिल जन कैँ एकत्रित आ संगठित कऽ प्रारूप पर कार्य करैत छलाह। लोकक आमंत्रण आ संगठन लेल साहित्यक सशक्त विधा नाटक रहल अछि। नाट्य-मंच कैँ लोकरंजनक प्रमुख आ सहज-सुबोध साधन बूझि मैथिली आन्दोलन आहूत कएनिहार सभ मैथिली नाटकक प्रणयन कलकत्तामे प्रारंभ कएलनि, जाहि मे किछु प्रहसन आ अल्पावधिक नाटक मंचित भेल। पछाति हुनका सभक चिंतन-चेतना मे आभासित भेल, जे मैथिली आन्दोलन भाषा आन्दोलन थिक आ एकर सफलताक आधार प्राचीन साहित्यक भंडारे टा नहि, ओकर अविरल-अविच्छि परंपरा ओ समृद्ध समकालीन साहित्यक आगारो प्रयोजनीय अछि आ ई समृद्धि नाट्य विधाक लेल सेहो वांछित अछि। एही क्रम मे कलकत्तामे विभिन्न नाट्य संस्था सभक स्थापना भेल। एहि संस्था सभक प्रथमिकता छल मंचोपयोगी नाटक लिखाएब आ ओकर प्रदर्शन लेल मैथिलीभाषी कलाकारक जुटान करब। ठाकुरजी एहि दुनू कार्यक भार संवहन मे पछुएलाह नहि। अपन लेखकीय धर्मक निर्वहन करैत बहुभाषी प्रतिभाक धनीक ठाकुरजी बांगला सँ मैथिली मे नाटकक अनुवाद कएलनि। हुनक अनूदित नाटक मे बांगला रंगमंचक प्रसिद्ध लेखक-निर्देशक शैलेश गुह नियोगीक ‘‘फाँस’’ आ ‘‘रिहर्सल’’ आओर श्यामल तनु दासगुप्ताक ‘‘जादूगर’’ (बांगला - जादूकर) अछि, जे नाटक सभ प्रदर्शित-प्रकाशित भेल अछि। किरण मैत्रक ‘‘चारि-पहर’’ आ मनोज मित्रक ‘‘किशुनजी-विशुनजी’’ (बांगला - ‘केनाराम-बेचाराम’) हिनक

अनूदित नाटक अछि, जे प्रदर्शित भेल अछि, मुदा अप्रकाशित रहल अछि। पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशित हो वा अप्रकाशित, हिनक अनूदित नाटक सभ मैथिली साहित्यक आगार मे निधि रूप मे संचित भेल अछि।

कलकत्तामे मैथिली नाट्य मंचक आरंभिक काल मे कलाकारक आवश्यकता आ हिनक नाट्य अभिरुचि, एहि सुयोग सँ कतेको नाटकक प्रथम रात्रिक मंचन मे पात्रक अभिनय करैत रहलाह। उदय नारायण सिंह ‘‘नचिकेता’’ जीक नाटकक पात्र ‘शुभंकर’ (एक छल राजा), ‘अनिरुद्ध’ (नाटकक लेल) आ ‘नवल’ (नायकक नाम जीवन)क भूमिका मे ठाकुरजीक अभिनय अविस्मरणीय रहल अछि। बिना प्रशिक्षण प्रप्त रंगकर्मी रहितहुँ, हिनका द्वारा कएल गेल अभिनय आ निर्देशन लेल मैथिली रंगमंचक प्रसिद्ध लेखक-निर्देशक कुणाल हिनका मैथिली रंगमंचक उत्तम अभिनेता-निर्देशक मानैत छथि। हिनका निर्देशन मे मैथिली नाटक प्रदर्शित होएबाक सूचना तऽ अछि, मुदा तकर मान्य आ लिखित साक्ष्य नहि रहबाक कारणे ओकर चर्च नहि कऽ रहल छी।

नाटक केँ दृश्य-काव्य मानल गेल अछि, मुदा नाटक केँ विषय-वस्तु बना काव्य लिखब फराक अछि। ओ नाटक केँ काव्यक विषय बना ‘‘नाटक, निर्देशक आ एकटा कविता’’ शीर्षक सँ कविता लिखलनि, जाहि मे नाटकक नाम पर प्रस्तुत भऽ रहल उत्क्षृंखलता आ अश्लीलताक प्रतिवाद करैत छथि। नाटकक सफलताक आधार दर्शकक उपस्थिति वा ओकर थोपड़ीये टा नहि, अपितु कथ्य-कथानकक गांभीर्यक प्रमुखता मानैत छथि। मैथिली नाट्य मंच केँ समर्पित पत्रिका ‘‘रंगमंच’’ जे कलकत्तासँ प्रकाशित भेल छल, ओकर सम्पादक सेहो श्री रामलोचन ठाकुर छलाह। कतिपय कारण सँ एहि पत्रिकाक एक्कहि टा अंक प्रकाशित भेल। नाट्य संबंधी हिनक आलेख कलकत्ताक मैथिली नाट्यकार’’, ‘‘कलकत्तामैथिली रंगमंच आ श्रीकांत मंडल’’, ‘‘कलकत्तामैथिली रंगमंचक महिला कलाकार’’, ‘‘नाट्य-मंचक विकास मे

पत्रिकाक योगदान'', ''मिथिला नाटक आ मुंशी रघुनन्दन दास'', ''समकालीन मैथिली रंगमंचक विकास मे कलकत्ताक योगदान'' आदि पठनीय अछि, जे विभि पत्रिका मे प्रकाशित भेल छल। एहि समस्त आलेखक संकलित रूप मे प्रकाशन संस्मरण ''आँखि मुनने, आँखि खोलने'' आ ''स्मृतिक धोखरल रंग'' मे प्रकाशित अछि।

मैथिली आन्दोलनक 'अग्निलेखन' धर्मी कवि रामलोचन ठाकुरजी अपन लेखन आ रचनाक माध्यम सँ युवा वर्ग कैँ सम्बोधित करैत रहलाह, मुदा आधुनिक युवाक इच्छा-आकांक्षा आ विमुख होइत मिथिला-मैथिली सँ विचार कैँ देखि, आहत होइत लिखैत छथि –

''दूरक ढ़ोल सोहावन, कहबी छैक पुरान
किन्तु मात्र कहबीए नहि, सुनियो रहलहुँ कान
सुनियो रहलहुँ कान, आँखि सँ देखि रहल छी
मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब की
कह लोचन कविराय, विवेक एहन नवतूरक
निश्चित पतनक मूल, प्रगति बात त दूरक।।''

कियो कवि रूप मे जानए वा कथाकार 'अग्रदूत' रूप मे। कियो ''बेताल-कथा'' पढ़ि 'कुमारेश काश्यप' कैँ जानए वा ''पद्मा नदीक माझी'' पढ़ि अनुवादक कैँ। कियो सम्पादक बूझए वा रंगमंचक कलाकार। रामलोचनजी सभ ठाम सशक्त हस्ताक्षर बनि उपस्थित छथि। हुनक अस्वस्थताक सूचना अछि। हुनक शीघ्र स्वस्थ्यक कामना करैत छी। मैथिली आन्दोलनी रूप मे ओ संदेश दैत छथि, जे आत्मसात् करबा योग्य अछि –

''निज भू-भाषा हित मरय
मरय ने, अमर बनैत अछि

तकरे गाथा विश्व ई
गाओत, सदा गबैत अछि।’’

संदर्भ-संकेत

1 करिया झुम्मरि, अपूर्वा, पृ॰41
2 आजुक कविता (भूमिका), प्रतिध्वनि, पृ॰10
3 बहिन दाइक नाम एगो चिट्ठी, लाख प्रश्न अन ु[illegible]ारित, पृ॰9
4 प्रतिध्वनि
5 समकालीन कथाक सौंदर्य बोध, आँखि मुनने, आँखि खोलने
6 इतिहासहंता
7 नाटक, निर्देशक आ एकटा कविता, इतिहासहंता, पृ॰13
8 देसिल बयना
9 आखर आलेख, स्मृतिक धोखरल रंग

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

केदार कानन-संपर्क-7004917511

एक सुच्चा कवि: रामलोचन ठाकुर

रामलोचन ठाकुर संघर्षशील कवि छथि। ओ बहुत श्रम आ साधनासँ कविताक समीप पहुँचल छथि। हुनक जीवन ततेक कंटकाकीर्ण आ क्षत-विक्षत रहलनि जे ओ कविता नै लिखतथि तँ कलकत्ता सन महानगरमे अनेक समान्य मैथिल जकाँ, अन्हारमे बिलायल रहितथि। ओ कविताक मर्म बुझलनि आ ओहि मर्मकेँ अपन वैचारिकताक संग काव्यात्मक अभिव्यक्ति देलनि।
कवि लग मिथिलाक महान परंपराक पूरम्पूर अभिज्ञान छनि। ओहि महान परंपराक सूत्र ओ सदैव धयने रहैत छथि। ओ अपन कवितामे कतहुँ हुसैत नहि छथि। हुनका अखनुक क्रूरतम समयक सार्थक बोध सेहो छनि। एहि दूनूक मिश्रणसँ ओ बेस बेधक आ बेछप कविताक सृजन कऽ सकलाह अछि।
आइ कविताकेँ ततेक गंजन सहय पड़ रहल अछि तकर लेखा नहि। कविताकेँ खेलौर बुझनिहार कवि लोकनि लग रामलोचन ठाकुरक कविता अयनाक काज करैत अछि। हुनका सभकेँ निश्चित रूपसँ रामलोचन जीक कविता पढ़बाक चाही आ तकर मर्मकेँ स्पर्श करबाक चाही। रामलोचनजी प्रचार-प्रसारसँ दूर रहि अपन कवि-कर्ममे लागल रहलाह आ सैह कारण थिक जे ओ कविताकेँ एक उद्येश्य धरि लऽ जा सकलाह।
हुनक जीवन सुच्चा रहलनि। अत्यंत सावधानी आ इमानदारीसँ ओ अपन

जीवनक निर्वाह कयलनि। ठीक तहिना ओ कवितोमे बहुत सावधान आ इमानदार छथि। ओ जखन जे अनुभव कयलनि, अपन संवेदनाक धरातलपर आबि तकर अभिव्यक्ति कयलनि। यैह कारण थिक जे हुनक कविताने टटका स्पन्दन छनि, सुवास छनि। हुनक कविता मैथिलीक विशिष्ट काव्य-परंपरामे एक सार्थक हस्तक्षेप थिक।

हुनक कविता एक दिस मिथिलाक गाम आ ओहिठामक जीवन अछि तँ दोसर दिस महानगरीय जीवनक यथार्थ आ सक्कत-पथराह भूमि सेहो अचि। ओ कवितामे अपन बात बिना कोनो छल-छद्मक, बिना कोनो लाग-लपेटक कहि सकलाह अछि। तें ओ कविताकेँ एक निश्चित उद्येश्य धरि लऽ जा सकलाह अछि।

हुनका लेल सभसँ महत्वपूर्ण रहलनि अछि। अंतिम विपन्न आदमी। जकरा लग अपन कहबाक किछु नहि छैक। जकरा भारतक स्वतंत्रताक बाद एखन धरि लुलुआयले गेल छैक, तें अस्वाभाविक नहि जे ओ मनुक्खक जय चाहैत छथि, जीवनक जय केर आकांक्षा रखैत छथि आ मुक्ति संघर्षसँ प्रेरित जीवनक दोहाइ दैत छथि।

मैथिलीमे रामलोचन ठाकुर एक विशिष्ट आ तथाकथित सड़ल-गन्हाएल परंपराक भंजक कवि छथि। हुनक कविता पढ़ैत काल कतहु-कतहु ई बोध होइत छैक जे हुनक कविता वक्तव्य भऽ जाइत अछि अथवा नारा सन लगैत अछि। मुदा ओहू कविता सभमे कविक सुच्चापन आ इमानदारी झलकैत अछि।

जे मिथिला सौंसे भुवनमे विख्यात रहल अछि से आब रक्तहीन, मांसहीन कंकालक भूमि बनल अछि। मुदा कविक विवशता छनि जे ओ मातृभूमि मिथिलाकेँ बिसरि नहि पबैत छथि।

ओ अपन कवितामे घनघोर निराशा आ उदासीकेँ फटकय नहि दैत छथि। ओ सदैव आशा-उल्लास आ जीवनक बात करैत छथि। जीवनमे सफलताक बात

करैत छथि। ओ एक सुखद भविष्यक बात करैत छथि। अपन कविता "बहीनिदाइक नाम एगो चिट्ठी"मे कहैत छथि-

आगामी कालिक निमित्त
जखन कि हमरा लोकनि लगाएब
निश्चिते लगाएब / एगो नव बिरदाबन पटाएब /
कुनू डबरीक पानि सं नहि अपन घाम सं /
आ फुलाएब रंग-बिरंगक फूल/
अपन आशाक अनुकूल अपन कल्पना कें देब वास्तव रूप

हुनक अधिकांश जीवन मैथिली आंदोलन लेल समर्पित रहलनि। मातृभाषापर होइत कोनो प्रहारकेँ ओ बरदास्त नहि कयलनि आ मैथिलीक हित लेल जे हुनकासँ संभव भेलनि से ओ निरंतर करैत रहलाह। आवश्यक भेलापर ओ मैथिली लेल नारा सेहो लिखलनि जे बहुत अर्थगर्भा आ व्यंजक छनि।

मिथिलाक गामक ओहि समृद्ध परंपरा आ प्रीति, सौजन्य-सौमनस्यकेँ ओ तकैत रहैत छथि। जतय कोनो भेदभाव नहि छल। जातिपात नहि छल। सभ एक-दोसराक पर्व-त्योहारमे खुजल आ उन्मुक्त मोनसँ सम्मिलित होइत छल। मुदा से गाम आइ निपत्ता भेल अछि। जीवन बदलि रहल छैक, सभ्यता-संस्कृति बदलि रहल छैक। आयातित विचारक प्रदूषणसँ, अपना-अपनीसँ, स्वार्थक महाजालसँ संपूर्ण परिवेश अनठिया बनि गेल छैक। ओ अपन गामक अन्वेषणमे लागल कहैत छथि—

पसरमे जाइत चरवाहक पराती
आ साँझमे दूर नदी कातसँ
बाध-बोनासं भासल अबैत
चौमासा-बारहमासाक स्वर
आँगनसँ
ढेकी जांतक संगीतक संग
लगनीक स्वर

कहियो सोहर, कहियो समदाओन
कहियो तिरहुत, कहियो मलार
हमर गामक परिचिति छल

बरखामे विलम्ब देखि
गमैया पूजाक सँगोर
जट जटिन खेलेबामे व्यवस्त
महिला समाज
तजियाक संग
झड़नी पर झुमैत किशोर/तरूण दल
फगुआक अबीर
आ जूड़शीतलक कादो-मटिक संग
हमर गाम जीबैत छल
....
हम ताकि रहल छी सएह गाम
अपन गाम

कवि मानैत छथि जे शब्द जे कहियो पूर्वजक अनुसारे ब्रह्म छल से आइ अपन मुक्ति लेल छटपटाइत वाल्मीकि, विद्यापति, कृतिवासक बाट ताकि रहल अछि। कियैक तँ बीसम शताब्दीमे मनुक्ख ओहि शब्दकेँ अस्त्र बना लेलक अछि, ओकर अर्थ बदलि गेल छैक, अपन संपूर्ण अर्थवत्तामे ओ भयाओन भऽ गेल छै आ ओकरासँ साधारण लोककेँ डर होइत छै। कविता कतेक अर्थपूर्ण अछि से देखी--

हमरा लोकनि
अर्थात् एकैसम शताब्दीक
सभ्य सुशिक्षित मनुक्ख
शब्दकें बना लेने छी अस्त्र
अस्त्र विभाजनक
अस्त्र शोषणक
अस्त्र संहारक
आइ शब्द स्नहे-संवेदना नहि
घृणा-द्वेषक करैत् अछि सृष्टि-संचार

शब्द आइयो अछि
संसद-संविधानमें
बणिकक तिजोरीमे
स्तावक लोकनिक ठोर पर
कलमक नोक पर
शब्द आइयो अछि
मात्र बदलि गेल छैक ओकर अर्थ
तें लगैत अथ्छ अनचिन्हर-अनभोआर
लगैछ भयाओन
लोक, साधारण लोक
आइ शब्दसं डेराइत अछि

भारतक आजादीक पछाति गणतंत्र दिवस आ स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर संपूर्ण देहक रोमांचित होयब, एकटा अखंड विश्वासक लहरिक दौगब आ मोन प्राणक उत्फुल्ल होयब, समय-साल बदललाक कारण , देश-दशाक स्थितिक विरूपताक कारण आ समान्य जनताक इच्छा-आकांक्षा आ ओकर समस्त भविष्यपर लगाओल गेल पैघ प्रश्नचिह्नक कारण, अंततः स्थिति कतेक बदलि गेल अछि तकरा कविक १५ अगस्त कवितामे देखल जा सकैत अछि-

१५ अगस्त आब रोमांचित नहि करैछ
फहराओल जाएब तिरंगाक शहीदक शोणित,
ओकर बलिदानक कथाक स्मरण नहि करबैछ
तिरंगाक केसरिया रंग लालक बदला --
एक पैध सुचिन्तित षडयंत्रक प्रतिफलन बुझि पड़ैछ
आ श्वेत खंडक बीचो बीच चक्र
एक पैघ कलंकक टीकाक प्रतीक
जाइ मे बोफर सं शेयर धरि
हवाला सं गवाला धरि कतेको
अपकर्म, कुकर्मक कथा गाथा
सत्तासीन भारत भाग्य विधाताक समाहित हो

कवि रामलोचन ठाकुर अपन 'हम चाहै छी' कवितामे कहैत छथि-

कविता हमर
कोनो मंदिर मसजिद वा
कोठा सँ नहि, मजूरक झोपड़ी सँ
कारखानाक जरैत चिमनी सँ खेत जोतैत हरक फार सँ
धीपल लोहा पर पड़ैत लोहारक हथौड़ा सँ
कुम्हारक चाक सँ चमारक टाकु सँ जनमओ
हम चाहै छी

रामलोचन ठाकुर विराट फलकक कवि छथि। मैथिलीमे, अपन धाराक एकसर कवि जकाँ, अपन संर्घष-पथपर अविराम चलैत, अनथक यात्राक सभटा मोल चुकबैत ई कवि अपन कविता सभमे एक विशिष्ट अर्थ भरैत रहलाह। आइ हिनक कविता सभ मैथिली कवितामे एक धड़कैत आ विचारोत्तेजक आयाम दैत अछि। एतेक सहज आ संप्रेषित जे कविताक अर्थ ताकबा लेल कतहुँ दूरक यात्रा नहि करय पड़त अपितु तकर अर्थ एतेक सरल आ खुजल रहैत अछि जे ओ अहाँ के समान्य मैथिल आ हिंदुस्तानी जीवनमे अनायासहि भेटि जाइत अछि। कोनो दीहन-हीम, कोनो मजूर, कोनो रिक्सा आ ठेला बलाक जीवनक संघर्षमे हुनक कविताक पाँति फड़कैत, अपन बात कहैत भेटि जाएत। ई हुनक कविताक एक महत्वपूर्ण आयाम थिक।

रामलोचन ठाकुर एक श्रेष्ठ कविक अतिरिक्त श्रेष्ठ अनुवादक ओ विचारक सेहो छथि। अपन अनुवाद कर्म आ तकर गुणवत्तासँ ओ मैथिलीक मान बढ़ौलनि अछि। ओ मैथिल मनक विशिष्ट रचनाकार छथि आ हुनक कवितामे आ अन्यो रचनामे संपूर्ण मिथिलाक जीवन स्पंदित करैत अछि। धर्म, समाजिक जीवन प्रणाली, राजनीति, सभ्यता आ संस्कृतिपर हुनक एतेक संतुलित आ समधानल व्यंग्य छनि जे हुनक रचनाक कलात्मक संयम आ तकर उत्कर्ष मनकेँ मोहि लैत अछि। मिथिलाक संग-संग बंगालक जीवन एक संग हुनक रचनामे अबैत अछि। एक दोसरासँ जुड़ल आ अन्तरंग रूपमे।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे कवि रामलोचन ठाकुर प्रथमतः आ अंततः जनताक रचनाकार छथि। आखरी विपन्न आदमीक सुख-सेहंतामे भीजल, ओकरे दुखसँ दुखी होयब, ओकरे सुखसँ सुखी होयबाक व्यापक परिधिमे हुनक रचना बौआइत रहैत छनि। हुनक रचनाकार लक्ष्य जनता थिक, समान्य जनता। आ हुनक एहि महत्वपूर्ण आ अर्थव्यापी लक्ष्य लग अंततः

प्रत्येक रचनाकारकेँ जयबाक चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

मुन्नाजी-संपर्क-9540095340

संवेदनाक सीढ़ीपर ठाढ़-"ताल बेताल"

जीवनक आपाधापीमे च'प-उनार हएब जिनगीक संतुलनक स्रोत बूझू। छोट पैघ डेग उठिते तँ मोकाम धरि पहुँचैए लोक। जहिना डेग छोट-पैघ, तहिना कर्मो छोट-पैघ आ ओहने फल सेहो होइछ! ओइ छोट-पैघपर जहन डेग लड़खराए लगैए तहन दोसराक मूँहे उपहासक पात्र बनब देरी नै।ओ उपहास, डेगे नै मोन सेहो तिलमिला देबाक लेल पूर्ण होइछ। ओ कखनो नजरि सँ तँ कखनो शब्दवाण भऽ बेधैछ।

शब्दवाण जे तिलमिला दिए, बेधि दिए उएह साहित्यिक परिधिमे व्यंग्यक संज्ञा पबैछ! व्यंग्य, माने प्रस्तुतकर्ताक सिरखारीपर मुस्की आ लक्ष्यपरक चोट आ कि तिलमिलाहटि। व्यंग्य हास्यमे सेहो प्रस्तुत होइछ आ हास्यास्पद रूपमे सेहो। व्यंग्येक एक रूप तँ आलोचना थिक। साहित्यमे व्यंग्यक कएटा रूप वा संबोधन अछि। यथा पैरोडी, प्रहसन आदि। सात दशकक मैथिली आन्दोलनी, दृढ़ निश्चयी व्यक्तित्व- श्री रामलोचन ठाकुर जी मिथिला भूमिमे हास्य-

व्यंग्यक कोना धेलनि से नै जानि मुदा असल नाम नुका अपन छद्मनाम 'कुमारेश कश्यप'सँ व्यंग्य लिखबाक प्रयास हुनका अनुरूप हमरा नै लागल।

ताल- बेताल व्यंग्य संग्रहमे कुल सात गोट व्यंग्यक धार बहेलाह। जकर पहिल शीर्षक अछि-"अथ कथा चमचा पुराण। प्रस्तुत प्रसंगमे मैथिली आन्दोलनमे भोगल अनुभवक बीच देखल चाटुकारिता, गोधियाँ-गोधौअलसँ आहत भऽ तोता - मैनाक संवादे चित्रणसँ संतुष्ट भेलाह।

"ऐं यौ, ऐ बेर जहियासँ मिथिलाक सर्वेक्षण क' एलौं तहियासँ गुमसुम बैसल छी। की कहू-मिथिला, मैथिलीक क्षति त' हेबे करतै जे हमरो सबहक खोंता बिनु उजारने नै रहत। ओ! अच्छा ई कहू ई चमचा शब्द कत' भेटल, आ कि अहींक उत्पति? " देखू- चमचा शब्द प्रयोग भेल अछि महर्षि वेदव्यास द्वारा। ओ अपन सत्रह पुरानमे एकर कथांत नै क' पौलाह।तहन अठारहम पुराणक रचना कर' पड़लनि-" चमचा पुराण " ओइमे

लिखै छथिन- -" अष्टादस पुराणे व्यासाज वचनम ध्रुवमसर्व काले सभी क्षेत्रे चमचा सर्वत्र विद्यते "ओना अतबेसँ सन्तुष्ट नै भेलाह। तँ चमचाक प्रमुख प्रकार सेहो चारि भागमे बाँटि लिखलाह।

1- अज्ञान वाक् -जकरा ज्ञानक छुति नै, महन्थक वाक्यकें ब्रम्हवाक्य मानब।

2- सुटकुन -जकरा ज्ञानक छुति रहैछ मुदा महन्थक धरिया धेने पार उतरैछ।

3- स्वविवेकी -स्वार्थवश चमचागिरी , फेर अलोपित।

4- फँचारि-सभा , सोसाइटी दलमलित केलक। महन्थक टोकारापर घसकन्त।

विद्यापतिक बर्खी-विद्यापतिक सम्मानसँ बेशी जेबी भरबा लए हुनक अवसानपर चोट करैत! वक्तामे सेहो गोधियाँ-गोधौअलक प्रस्तुति! सुनू ऐ मंचपर बेशी बला सब बाजि गेलाह। हम तँ कम्मे जे पढ़ने सतमा धरि माने वामन बुझू। पैघ ओ जे सबमे पैघ होथि। जेना बेशी विवाह, बेशी धिया पुता, बेशी धन संपत्ति, बेशी लटारहम (टंटबंट), बेशी गप्प हांकय,बेशी खाय, बेशी पचाबय।

आब अध्यक्षीय भाषण- अहाँ सबहक सौभाग्य जे आइ मंचपर तीन गोट विद्यापति विशेषज्ञ बैसल छथि डॉ. झांखुर झा- जिनका विद्यापतिक नायिका चूड़ी पर शोधक पी.एच.डी भेटलनि।डॉ.गोबर गणेश जे विद्यापतिक नायिकाक नूआ पर शोध क' सम्मानित भेलाह। तेसर-डॉ. खेसारी खबास जे विद्यापतिक अन्तर्वस्त्रक रिसर्च स्कॉलर छथि। अहिना जुत्ता, छड़ी, पाग, दोपटा महात्म्यक परिचर्यामे विद्यापतिक बर्खी सब बेर अपन किछु नव कीर्तिमान स्थापित करैए।

कुर्सी महात्म्य- डॉ. नास एम.ए। त्रिपाठी.एच.डी, डीलिट्। अठारह पुराणक रचना केलनि। ताहिमे एक अछि कुर्सी पुराण।ओइपर कहियो राम बैसल कहियो कृष्ण आ तकर पछाति नै जानि कते नरसंहारी। मुदा आब ओ कुर्सी कोनो साधारण जनता प्राप्त कऽ सकैए जे फकीर रहए। कोटि कोटि आ कुटि कुटि के व्यंग्यक निष्पादन करैत कथा।सत्तामे बैसल वा पावरफुल व्यक्ति कखनो ककरो कटबाक आदेश दऽ सकैए।कखन कोन विपत्ति ककरा पर

आइब जाए से कहब अनिश्चित! मुदा घेंट जोड़बामे सब व्यस्त आ खुश।-विप्लव!

ब्रम्हाक श्राप- अइ कथामे सत्ताक शताब्दीक व्याख्या कएल गेल अछि! दुनिया एडवांस भऽ रहलै। ब्रम्हा जीक संग अंग्रेज़ी वार्तालाप तकरे प्रतीक थिक।

अमरावती उपकथा--कमीशनखोर सब कोना नेताकें फँसा कऽ रखैछ। आ काज बेर कोना अपने फँसि व्यस्त भऽ मालो माल होइ छथि।

सबटा कथा कतेको दशक पहिनेक मुदा आइयो स्थिति परिवर्तन नै। तें आइयो पूर्ण प्रासंगिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

सुरेन्द्र ठाकुर- संपर्क-9903398512

मैथिली सेवी कवि श्री रामलोचन ठाकुर जी

ओह! हम की कहू नहि कहू। हम तखन बहुत मोश्किलमे पड़ि जाइत छी जखन हम अपनासँ कनिष्ठ बा ज्येष्ठ कोनो मैथिली सेवीक व्यक्तित्व,कृतित्व आ कीर्तित्वक विषयमे किछु लिखबाक लेल हाथमे कलम पकड़ैत छी।तखन मोनमे होइत रहैत अछि जे ओहि मैथिली सेवीक संबंधमे कतहुँ कोनो मौलिक तथ्य छुटि ने जाए बा एहेन कोनो बात नहि लिखा जाए जाहिसँ हम उपहासक पात्र बनि जाइ! आखिर हम की करबैक? एखन तँ हमरा लिखहे पड़ि रहल अछि। प्रसंगवश्, उलेख्य महानुभाव छथि मैथिलीक कवि-लेखक साहित्यकार आदरणीय श्रीमान् रामलोचन ठाकुर जी। ओना हम ई०सन्--१९७५ क २६ जनवरी क' कलकत्ताक धरती पर पैर रखलहुँ। हमर अजिया ससुर श्री उदित नारायण झा आ ससुर श्री बुद्धदेव झा जीक कलकतास्थ रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयक जोड़ासाँको प्रांगण स्थित निवास स्थानपर यदा-कदा बा छुट्टी दिन क' सामान्य मैथिलक अतिरिक्त किछु मैथिली सेवी यथा श्री महेन्द्र झा(बेलौंजा),श्री राजन्दन लाल दास(कर्णामृतक सम्पादक)आ नाट्यकार द्वय श्री दयानन्द झा(नागदह) आ श्री गंगा झा(परजुआरि,डीह) आदि प्रमुख

मैथिलीसेवी सभ उपस्थित भ' जाथि। मिथिला-मैथिली विषयक वार्तालापमे हुनका सभकें संग देथिन्ह नाट्यकार श्री कृष्णचन्द्र झा'रसिक'(परजुआरि,डीह)।ओही समयसँ हुनका सभक मुँहें सुनियन्हि आदरणीय श्री रामलोचन ठाकुर जीक नाम। ओना तखन तक हम कलकत्ताक मिथिला-मैथिलीक गतिविधिसँ संलग्ने नहि छलहुँ। मुदा,बादमे हम विशेष रुचि लेबय लगलहुँ। ज्ञातव्य हो कि एहिसँ पूर्व पटना शहरमे रहैत ओतुका मैथिलक गतिविधिसँ रुचि रखैत रही। ई०सन् १९८६क एकटा घटना! हम मैथिली-सेनानी श्री बाबू साहेब चौधरी जीक विशेष आग्रहपर अखिल भारतीय मिथिला संघ कलकत्ताक सदस्य बनलहुँ। आ सक्रिय रुपेण संघक लेल काज करय लगलहुँ। तखन हम रिषड़ा(हुगली)मे रहैतरही। उपरोक्त 'संघ' आ श्रद्धेय चौधरी जीक सानिध्यमे रहैत चर्चाक्रममे हमरा ज्ञातव्य भेल जे आदरणीय श्री रामलोचन ठाकुरजी 'संघ'क सक्रिय सदस्य छलाह। प्राय:नब्बे दशकक प्रथम उतरार्धमे एक दिन 'अस्वस्थ्य' चौधरी जी हमरा आग्रह कयने रहथि:--- "सुरेन्द्र जी! विशेष सूत्रसँ हमरा ज्ञात भेल अछि जे श्री रामलोचन ठाकुर जी बहुत अस्वस्थ्य छथि। अपनहि लोक छथि। अपन 'संघ'क शुभ चिंतक छथि।जौ आहाँसँ सम्भव हो तँ 'संघ'क दिशिसँ, हमरा दिशिसँ आ अपनहुँ दिशिसँ कृपया भेट क' अबितियन्हि तँ बहुत बढ़ियाँ होइत।।" हम हुनक प्रस्ताव के सहर्ष स्वीकारल आ कहने रहियन्हि---"चौधरी जी,कृपया, अपने हुनक पूरा पता-ठिकाना दी। हम एखनहि हुनकासँ भेट करबाक लेल जाएब।" की कहू! हम चौधरी जीसँ प्राप्त पता-ठिकाना ल' क' श्री राम लोचन ठाकुर जीक लेक गार्डेन्स स्थित निवास स्थानपर चारि बजे बेरु पहर पहुँचि गेल रही। हुनक कोठली तक पहुँचैत हम अजीबो गरीब स्थितिमे पड़ि गेल रही। देखने रही जे एकटा व्यक्ति अपन विस्तरपर पड़ल छथि आ हुनक एकटा पैरसँ डोरीसँ लागल -बान्हल किछु ईंटा विस्तरक फ्रेमसँ नीचा लटकि रहल छैक। हम पूर्वानुमाने पूर्ण आश्वश्त भेल रही जे इएह छथि ----'श्री मान् राम लोचन

ठाकुर जी। हम हुनक पैर छुबि गोर लागल आ अपन पूर्ण परिचय दैत कहने रहियन्हि----"हमरा अपनेक ओतय अपनेक जिज्ञासार्थ एखन पठौलन्हि अछि श्रद्धेय श्री बाबू साहेब चौधरी जी। आ, आग्रह कयलन्हि अछि जे हुनक सेवा उपलब्ध करैबाक जौं बात होई से ठाकूर जी अबस्से कहथि। हम पूर्ण रुपेण तैयार छी| संगहि ,पूर्ण स्वस्थ्य भेला पर हम अबस्से भेट करबन्हि|" हमर बात सुनि ठाकुर जी बाज़ल रहथि:-" ठीक छैक ।आहाँ चौधरी जीकें कहबन्हि जे हम उतरोत्तर ठीक भ' रहल छी।आ,जौं हमरा हुनक कोनो सेवा लेबाक जरुरति पड़त तँ हम हुनका अबस्से सूचना देबन्हि।पहिने ओ स्वयं स्वस्थ्य होथि,से हमर कामना अछि। जे किछु,ठाकुर जीक घरमे किनको नञि देखि हम पूछने रहियन्हि:-"ठाकुर जी! अपनेक घरमे हम किनको नञि देखैत छियन्हि। एखन एहिठाम किओ छथि की नञि।"ओ आगा कहने रहथि:- "एखन किओ नहि छथि। सभ किओ गामेपर छथि।।"हम पुनि आगा पूछने लहियन्हि:-"की आहाँ अपना संबंधमे अपन पारिवारिक लोककें गाम पर सूचना देने छियन्हि।" ओ आगा बाजल रहथि:-"नहि, हुनका सभकें हम कोनो तरहक सूचना नहि देने छियन्हि ।आ,ने देबन्हि।हमर आग्रह अछि ,जे आहाँ बा चौधरी जी 'क अलाबे जेकियो होथि ,हमरा सम्बन्धमे,हमर गाम पर, हमर पारिवारिक कोनो सदस्यकें ,अपने लोकनि कोनो तरहक सूचना नहि पठबियन्हि।कारण,ओ लोकनि सुनितहिं घबड़ा जयताह आ दौड़ले कलकत्ता चलि औताह। तखन हमर सभ योजना बिगड़ि जाएत।" ठाकुर जीक उपरोक्त बात सुनि हम हुनका कहने रहियन्हि:-ठाकुर जी,एवमस्तु! हम सभ अपनेक निर्देशके अबस्से पूर्ण पालन करब। चिन्ता जुनि करी।" हम ठाकुर जीसँ पुन: पूछने रहियन्हि:-"ठाकुर जी! अपनेक संग ई दुर्घटना केना भ'गेल।ओ बाजल रहथि:-"सुरेन्द्रजी! हड़बड़ीमे हमर पैर 'स्लीप' क' गेल। ओकर बाद घरहिंपर डाक्टरी सलाह लेल। एक्स-रे कराओल गेल। पैरक हड्डी टुटि गेल। संबंधित डाक्टर प्लास्टर कयलन्हि। सूई-दबाई सभ देलन्हि। आ,कहलन्हि -'घरे पर आबि क' हम पुन: देखैत-सुनैत रहब। से आहाँ देखिते

छी,हम ' ट्रैकिंग' पर छी।" हम पुन: आगा पूछने रहियन्हि:- ठाकुर जी !अपनेक क्रिया-कर्म आ घरेलू काज केना चलि रहल अछि? ओ बाजल रहथि:--"डाक्टरक अलाबे सभ दिन क' एकटा नर्स अबैत अछि।एकर अलाबे सभ दिन क' अही ठामक एकटा महिला(आया) भानस-भात क' दैत अछि। कपड़ा-लत्ता,बर्तन-बासन आ घर'क सफाई आदि क' दैत अछि। हम स्वयं 'स्टीक'क सहारे नित्य क्रिया-कर्म कहुना क' खूब सावधानीक संग क' लैत छी। आर की कहू,कष्ट तँ थोड़ेक अछिए। 'हम तखने अनुभव कयने रही जे ठाकुर जी एकटा बहुत जीवटगर आ संघर्षशील लोक छथि। हम पुन: आगा पूछने रहियन्हि-"ठाकुर जी!अपनेक ई प्लास्टर कहिया धरि कटत?" बाजल रहथि ठाकुर जी:-"हँ, डाक्टर कहैत छथि जे पन्द्रह दिनक बादे प्लास्टर कटि सकैत अछि। आ,एखन धरि हमर स्थिति तँ ईएह अछि।मुदा,दुख अछि जे हम एखन आहाँ के चाहो नञि पीआ सकैत छी।कारण, चाह लाबय बला किओ नहि अछि। जे चाह थरमसमे छल से हम आहाँ आबयसँ पहिनहि पीबि चुकल छी।'"हम कहने रहियन्हि:-अपने एहि लेल बेशी चिन्ता नञि करी।" उपरोक्त बातचीतक बाद हम प्रस्थान करबाक लेल उद्यत भेल रही कि ठाकुर जी बाज़ार रहथि:-सुरेन्द्र जी!कनेक आर ठहरू।"ई कहैत ओ हमरा अपन लिखल एकटा मैथिली पोथी उपहार स्वरुप देने रहथि।हम कहने रहियन्हि:-ठाकुर जी!हम एखन उपहार स्वरुप ई पोथी नञि लेब।हम कोनो मैथिली पुस्तक प्राय:उपहार स्वरुपमे नञि लैत छी।कीन लैत छी। अपने लोकनि अपन निजी टाकासँ पोथी छपबैत छी।जौ उपहारे स्वरुप सभकें पोथी देबैकतँ दोसर-तेसर पोथी कोनो छपाएब?आहाँ सन मैथिली लेखक सभ प्राय: गरीबे होइत छथि।तैं हम एखन टाका देबे करब।अन्यथा नञि बुझी। जौं,सम्भब हैत तँ हमरा बादेमे उपयुक्त समयपर उपहार द'देब।" तत्काल हम टाका देल आ पोथी ल'लेल। मुदा,ठाकुर जी हमर तथाकथित उपकारकें नहि बिसरलाह। आ,पूर्ण स्वस्थ्य भेला पर कोनो उपयुक्त समय पर ओ अपन

लिखल एकटा दोसर पोथी हमरा दए देलन्हि। ओकर बादो दोसर लेखकक लिखल 'फ्री'मे बाँटय बला पोथी सेहो समय-समय पर दैत रहलाह।धन्य छथि हमर सभक ठाकुर जी अर्थात्---श्री राम लोचन ठाकुर जी !! ओकर बाद श्री ठाकुर जीसँ अनुमति ल' हम पुन: हुनक पैर छुबि प्रणाम करैत प्रस्थान कयने रही!! ओही दिनक प्राय: आठ बजे साँझक समय हम श्री चौधरी जीकें श्री ठाकुर जीक स्वास्थ्य सुधारक संबंधमे सभ बात आबि कहने रहियन्हि।ओ बहुत खुशी भेल रहथिआ कहने रहथि:-"ठीक छैक । हम सभ हुनक स्वास्थ्यक संबंधमे कोनो सूचना हुनक गाम पर एकदम्में नहि पठयबन्हि। ओकर बाद चौधरी जी रुकलाह नहि। अबाध गतिएं ओ कहब शुरु कयने रहथि:-सुरेन्द्र जी! श्री शुकदेव ठाकुर जी आ श्री राम लोचन ठाकुर जी दुनू निज पितियौत भाई छथि। श्री शुकदेव जी कलकत्ता ट्राम (वेज)कंपनीमे काज करैत छथि। आ श्री राम लोचन जी एत्तहिं इनकम टैक्स विभागमे काज करैत छथि। दुनू भाई कर्मठ लोक छथि। दुनू भाई 'मिथिला संघ'क लोक छथि।शुकदेव जी 'संघ'अध्यक्ष रहथि।आ राम लोचन जी से हो 'संघ'क सचिव रहि चुकल छथि।बादमे ओ 'संघ'क नाटक विभागक प्रभारी बनाओल गेल रहथि।दुनू भांई नाटकक मांजल कलाकार छथि।राम लोचन जी तँ हमरा संग हमर लिखित नाटक 'चाणक्य'मे चन्द्र गुप्तक भूमिकामे रहथि। आ,हम चाणक्यक भूमिकामे रही। लोक सभ एखनो धरि कहैत छथि उक्त दुनूक भूमिकामे ऊक्त नाटक बेश मंचित भेल छल।जकर पुनरावृति भविष्यमे पुन: हैत कि नहि,से नञि जानि।एखन समयाभावमे दुनू भांई समय नञि द'रहल छथि।" ताहि पर हम आगा कहने रहियन्हि-"चौधरी जी! अपने ठीके कहैत छी। हम सेहो कलकत्ताक कतेको लोकक मुँहे ई बात सुनने छी। विशेष क' हमरा श्रीवैद्यनाथ झा जी(डुमराबला)सेहो एहि संबंधमे कहने छथि।" श्रद्धेय श्री बाबू साहेब चौधरी जी हमरा आगा कहने रहथि :-सुरेन्द्र जी! राम लोचन ठाकुर जी एकटा नीक जुझारू मैथिली क्रान्तिकारी छथि। ओ 'मैथिली मुक्ति मोर्चा बना क' पटनामे सफल आन्दोलन सेहो कयने छथि। ओ मैथिली

जगतमे जानल-मानल लोक छथि। हमरा ओ ईहो कहने रहथि जे ओ मैथिलीक एकटा नीक कवि-लेखक आ साहित्यकार छथि। लेखन हेतु जे किओ हुनका प्रोत्साहित कयने हेथिन्ह ताहिमे हम सेहो एकटा लोक छी। ओ किछु मैथिली पोथीक प्रकाशन सेहो कयने छथि। आ,उतरोत्तर करैत रहताह। ओ मैथिली पत्र-पत्रिकाक सम्पादन सेहो करैत छथि" महामना श्रद्धेय चौधरी जी हमरा ईहो कहने रहथि:-सुरेन्द्र जी! श्री शुकदेव ठाकुर जी आ श्री राम लोचन ठाकुर जी हमर समधि सेहो छथि। हमर कनिष्ठ भ्राता राम प्रसाद(चौधरी)क जयेष्ठ बालककें शुकदेव ठाकुरजीक अपन एकटा कन्यासँ विवाह हमहीं करबौने छी। तैं हमरा सभक बीचमे एतेक आपकता अछि आ रहत।" आब श्रद्धेय श्री बाबू साहेब चौधरी जी नहि छथि। मुदा,ओ हमरा श्री रामलोचन ठाकुर जीक संबंधमे जे बात सभ कहि गेल छथि से एखनो धरि अक्षरशः मिलैत अछि। आ,हम पूर्ण अनुभव कयल अछि जे श्री राम लोचनजी अद्यावधि मिथिला-मैथिलीक निः स्वार्थ सेवा क' रहल छथि। ओ हाल तक बहुतो मैथिली पुस्तकक प्रकाशन क' चुकल छथि। ओ विभिन्न पत्र- पत्रिकामे आलेख लिखैत रहलाह। कखनो छद्म नामसँ त' कखनो अपनहिं नामसँ। ओ हमरा सभ के कहला पर अ०भा०मिथिला संघ'क लेल श्रद्धेय (स्व०)श्री बाबू साहेब चौधरी जी द्वारा स्थापित-प्रकाशित पत्रिका' मैथिली दर्शन'क पुन: सम्पादन - प्रकाशनक भार उठौलन्हि। उक्त पत्रिका जनवरी २००४सँ शुरु भेल । आ, दिसम्बर२००५तक प्रकाशित होइत रहल। मुदा,सन-२००६क जनवरी माहसँ 'संघ'क भूतपूर्व मुख पत्र आ मासिक पत्रिका'मिथिला दर्शन'क पुन: प्रकाशन शुरु भेल श्री मान् उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'जीक प्रधान सम्पादकत्वमे। आ ,श्री ठाकुर जी उक्त पत्रिकाक कार्यकारी सम्पादककें रुपमे काज करय लगलाह। फलस्वरुप 'मैथिली दर्शन'क प्रकाशन बन्द भ'गेल। तथापि श्री ठाकुर जीक सर्वस्तरीय सहयोग प्रसंशनीय रहल छल। एहि सभ उपरोक्त तथ्यक अतिरिक्त श्री राम लोचन ठाकुर जी समय

-समय कोलकाता आ एकर उपनगरक मिथिला-मैथिलीक विभिन्न कार्यक्रममे सक्रिय रुपसँ भाग लैत रहलाह। ओ अपन सम्पादकीय लेखन आ भाषण सभमे प्राय: मौलिक तथ्य के सदा उल्लेख करैत रहलाह। जाहिसँ नवागत पीढ़ीक लोक सभ मिथिला -मैथिलीक अतीत आ वर्तमानक समस्या सभसँ अवगत होइत रहथि। हमरा दृष्टिएं श्री राम लोचन ठाकुर जी राजनैतिक रुपसँ एकटा सुच्चा कम्यूनिष्ट छथि। ओ अपना स्तरक उचितवक्ता आ सफल मैथिलीवादी लोक छथि। नोकरी करब हुनकर एकटा मजबूरी छलन्हि। लेखन हुनक एकटा व्यसन छन्हि। मिथिला-मैथिलीक निरन्तर सेवा करब हुनक परम धेय छन्हि। एहि अंतर्गत सम्पूर्ण मिथिलामे प्राथमिक स्तर पर शिक्षाक माध्यम मैथिलीए हेबाक सिद्धान्तक पक्षधर छथि। संगहि, 'मिथिला राज' निर्माणक प्रबल समर्थक छथि। एखन 'मिथिला दर्शन' पत्रिका पुन: चालू भेल अछि। परन्तु किछु मास पहिने एहि मासिक पत्रिका'क प्रकाशन हठात् बन्द भ' गेल छलैक। ओही समयमे ज्ञातव्य भेल छल जे श्री राम लोचन ठाकुर जी अपन शारीरिक अस्वस्थ्यताक कारणें एकर सम्पादन सहयोग बन्द क' देलन्हि अछि। आ,ओ चिकित्सा करबा रहल छथि।एक दिनक बात।प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक श्रीगंगा झा जी फोनक कयलन्हि जे हम श्री ठाकुर जीसँ भेटकरबाक हेतु हुनक निवास स्थान पर जाएब।कृपया अपने अबस्से आउ। एकहिं संगे दुनू आदमी जाएब। सैह भेल।दुनू आदमी हुनका भेंट केलियन्हि। देखल जे उत्तरोत्तर हुनक स्वास्थ्यमे सुधार भ' रहल छन्हि।हुनका संग प्राय:एक घंटा बातचीत कयल। ओ चाह पीऔलन्हि। अंतमे हम दुनू व्यक्ति हुनक सुखद स्वास्थ्यक कामना करैत प्रस्थान कयल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'-संपर्क-9831037532

रामलोचन ठाकुरक व्यक्तित्व : एक दृष्टिकोण

रामलोचन ठाकुर कें हम पछिला सोलह-सत्रह साल सँ जनैत छिऐनि। हुनकर किछु साहित्यिक कृति पढ़ल अछि। साहित्यक मूल्यांकन करबाक अवगति हमरा नहि अछि, मात्र हम हुनक व्यक्तित्वक किछु खास अंश पर अपन अवलोकन एतए प्रस्तुत करैत छी।

2004 के अन्त अथवा 2005 के शुरु के समय, हम कलकतिया साहित्यिक समाज मे घोंसियेबाक चेष्टा करैत रही आ सम्पर्कक मासिक बैसार मे जाएब शुरु कएने रही। ओहि समय ई बैसार कॉलेज स्ट्रीट बला राजेन्द्र छात्र निवास मे कोनो कोठरी मे भेल करै। एहने एक बैसार मे अकस्मात रामलोचन जी अपन एकटा पुस्तक 'स्मृतिक धोखरल रंग' लेने अएलाह आ एतबा कहि जे 'एकर विमोचन वैज्ञानिकजी करताह' हमरा हाथें ओकर विमोचन करबौलनि। ओ किताब हमरा पहिने सँ देखल नहि छल। हम ओहि विषय पर किछु बजबा मे असमर्थ छलहुँ, मुदा विमोचनक प्रक्रिया सम्पन्न भेल। किताब मे हमरा पहिल बेर किछु अटपट लागल — मुखपृष्ट पर किताबक नाम आ लेखकक नाम मात्र मिथिलाक्षर (जकरा हम सब बच्चा मे तिरहुता लिपि नामे सिखने

छलहुँ) मे लीखल। देवनागरी निपत्ता। बगल के फ्लैप पर जरूर देवनागरी मे ओएह बात लीखल छलैक, किन्तु एहन व्यवहार हम पहिल बेर देखि रहल छलहुँ। पुरान मैथिली लेखक लोकनिक कतेको पुस्तक एहन देखने छी जाहि मे मिथिलाक्षरक व्यवहार भेल छलैक मुदा संगहि देवनागरी सेहो रहितहिं छलैक, से बरू छोटे अक्षर मे किएक ने होइक।तकर बाद हुनकर आनो पुस्तक सब देखबाक आ पढ़बाक अवसर भेटल। हुनकर पुरना किताब सब, जेना ‘मैथिली लोककथा’ (1983), ‘अपूर्वा’ (1996), ‘लाख प्रश्न अनुत्तरित’ (2003) आदि सब मे ओएह ढाठी। ‘आँखि मुनने आँखि खोलने’ (2005) मे देखैत छी मुखपृष्ट पर दूनू लिपिक व्यवहार। तकर बाद अनुवाद बला किताब सब मे मिथिलाक्षर निपत्ता।

बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे एहि प्रयोगक की औचित्य छलैक ? किछु गोटे एकरा रामलोचनजीक हठधर्मिता कहि सकैत छथि मुदा हमरा विचारें एकर गूढ़ अर्थ छलैक। मैथिली सेनानी रामलोचन ठाकुरक लेल मैथिली भाषाक संगहिं लिपिक महत्ता समतुल्ये छलनि। ओ मैथिल समाज कें इएह सन्देश देबऽ चाहैत छलखिन जे अपन लिपि कें बिसरब उचित नहि। मिथिलाक्षरक हटा देब मैथिली लेल कतेक लाभदायक आ कि हानिकारक भेलैक ताहि बहस मे हम एतए नहि जाए चाहैत छी मुदा एतबा बता देब जरूरी बुझैत छी जे मिथिलाक बाहर जे विद्वान मैथिली भाषा आ संस्कृति सँ सिनेह रखैत छथि आ भाषाक संग लिपिक महत्व बुझैत छथिन, हुनका नजरि मे लिपि कें हटा देब मैथिली लेल महान गलती भेल। ओना तऽ अनेको एहन उद्धरण देल जा सकैत अछि, मुदा एहि प्रसंग हम अपन अनुभव बतबैत छी। 2014 मे केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तेजपुर (असाम) मे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के वार्षिक मीटिंग भेल छलैक। ओहि मे असमियाक प्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर नगेन साइकिया अतिथि वक्ताक रूप मे अपन व्याख्यान प्रस्तुत कएने रहथि। व्याख्यानक अन्त मे हमरा हुनका संग किछु गप-सप भेल

छल। ओही क्रम मे ओ ई विचार व्यक्त केलनि जे लिपि कें हटाएब मैथिलीक लेल बहुत हानिकारक भेलैक।

समयक संग रामलोचनजीक एहि विचार मे किछु परिवर्तन भेल। एकटा आर अवलोकन — मिथिलाक्षर बला किताब सन हिनकर स्वयं प्रकाशित छलनि। एकर विपरीत अनुवाद पुस्तक सब अन्य प्रकाशन सँ — जेना 'पद्मा नदीक माझी' (2009) मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता सँ, 'कठपुतरी नाचक इतिकथा' (2016) साहित्य अकादमी सँ आ 'अयाची संधान' (2018) किसुन संकल्प लोक, सुपौल सँ। की मिथिलाक्षरक अनुपस्थिति कें प्रकाशक सँ जोड़ि सकैत छिऐक ? आ कि लेखक स्वयं एहि निष्कर्ष पर आबि गेलाह जे ई व्यवहार अनुपयोगी भऽ गेलैक ? कहब कठिन कारण एहि विषय पर हमरा हुनका संग चर्चा नहि भेल।
'स्मृतिक धोखरल रंग' नामहि सँ बुझना जाइछ जे पुस्तक संस्मरणात्मक लेख सबहिक संकलन अछि। एहि मे मुख्यतः चर्चा अछि मैथिली आन्दोलन मे कलकत्ताक योगदान, जाहि मे रामलोचनजी कोनो ने कोनो रूप मे अपने सहभागी छलाह। पुस्तक पढ़ला सँ हम मैथिली आन्दोलन मे कलकतिया मैथिल समाजक योगदान बूझि पौलहुँ।

'मैथिली लोककथा' पहिल बेर छपल 1983 मे। ई कोनो मौलिक कृति नहि कहल जेतैक मुदा समाजक धरोहरि कें सम्हारि कए एकत्रित करबाक काज भेलैक। खिस्सा पिहानी बच्चा मे सब गोटे सुनने छी माए-बाबू, काका-काकी, दादा-दादी, नाना-नानी अथवा परिवारक आ समाजक अन्य लोक सबसँ। विश्वक सब समाज मे अनेक रूप मे ई खिस्सा-पिहानी प्रचलित छैक जाहि सँ बच्चाक लेल मनोरंजनक अतिरिक्त बहुमूल्य शिक्षा सेहो भेटैत छैक। सब भाषा मे एहन खिस्सा सब के छोट-पैघ संकलन सेहो कएल गेल छैक। सत्य

बजबाक नीक फल, झूठ बजबाक खराप फल, इमानदारीक महत्व, परिश्रमक फल, अतिथि सत्कारक महत्व, कर्तव्याकर्तव्यक बोध आदि अनेको विषयक परिचय आदि काल सँ बच्चा कें एहि खिस्सा सब सँ भेटैत रहलैक अछि। लोककथाक स्वरूप देश-कोस बदलि गेला सँ बदलि जाएब स्वाभाविके। एके गाम मे दूटा कथा वाचक एके कथा कें कलेवर कने बदलैत सुनबैत भेटि जाएब असम्भव नहि। कतहु कने पात्र बदलि गेल तऽ कतहु कने दृश्य। ई खिस्सा सब छिड़िआएल छैक आ समयक संग बहुतो खिस्सा लोक बिसरि जाइत रहल अछि। खास कऽ कए बदलैत सामाजिक परिवेश मे, जतए नानी, दादी बला संयुक्त परिवार उठि गेलैकए आ युवा पति-पत्नीक न्यूक्लियर परिवार रहि गेलैकए, खिस्सा कहबाक लेल पुस्तक बहुते आवश्यक बुझाइत छैक। रामलोचनजी एहि आवश्यकता कें बुझलनि बहुत पहिनहि आ तें संकलित केलनि लोककथा कें।

लोककथाक संकलित साहित्य सब विकसित भाषा मे बहुत समृद्ध छैक। ए. के. रामानुजन लिखित अंग्रेजी किताब Folktales from India, जाहि मे भारतक बाइस भाषाक चूनल 110 टा लोककथा छैक, एतेक उपयोगी भेलैक जे ओकरा बंगला अनुवाद केलनि महान विदुषी लेखिका महाश्वेता देवी। एकर मैथिली अनुवाद सम्भवतः नहिए भेल छैक। बंगला भाषा मे अनेको पुस्तक छैक लोककथा विषय पर। तथापि महाश्वेता देवी सन महान साहित्यकार ए. के. रामानुजन लिखित अंग्रेजी किताब के बंगला अनुवाद केलनि। बाइस भाषा मे ई नहि मानि बैसबैक जे मैथिलीओ छैक। एहि अंग्रेजी किताब मे मैथिलीक कोनो कथा नहि छैक।

छिड़िआएल लोककथा सब कें एक ठाम लीखि कए पाठक कें परोसि देब महत्वपूर्ण योगदान बूझल जेबाक चाही। रामलोचनजी अपन एहि पुस्तक कें समर्पित केलनि मैथिली लोकसाहित्यक अनन्य उपासक डा० ब्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’, राजेश्वर झा आ अणिमा सिंह कें। एहि मे कुल 36 गोट कथा

छैक, सब रुचिगर। विध-विधाताक खिस्सा सँ लऽ कए समाजक प्राय: सब वर्गक प्रतिनिधित्व छैक एहि संग्रह मे। ठक, आलसी, चतुर, सेठ-साहूकार, लोभी, दानी, विद्वान आ महामूर्ख सब के खिस्सा भेटत अपने कें एहि संकलन मे। मैथिली लोककथाक छोटमोट संकलन पहिनहु प्रकाशित भेल छलैक किन्तु एतेक पैघ नहि। पाठकवर्ग सेहो एकर महत्व कें बुझलक आ पुस्तक के पहिल संस्करण जल्दीए शेष भऽ गेल। तखन 2006 मे आएल दोसर संस्करण। बहुत दिन बाद 2017 मे किछु आर बेसी खिस्साक संग आएल योगानद झा संकलित आ साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'मिथिलाक लोककथा संचय'।

रामलोचनजीक ई प्रयास एकटा अमूल्य निधि भेलैक मैथिली साहित्य लेल। अस्वस्थताक कारण वर्तमान मे ओ निष्क्रिय भऽ गेल छथि। ईश्वर सँ प्रार्थना जे हुनका शीध्रे स्वस्थ कराबथि जाहि सँ मैथिली साहित्यक भंडार मे किछु आर योगदान होइक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

प्रदीप बिहारी-संपर्क-6202140561

मशाल लेने चलैत अग्रदूत

राम लोचन ठाकुर माटिपानिक एकटा एहन कवि, कथाकार, अनुवादक, सम्पादक आ रंगकर्मी छथि, जिनक रचनाक कण-कणसं मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति अनुराग छिटकैत अछि। जें मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकास हेतु आग्रह छनि, तें मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक प्रति सरकारी उपेक्षाक विरोध सेहो हिनक रचनामे पाओल जाइत अछि।

सन् 1987 ई. मे अपन उपन्यास "विसूवियस" क विमोचन समारोहमे कोलकाता (ताहि समयक कलकत्ता) गेल रही। ताधरि भाइ श्री रामलोचन ठाकुर हमरा लेल फड़िछायल परिचित भ' चुकल छलाह। हिनक पोथी सभ, यथा- माटिपानिक गीत, देशक नाम छलै सोनचिड़ैया आ आजुक कविता (सम्पादित) पढ़ि चुकल रही। एतबे नहि, विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे 'कह लोचन कविराय' सेहो पढ़ने रही। 'अग्रदूत' आ 'कुमारेश काश्यप' नामसं कथा आ हास्य-व्यंग्य सेहो पढ़ने रही आ फरिछौट भ' गेल रहय जे अग्रदूत आ कुमारेश काश्यप केओ आर नहि, दुर्घर्ष अग्नि हस्ताक्षर राम लोचन ठाकुर

छथि। एतबे नहि, मुर्तजा हुसैन सेहो यैह छथि। हिनक सम्पादनमे बहरायल नाट्य पत्रिका 'रंगमंच' देखि चुकल रही आ प्रभावित भेल रही। एहन अग्रदूत सं भेंट आ भरिपोख गप करबाक सेहन्ता लेने सेहो कलकत्ता गेल रही। मुदा, दुखित होयबाक कारणें ओ उल्लेखित विमोचन समारोहमे नहि आबि सकलाह। हमहीं हुनका भेंट कर' गेल रहियनि। मिथिला आ मैथिलीक विभिन्न समस्या पर गप भेल छल। रंगमंचक अधुनातन शिल्प पर गप कयलनि।हमरा प्रसन्नता भेल रहय जे हमर ताधरिक अधिकांश कथाक कथावस्तु आ पात्रक नाम धरि मोन छलनि। जे नीक लागल रहनि, तकर बड़ आवेशसं प्रशंसा कयलनि । आ, जे नीक नहि लगलनि, जत' त्रुटि बुझायल रहनि वा कोनो वैचारिक मतभेद बुझायल रहनि, तकर स्पष्ट रूपें आलोचना कयने रहथि। हिनक ई गुण हमरा तहियो नीक लागल रहय आ आइयो नीक लगैत अछि।

नीककें नीक आ बेजायकें बेजाय कहबाक हिम्मति रामलोचन भाइमे एखनहुं छनि। ओ मुंह देखि मुंगबा कहियो ने परसलनि। हुनक ई गुण हुनका बहुतोसं बेरबैत छनि। अपन एहि गुणक कारणें बरोबरि कतिआयल जाइत रहलाह अछि। मुदा तकर परबाहि ओ कहियो ने कयलनि अछि। हुनका लेल अपन सोचक मानदंड बेसी महत्वपूर्ण छनि। हुनका स्वयं पर भरोस छनि। आ तें ओ अपन रचनामे आ व्यवहारमे परम्पराक रूढ़िकें तोड़ैत रहलाह अछि।

राम लोचन ठाकुर एकटा एहन गीतकार छथि, जे अपन गीतसं मिथिलाक बिसरल जाइत उत्सवकें मोन पाड़ैत छथि। बिसरल जाइत खेलकें अपन गीतक विषय बना ओकरा जिअ'बैत छथि। 'माटि पानिक गीत' नामक संग्रहमे देखल जा सकैत अछि जे हिनक प्रत्येक गीतक आखर-आखरसं मिथिला आ मैथिली अनुगुंजित होइत अछि। एहि संग्रहक खेल शीर्षकसं

लिखल गीत हो वा कोनो आने, ऊपरसं तं सोझ-सोझ बुझाइत छनि, मुदा भीतरसं मरखाह आ आक्रमक होइत छनि। हिनक काव्य रचना पढ़ने बुझाइछ जे ई सोझे-सोझी बात कहबाक आग्रही छथि। तथापि विषय वस्तुक अनुसार छन्द गढ़बाक हिनक लूरि सहजहिं देखबामे अबैत अछि। कुण्डलिया छन्दमे हिनक रचना 'कह लोचन कविराय' खूबे चर्चित भेल छल।

राम लोचन ठाकुर अपन कविता सभमे मातृभूमि आ मातृभाषाक विकास आ समृद्धि हेतु अपन व्याकुलताक संग देखाइत रहैत छथि। संगहि, वैमनस्य आ वैमनस्यकें प्रश्रय देल जाइत व्यवस्थाक विरोध करैत छथि। अपन रचना सभमे नव निर्माण लेल व्याकुल देखाइत छथि। नव निर्माण लेल रचैत छथि आ विद्रोह सेहो करैत छथि।

ओ आंखि खोलने सभठाम आ सदिखन ठाढ़ देखाइत छथि। सामाजिक व्यवस्था आ सांस्कृतिक मूल्यक क्षरण होअय वा शोषित-प्रतारितक दुख, राम लोचन ठाकुर सभक भंगठी लेल कलम उठौने देखाइत छथि। हमरा जनैत हिनका मोनमे अभाव घुरमुरिया दैत रहैत छनि। जत' अभाव देखैत छथि, तकर निवारण लेल तैयार भ' जाइत छथि, उठा लैत छथि कलम। ई गुण हिनक रंगकर्मी होयबाक कारणें सेहो छनि प्राय:। प्रस्तुतिक उत्कृष्टताक लेल जेना रंगकर्मी नाटक आ रंगमंचक कोनहु काज लेल तत्पर रहैत अछि, तहिना राम लोचन ठाकुर अपन कलम उठौने तत्पर रहैत छथि। आ तें बहुत विधामे रचना कयलनि अछि।

राम लोचन ठाकुर बहुत विधामे लिखलनि। अग्रदूतक नामसं कथा, कुमारेश कश्यपक नामसं व्यंग्य। आदि, आदि। मैथिलीमे जत'-जत' रिक्तता बुझयलनि, अपन कलमसं भरबाक प्रयास कयलनि अछि आ सफल भेलाह अछि। बिसरल जाइत लोक साहित्यकें 'मैथिलीक लोक कथा' नामक पोथीमे

परसलनि अछि।

राम लोचन ठाकुर कुशल अनुवादक छथि। अनुवादक प्राय: दस गोट पोथी प्रकाशित छनि। हिनक मूल लेखक आ अनुवादक, दुनू एक पर एक। हिनका द्वारा अनूदित कृति सेहो मौलिके सन लगैत छैक। एकर प्राय: इहो कारण छैक जे स्रोत भाषासं सोझे लक्ष्य भाषामे अनुवाद करैत छथि। एखनि मैथिली मे बड़ कम अनुवादक छथि, जनिका अनुवादमे संपर्क भाषाक खगता नहि होइत छनि। बांग्लासं अनूदित पोथी सभ छनि। जे महत्वपूर्ण वस्तु अपना भाषामे आनबाक खगता बुझयलनि, जे पूरे इमानदारीसं आनलनि। कहल गेलैए जे नीक अनुवाद वैह, जे पढ़ैत काल अनूदित सन नहि लागय। से, हिनका द्वारा अनूदित नाटक होअय, काव्य संग्रह होअय वा उपन्यास, उत्तम कोटिक अनुवाद मानल जा सकैत अछि। लक्ष्य भाषामे स्रोत भाषाक लोकोक्ति आ मुहावराक सटीक अनुवाद ताकबामे हिनक कारीगरी महत्वपूर्ण छनि। एहन देखल गेलैक अछि जे स्रोत भाषाक समाजक चलन-प्रचलनक अर्थ लक्ष्य भाषाक समाजमे उनटि जाइत छैक। ओहिठामक नीक एहिठाम अधलाह भ' जाइत छैक। ई अनुवादकक लेल चैलेंजक स्थिति भ' जाइत छैक। किछु अनुवादक एकर शार्टकट विकल्प ताकि ससरि जाइत छथि। एहना स्थिति मे अनुवादककें बेसी सतर्क होयबाक खगता होइत छनि। ई कहैत हर्ख होइत अछि जे राम लोचन ठाकुर अपन अनुवादमे एहन कोनो शार्टकट ताकि ससरलाह नहि अछि, जकर बानगी हिनका द्वारा अनूदित उपन्यास नन्दित नरके, पद्मानदीक माझी, कठपुतरी नाचक इतिकथा, अयाचीक संधान आ काव्य-संग्रह 'जा सकै छी, किन्तु किए जाउ' मे देखल जा सकैत अछि।

राम लोचन ठाकुर एकटा कुशल संपादक छथि। जखन बुझयलनि जे कवितामे रजनी-सजनी लिखल जाइत छैक, तं 1984 ई. मे 'आजुक कविता' नामक

कविताक पोथीक संपादन क' कविताक चित्र स्पष्ट करबाक प्रयास कयलनि अछि। एहि पोथीमे सोमदेवसं विभूति आनन्द धरिक तेरह गोट कविक कविताक संकलन-संपादन क' कविताकें वर्तमान परिवेश प्रसूत मानसिकताक प्रतिफलनक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि।

बहुत रास पत्र-पत्रिकाक संपादनक बाद हेबनि धरि 'मिथिला दर्शन'क कुशल संपादन कयलनि अछि।

अपन बेसी पोथीक प्रकाशक ओ स्वयं छथि। ओना मैथिलीमे ई बात मानल जाइत अछि जे लेखक स्वयं प्रकाशक होइत छथि। ई बात सांच सेहो अछि। मुदा, पूरा-पूरी सांच नहि। जाहि समय हिनक पोथी सभ अबैत छल, ताहि समय कलकत्तामे बहुत रास संस्था सभ छल। ई संस्था सभ बहुत रास पोथी छापलक। मुदा...अपन स्पष्टवादी स्वभाव आ ठाहिं-पठाहिं उचित-अनुचित कहैत रहबाक कारणें राम लोचन ठाकुर बहुत गोटेकें नहि पचलाह, बहुत संस्थो कें नहि। मुदा, एहि सभक परबाहि ओ कहियो ने कयलनि। लेखककें असल मान पाठके दैत छनि। से, पाठक हिनको मान-सम्मान देलकनि अछि। खूब पढ़ल गेलाह अछि। अपन धुनमे मस्त अपन उद्देश्यक लेल बढ़ैत रहलाह अछि। साहित्य आ समाजक गोलैसीसं फराक रहैत अखण्ड मिथिला आ मैथिली लेल सोचैत रहलाह अछि। मुदा, एहन-एहन गोलैसीकें इंगित करबामे चुकलाह नहि अछि। काव्य-संग्रह 'अपूर्वा'क स्मृति-चित्र शीर्षक कविताक ई पद देखल जा सकैछ- सुनह वियोगी कान दय भलमानुष के बात। मैथिलीक साहित्य मे सब सं पैघ गतात। राम लोचन ठाकुर ईमानदारीपूर्वक मिथिलाकें मिथिला लिखैत छथि। जिनका सभकें हिनकासं पत्राचार भेल छनि, सभ एहि बातसं सहमति होयताह । पत्र पर लिखल ठेकान पर जिलाक बाद मिथिला लिखैत छथि। जेना, जिला-बेगूसराय (मिथिला)। सभ ठाम एहि तरहक ठेकान लिखल देखैत रहबाक सपनाक संग राम लोचन ठाकुर एखनो जीबि

रहल छथि। अपन क्रान्ति-यात्रामे मशाल बला हाथकें नोतैत जीबि रहल छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कामेश्वर झा "कमल"

<u>श्री रामलोचन ठाकुर आ हुनक व्यापक काव्य संसार</u>

\ श्री रामलोचन ठाकुर आ हुनक व्यापक काव्य संसार !

मैथिली साहित्य में श्री रामलोचन ठाकुर जी एकटा अलगे, विशिष्ट ~~स्थान~~ महत्वपूर्ण स्थान रखैत छथि। बहुमुखी, प्रतिभाशाली, शशक्त, कवि, कथाकार, गीतकार नाटककार, कलाकार, पत्रकार आ संपादक के रूपमे हिनक नाम मैथिली लोक में प्रथम स्थान छैन्ह। एक विशेष विचार धारा के समर्थक श्री ठाकुर जी मूलतः मैथिलीक एकटा रौहनी साहित्यकार छथि जे अपन मैथिली भाषा के अलावा कोनो आन भाषा में नहि लिखलनि, यद्यपि ओ आन भाषा के कविता कथा के अनुवाद करलन्हि ओहो अपनहि मातृभाषा में, ई ठाकुर जीक अपन मातृभाषाक प्रति नेह आ अनुराग छैन्ह, जे विरले कोनो साहित्यकार में पाओल जाइत छैन्ह।

श्री रामलोचन ठाकुर जीक प्रकाशित कविता संग्रह में इतिहास हंता, बेताल कथा, माटि-पानिक गीत, मैथिली लोककथा देशक नाम छलै सोन चिड़ैया, अपूर्वा, आ अनुवाद-नाटक, आठआर आ फाँस, कविता- प्रतिध्वनि आ जो सकैत छी किन्तु किए जाउ, संपादन में- आजुक कविता, रंग मंच (नाट्य विषयक पत्रिका,) अग्निपत्र आ सुल्का आदि आदि। उपरोक्त सब टा रचना हुनक बीसवीं सदीक सत्तर दशक सँ लऽ के सदीक अंतराल (एकैसम सदीक पूर्वक) लिखल छैन्ह। हिनक वर्तमानो मे धारावाहिक लेखन में कतेको पत्र पत्रिका में छपल अनेको कविता, कथा, आलेख इत्यादि सब पसरल छैन्ह आ पसरलो जा रहल छैन्ह आधि, ई हुनक आत्मबल, मातृभाषा के प्रति अगाध अनुरागक महत्वपूर्ण प्रतिफल थिकैन्ह। लोकप्रश्न अनुत्तरित हिनक कविता संग्रह, दूहगा तीन मे प्रकाशित भेल छैन्ह।

मिथिला क्षेत्र अंतरगत खजौली, जिला मधुबनीक वाबूपाली (पाली मोहन) क वासी श्री ठाकुर जी अन्य छद्म नाम सँ सेहो लेखन करैत छथि। ओ छद्म नाम छैन्ह- अग्रदूत, कुमारेश काश्यप, मुजतबा अली आदि।

पृष्ठ उलटाउ (2).

Scanned with CamScanner

(2)

बंगाल प्रवासी श्री ठाकुर जी स्थानीय बंगला साहित्यकार सँ विशेष प्रभावित भऽ अनेक जे किछु रचना कयलन्हि अछि, ताहि में ओ अपन मातृभूमि, भाषा, संस्कृति, सँ कतहु सम्झौता नहि कयलन्हि अछि। हिनक कविता में विशेष क के गरीब, गरीबी, किसान आ मजूर वर्गक प्रति, दुर्व्यवहार शोषण आ घृणा के विरुद्ध आवाज उठाकऽ एवं उभरैत भेटैत अछि। एहि संदर्भ में हिनक तमाम महत्वपूर्ण कविता संग्रह में एकटा छन्द कविता छन्हि, अपूर्वा जे सन् 1996 में प्रकाशित भेल छन्हि।

अपूर्वा हिनक छन्दमय कविता-गीतक संग्रह छैन्ह जाहि में अड़तालीसटा (48टा) कविताक संकलन छैन्ह। एहि छन्दमय कविता संग्रह में कवि ओ अपन माटि-पानि, भाषा, संस्कृति के गुनगान करैत, छथि तँ दोसर दिस, मैना गुटकाक बेल, गीत, आ नवतुरियाके कयनै छथि आह्वान देशक, समस्या, पलायन, गरीब, गरीबी, किसान मजूरक शोषण के विरुद्ध आवाज उठौने छथि। अपूर्वा मात्र अड़तालिसटा कविताक संकलन नहि कहल जा सकैत अछि अड़तालीस करोड़क कविता संकलन सन लगैत छन्हि। ई कविता संग्रह जाहि समय में प्रकाशित भेलन्हि, तखुनका तात्कालिक समय में घटना पर आधारित कथा छलैन्ह, से ओ आजुको समय में प्रासंगिक अछि।

पोथी कविता संग्रह अपूर्वा में कवि ठाकुर जी सबसँ पहिने अपन माँटि-पानि के नमन करैत प्रथमहि देश वंदना में स्तुति गबैत छथि —

जननी आ जनम भूमि स्वर्ग सँ महान
जय-जय मम मातृभूमि शत-शत प्रणाम।

एहने विलक्षण देश वंदना प्रायः बहुत कम कवि छथि जे अपन मातृ भूमि के प्रणाम क कविता गीत प्रारंभ कैल छथि.. मातृभूमि के प्रति अगाध नेह कवि ठाकुर जी के हिया में कोना बसल अछि बुझल एहि पोथी सँ पाठक लोकनि बुझि जाय होयतनि..।

क्रमशः...(3)

Scanned with CamScanner

(3)

देखू वैदेहीक कथाकोसा पृष्ठ पर कवि ठाकुर जी स्मृति चित्र सँ ओहि आदरणीय मिथिलाक मानीषी लोकनि के मोन पाड़ैत आ हुनक कृतित्व के स्मरण करैत, आदर आ सम्मान संग कहै छथि...

पाद ज्ञानक महिमा करित जित मैथिलिक ज्ञान
जनिक प्रसादातैं बनल मैथिली हमर महान –.

कवि एहि प्रसंग में आगू बढ़ैत पुनः वैसा स्मृति चित्र के – मुरलीधर, रास बिहारीक कृति विलेति, भाषाविद् ग्रियर्सन, नगेन्द्र नाथ गुप्त समेत बहुतो आर मैथिलीक साहित्यकार के प्रति सम्मान आ आभार प्रकट करैत हुनकों लोकनिक मैथिली भाषा, संस्कृति के प्रति अवदान के लेल, धन्यवाद स्वरूप आदर संग मोन पाड़ैत लिखइ छथि: —

चिर नमस्य गिरिराज सन महत् जनिक व्यक्तित्व।
भाषाविद् ग्रियर्सनक अमर नाम कर्तित्व;
प्रबल पक्ष धार मैथिलीक प्रखर जनिक व्यक्तित्व,
भाषाचार्य सुनीति कैर चिर अम्लान कृतित्व।

एहिठाम कवि ठाकुर जी मिथिला केर जे संस्था छैक, जे आरिनि लोकनिक प्रति आदरभाव थी, तकरा सम्मान दै मिथिला के गौरान्वित करबाक आह्वान करै छथि। ओ एहिठाम नहि थमाकि के एहि प्रसंग में अपन समानधर्मी कवि, साहित्यकार के सेहो सम्मान दैलनि आछि। ओ लिखैत छथि: —

(1) मीन प्रफुल्ल कुमार पुसि सिंह स्वभाव स्वतंत्र.
बैसि आम्रपाली गुफा धोफालि लौकिक मंत्र.
नाटक कविता कलकत्ते स्वयं हैदराबाद
नचिकेता छथि क ए रहलाह के, ख, के अनुवाद - - - -

ओ चित्र-विचित्र शीर्षक में लिखै छथि - -

(2) लोक करबैए देश के महगी छुआय आकाश
पड़ा रहलए गरीबी नेता कैर उल्लास.

(3) गणतंत्रक स्वरिहान मे, पसरल धूंह धूंह,
चोर बजैए जोर सँ साधुक जावल मूँह।

पृष्ठ उन्टाउ (4) →

Scanned with CamScanner

(४)

एहि ठाम कवि ठाकुर जी जे स्वभाव सँ मन वचन कर्म सँ गरीब, बेरोजगार, कृषक जे शोषित वर्ग आछि तकरा पर पाठक के ध्यान आकृष्ट करबैत छथि। तात्कालिन सरकार के उपर क्षोभ, आ कटाक्ष के लिखलन्हि आछि, हिनक आनक वेदना एहि उपरोक्त वर्गक प्रति सरकारी अवहेलना सँ हिया दरध भ गाइत छैन्ह, पचास दशक पश्चात कमोवेश भारतीय, सरकारी व्यवस्था ओहिना आछि। ओतहि मैथिलीक जे दुर्दशा भेल आ एखनो मे रहल आछि ताहि पर आ क्षोभ, चिन्ता प्रकट करैत लिखैत छथि :-

दूर स ढोल सोहाओन कहबी छैक पुरान,
किन्तु मात्र कहबीए नहि सुनिओ रहलहुँ कान।
सुनियो रहलहुँ कान आँखि सँ देखि रहल छी,
मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहब की।—

ओहि ठाम ओ चित्र विचित्र रूप मे सरकारी तंत्र, मे भाइ भतिजावाद, अशिक्षा पर कटाक्ष करैत लिखै छथि:—

एकसम अताह्दी कोल दौलता बाढ़
अखनि देशक बढ़ि रहल गद्दीवादि आबाढ़,
कुड़िबक हो बेटा बनय टका पावि बुधियार
सिट्टी जानु कुसियार के धुच्छ कुर्द बेकार।— —
विद्यापति के पर्व मे विद्यापति टा बाद
सभ आपैत पाति मंच पर व्यक्तिक वाद-विवाद।

मैना भुटकाकुलैल जे बाल्य गीत ओ लिखलन्हि आछि निश्चित रूप सँ एहि पोथीक बेसी महत्व बढ़ि गाइत छैक, मिथिलाक पारंपरिक बाल्य गीत के नव स्वरूप एहि पोथी मे समावेश कँ एक नव प्रयोग के सुन्दर सन प्रस्तुति बहुत विलक्षण सन लगैत छनि बालोपयोगी गीत जे छैन्ह ओ आछि —

i) चैत कबड्डी आबड़ छी, तोरा लय किछु नाबड़ छी
जनय कहैं छै शंगा कमला तकरे गीत सुनाबड़ छी ....
ii) चैत कबड्डी रमना समहबु एकहि अँगना .....

पृष्ठ - ५। उन्नाउन;
→

Scanned with CamScanner

प्रष्ट ५-

iii) अटकन मटकन दहिया चटकन
बाजइ छी हिन्दी तँ मारु चटकन . . . -

iv) आम छु अमरौरा छु तिमन छु तिलकोरा छु
सावधान सँ रहिहे बौआ, भाषोमे हिन्दीक छु . . .

एहि बाल्यगीत मे कवि ठाकुर जी मैथिल नेना सभ के अपन संस्कार सँ अवगत करबैत आ संगहि हिन्दी भाषा सँ दूर रहैक लेल सावधानो करैत छथिन्ह। हुनका कतहु ने कतहु ई बुझाइत छैन्ह जे हिन्दी भाषा हमर मिथिला भाषा संस्कृति संस्कार सँ खेलवाड़ करैत अछि। मैथिली भाषा पर आघात करैत आबि रहल अछि। ओ मिथिला क नवजवान (नवतुरिया) के सेहो हिन्दी सँ सावधान रहैक आह्वान करैत ओ, आशु, कविता क शीर्षक,- फेर कन्हुए छौ तोरे पर, छौ तकरे इतिहास, उठी गोटी मोर पचास, आ क्रान्तिक आह्वान मे लिखैत छथिन्ह: —

i) दियअ- दियअ ता . मात्र सँ . कतहु नहिं अधिकार
बचलो ता बुद्धि जाइत छैक सेहो थिकै संसार - - :

ii) ओमन आइ कत छानी घास, उठी गोटी मोर पचास - - . .

iii) किछनी कटल कौ तुरुमा फुलेल कौ फेर कन्हुआइ छौ तोरे पर =

iv) गरदनि दुबा दे गो खरवास करौ सीमा पर
बढ़बौ जो पाएर तँ बज्जारि डाँर तोरि दे - - - - -

एहि तरहक कविताआ गीतक माध्यमे कवि ठाकुर जी एक तरहे सँ शत्रु के ललकारैत, के लिखओ ओकरा पछाड़ि देबाक लेल नवतुरिया के मिथिलाक प्रहरी के रूप मे ठाढ़ करैत छथि।

शस्य श्यामला मिथिलाक धरती पावने टा नहिं भौगोलिक रूप सँ सेहो प्रसिद्ध अछि, एकर समतल धरती सभ तरहें उपजाऊ अछि, आम, लीची, मखान सँ लऽ के उपजा धान, मसूरी प्रचुर मात्रा मे उपजैत छैक, एहि ठाम कवि ठाकुर जी के मिथिलाक प्रति अनुराग पूर्णरूपेण परिलक्षित भेल देखाइ छैन्ह, ओ आशावादी छथि जे मिथिलांचल के जे संकट छै ओ कहियो ने कहियो अपन सत्ता हस्तगत करत, ओ एकरा लिखैत छथि . . .

प्रष्ट (क) उन्टाउन —

+00025

Scanned with CamScanner

(पृष्ठ→५)

(I) मिथिलाक माटि भाव भंगा मैथिली कहै
ज्ञान हास युग नवीन के नवीन नै गढ़ै - - -

II) हमरे शिर राज मुकुट कर हरखु लागनि
हमर टा होइछ गाछ वृक्ष पशु चास वास कै पावनि : —

III) धरती जगती छथि अन्न पानि जुटबै छथि . . . .
- - - - हम मिथिलावासी . — -

हम ज्ञान [illegible] सीखब कविता शीर्षक मे कहै [illegible] छथि - -
अखन बँटा चमारक लोही हमर साखी अइ
सदा शान्तिप्रिय मैथिल तकर इतिहास साक्षी अइ . . . —
शीर्षक कोशी कमला कविता मे एकठाम कहै छथि

IIII गुजर साग पर कयल अपनौ गर्व हमर
साग पात आधार वनल आधि मिथिला मे . . . .

धन कटनीक गीत मे ओ गबैत छथि
चढ़ा लै रखो बुधना तों हँसुआ पर शान रखो
हँसुआ मे गाम अपन हँकुए परान रखो - - - - - -

लेनिन सिद्धान्तक समर्थक, सर्वहाराक कवि ठाकुर जी अतय ठाँहिया
ठाँहि प्रश्नोत्तर देबाक क्षमता रखैत छथि, ओतहि हुनक हिया मे
कतहु ने कतहु प्रवासीक नाम पर टीस मारैत छनि ओ स्वयं
प्रवासी छथि, तोहि पर हुनक जे विरह गीत छैन्ह, सुनल जा
सकैत अछि।

I)
हाइ हो जी,
बाटी रे बयस हो सैयद शोलह विदेशिये
बीति गेलै बारह बरीसे जी। - - - —

II)
सािथ है हम की गायक गीत
अजगुत छै विधना के लीला
अजगुत जग के रीत। - - - - - —

कवि ठाकुर जी अतय अपन देशक पिछड़ापनपर चिन्ता करैत छथि
तँ ओतहि किछु लोक के मनोभावपर व्यंग्य सेहो लिखैत छथि

उत्सव मनावी कखन कखन वा शोक
तकरो नहि बोध रहय ओहनो किछु लोक — —

पृष्ट (6) उत्तरार्ध...

Scanned with CamScanner

(पृष्ठ (6))

के हिसाब देत. कविताक माध्यमे तात्कालीन सरकारक
डपोरशंखी भाषण पर ओ व्यंग्य करैत लिखैत छथि -
नेता कहैछ देश उन्नति के शिखर चढ़ल
अवनति कतेक कयल गेल के हिसाब देत ?
तें ओ "चुप्प छी" मे लिखैत छथि - -
कहबाक छल बहुत किछु हमरा लग
मुदा हेबाक अइ सोचि सैंट चुप्प छी - - - -
ओहिनाक ओ मुन मसोसि के रहि जाइत छथि
आ 'भाषा' नामक मेल लिखैत छथि, शीर्षक छनि -
'आजमि ने जाइ छइ'
किछु गीत एहन होइत छइ
गाओल ने जाइ छइ
किछु चीज एहन होइ छै
पाओल नहि जाइत छइ - - - - -

कवि ठाकुर जी अतुकांत मे बहुत सुन्दर भाव व्यक्त कैलनि
लिखलखिन्ह आछि, ओइ मे रहस्य, कटाक्ष, व्यंग, आ आक्रोश
व्यक्त कयने छथि। -
हिनक पोथी अपूर्वाक अंतिम कविताक शीर्षक बाट अहाँक ताकब
मे मार्मिक बातसा लिखने छथिन्ह : -
(1) हम रहि वा ने रही याद हमर बाँचत
मजीन स्कुल बाट जकाँ बाट अहाँक ताकत .

शत्रु संग युद्ध करब उचित सभ कहैत छथि
मुदा मित्र केर संग मूर्खता करैत छथि
कतौ रहब हम करब कुशलक कामना
स्वागत हो सौंसार करी तजि शुभ भावना।
हम ने बेर बीतल जे घुरि के फेर ताकत - - - - -
ओहिनाक कवि ठाकुर जी भावना मे बहि पाठक के सोचबाक
लेल छोड़ि देल आछि, पाठक एहिनाक कविक भावना के बड़ा
गंभीरता सँ सोचइ लेल मजबूर भ' जाइत छथि जे ओहिनाक
कवि, हतास, निराशा तेँ न भ गेलाह ; आछि, भावना मे बहि कवि

पृष्ठ -(7 पर) उनटाउब -

Scanned with CamScanner

पृष्ठ(८) ।

मित्रक संग वैमनस्यता, वा गुमच्छ मे कोनो अपराध केने होइथ ताहि पर पश्चाताप करबाक लेल स्वयंकेँ दोषी मानैत मित्रकेँ सत्य सँ अवगत करबैत, वैमनस्यता के धुन्ध के दूर करबाक लेल यथासंभव प्रयास कएलनि अछि। कोनो पोथीक संपूर्णता प्रदान करैमे अंतिम कविता शीर्षक महत्वपूर्ण होइत छैक अहिठाम "बाट अहाँक ताकब" कविता, पोथी अपूर्णा के ओहिना सही रूप मे महत्वपूर्ण आ अविस्मरणीय बना देलखिन्ह अछि।

कवि रामलोचन जीक काव्य संसारक व्यापकता के जौँ बात कएल जाए तँ ओ बहुत विस्तृत छैन्ह, मात्र एकटा दू पृष्ठ पर रचिता के समीक्षा नहि कएल जा सकैत अछि, हिनक कविता के लेल सक्षम आ विद्वान समीक्षक के समीक्षा करबा मे एकटा पोथी तैयार लिखा सकैत अछि जे नवतुरक लेल शोध करबामे सहायक होएतन्हि। अहिठाम हम संक्षिप्त मे हिनक छन्द कविता अपूर्णा के यथा संभव अवलोकन कऽ किछु लिखि सूर्य के दीया देखेबाक धृष्टता कएल अछि। कोलकाता प्रवासी श्री ठाकुर जीक शुरुसँ जीनगीक बाट पर कतेको कष्ट, मान-अपमान, यश-अपयश, सहलाह, मुदा रचिता के एक बात के ओ मैथिलीक सेवाक लेल, सभ सहि मात्र अपन जीवन सँ मैथिलीक पेटार भरैत रहलाह अछि। एखनो ओ एहु अवस्था मे मनक जोश, आत्मबलक बलेँ लेखन कार्य मे लागल छथि। मैथिली आन्दोलनी कृतिक हुँकार, ललकार सँ दिल्ली, पटना एखनो डरैत अछि।

हमरा सभ हिनकर उत्तम स्वास्थ्य, चिरायु हेबाक कामना माँ मैथिली सँ करैत छी. जे हिनक आशिर्वाद हमरा लोकनि के सदति भेटैत रहय।

जय मैथिली।

"कामेश्वर झा कमल"
ग्राम+पो० मिथिलादीप
जिला मधुबनी - मिथिला
कोलकाता वर्तमान पता - 29बी रएड स्ट्री
स्कुलरी ज्वाइण्ट
700025
सम्पर्कित यंत्र नंबर: 9434485762

Scanned with CamScanner

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ कैलाश कुमार मिश्र-संपर्क-9810326983

रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

कोलकाता मिथिलासँ बाहर बहुत झमटगर सृजन भूमि रहल अछि मैथिली डायस्पोरा लेल। एकर स्पष्ट कारण शायद ई रहल अछि जे लोक कोलकाता तँ जरूर जाइत छलाह काजक तलाशमे मुदा आत्मासँ गामे रहैत छलाह। ऊपरसँ ओहि भूमिमे भेंट जाइत छलथिन गामक लोक, दोसर गामक सम्बंधी, हित-मित्र, जानकार आ कियोक नहि तँ मैथिली भाषा बजनिहार। बस भऽ जाइत छलनि आप्त प्रेम, सरोकार,परदेसमे अपन देसक लोक आ बात विचार। फेर बनि जाइत छल अड्डा नौकरीकेँ बादक नौकरी तकबाक भऽ जाइत छल ओ स्थान रोजगार कार्यालय। सब पुरान लोक लागि जाइत छलाह अपन-अपन तरीकासँ नौकरीकेँ जोगारमे। आ शुरू भऽ जाइत छल कविता साहित्य, नाटक, आदिक निर्माण । ई सब एहि लेल होइत छल जे लोक अपन गामक कमीक अनुभव नहि करथि। ओहुनासँस्कृति स्वभावसँ नॉस्टैल्जिक होइत अछि। नोस्टाल्जिया तखन अपन प्रभाव देखेतैक जखन लोक अपन जड़िसँ फुनगी दिस बढ़तैक। कोलकातामे सएह भेलैक। रामलोचन ठाकुर

ओहिपरदेसमे देसक खोज करैत छलाह। मैथिली जेना हुनका भंगिया देने होनि! लगातार रचना आ बादमे पत्रिका केरसँपादन आ देखरेखमे व्यस्त रहला। की-की कएलनि से किनकोसँ छुपल नहि अछि।

आब अबैत छी रामलोचन ठाकुरक एक पोथीपर। पोथीक नाम छैक "मैथिली लोककथा"। नामे ज्ञाने ई कथा नेनपनसँ लेखककेँ सुनल कथा केर स्मरण करैत लिपिबद्ध करबाक यत्न कएल गेल छैक। निश्चित रूपसँ ई उत्तम प्रयोग आ पोथी छैक। कथा लोकक छैक। लोककंठसँ सुनल छैक तँ स्वाभाविक छैक जे कथापर लोकक अधिकार छैक। अहि पोथीमे कुल जमा 36 कथाकसँचयन छैक: 1. हिरामनि सुग्गा 2. अबकी बेर फतंग 3. महाराज बिक्रमादित्य4. गदहा खेने कोनो ने दोष 5. एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया 6. काजरि7. सदबा-बदबा 8. एकटा बुढ़िया रहय 9. एकटा गरीब बाभन रहथि 10. नारदमुनि आ सांप 11. लाल बुझक्कर 12. जामुन अन्त न पाबेउ 13. राभणो नतु रावण 14. मीतारे 15. ठठपाल 16. एकटा रहथि राजा 17. एकटा गरीब बाभन रहथि18. महाकाली19. पतिबरता 20. एगो रहथि राजा 21. चिन्ता रोग 22. हम देवी चंडिके23. एगो रहए जोलहा 24. चतुर भागिन 25. चिल्हो सियारो 26. शीत-बसंत 27. हंसराज-वंशराज28. झोड़ाकपरताप 29. मोहन बरही 30. पड़ोसियाक दुनू 31. चारबाह राजा 32. अहदी 33. कुल्टा34. दिलजान साहु35. गल हस्तेन धोधरः 36. लिखलाहालोक बहुत सहज आ बहुत जटिल शब्द छैक। एकरा सब कियोक बुझैत छी आ सब कियोक भ्रममे रहैत छी। एहेने भ्रमक स्थिति रामलोचन ठाकुरकेँ छनि। ओ पहिने शास्त्रीय, प्रमाण, हिंदी साहित्यक प्रमाण आ वैश्विक प्रमाणसँ लोक शब्दक व्याख्या सन्दर्भ-कथामे (अथवा भूमिका) करैत छथि। वृहद्विष्णुपुराणसँ शुरू करैत, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति होइत हज़ारीप्रसाद द्विवेदीसँग मैक्सिम गोर्की तक केर भाव स्पष्ट करैत हुनकर लोकक भावसँ पाठककेँ अवगत करेबाक लघु किन्तु गंभीर प्रयास करैत छथि. मुदा एक बात,

हमरा बेर-बेर एना बुझना गेल जेना ओ लोकक अर्थ ओहेन जन सामान्यसँ बूझ‍ि रहल होथि जे बहुत शिक्षित आ विकसित नहि होथि। ई लोकसँग साहित्य आ तथाकथित एडवांस विषय अथवा शास्त्रीय विचारधारा केर विद्वानक वायरस जकाँ अछि। लोक, लोककथा, लोकविद्या अलग-अलग बात भेल। लोकविद्या ओ विधा भेल जाहिमे लोक ज्ञान, लोक ज्योतिष, लोक चिकित्सा, लोककृषि, लोकगीत, लोकसँगीत, लोककथा, जेंडर स्टडीज, नूतन प्रयोग, श्रृंगार, समाज आदिक बातपर विचार होइत अछि। जकरा ई लोक कहैत छथि तकरा पश्चिमक लोक पोपुलर कहैत अछि। तखन लोक की भेल? लोक भेल एक निश्चित भूभागमे रहय बला मानव समुदाय जे अपन भाषा,सँस्कृति, प्रकृति, स्थानीय ज्ञान, परंपरासँग रहैत अछि जाहिमे स्त्री, पुरुख, बच्चा, बुढ़, सब कियोक अबैत छथि। जाहिमे माटिक लोक आ माटिसँ बाहर रहनिहार प्रवासी सेहो अबैत छथि। आजुक युगमे लोक एक प्रजातान्त्रिक समूह छैक। आजुक युगमे एक व्यक्ति लोक छथि आ वैह मॉडर्न अथवा शास्त्रीय सेहो छथि। तखन लोक भेल की? लोकक मादे ई प्रश्न एखनो ठाढ़े अछि।

लोक कहीं ओ तँ नहि जे लिखल नहि हो? आ शास्त्र ओ जे लिखल हो? नहि, ईहो बात नहि अछि। उपलब्ध ज्ञान आ डाटाबेस कहैत अछि जे मौखिकपरम्परा आ लोक अलग-अलग बात अछि। कतेक मौखिकपरम्परा एहेन अछि जे लोक नहि अछि, आ कतेक लिखितपरम्परा एहेन अछि जे लोक अछि। उदहारण स्वरुप वेद, उपनिषद तँ श्रुतिपरम्परा अछि मुदा लोक नहि अछि। सुकरात कहियो अपन बात नहि लिखलनि। ओ बजैत रहला आ हुनक शिष्य सब सुनैत रहल। ओ कहैत छलाह जे लिखलासँ ओहि बातक उपयोगिता खत्म भले नहि होइक लघु अवश्य भऽ जाइत छैक। ओ लिखित ज्ञानकेँसँग्रहालयमे राखल मृत वस्तुसँ तुलना करैत छथि। आर-त-आर

रामलोचन ठाकुर जीक अहि पोथीक अंतिम कथाक नाम छनि "लिखलाहा"। लिखब केर अर्थ भेल ठोस प्रमाण; अंतिम सत्य; शब्द ब्रम्ह; अथवा तुलसीदासक रामचरितमानसक प्रसंगसँ बात करी तँ सत्यम शिवम् सुन्दरम। मुदा लिखब सेहो लोक भेल। विद्यापति अपन गीत अवश्य लिखने हेताह। बादमे ओकर महत्ता देखैत लोक ओकरा अपन कंठक चिपमे सदा सर्वदा हेतु सेव कऽ लेने हयत। ई भ्रम ओना तँ बहुत ठाम अछि मुदा भारत आ विशेष रूपसँ मिथिलामे अधिक अछि कारण जे लोकपर फोकलोर, एथनोग्राफी, मानवविज्ञान आदिक विद्वान सब काज नहि कऽ रहल छथि। अतेक स्पष्टीकरण देने बिना हम अपन बात कें आगा नहि कहि सकैत छी। ताहि कनि चर्च कएल।

आब पुनः पोथी दिस बढैत छी। कथा लिखित हो अथवा श्रौत जखन लोकमे अबैत छैक तँ लोक ओहि कथाक मूलकेँ रखैत अछि आ अपन ज्ञान, शब्दावली, भाव, भंगिमासँ ओकरा अपन अंदाजमे प्रस्तुत करैत अछि लोकक मादे मौखिक कथा सब दिन सब ठाम, नव शब्द सबसँ नित नूतन स्वरुप ग्रहण करैत छैक यद्यपि कथाक मूल भाव शास्वत रहैत छैक। लोककथा (वाचन कथा या कथा वाचन) मूलतः तीन ढंगसँ लिपिबद्ध होइत अछि:पहिल, ओहि समाजसँ कोनो बाहर केर व्यक्ति द्वारे। ई काज मानवविज्ञान, फोकलोर अथवा एथनोग्राफी केर लोक करैत छथि। हुनका एहेन ट्रेनिंग रहैत छनि जे जाहि तरहे कथा वाचक हुनका सुना रहल छथिन तहिना ओ लिखथि। ओहिमे कोनो तरहक सुधार अथवा अपना दिससँ किछु नहि जोड़ैथ।सँभव हो तँ एक कथा अलग-अलग व्यक्तिसँ सुनिक लिखथि। दोसर, कतेक स्थिति एहेन होइत छैक जखन लोक अपन समाजमे काज करैत छथि। मुदा हुनकासँ आशा ई रहैत अछि जे ओ ई बिसरि जाथि जे ओ ओहि समाजक हिस्सा थिकाह। आ गंभीरतासँ ओतबे लिखथि जे कथा वाचक अथवा वाचिका कहि रहल

होथि। ई कनि सहज काज नहि छैक। लोक नहियो चाहैत पूर्वाग्रही भऽ सकैत छथि। एहि तरहक काज करेबला लोककेँ ऑटो- अन्थ्रोपोलोजिस्ट कहल जाईत छनि। चंदा झा आदि विद्यापति गीत लोकसँ सुनबाक क्रममे अहि धरमक पालन नहि कऽ सकल छलाह। मुदा तकर प्रयोजन अते नहि अछि. अहिपर विस्तारसँ कहियो लिखब.

तेसर, एहेन जे जखन लोक अपन समाजमे प्रचलित सुनल कथाकेँ बहुत दिनक बाद अपन स्मरणसँ लिखैत अछि। रामलोचन ठाकुर तेसर श्रेणीक लोक छथि। हिनको कथावाचक कहल जा सकैत अछि। कहल की जा सकैत अछि, ई छथिए। जेना कोनो कथा वाचक कथाकेँ अपन भाव, भंगिमा, आ शब्दावलीसँ मनोरंजक आ प्रभावी बना सुनबैत अछि तहिना ई कथा सबकें अपन श्बवालीसँ सजेने छथि। ओहिमे व्याकरण, आ श्ब्द्संयोजनासँ आकर्षण उत्पन्न केने छथि। ताहिं हिनक कथा मूल कथा बुझल जाए। उपरसँ अपन दाई पितियाइनसँ सुनने छथि से ई स्पष्ट करैत अछि जे कथापरम्परासँ एक पुस्तसँ दोसर पुस्त दने चलैत हिनका लग आबि गेल छनि। आब ई कथाकेँ कहि कऽ नहि लिख कऽ अपना पीढ़ी आ आबय बला पीढ़ीकेँ शास्वत प्रमाण केर रूपमे हस्तांतरित कऽ रहल छथि - चरैवेति- चरैवेतिक निनादसँ कथा बढ़ि रहल अछि।कहैत चली जे रामलोचन ठाकुर बहुत साकांक्ष भेल कथा लिख रहल छथि। कोनो कथा एहेन नहि भेटत जाहिमे ठोस आ ठेस मैथिली केर शब्दावली नहि भेटत। नीक तँ ई हएत जे आलेख केर अंत मे हिनका द्वारे व्यवहृत ठेठ शब्दक एक ग्लोसरी बना दी। मुदा ताहि अवस्थामे अएबाक हेतु अहि पोथीपर कमसँ कम तीन खेप लिखनाई जरुरी अछि। प्रमाणक रुपमे किछु शब्द कें देखल जा सकैत अछि:“पातर, ओजीर, भोजन-साजन, हेट, दिवड़ा भीड़, पएर दाबि, पहरुआ, दू टूक, करमान, कौआ टाहि, ईतस्ततः, फुरफुरा क उठल, यार कें बाझ,हरलनि ने फुरलनि, टहाटही, मन मेछंत, चौर-

चाचर, लहालोट, अहर बीतल, पहर बीतल,ठकमुरी,घेंट,चिड़ै मड़ा कें,डिगडिगिया,हरबिड़रो,सीधा सम्मर,नग्र,बिसनाइत,पहरू सभ,फूलें-फलें माति उठल,गाजु,पोखरिक भीड़,ले बलैया,खा लौक,कन-साग,गदहा बौरि गेल,मिस पड़ै छल,गदहा डोभ चरन्त, झी-चाकर,बोरसी,धुरखुर,बरबरना,लगे दाढ़ी पड़ोसे छूरा,कपारपर टिटही मरडाइ छइ,उफांट,पतिया-पराछुत,किछु मुनियां,चीन,फूजल ऊक,खलोदर,दरेग,अगहरी पात,मन मेछंत,तरबाक लहरि टिकासन,ठेसी,मकुनीहाथी,डांरथि,चुट्टीक धारी, सितुआ चोख"एखन अतबे अहि पोथीपर लिखब सहज बात नहि अछि। एकर अनेक बिंदु, कहबाक शैली, बातक प्रमाणिकता, आ लेखक महोदय केर निष्ठा किछु एहेन बात अछि जाहिपर गंभीर भेने नहि लिखल जा सकैत अछि।

आब कथा दिस फेरो बढ़ी। जेना-जेना हिनकरसँकलित आ हिनक मस्तिष्क केर मेमोरीसँ निकसल कथा सभ पढ़ने जायब, एक पाठकक रूपमे लोक सङ्ग लोक भेल जायब। जेना लोकमे होइत छैक तहिना हिनको कथा सभमे प्रकृति अर्थात चिड़ै चुनमुन, जानवर सब बजैत छैक। बाजब प्रमाण छैक। अतेक ठोस प्रमाण जे प्रकृति केर मानवीकरण कखनो अहाँकेँ बनाबटी अथवा अनसोहात सन नहि लागत। लोककथामे नदीक प्रवाह, बटोहीक चलब, फुलवारी, सब किछु अबैत छैक। धोबिया घाट, ब्राह्मणक दरिद्रता, जोलहाक चतुराई, सब किछु अबैत छैक। लोककथा लोककेँ कथा सङ्ग जोड़ैत छैक। रसद सङ्ग चलैत बैलगाड़ी बनिया आदि सेहो अपन भूमिका सङ्ग रहैत छैक। लोककथा यथार्थक कल्पनाशीलता छैक। अहु बातक भान कथा सङ्ग एक गंभीर पाठक केर रूपमे अहाँ अवश्ये देख सकैत छी। लोककथा अपन भावकसँवेदना अनेक भाषा आ भाषाक प्रसंग जेना की फकड़ा , गीत, दोहा आदिक मादे प्रयुक्त होइत छैक। लोककथा अहि तरहें मोनोलॉग नहि मल्टी डायमेंशनल डायलाग होइत छैक। लोककथा एकरंगी विधवा परिधान नहि अपितु बहुरंगी चुनरी होइत छैक। अतय कनि कम साकांक्ष छथि रामलोचन

ठाकुर जी। ओ गद्य जखन लिखैत छथि ताहि काल ओ अपन भाषासँ अलग लोकक आत्मामे नहि जा पबैत छथि। एकरा एना बुझु: कहियो कखनो मधुश्रावणी कथा सुनने हएब, अथवा गाम घरमे ककरो कथा सुनने हएब। ताहिमे अगर बनिया छैक तँ दोसर भाषा बजतैक। अगर पात्र दोसर भूमिकेँ छैक तँ कथा वाचक (अथवा वाचिका) ओकरा लेल अलग भषा केर प्रयोग करतैक। कथा वाचिक बात कहतैक, भंगिमा प्रदर्शित करतैक। ओ नाटकीयता कनि खटकि रहल छैक। मुदा रामलोचन ठाकुर एकरा लोकक एक ओहेन श्रेणी जे वाचिककेँ लिखितपरम्परामे बदलैत छथि, मूल कें यथावत रखने ओकर विन्यास आ सौंदर्यमे परिवर्तन करैत छथि तँ ईहो स्वीकार होबाक चाही।

मुदा जखने प्रसंग पद्यक अबैत छैक तँ लोकक निश्छल स्वरूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होमय लगैत छैक। उदाहरण स्वरूप "अबकी बेर फतंग" कथाकेँ देखू। ई कथा अपन शब्द शैलीमे स्मरणक पिटारासँ लिख रहल छथि लेखक । जहाँ की पद्य अबैत छैक लोक जेना जागि जाइत छैक:"थप्पा गनि-गनि रोटी पकओलनि गदहा ढोभ चरन्तघोड़ा बांस फसन्त निनिआ कहैत जे नेनिआ आएलिघर-पछुआर मे भुस्सा तइ मे ल गेल मुस्सा अबकी बेर फतंग" (पृ. 25)
एहने सन भाव "गदहा खेने कोनो ने दोष" मे भेटैत छैक। ई एकर किछु मात्रक शब्दक दू आखर पूरा कथाक सीख बनि जाइत छैक। अंतिममे जखन ई कहैत छैक:"तीन राड़ एकसँतोष गदहा खेने कोनो ने दोष"
एकर आशय भेल जे तीन बुरीलेल (मुरखक बाहुल्य) अपन बेबकूफीसँ गलत काज करैत अछि तँ ओहिमे केहेन आश्चर्य! एकरसँदर्भसँ बुझक दरकार होइत छैक।
लोककथा गतिमान होइत छैक। कथा कहनहार आ सूनयबला दुनू गतिशील

होइत छैक। गति सङ्ग जेना ट्रेन अथवा बसक सवारीमे खिड़की लगसँ नदी, पहाड़, झरना, धरतीक वैविध्य अबैत जाइत रहैत छैक आ यात्री गतिशील भेल रहैत अछि तहिना लोककथा केर कथानक पाठककेँ गतिशील बनने रहैत छैक। ई गतिशीलता कनि आरो डायनामिक भऽ जाई ताहि लेल गद्यमे पद्यक प्रवेश होइत छैक। रामलोचन जी बहुत गंभीरतासँ ई बात बुईझ पबैत छथि आ ओ पद्य सब हेरि अनैत छथि। एक उदाहरण "एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया"सँ देखल जाओ:

"बरदबला भाइ !परबत पहाड़पर खोंता रे खोंताभूखे मरै छै बच्चा एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइयातइलए पकड़ने जाइए "।

उपरोक्त पद पूरा कथाक आत्मा छैक आ पारिस्थिकीसँतुलन केर वेद मंत्र जेना काज क रहल छैक। कथाक पात्र मुनिया ई पद्य घोड़हिया, हाथीबला, आ खुद्दीबला सबसँ कहैत छैक आ ओकर समस्या केर समाधान भऽ जाइत छैक।

एक स्पष्ट उदाहरण देखू जाहिमे भावकसँवेदना आ कथ्यक गंभीरताकेँ डायनामिक बना भाषा केर देबार कोना तोड़ैत छैक श्रुतिकथा। ई पद्य "लालबुझक्कर" कथामे भेटत:"लालबुझक्कर बुइझ गिया कि आर न बुझा कोइ।पएर मे उखड़ि बान्हि कें हरिन चरक्का होइ।।"

कथा आगा बढ़ैत छैक। फेरो उपरोक्त पदक प्रथम पंक्ति केर बेस बनबैत दोसर पंक्ति केर मादे बात स्पष्ट होइत छैक :"लालबुझक्कर बुइझ गिया कि आर न बुझा कोइ।पहुँचे लगसँ काइट दो कि अपने बाहिर होइ।।"

आ अंततः कथा अपन यात्राक अंतिम पड़ाव दिस अबैत छैक:"लालबुझक्कर देखितहि बूझकि हो हाथी की अमरूद।"

बात बायोडायवर्सिटी केर लोककथा के मादेसँरक्षण केर बात करैत रही। एकर प्रमाण भेटैत अछि "जामुन अन्त न पाबेउ" नामक कथा मे। ई कथा अपन नामकरणसँ शुरू होइतसँस्कार धरि समस्त स्वरूपमे बायोडायवर्सिटीकेँ

हारमनी प्रदर्शित करैत छैक। कोना लोक शास्त्रपर कखनोकाल बीस पड़ैत छैक आ कोना अपन पारिस्थितिकी ज्ञानसँ अब्बल होइत छैक तकर प्रमाण छैक ई कथा। जखन चारि दोस्त सामान्य वेश भूषामे राजा लग अबैत छैक त शास्त्रीय विद्वान लोकनि ओकरापर हँसैत छथिन। मुदा जखन ओ चारु लोकज्ञानी एक चारि पंक्ति केर पद्य मिल कऽ सुनबैत छैक त सभक होश उड़ि जाइत छैक। पद्य छैक:"जामुन अन्त न पाबेउ पीपर आनेउ नार उमर कटंती जानि क वर तर ठानेउ राड़।" आब कोना एकरा चारि मित्र कहैत छैक से देखल जाओ:"चारु दोस्त उठि क ठाढ़ भेल।पहिल कहलकै --- जामुन अन्त न पाबेउ दोसर कहलकै -- पीपर आनेउ नार तेसर कहलकै -- उमर कटंती जानि कचारिम कहलकै -- वर तर ठानेउ राड़।“ हमरा लगैत अछि ई कथा कनि विस्तृत विवरण आ विवेचना मँगैत छैक। से केना? एना जे किछु लोक जे अनेड़े लोकपर शास्त्र थोपने रहैत छथि आ अपना कें सर्वक्षेष्ठ स्थापित करैत छथि, एहेन लोकपर ई कथा निर्मम प्रहार छैक। ई कथा बतबैत छैक "सावधान भऽ जाऊ! लोक अहाँकेँ विद्याक सम्मान करैत अछि मुदा लोकक ज्ञान अगाध छैक। एकर विशालताकेँ अहूँ सम्मान करू। से नहि करब त लोक कखनो अहूँकेँ धोबिया पाट दऽ देत!"ई पोथी अनेक तरहें उपयोगी छैक। मैथिली साहित्य अनुरागी सब एकरा अधिकसँ अधिक पढ़थि। एकर अनेक पक्षपर बहुत गंभीरतासँ फैलसँ लिखबाक दरकार छैक। एहि पोथीपर एक अखिल भारतीय स्तरक सेमिनार आयोजित कएल जा सकैत अछि। एकर अनुवाद अनेक भाषामे होबाक चाही। हिंदी आ अंग्रेजीमे तुरत होबाक चाही। अहिपर बात होइत रहक चाही। एकर पट दरपरत खुजिते रहक चाही। एक एहेन मैथिली केर साधक रामलोचन ठाकुर जे एकरा अपनसँस्मरणसँ शब्द देलनि तिनका प्रतिसँवेदनशील भेनाइ हमर सभक सम्मिलित जवाबदेही अछि। एहि पोथीपर हम तँ लिखते रहब आरो लोक सब लिखथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रमण कुमार सिंह-संपर्क-9711261789

मैथिली कविताक विद्रोही स्वर रामलोचन ठाकुर

मैथिलीक सुप्रसिद्ध आ निस्सन कवि रामलोचन ठाकुर संघर्षशील आ प्रतिरोधी चेतनाक प्रतिनिधि कवि छथि। ओ मैथिलीक अग्निजीवी पीढ़ीक संभवतः सबसं प्रखर कवि छथि। शिखा प्रकाशन, कोलकाता सं अग्निलेखन सं संबंधित जे साहित्य प्रकाशनक क्रम शुरू भेल छल, ओहि शृंखलाक पहिल पुष्प रामलोचन ठाकुर कें पोथी इतिहासहंता छल। एहि पोथीक प्रकाशनक पछाति मैथिली साहित्य-सरोवरक ठमकल पानि मे भारी हिलकोर उठल। कियैक त अग्निलेखन साहित्य यथास्थितिक प्रति अतिशय असहिष्णु छल। मार्क्सवादी चिंतन सं लैस संघर्ष-चेतनाक निर्माण लेल प्रतिबद्ध अग्निलेखन साहित्य में आक्रोशक तीक्ष्ण अभिव्यक्ति भेल छल। नक्सलवादी आंदोलन सं प्रभावित एहि पीढ़ी केर मानब छल जे नवनिर्माण लेल विध्वंस बहुत जरूरी अछि, कियैक तं सामाजिक-आर्थिक असमानता तखने खत्म भ सकैत अछि। तें कवि रामलोचन ठाकुर अपन कविता मे कहैत छथि-

विध्वंस मात्र विध्वंस

करत जे
पथ प्रशस्त
नव निर्माणक
नइ हैत जतय पुनि
अनाहार वा रंग-भेद
केओ ऊंच-नीच वा
छोट-पैघ। (1)

नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता शीर्षक कविता मे कवि जाहि मंच आ नाटकक मंचन के आख्यान कहैत छथि, ओ कोनो मिथकीय देशकाल केर नाटक नहि थिक, बरू अपने देशक तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक जीवनक वीभत्स यथार्थक आख्यान अछि, जतय दर्शक दीर्घा सं कोनो युवती कें उठा कें मंच पर ल गेल जाइत अछि आ ओखरा संगे लोकतंत्रक अभिनयक नाम पर कयल जाइत अछि सामूहिक बलात्कार। ई कविता पूर्णतः राजनीतिक कविता थिक जे नक्सलवादी आंदोलन केर दमन केर नग्न आ वीभत्स यथार्थ कें संवेदनशीलताक संग प्रस्तुत कयने छथि। एहि कविता कें पढ़ि हमरा महाश्वेता देवीक 1084 की मां उपन्यास मोन पड़ि जाइत अछि। एहि कविता मे ओपन्यासिक अथवा महाकाव्यात्मक विस्तारक संभावना अछि। किछु काव्य पंक्ति द्रष्टव्य अछि-

जखन मंच सं उतरैए
कुनू एक कलाकार
दर्शक दीर्घा सं उठा कें ल जाइए
एगो युवती कें
प्रतिवादी भाइक हत्याक पश्चात
मंच पर कएल जाइए ओकरा संग
सामूहिक बलात्कार

अभिनयक नाम पर
तैयो शांत-एकदम चुप्पी आ
आनन्दोन्मत अभिनेता सभ
क रहल ए गंरिथैया नाच (2)

देश कें आजादी जखन भेटल छल तं आम लोकक मोन मे उम्मेदक नव किरिण फूटल छल, मुदा थोड़बे काल पछाति देशक राजनीतिक व्यवस्था सं लोकक मोहभंग भ गेल आ ई प्रश्न उठय लागल जे एहन तरहक प्रजातांत्रिक व्यवस्था राजतांत्रिक व्यवस्था सं कोन तरहें भिन्न अछि। असल मे जखन सत्ता अधिनायकवादी चरित्र कें अपना भीतर अंगेजि लैत अछि, त ऊ सत्ता मात्र प्रदर्शन पर निर्भर रहि जाइत अछि, जाहि मे ढोल तं प्रजातंत्रक बजाओल जाइत अछि, मुदा ओहि मे जनजीवनक सरोकार कतहु नहि देखार दैत अछि। निहित स्वार्थ पर केंद्रित ई सत्ता नहि मात्र आत्म-मुग्धताक शिकार होइत अछि, अपितु निरीह जनताक शोषण आ दमन सेहो बर्बरता सं करैत अछि। अपन अग्रज कवि आ मैथिली मे अग्निजीवी आंदोलन के दिशा-निर्देशन करय बला कवि सोमदेव जी लेल लिखल अपन कविता अग्रजक नाम/प्रजातंत्र मे कवि लिखैत छथि-

आ आइ
हुनक (प्रधानमंत्रीक) सुपुत्रक जन्मदिनक अवसर पर
अमरावतीक सबसं पैघ
शीत-ताप नियंत्रित होटल मे
विराट पार्टीक आयोजन भेल अछि
कोरमा, पोलाव...
पानि जकां बहि रहल
विदेशी शराब
(कहियो एहि देश मे दूधक नदी बहैत छल)
समाजवादक लेल

गरीबी हटेबाक लेल
प्रत्येक दिन बान्हल जाइछ
नव-नव
प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष कर
आ शांति रक्षार्थ
रोजे होइए पुलिसक तांडव नृत्य (3)

रामलोचन ठाकुरक काव्य-भाषा एतेक विलक्षण आ बेधक अछि, जे सीधे मर्म धरि पहुंचैत अछि आ पाठक कें बेचैन क दैत अछि। हुनक एहि संग्रहक कविता सभक चरित्र भारतीय राजनीतिक व्यवस्था केर जन-विरोधी क्रियाकलाप सं उपजल अछि। सत्ता नहि खाली अपन विरोधी सभ कें दुश्मन मानैत अछि, बल्कि ओ सामासिक संस्कृति कें नष्ट करैत हिंसक रुख अख्तियार क लेने अछि। कवि रामलोचन ठाकुर एकटा सजग आ जिम्मेदार नागरिक जकां सत्ता के एहि जन-विरोधी क्रियाकलापक प्रति असहमति आ प्रतिरोध रचैत छथि आ बेहतर भविष्यक नव निर्माण लेल विध्वंस कें जरूरी बुझैत छथि। केहन लागत अहां कें शीर्षक कविता मे ओ सत्ताक हिंसक, बर्बर आ कुत्सित क्रियाकलाप कें बहुत संवेदनशीलता सं रेखांकित कयने छथि-

केहन लागत अहां कें
जं भनसाघर कुनू
कसाइखाना-कम-किचेन-कम रेस्टोरेंट
बनि गेल हो
आ
अहांक अनुजक ससड़ी काटल खलड़ी ओदारल
देह झुलत हो पछुअति मे
ओकर टटका मांसक कबाब
आ

टटका रक्तक शराब बेचल जाइत हो
त केहन लागत (4)

एहन राजनीतिक-सामाजिक वातावरण मे स्वाभाविक अछि जे लोक अपन भाषिक संवेदना आ ओकर आत्मीय संस्पर्श बिसरि जाय। अपन अग्रज कवि जीवकांतक लेल लिखल कविता मे कवि रामलोचन ठाकुर एहने दुखद आ दयनीय स्थिति कें रेखांकित करैत लिखैत छथि-

सरिपहुं हम नइ लिखि सकब
भरिसक ओ भाषा
जाइ मे लिखल जाइत छैक पत्र
अपन आत्मीयक नाम
हम बिसरि गेल छी। (5)

रामलोचन जीक काव्य स्वर एतेक तीक्ष्ण छनि जे बहुत रास यथास्थिवादी पाठक कें हुनक कविता नहि अघरतनि, मुदा सत्य के ठांय-पठांय कहबाक निर्भीकता आ यथास्थितिवादक प्रति असहमति दर्ज करायब हुनक काव्य-नायकक खास पहिचान थिक। जाहि देश मे कर्ण सन शूर-वीरक पराक्रम सं डेरायल व्यवस्था ओकरा अवैध संतान घोषित क दैत छैक, जतय कोनो आचार्य द्वारा एकलव्यक ओंठा काटि देल जाइत छैक, जतय तपस्या करै के अपराध मे कुनू शुद्रक हत्या मर्यादा पुरुषोत्तम द्वारा कयल जाइत छैक, आ अनेक तरहक अन्याय -अत्याचार होइत छैक, ओकर इतिहास पुराण के होलिकादाह करबाक आ ओहन रामराज्य पर थूकि देबाक आह्वान करैत कवि कहैत छथि जे-

समय आबि गेल अछि
हमरा सभ कें अपनहिं लिखबाक अइ
अपन इतिहास
जे सरिपहुं थिक संघर्षक
वर्ग संघर्षक

घुरा देबाक अइ ओकर अस्त्र
ओकरे दिस। (6)

रामलोचन ठाकुरक पहिल काव्य संग्रह इतिहासहंता मैथिलीक विद्रोही कविताक महत्वपूर्ण दस्तावेज अछि। एहि संग्रह मे हुनक कथ्य, कहबाक नव ढंग आ काव्य-शिल्प बेछप अछि। हुनक रचनात्मक प्रौढ़ता, राजनीतिक यथार्थ केर नग्नता कें उद्घाटित करैत काव्य-विवेक आ सर्वहारा जीवनक छवि कें संवेदनशीलता सं चित्रित करैत कविता मैथिलीक काव्य-साहित्यक धरोहर थिक।

हुनक आरो कविता पोथी सभ प्रकाशित छनि आ सब संग्रह में हुनक एहने काव्य विशेषता परिलक्षित होइत अछि। माटि-पानिक गीत (1985), देशक नाम छलै सोन चिरैया (1986) , अपूर्वा (1996) आ लाख प्रश्न अनुत्तरित (2003), आदि हुनक आन काव्य-पोथी सभ प्रकाशित अछि। आंदोलन, रंगमंच, पत्रकारिता करैत अपन साहित्यिक सफर मे रामलोचन ठाकुर बहुत रास उकृष्ट साहित्य मैथिल समाज कें देलनि, मुदा मैथिल समाज हुनका ओकर प्रतिदाय नहि द सकल। अपन संपूर्ण जीवन ओ संत जकां एकनिष्ठ भाव सं मैथिली साहित्यक सेवा कयलनि। हुनक निष्ठा पर कहियो केओ संदेह नहि क सकैत अछि। आलोचकीय दृष्टि सं विचार करी, तं हुनक काव्य-रचनाक दू धारा परिलक्षित होइत अछि, जाहि मे सं एक धारा मे इतिहासहंता आ देशक नाम छलै सोन चिरैया, आ लाख प्रश्न अनुत्तरित केर कविता कें राखल जा सकैत अछि, त दोसर धारा मे माटि-पानिक गीत, अपूर्वा कें राखल जा सकैत अछि। ओ छंदबद्ध काव्य आ आधुनिक नव कविता दुनू लिखलनि। छंदबद्धता पद्यक मूल लक्षण होइत छैक, मुदा काव्यक नहि। एकरा एहि तरहें बूझल जा सकैत अछि जे जं पद्य आ काव्य एक्के होइतियै, तखन पूर्वआधुनिक वैद्यक, ज्योतिष आदि संबंधी ग्रंथ छंदोबद्ध हेबाक कारणें काव्य मे परिगणित होइतियै, मुदा ओकरा काव्य नहि मानल जाइत छैक। काव्य

लेल काव्यात्मकता सबसं जरूरी छैक आ से गुण रामलोचन जीक आधुनिक काव्य मे भरपूर भेटैत अछि।
रामलोचन जी कविता आ छंदोबद्ध पद्यक अलावे धरगर व्यंग्य सेहो लिखने छथि। हुनक व्यंग्य रचना बेताल कथा (1981) कुमारेश काश्यप के नाम सं विदेह पब्लिकेशंस, कलकत्ता सं प्रकाशित अछि। एकर अलावे लेख आ संस्मरण विधा सं संबंधित हुनक रचना स्मृतिक धोखरल रंग (2004) , आंखि मुनने, आंखि खोलने (2005) सेहो प्रकाशित छनि। धिया-पुताक लेल मैथिली लोककथा (1983) लिखलनि आ बहुत रास अनुवाद एवं संपादननक काज सेहो करैत रहलाह। हुनक रचनादिक फेर सं परायण एवं अनुपलब्ध रचनाक प्रकाशन मैथिल समाजक जिम्मेदारी अछि। कियैक तं हुनकहि शब्द मे-'ओना इहो निर्विवाद अछि जे जे कोनो जाति अपन विभूति कें बिसरि जाइत अछि, ओकर अध:पतन अनिवार्य छैक। ' (7)

संदर्भ-

1-कविता-विध्वंस मात्र, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -11, शिखा प्रकाशन, कोलकाता
2-कविता-नाटक, निर्देशक आ एक गोट कविता, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -13, शिखा प्रकाशन, कोलकाता
3-कविता-अग्रजक नाम/प्रजातंत्र, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -17, शिखा प्रकाशन, कोलकाता
4-कविता-केहन लागत अहां कें, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -19, शिखा प्रकाशन, कोलकाता
5-कविता-हम बिसरि गेल छी, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -21, शिखा प्रकाशन, कोलकाता
6-कविता-समानधर्माक लेल/ओना होइत त इएह आयल अछि, रामलोचन ठाकुर, इतिहासहंता, पृष्ठ -25, शिखा प्रकाशन, कोलकाता

7-मिथिलाक विभूति महाकवि डाक, रामलोचन ठाकुर, आंखि मुनने, आंखि खोलने, पृष्ठ -19, अरुणोदय प्रकाशन, बाबूपाली/कोलकाता

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ अनमोल झा

<u>कोलकाता परिसरक मैथिलीक मणि श्री रामलोचन ठाकुर</u>

(1.)

कोलकाता परिसरक मैथिलीक मणि : श्री रामलोचन ठाकुर

□ डॉ० अनमोल झा

मैथिली साहित्य मे श्री रामलोचन ठाकुरक नाम वरिष्ठ साहित्यकारक रूप मे अछि। बहुमुखी प्रतिभाक धनि रामलोचन जी कोलकाता परिसरक मणि छथि। 1963ई० मे कलुआही हाइस्कूल सँ मैट्रीक पास केलाक बाद ओ नोकरीक लेल कलकत्ता आयल छलाह। ओहि समय मे हुनक उम्र मात्र पन्द्रह बर्खक रहनि। हिनक पैतृकगाम बाबूपाली (पाली मोहन), खजौली, मधुबनी मिथिला छनि। कलकत्ता ई अपन पिति जे पहिले सँ एतय रहैत रहथि श्री सुखदेव ठाकुर हिनका लग आयलाह। पन्द्रह बर्खक
(1) उमर कतेक होइत छैक से हमरा सब सोचि सकैत छी आ ओहि उमर मे एकटा बच्चा सुदूर गाम सँ आइ सँ लगभग 58 बरख पहिने एहि कलकत्ता महानगर अबैत आ एतय एलाक बाद कतेको बरख तक अनेक दुःख-क्लेश सहैत अनेक तरहक धंधा आ काज करय पड़ल रहनि आ अन्त मे हिनका इनकम टैक्स मे सरकारी नौकरी भेटि गेलनि।

एहि सरकारी नोकरी कोना भेलनि से हम कतेक ठाम हिनका मुँहे कतेक टा मंच सँ कोलकाता मे सुनने छी जे जखन हिनकर नोकरीक लेल साक्षात्कार होइत रहनि त' हिनका सँ साक्षात्कर्ता पुछलकनि - आपनी बिहारे लोक आछेन?, ई कहलखिन - नई, आमी मिथिलार लोक आछी। ओ बहुत प्रसन्न भेल रहथि। फेर पुछलकनि - आपनी बिद्यापतिर कोनो गान जानेन?

(2)

ई कहलखिन - हँ, जानी, त' कहलकनि गाबै लेल आ
ई - जय जय भैरवि असुर भयाउनि
पसुपति भामिनि माया।
सहज सुमति बर दिअ ओ गोसाउनि
अनुगत गति तुअ पाया॥

- - - - - - -

गाबि देने रहथिन। आ तकरा बाद ओ साक्षात्कारकर्त्ता लोकनि किछु नहि पुछलकनि आ नोकरी भ' गेल रहनि आयकर विभाग मे। निश्चय हिनका मे ओ प्रतिभा छलनि जाहि लेल ई आवेदन केने रहथि आ तकर संग मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति अद्भुत प्रेम छनि तकर प्रमाण ई थिक जे ओ साक्षात्कारकर्त्ताक स्पष्ट कहैत छथिन नहि हम बिहारक लोक नहि, हम मिथिलाक लोक छी।

(2)

नोकरी करैत ई एतय उच्च शिक्षा लेल चारूचन्द्र कॉलेज मे संध्यकालीन छात्रक रूप मे नाम लिखेने रहथि आ अध्ययन-यापन केलनि। एहि क्रम मे ई कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली विषय सेहो रखने रहथि। परीक्षा भवन मे जखन मैथिलीक प्रश्न-पत्र हिनका नहि देलकनि तखन ई जा के कहलखिन जे हमर प्रश्न-पत्र दिअ। ओ प्रश्न-पत्र मैथिली बला भूल सँ दोसर परीक्षा केन्द्र पर चलि गेल रहैक। कम विद्यार्थी वा नहि के बराबर परीक्षार्थी रहलाक कारणे प्रश्न पत्र एतुका बदला कतहुँ चलि गेल रहैक। आ तखन ओ प्रश्न-पत्र कोनो विशेष व्यवस्था क' कें आनाक हिनका देरी सँ देलकनि आ तखन ई उत्तर लिखलाह। ई हो परीक्षा आ मैथिलीक प्रश्न-पत्र वाला बात रामलोचन जी अपना मुँहे कहलाह।

(3)

रामलोचन जी जखन छला मे पढ़ैत छलाह तखने सँ ई गीत लिखब आरम्भ केने छथि। कलकत्ता मे रहैत मैथिली साहित्य मे रचना करैत ई एतुका विशिष्ट साहित्यकारक पाँति मे अपना आप केँ स्थापित केलनि। ई अपन मूल नामक अतिरिक्त अग्रदूत, कुमारेश काश्यप, मुजतबा अली आदि छद्म नाम सँ सेहो मैथिली साहित्य मे रचना केलनि। कुमारेश काश्यप नामे 'बेताल कथा' (हास्य-व्यंग्य) कथा संग्रहक प्रकाशन 1981 ई० मे प्रकाशित करबेने छथि। अग्रदूत नामे अनेको कथा एवं निबंध आइयोधरि पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल अछि। रामलोचन जी वरिष्ठ कवि, संपादक, समीक्षक, रंगकर्मी, अभिनेता-निर्देशक, कर्मठ भाषा आंदोलनी आ अनुवादक छथि।

(3) हिनक प्रकाशित मौलिक पोथी अछि:

1. इतिहासहंता (कविता संग्रह) - 1977 ई०
2. बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य) - 1981 ई०
3. मैथिली लोक कथा - 1983 ई०
4. माटि-पानिक गीत - 1985 ई०
5. देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह) - 1986 ई०
6. अपूर्वा (कविता संग्रह) - 1996 ई०
7. लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता-संग्रह) - 2003 ई०
8. स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण) - 2004 ई०
9. आँखि मुनने : आँखि खोलने (संस्मरण) - 2005 ई०

अनुवाद (५)

1. जादूगर (नाटक) – 1982 ई०
2. प्रतिध्वनि (कविता संग्रह) – 1982 ई०
3. फाँस (नाटक) – 1997 ई०
4. जा सकै छी, किन्तु किए जाउ (कविता-संग्रह) – 1999 ई०
5. रिहर्सल (नाटक) – 2004 ई०
6. चारि पहर (नाटक, मंचित/अप्रकाशित)
7. किछुनञी : बिभुनञी (नाटक, मंचित/अप्रकाशित)
8. पद्मानदीक माझी (उपन्यास) – 2009 ई०

(४)

सम्पादन :

1. आगुक कविता – 1984 ई०
2. रंग मंच (नाट्य-मंच विषयक पत्रिका)
3. अग्निपत्र (मैथिली युवा लेखक संकलन)
4. सुलभा (हस्त लिखित पत्रिका)
5. कविपति विद्यापति मतिमान – 2000 ई
   (संग - सम्पादन)
6. मैथिली दर्शन
7. मिथिला दर्शन
8. जयकांत मिश्र समृता
   (संग - सम्पादन)

(5)

हिनक उपरोक्त मौलिक, अनुवादीत एवं सम्पादनक आओर कतेको पुस्तक अछि। ठाकुर जी कलकत्ताक मुक्ति मोर्चाक संयोजक छथि। ई मार्क्सवादी दृष्टि सम्पन्न मैथिलीक विशिष्ट रचनाकार छथि। करुणा, विरोध, व्यंग्य, ललकार आदि हिनक काव्यक मुख्य स्वर रहैत अछि। स्पष्टवादीता हिनका मे भरल छन्हि। जे कहताह से ठाहि-पठाहि मुँहे पर कहि देताह। ई बात हिनका बहुतो सँ अलग रखैत अछि।

(5)

रामलोचन ठाकुर 'भाषा भारती' सम्मान, 'विदेह' सम्मान, 'प्रबोध साहित्य' सम्मानक संग आओरो कतेको सम्मान सँ ई सम्मानित छथि। हिनक बहुतो गुण मे एकटा गुण ई अछि जे नव लेखक/रचनाकार जे हिनका संपर्क मे अबैत छल तकरा ई बहुत उत्साहित/प्रोत्साहित करैत छलथिन। हम स्वयं जखन कलकत्ता आयल रही आ हिनका सँ संपर्क भेल रहय त' हमरो लेखनक लेल बहुत प्रोत्साहित केलनि। अपन ओ सब पोथी हमरा देने रहथि। ओकर मूल्य जे रहैक से हम देलियैन त' ओ नहि लेलनि आ सदति हमरा आशीर्वाद दैत रहलाह। जखन ओ साल्टलेक फलाइट मे रहैत रहथि त' आइ सँ करीब पच्चीस बरख पहिने हुनका डेरा पर कवि गोष्ठी करावथि जाहि मे हम सब नवयुवक रचनाकार, भाषा प्रेमी यथा हम, मिथिलेश जी, विनय भूषण जी, अंजय कुमार चौधरी जी, अमरनाथ भारती जी, स्व० देवीशंकर मिश्र जी आदि लोकनि जाइ, सब गोटा कविता पढ़ी, जलखै-पनपीआइ, चाह सब होइ। ओ कविता सुनि ओहि पर अपन मन्तव्य दैथि। से एक बेर नहि कएक बेर। कलकत्ताक प्रसिद्ध मासिक बैसार 'संपर्क' जे प्रत्येक मासक दोसर रविक होइत अछि तकरो संयोजक रामलोचन जी छथि। ई संपर्क मे रचनाकार लोकनि अपन टटका रचना जे अप्रकाशित हो से सब पढ़ल जाइत अछि आ ओहि पर आलोचना, समालोचना होइत अछि। ई संपर्क आइधरि प्रायः छब्बीस बरख सँ चलि रहल अछि।

मिथिला दर्शनक पुनः प्रकाशन जे मई-जुन, 2009 सँ प्रारम्भ भेल तकर कार्यकारी सम्पादक रामलोचन जी रहलाह। अस्वस्थताक कारणे मार्च 2020 सँ एकर कार्यकारी सम्पादक ई नहि रहलाह आ हिनका जगह पर पटनाक श्री कुणाल जी

(5)

कार्यकारी सम्पादक भेलाह।

एहि बीच मे जे घटना भेल जे रामलोचन जी एक आध बरख सँ अलजाइमर रोग सँ ग्रसित छलाह। इलाज चलि रहल छलनि ओ बात सब बिसरै छलाह, याददाश्तक कमी होइत गेलनि, निर्णय लय मे दिक्कत, बाजै मे दिक्कत छलनि आ ओ 12.02.2021 क' भोर मे अपन कलकत्ताक इटालगाछा रोड स्थित फ्लैट सँ कतहुँ चलि गेलाह। लापता भ' गेलाह। संग मे नहि पाइ छलनि आ नहि मोबाइल। जखन परिवारक लोक के एहि बातक पता लगलनि त' खोजबीन शुरू भेल। थाना मे डायरी देल गेल, अखबार सभ मे छपबाओल गेल। कलकत्ताक युवा साहित्यकारक संग एतुका मिथिला-मैथिलीक संस्थाक व्यक्ति लोकनि संग बुढ़-पुरान सब साहित्यकार एवं जे हिनका जनैत चिन्हैत छथि सब ताकब शुरू केलक। मुदा कतहुँ कोनो पता नहि चलल अछि एहि आलेख लिखैक समय तक। आब प्रायः एक मास सँ ऊपर भ' गेल। हिनका नहि भेटला सँ मैथिली साहित्य जगत मे सब मर्माहत अछि। सभकेँ एतय लागि रहल छैक जे

(6) अमर मणि हेरा गेल अछि। सभ ईश्वर सँ प्रार्थना करैत अछि जे ओ शीघ्रातिशीघ्र भेटि जाथि।

=×=

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रमेश-संपर्क-7352997069

रामलोचन ठाकुरक काव्य-युद्ध

रामलोचन ठाकुरक रचना-संसार बहु-आयामी अछि। हिनक अनूदित नाटक (जादूगर) हास्य-व्यंग (बैताल-कथा) आ मैथिली लोक-कथाक संकलन दिस हिनक विशेष अभिरुचि चौंकबैत अछि। मैथिली आन्दोलनक प्रति कटिबद्धता, हिन्दीक साम्राज्यवादी कूटनीतिक विरोध, लोकभाषा-लोकसंस्कृति आ अग्निलेखनक प्रति क्रियाशीलता एकटा नीक पृष्ठभूमिक निर्माण करैछ, जकरा आधार पर हिनक व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवन आ साहित्यक मूल्यांकन निकें-नाँ कयल जा सकैछ। मैथिलीमे अग्नि-लेखनक परम्पराकेँ अपन अशेष ऊर्जस्वितासँ सम्पोषित कयनिहार मैथिली आ साहित्यक ई सिपाही, गंभीरतापूर्वक मूल्यांकित नहि कयल जा सकलाह एखन-पर्यन्त, से मैथिली-आलोचना-क्षेत्रमे व्याप्त जड़ताक अलावे आर किछु नहि थिक। हिनक एखन धरिक जीवनक आन तरहक आ साहित्यक क्रियाकलापमे तादात्म्य परिलक्षित अछि। आ हिनक साहित्यकारक वैचारिक विकास-यात्रा तार्किक, वैज्ञानिक आ सुस्पष्ट अछि।

माओ-त्से-तुंग, हो-चि-मिन्ह, ब्रेख्त, पैट्रिक लुमुम्बा, लू शुन आ पाब्लो नेरुदाक कविताक मैथिलीमे आइसँ चौदह वर्ष पूर्व अनुवाद प्रस्तुत करबाक उद्देश्य, -

दृष्टि सम्पन्नता आ प्रतिबद्धताक मादे बहुत किछु कहैत अछि। अपन अनूदित काव्य-पोथी ‘प्रतिध्वनि’मे ‘आजुक कविता’ आ कविताक मादे व्यक्त विचार हिनक जीवन-संघर्ष, जीवन-दर्शन आ लेखनक अनुकूलहिं अछि। पिरथीक विभिन्न भागक मनुक्खक संघर्षक एकरुपताक बात कयनिहारकेँ जँ अफ्रीका आ मिथिलाक संघर्षमे साम्य नजरि अबैत हो तँ से समीचीने थिक। ‘प्रतिध्वनि’क आमुखक शीर्षक ‘आजुक कविता’ राखब आ ताही शीर्षककेँ अपन सम्पादित काव्य-संग्रह (आजुक कविता)क शीर्षक पुनः बनायब, कवि-सम्पादकक एकटा विशेष आग्रह दिस इंगित करैत अछि। ओ अपन ‘मिथिला’केँ आजुक कविताक मादे जे वक्तव्य देलनि ‘प्रतिध्वनि’मे तकर नमूना वा झाँकी ‘आजुक कविता’(काव्य-संग्रह -सं०)मे प्रस्तुत कयलनि अछि। ई एकटा योजना आ रणनीति थिक, जे कोनों योद्धासँ अपेक्षित रहैत अछि।

विदेशी-कविताक मैथिली-रूपान्तर ‘प्रतिध्वनि’ ‘मैथिलीक दधीचि बाबू भोलालाल दास आ वीर-रसक ऐतिहासिक कवि पं० राघवाचार्य’केँ समर्पित कयलनि अछि ठाकुरजी। अपन ‘मैथिली लोककथा’ नामक संकलन ‘अपना गामक डिहबार’केँ समर्पित कयलनि अछि। अपन काव्यपोथी ‘देसक नाम छलै सोनचिड़ैया’’ ठाकुर जी, ‘मुक्ति-युद्धक विगत, आगत ओ वर्तमान अनाम योद्धा-लोकनिकेँ अपन असीम श्रद्धा, सम्पूर्ण आस्था ओ विश्वासक संग’ - समर्पित कयलनि अछि। ई तीनू समर्पण अपना- आपमे बहुत किछु कहैत अछि आ हिनकर संघर्षशील छवि आ जनवादी तेवरकेँ सुस्थापित करैत अछि। हिनक विदेशी काव्यानुवाद आ लोक-कथाक चयन-दृष्टिकोण आ भाखाक स्वरूपो, हिनका ताहि रूपमे परिचित करैत अछि।

मैथिली कवितामे अग्नि-लेखन-युगक कटिबद्ध हस्ताक्षर ठाकुरजी रहल छथि। अभिनेता, निर्देशक, कथाकार रूपमे ‘अग्रदूत’, व्यंग्यकारक रूपमे ‘कुमारेश काश्यप’, मार्क्सवाद, वर्ग-संघर्ष क्रांति आ विध्वंसक अवश्यंभाविताक चेता, ‘अग्निपत्र’क संपादक आ अग्नि लेखनक स्तंभ, स्वभाव आ विचारमे अद्भुत

तादात्म्य, व्यवहारमे सुच्चा सर्वहारा - हिनक से परिचय स्थापित करैत 'कुणाल' अविश्वसनीय नहि लगैत छथि, तकर कारण ई जे, ठाकुरजीक वैचारिकता, व्यक्तित्व, जीवन-संघर्ष, क्रियाकलाप आ साहित्य आदि-आदिमे सुखद एकात्मकता अछि। 'माटि-पानिक गीत'सँ सभ प्रेम नहि कऽ सकैछ। आजुक कविताक अनुसंधान, परिचय स्थापन, संकलन, संपादन, आयात-निर्यात कोनो दृष्टिसम्पन्ने हस्ताक्षर क' सकैत अछि। मैथिली-मुक्ति मोर्चाक संयोजन-संचालन आ 'सुल्फा' उसाहब, सबहक बसक बात नहि थिक। कोनो क्रांति-चेतनाकेँ जिआयब, ओकरा हवा देब, ओकरा लेल जीयब-मरब आ ओकरा भूमि, संस्कृति, साहित्यमे स्थापित करबा लेल खून-पसेना एक करबाक नाँ जँ रामलोचन ठाकुर थिक, तँ ई नाँ हमरा पीढ़ीकेँ आश्वस्ति देबाक योग्यता रखैत अछि।

परिचयक एहेन निस्सन पृष्ठभूमिक आधार पर जखन हमरा लोकनि रामलोचन ठाकुरक कविताक पड़ताल करय बैसैत छी, तँ काव्य-सम्बन्धी हुनक मान्यता बूझब अनिवार्य भ' जाइत अछि। ''इतिहासहंता'' कविक पहिल काव्यपोथी थिक, जकरा कुणाल 'अग्निलेखनक पहिल दस्तावेज' मानलनि अछि आ हुनके माध्यमे हम सब मानि सकैत छी जे ठाकुरजी कविताकेँ मानसिक व्यभिचारक लेल शब्दक 'यूटोपिया' नहि मानैत छथि। क्रांति-विध्वंस आ नवनिर्माणक जमीन तैयार करबाक लेल, दिसाबोधक निर्देश करबाक लेल कविताकेँ ओ हथियार मानैत छथि।

'इतिहासहंता', हिनक पहिल काव्यपोथी (1972-77)क मध्य लीखल गेल कविताक संकलन थिक आ दोसर काव्य-पोथी 'देशक नाम छलै सोनचिड़ैया' (1971सँ 1985)धरिक कविताक संकलन थिक। स्पष्ट अछि जे दोसरो कृतिमे प्रारम्भिक कविताक समावेश भेल अछि आ पहिलमेसँ तँ अछिए। दोसरमे एहेन समावेशक पाछू विशेष आग्रह आ प्रतिबद्धता विचारणीय अछि, जे पहिल काव्य-पोथीमे स्थान किऐक नहि पाबि सकल?

ठाकुरजीक पहिल काव्यपोथीक कालखण्ड अत्यंत उथल-पुथलवला थिक, राजनीतिक रूपसँ। 1972सँ 1977ई० धरिक कालखण्ड पोखरण परमाणु-विस्फोट, जयप्रकाश आन्दोलन, आपातकाल आ जनता पार्टीक समारोहणक काल थिक। तें समय-सापेक्ष साहित्यमे तकर झलक भेटब स्वाभाविक थिक। ठाकुरजी शास्त्र-पुराणक भ्रष्टाचार आ कर्मकाण्डी जटिलताक उचिते विरोध करैत छथि। तेहेन मिथकीय उदाहरण सभसँ हिनक दुनू पोथी भरल-पुरल अछि। मिथक सबहक शोषण ई साहित्य आ जनसामान्यक पक्षमे करैत छथि। हुनक सहानुभूति गरीब-गुरबा, भिखमंगा आ रिक्शाबलाक पक्षमे रहब अपेक्षित अछि। जनभाषा आ जनसंस्कृतिक प्रवक्ता ओ तेहने कट्टर छथि, जेहने किसुनजी नवकविताक छलाह। यथास्थितिक सभ व्यवस्थाक ध्वंस हुनका काम्य छनि। कोनो तरहक सुधारवाद वा संशोधनवादक ओ विपक्षी छथि। मुदा प्रलयोपरान्त नव सृष्टिक सिद्धान्तमे आस्था रखनिहार, भावनाक व्याख्यामे शब्दकेँ, मुदा, सक्षम नहि मानय, से आश्चर्यित करैत अछि।

हिनक अनेकानेक संबोधनात्मक आ उद्बोधनात्मक कविता अग्रज, अनुज आ समानधर्मा लोकनिक नाम लीखल गेल अछि। मिथिला-मैथिलीपरक कविता सभ वीर-रसक उद्रेक करैत अछि आ समर्पित सम्बोधनबला कविता सभ विकृतिक चित्रण करैत अपन वक्तव्य सेहो पाठक धरि सम्प्रेषित करैत अछि। मुदा कथ्य, शिल्प, भाव आ कलापक्ष, हिनक एहेन कविता सभमे, चरम उत्कर्ष प्राप्त नहि करैत अछि। अपन 'इतिहासहंता' नामक कवितामे कवि, क्रान्तिकारीगण आ क्रांति-भूमिक नाम गांथि क' कविताक आरम्भ के कमजोर कयलनि अछि। अग्निलेखनक ओहि युगमे 'भाला', 'लाल टुहटुह रक्त' - आदि कवितामे आयब अस्वाभाविक नहि छल। व्यवस्थाक नाम चेतौनी फेकबाक आवश्यकता, ठाकरजी अपन दुनू पोथीकालमे बुझलनि अछि। पहिल पोथीक अधिकांश कविता जतय जीवनक सरलीकृत व्याख्या आ सपाटबयानीक शिकार भेल अछि, कविताकेँ अति-सहज बनयबाक अतिरिक्त उत्साहमे ततहि, 'जेठुआमेघ' आ 'सांझ हमरा आङनमे' आदि

कवितामे काव्य-रसक उचित परिपाक भेल अछि।

नामपट, अग्रज-अनुज, भाइ, सम्बोधन-उद्बोधन, चेतौनी, पोस्टर, आह्वान, आशावादिता आदि अनेकानेक बेर दोहराओल गेल अछि, जे काव्यक सौंदर्य-बोधकेँ छिटकी मारैत अछि। हिनक दोसर काव्यपोथीक कालखण्ड जनता-पार्टीक बिखराव, इन्दिरा गाँधीक सत्ता-वापसी, हत्या आदि घटनाक्रमक बीचक अछि। सन् 1977 बादक मोहभंगक व्याख्या ‘मंत्र’ नामक कविता करैत अछि त’ समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीतिमे व्याप्त रङ-विरङकष् षडयंत्र आ छद्मशीलताक लेल जादूक छड़ी देखबैत अछि। ‘चारण हम ओकरहि छी’ - ठाकुरजीकेँ किरणजीक नजदीक ठाढ़ करैत अछि।

कए ठाम, कए टा कविता, उत्साहक अतिरेक थिक। जखन कविता पर भावना वा वैचारिकता-कोनो एक पक्ष हावी भ’ जाइत छैक, संतुलन डगमगा जाइत छैक आ वर्णनक शब्दजालमे कविता फँसय लगैत छै, त’ कथ्य आ काव्यरूप विकृत भ’ जाइत छै। धूमिलेक कथनकेँ लेल जाय त’ - ‘हरेक सही कविता ‘पहले’ एक सार्थक वक्तव्य होती है’ -सँ स्पष्ट अछि, जे कविताक बादमे ‘आर किछु’ आवश्यक रूपसँ होइत छै। मात्र वक्तव्य कविता नहि थिक आ धूमिलक एहि विचारमे ‘पहले’ शब्द महत्वपूर्ण अछि।

कविता समाजमे व्याप्त विकृतिक समीक्षा करैत अछि। साहित्य समाजक आलोचना थिक। मुदा कविताक स्वरूपमे ओकर मौलिक सौंदर्यबोध शाश्वत थिक आ रहत। एतहि काव्यक तेसर पक्ष, जे वस्तुतः पहिल पक्ष थिक, सोद्येश्यता आ प्रतिबद्धताक प्रासंगिकता महत्वपूर्ण भ’ जाइछ। तकरा संग काव्यक आन तत्वक तालमेल बैसायब आ तकर क्षमता, काव्योत्कर्षक चरम-बिन्दु अथवा स्खलन अथवा ‘सपाटबयानी’ तय करैत अछि। स्वतंत्रताक बादक सैंतीस बरखक लेखा-जोखा आ चौक पर कोनो माउगिकेँ नाङट करबाक विरोध काव्यक विषय अवश्य बनत, मुदा तकरा लेल काव्यभाषा आ साहित्यक सौंदर्य शास्त्रक उपयोग वा प्रयोग, आवश्यक अछि। कोनो

राजनीतिक खलनायिकाक जीवनक वर्णनमे एगारह पृष्ठ अनेरो खर्चलासँ कविताक कोनो नव प्रतिमानक स्थापना नहि भ' पबैछ। ओना तानाशाह वा खलनायिकाक विकृत जीवन पर लीखब, अग्निलेखनक परम्पराक अनुकूलहिं अछि।

रामलोचन ठाकुरक अपन भाषा-संस्कार छनि। तेहेन शब्द-सामर्थ्यक अछैतहुँ, अङरेजी शब्दक भरखरि उपयोग अनावश्यक रूपे भेल अछि। एहेन जनभाषा आ माटिपानिक सुगंधि-प्रेमी कविसँ, से अपेक्षा राखब कठिन अछि। किछु क्षणिका सूक्ष्म अर्थगर्भित आ किछु स्थूलकाय चलि सकैछ। मुदा एहेन क्रांतिधर्मी आ अग्निजीवी कविक 'विधिक विधान', 'भाग्यफल' वा 'लिखलाहाक आगू चलिते छैक ककर वश' आदि-आदि, कोनो तानाशाहक लेल व्यंगार्थ रखितो, शेष कविताक निहितार्थक संग तादात्म्य नहि स्थापित क' पबैछ।

मुदा, किछु अपन नैसर्गिक सीमा आ किछु अग्निलेखनक सीमाक अछैतहुँ, कवि अपन जीवन-संघर्ष, साहित्य आ जीवन-दर्शनमे जाहि जीवट, इमानदारी, संघर्षशीलता आ प्रगतिवादक परिचय देलनि अछि, से अपन काल-सापेक्षतामे बहुत प्रासंगिक अछि। अपन समयक जड़ताकेँ तोड़बामे आ नवीन व्यवस्थाक स्थापनाक लेल जाहि कछमछीक ओ प्रदर्शन करैत छथि, से मिथिला, मैथिली, मानवता, समाज आ साहित्यकेँ बहुत-बहुत आश्वस्त करैत अछि। ठाकुरजी अपन आन्दोलनी जीवन, क्रांतिधर्मी व्यक्तित्व आ प्रगतिवादी छविक अनुकूल कार्यलीन छथि आ तकर निर्वाह साहित्योमे इमानदारीक संग करब, कोनो न्यून बात नहि। जीवन आ साहित्यमे एहेन सामंजस्य किछुए साहित्यकार क' पबैत छथि। आ ठाकुरजी एखनहुँ कएटा 'अग्निकवि' जकाँ 'चुकलाह' नहि अछि। अपन सम्पूर्ण सामर्थ्यक संग ओ गतिमान छथि। ठाकुरजीक अशेष ऊर्जस्विता, परवर्ती पीढ़ीक लेल प्रेरणास्पद भ' सकैछ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

पारंपरिक-प्रगतिशील

1

भगवान शंकर विरोधाभासक देवता छथि। गलामे साँप मुदा बेटा मयूर पोसने। संगमे बाघ मुदा बड़दक सवारी। योगशास्त्रक जन्मदाता मुदा पत्नी लेल पागल। एहन-एहन बहुत रास विरोधाभास छनि हुनका ओ हुनका परिवारमे। एहि विरोधाभासक बहुत ढ़ंगसँ परिभाषित कएल गेलै। कियो एहि विरोधाभासकेँ कोनो परिवारक मुखियाक रूपमे देखै छथि तँ कियो एकरा शंकरक जीवनमे अभवाक रूपमे चित्रित करै छथि।

2

विश्वास ओ अंधविश्वासमे की अंतर छै? अंतर अतबे जे कोनो एहन प्रथा वा एहन नियम जाहिसँ समाजकेँ वा केकरो हानि नै हो से भेल विश्वास आ एहन प्रथा वा नियम जाहिसँ समाज वा केकरो हानि होइ से भेल अंधविश्वास। तँ मानवक विरोधाभास जँ अपनामे रहै तँ ओ ओतेक खतरनाक नै छै जेना कियो नास्तिक छै मुदा ओकर घरक लोक पूजा करै छै वा केकरो कहलापर पूजामे प्रणाम कऽ लैत छै। मुदा जखन कियो अपन फायदा लेल बलि दै छै वा तेहने

सन काज करैत छै तखन ई अंधविश्वास भेल।

साहित्यमे ई विश्वास-अंधविश्वास परिभाषित भऽ जाइत छै आचरणसँ। कोनो लेखक अपन आचरणमे जे रहैत छै (चाहे खराप किए ने हो) आ ओकर लेखनमे ओहने बात आबै छै तँ ओहि लेखककेँ नीक मानल जाइत छै आ एहिसँ समाजमे लेखनक प्रति सकारात्मक प्रभाव पड़ैत छै। रैदास-कबीरसँ लऽ कऽ तुलसीदास (उदाहरण स्वरूप) आदिक प्रभाव देखि सकै छी। मुदा जँ कोनो लेखक लिखित वा वाचिक तौरपर शोषित केर पक्षमे रहैत छै आ मनसा-कर्मणा शोषक केर पक्षमे तँ ई विरोधाभास पाखंडकेँ जन्म दैत छै आ समाज लेल हानिकारक होइत छै। अधिकांश आधुनिक लेखक लिखित तौरपर शोषित केर पक्षमे छथि तँ कर्ममे शोषक वा शोषक केर पक्षमे। तँइ वर्तमान समयमे समाज लेखन ओ लेखकपर संदेहक नजरिसँ देखै छै।

3

देवता सेहो एक तरहँक मानव छथि तँइ हुनके जकाँ मानव सेहो विरोधाभाषी होइत अछि। रामलोचन ठाकुर आन किछु हेबाकसँ पहिने मानव छथि तँइ हुनकोमे विरोधाभास हएब स्वाभाविक। केकरामे विरोधाभास नै छै? हमरा जनैत रामलोचनजीक सभ विरोधाभास मात्र समाजिक दायरामे रहल हेतनि तँइ ओ पाखंडकेँ जन्म नै दऽ सकल। समाजिक दायरासँ हमर मतलब जे दैनिक काज चलेबाक लेल जतेक समौझता एक सामान्य आदमी द्वारा कएल जाइत छै जेना कोनो पहिचान बलाक काज जल्दी कऽ देब, अपन पहिचानसँ कोनो सरकारी इस्कूलमे भर्ती करा देब आ एहने सन आन काज। रामलोचन ठाकुर सेहो अपन जीवनमे समाजिकता वश एहन समझौता केने हेता। मुदा ई समझौता पाखंडक जन्म नै दै छै। पाखंड तखन जन्मै छै जखन कि अपन सौख पूरा करबाक लेल वा कोनो भविष्यक लाभ लेल एहन समझौता कएल जाए। तँइ हुनक सभ विरोधाभास समाजक लेल हानिकारक एखन धरि नै भेलै। एखन धरि नै भेलै तँ निश्चिते ई मानल जा सकैए जे आगुओ नै हेतै।

लगभग एहने सन विरोधाभास हुनकर लेखनमे सेहो छनि। ओ केखन कोन

रूप धऽ लेताह से नै जानि। केखनो अग्निलेखक बनि इतिहास हनन करए निकलि जाइत छथि तँ केखनो मिथिला इतिहासक वंदना करए लागै छथि। आन लेखक, आलोचक आदिकेँ हुनकर ई विरोधाभास बहुत अखरै छनि।

4

रामलोचन ठाकुर मूलतः साहित्यकार नै छलाह। ओ मूलतः मिथिला-मैथिलीक एक्टीभिस्ट छलाह। एक्टीभिस्टकेँ साहित्यकार हेबाक चाही वा कि नै, अथवा साहित्यकारकेँ एक्टीभिस्ट हेबाक चाही कि नै ताहिपर कियो एकमत नहि छथि। पहिने तँ इएह प्रश्न छै जे एक्टीभिस्टकेँ परिभाषा की छै तँ ओ परिभाषा जनसेवक केर नजदीक पहुँचै छै। आ ई जनसेवक पारंपरिक अर्थमे नेता धरि सेहो पहुँचै छै। मुदा ई एक्टीभिस्ट के भऽ सकैए? वर्तमानमे बहुत मैथिली साहित्यकार जे नौकरीक स्तरपर सेटल छथि (सरकारी नौकरी) ओ सभ कोनो मंचपर जा कऽ भाषण झाड़ि अबै छथि आ अपन नामक आगू एक्टीभिस्ट लगा लै छथि। एहन लोककेँ कतेक दूर धरि एक्टीभिस्ट छथि से समाज ओ समय तय करत मुदा एतेक निश्चित जे सरकारी नौकरीमे रहैत ओ सभ मात्र थ्योरी रूपमे एक्टीभिस्ट छथि प्रैक्टिकल नै। प्रैक्टीकल एक्टीभिस्ट बनबाक प्रयास उत्तर प्रदेशक आइ.पी.एस अमिताभ ठाकुर केने छलाह हुनका योगी सरकार नौकरी खत्म कऽ जबरदस्ती घर बैसा देलकनि। रहलै बात प्राइभेट नौकरी बलाक तँ ओ रविदिन कोनो संस्थाक कार्यक्रममे चलि जाइत छथि, कोनो सचिव-अध्यक्षसँ जान-पहिचान भऽ जाइत छनि आ ओ अपनाकेँ एक्टीभिस्ट मानि लै छथि।

जेना कि उपरे कहलहुँ जे रामलोचन जी मूलतः एक्टीभिस्ट छलाह साहित्यकार नै। शुरूआती दौरक एक्टीभिज्म लेल हुनका जे-जे आन चीजक जरूरति पड़लनि से-से ओ केलाह। मुदा जीवनक्रममे ओ सरकारी नौकरी केलाह आ क्रमशः ओ अपन एक्टीभिज्मकेँ रचनामे बदलि देलाह। जहिया हुनका बुझेलनि जे नाटक केलासँ मिथिला-मैथिलीक मुद्दा बेसी लोक लग

जाएत तँ ओ नाटकमे एलाह। जखन हुनका बुझेलनि जे मिथिला-मैथिलीक मुद्दा कविताक माध्यमसँ बुद्धिजीवी लग जेतै तँ ओ कविता लिखलाह। जहिया बुझेलनि जे इतिहासक हनन केलासँ मिथिलाक भला हेतै तँ ओ इतिहासक हनन केलाह। जहिया हुनका बुझेलनि जे मिथिलाक वंदन केलासँ नीक हेतै तँ ओहो केलाह। कुल मिला कऽ ओ साहित्य लेल साहित्य केर रचना नै केलाह ओ अपन एक्टीभिज्म लेल अपन रचना केलाह। आ इएह कारण छै जे हुनकर रचनात्मक विचारधारामे घोर विरोधाभाषा देखाइत छै मुदा विरोधाभास नै छै कारण ओ सभ रचना ओ अपन एक्टीभिज्म लेल केने छथिन। हम एखन धरि जे लिखलहुँ ताहि आधारपर आन कोनो लेखक सेहो कहि सकैए जे हमर रचना हमर एक्टीभिज्मक अछि। मुदा धेआन देबए बला बात जे रामलोचन ठाकुर पहिने एक्टीभीस्ट छलाह। जँ पहिने ओ एक्टीभिस्ट नै रहितथि तखन निश्चिते हुनकर विरोधाभास केर आलोचना हम करितहुँ। आन लेखक केर रचनाक एक्टीभिज्म जँचबाक लेल हम इएह पैमाना रखने छी।

एकटा बात तँ निश्चिते जे रामलोचनजीकेँ एक्टीभिज्मक परिभाषा ओ सरकारी नौकरीक मर्यादा दूनू बुझल छलनि तँइ ओ नौकरी समयमे अपन एक्टीभिज्मकेँ बिसरि गेलाह। जँ ओ चाहितथि तँ नकली एक्टीभिस्ट जकाँ निर्वाह कऽ सकै छलाह मुदा से हुनका काम्य नै रहल हेतनि।

5

कुल मिला कऽ रामलोचनजीक साहित्य हुनकर एक्टीभिज्म लेल एकटा साधन छै साध्य नै। तँइ बहुत विरोधाभास छै। जँ कोनो आलोचककेँ हुनकर विचारधारामे ओझराहटि बुझाइत छनि तँ अही कारणसँ बुझाइत छनि। जँ आलोचक हुनकर एक्टीभिज्मक रस्तासँ हुनकर साहित्य धरि पहुँचए तखन फेर कोनो ओझराहटि नै हेतनि। साहित्यक तौरपर रामलोचनजीक सभ विचारधाराकेँ देखैत हुनका हम "पारंपरिक-प्रगतिशील" मानैत छी। ई "पारंपरिक-प्रगतिशील" शब्द युग्म मैथिलीमे नै अछि मुदा एकर प्रयोग हम रामलोचनजी लेल कऽ रहल छी। ई शब्दयुग्म हुनकर रचनाक सभ

विचारधाराकेँ सामने राखि दैत अछि।

संपादकीय नोट-आशीष अनचिन्हार द्वारा विदेह ओ अनचिन्हार आखरपर रामलोचन ठाकुरजीसँ संबंधित अन्य सामग्री-

1) https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/313661235378678/

2) https://anchinharakharkolkata.blogspot.com/2012/05/blog-post_16.html

3) https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/316679568410178

4) https://anchinharakharkolkata.blogspot.com/2012/05/blog-post_22.html

5)https://sites.google.com/a/videha.com/videha/Home/Videha200.pdf?attredirects=0&d=1 , लिंक 1 ओ 2 एवं 3 ओ 4 केर सामग्री एकै अछि मुदा लिंक अलग-अलग।

उपरका लिंक सभ पढ़लाक बाद गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा रामलोचनजीक उपर एकटा तथ्य पढ़बाक लेल निच्चाक एहि लिंकपर जाउ- https://anchinharakharkolkata.blogspot.com/2011/10/blog-post_6385.html

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२

'विदेह' ३२० म अंक १५ अप्रैल २०२१ (वर्ष १४ मास १६० अंक ३२०)

रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

२.१.महेन्द्र हजारी- से छथि रामलोचन

***२.२.नारायणजी**- श्रद्धेय रामलोचन ठाकुरकें स्मरण करैत*

२.३.विनोद कुमार झा- राम लोचन हमर प्रेरणा

२.४.बिनय भूषण- रामलोचन ठाकुरक झिझिरकोना आ...

२.५.आशीष अनचिन्हार- अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकुर

२.६.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- राम लोचन ठाकुर प्रसंग

महेन्द्र हजारी-संपर्क-9062469848

से छथि रामलोचन

सम दृष्टिक भाव जनिक छनि से छथि रामलोचन
लोचनमे जनिक कमान छनि से छथि रामलोचन
अपन काजमे सहजहि तत्पर
समाजक जे राखथि खयाल से छथि रामलोचन

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक करथि सम्मान से छथि रामलोचन
सबहक जे मोनसँ करथि सम्मान से छथि रामलोचन
ज्येष्ठ-श्रेष्ठकेँ जे श्रद्धा करथि
समवयस्क संग करथि हास्य-विनोद से छथि रामलोचन
छोट-छीन लार-प्यार करथि से छथि रामलोचन

कवि-लेखक कथा-पिहानीक रचियता छथि रामलोचन
मैथिली नाटकमे जे अभियन करथि से छथि रामलोचन
पत्र-पत्रिकाक जे करथि संपादन से छथि रामलोचन
साम्यवाद जे करथि विश्वा, समाजवादक नहि अविश्वासी
जन-जनमे श्रद्धाभाव से छथि रामलोचन

मैथिली-बंगला-हिंदीमे रचना करथि से छथि रामलोचन
सभ-सोसाइटी, कविगोष्ठीक करथि संचालन
मैथिली लिपिक करथि प्रचार
मरदनसुमारीमे मैथिली मातृभाषा लिखबाक आग्रह करै छथि
मैथिली बजबाक आग्रह करै छथि से छथि रामलोचन

नेनपनसँ शिवजीक पूजा-पाठ करैत छथि
गीताकेँ धर्मशास्त्र मानै छथि से छथि रामलोचन
मिथिलाक प्रसिद्ध गाम बाबू-पालीमे जन्म लेलनि
काली क्षेत्र कोलकातामे कर्मक्षेत्र बनौलनि
नाम यश जे बेस कमौलनि, महेन्द्रक छथि यार से छथि रामलोचन
संप्रति ओ भुतियाय गेल छथि, कोनो पक्षकेँ ताकि रहल छथि
घट-घटमे अपन द्रष्ट ताकि रहल छथि से छथि रामलोचन

संपादकीय-नोट- ई कविता विदेहक "रामलोचन ठाकुर विशेषांक" केर अंतिम दिनमे आएल छल मुदा ओ विशेषांकमे कविता सभ देबाक विचार नै छल आ तकर बाद रामलोचनजीक मृत्युक समाद आएल। रामलोचनजी मूलतः मैथिलीमे लिखलनि, बंगलासँ मेथिली अनुवाद केलथि आ मिथिला-मैथिलीसँ संबंधित दू-तीन टा रचना हिंदीमे केलाह। मरदनसुमारी मने जनगणना।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

नारायणजी- संपर्क-9431836445

श्रद्धेय रामलोचन ठाकुरकें स्मरण करैत:-

मिथिला

चिट्ठी आएल अछि
दूर देशसं आएल ई चिट्ठी
कतेक धार आ पहाड़ आ जंगल पार क' आएल अछि,
हम नहि जनैत छी
कतेक हाथक स्पर्श अछि एहि चिट्ठी पर
(अदृश्य अछि)
मुदा,देखाइत अछि डाकखानाक लागल मुहर
आ अपन पता
जकर निच्चांमे लिखल अछि 'मिथिला'।

मिथिला
नित्य पुरनाइत एहि देशमे

कोनो प्रान्त-नगर आ गाम नहि रहि गेल अछि
किएक लिखल गेल अछि
हमरा धरि आएल एहि चिट्ठी पर मिथिला?
सभसं बेसी मोन पाड़ैत अछि की अपन बीतल युगकें लोक?
अपन भौगोलिक अभिव्यक्ति लेल की छटपटाय रहलीह अछि मिथिला?
जेना ग्लोब पर अएबाक लेल छटपटाए रहल अछि फिलिस्तीन।

कहियोक मिथिलासं बाहर आइ जे गुजर- बसर करैत छथि
नाभि-नाल गाड़ल छनि एहि भूखण्डमे जिनकर
वैह सपनाइत छथि की मिथिला?

मिथिला
हुनके सपनामे जाए कनैत छथि
कलिंग देवी सन तकैत छथि
एकटा खाड़बेल,एकटा योद्धा?

भरोस उठि गेलनि अछि की
एहि जनपदक बसनिहारसभ परसं
मिथिलाक?

दूर-देशमे रहैत छथि
घाम चुअबैत छथि
घरक फाटल आकाश सिबैत छथि
जुड़ाइत छथि संसारक बहैत बसातसभसं
दृढ़ भ'अएलनि अछि हुनकामे मिथिलाकें साकार करबाक इच्छा

हुनके आत्मामे अंकुरित भेलनि अछि मुक्ति-बीज
वैह लिखलनि अछि चिट्ठीक निच्चांमे-'मिथिला'।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विनोद कुमार झा-संपर्क-9334108281

राम लोचन हमर प्रेरणा

पुरुखा छलाह आदिमानव
केलनि कतेको श्रमसाध्य काज
भेटल हेतनि कोनो
जंगल, पहाड़, जमकल नदी ।

छोट पाथरके छेनी
पैघ पाथरके बनौने हेताह हथौड़ी
ठोकि-ठाकि, काटि-छांटि
बनौने हेताह शस्त्र-हथियार, कलम
गढ़बाक, रचबाक जे छलनि इतिहास ।

पाथरके रगड़ि- रगड़ि
निकालने हेताह आगि
भेल हेताह गरम, चूबल हेतनि घाम
घमल हैत ठंडा ग्लेशियर

बनल हैत धार, बहल हैत नदी
व्यग्र नदी पहुंचबे करत सागर धरि ।

कोरने-कमेने हेताह माटि
केने हेताह कदबा
बाउग केने हेताह बीज,
तखन उपजौने हेताह अन्न
भरल हेतैक कतेकोके भूखल पेट आ मोन ।

लोक-लोकके जोड़ि, बनौलनि परिवार
परिवारके जोड़ि समाज
प्रवासी समाजके जोड़ि केलनि क्रांति
सिखौलनि मातृभाषा लेल संघर्ष
केलनि साहित्यक आंदोलन ।
एतेक काज करबामे
लागि गेलनि कतेको बरख
सम्पूर्ण जिनगी
इतिहास हंता बनल
पुनर्जागरणक नव इतिहासक अग्रदूत ।

राम लोचन ठाकुर
केलनि त' बहुतो काज
मैथिली साहित्यक विकास यात्रामे
बनताह इतिहास-पुरुष
हमर सबहक प्रेरणा स्रोत ।

संपादकीय-नोट- ई कविता विदेहक "रामलोचन ठाकुर विशेषांक" लेल

आएल छल मुदा ओ विशेषांकमे कविता सभ देबाक विचार नै छल आ तकर बाद रामलोचनजीक मृत्युक समाद आएल।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

बिनय भूषण-संपर्क-7003286056

1

रामलोचन ठाकुरक झिझिरकोना

तीन चारि दिन सँ
निपत्ता भ' गेल अछि हमर निन्न
चौबीसो घंटा
देखैत रहै छी
व्हाट्सअप आ फेसबुक ।
रामलोचन जी
हमरा सभक संग
खेलताह एतेक झिझिरकोना
कहियो नञि सोचल ।
हुनका मादेँ सोचैत - सोचैत
नोरा' जाइत अछि आँखि
हुनका सन सचेतन लोक
कोना भ' सकैत अछि
बिसरभोर ?
कहाँ मानैत अछि

हमर मोन ?
एखनहु दू बजे राति मे
जखन कि
एखने लागल अछि आँखि
ओ
जगा रहल छथि हमरा
कहि रहल छथि हमरा
कतेक सुतबह
जाग' - जाग'
बड्ड आराम केलह ।
काज कर'
हाथ - पायर मार'
मिथिलाक लेल
कर' किछु काज
मनुक्खक लेल
कर' किछु काज ।
से सत्ते
करबाक अछि काज
काज बहुत काज
मनुक्खताइ केँ बचेबाक काज
सामाजिकताक प्रसारक काज
संस्कृतिक संरक्षणक काज
सत्य आ इमानक अस्तित्व केँ
संजीवनी प्रदान करबाक काज
काज अनन्त काज ।

कहि रहल छथि हमरा
हमर चिन्ता
जुनि कर' बिनय
हम स्वस्थ छी
सकुशल छी हम
तोँ सभ करैत रह' काज
पढ़' - गुन' - लिख'
इतिहास कैँ बूझ'
सिरज नवका इतिहास ।

2
खौलैत खुन मे बोरल आंगुर सँ लिखाइत कविता

ओ
जे महसूसैत अछि
भूखल लोकक
पेटक अँतड़ीक दर्द ।
ओ
जे दर्द सँ
हाकरोस करैत लोकक
हृदय मे
मारैत रहैत अछि
हुलकी अहर्निश ।
ओ

जे उपेक्षित लोकक
आँखिक नोरक स्वाद कैँ चिखि
होइत रहैत छथि
मर्माहत अहर्निश।
ओ
जे रक्तविहीन काया कैँ
चाम सँ झाँपल ठठरी कैँ
निहारैत रहैत छथि अनवरत।
ओ
जिनकर हृदय मे सदिखन
उमरैत रहैत अछि
दयाक महासमुद्र।
ओ
जे आक्रोशित कायाक
नश मे बहैत
खुनक उबाल कैँ
महसूसैत रहैत अछि अहर्निश।
ओ
जे कलम छिनायल हाथक
मर्म कैँ
बूझैत हो नीक जकाँ।
ओ
जे मजूरक खौलैत खुन कैँ
बना' लैत हो मोसि
आ

अपन आंगुर कें
बना' लैत हो कलम ।
ओ
जे असीम आशाक संग
नवका भोरक
संधानक लेल
रचैत रहैत हो
कविता अहर्निश ।
ओ
जे सामाजिकता
आ मनुक्खताइक लेल
संवादक सपना कें
जोगने रहैत हो
अपन आत्मा मे ।
ओ
अचक्के अपना आप कें
परिवार आ समाज सँ
क' लेत दूर
से
नहि मानैत अछि
हमर मोन ।

3

अहाँक ई फर्ज़ बनैत अछि

रामलोचन जी
अहाँ तँ लोकक दुख - दर्द केँ
बूझैत छियैक
अपन निजी दर्द ।
रामलोचन जी
अहाँ तँ बूझैत छियैक
स्त्रीक मोनक
पहाड़ सन
जीवनक मर्म ।
रामलोचन जी
अहाँ केँ
लेबाक चाही
ओहि बुढ़ियाक सुधि
जे अपन माय - बाप
आ अपन समाज केँ छोड़ि
अहाँक संग
लगौनय छलीह
सात - सात फेरा ।
रामलोचन जी
अहाँ ललनजी आ आलोक केँ
देनय छियैक
केहन दारूण पीड़ा
ओ बुच्ची
जे सदिखन

सटल रहैत छल
अहाँक करेज मे
हुनका सभक ह्रदय पर
पसरल निराशाक घोर अन्हार केँ
करबाक चाही
अहाँ केँ अनुभव ।
रामलोचन जी
सम्पूर्ण मिथिलाक
कोटि - कोटि आँखि
अहाँ केँ देखबाक आश मे
लगौनय अछि वकदृष्टि ।
एहन विकट परिस्थिति मे
अहाँक बनैत अछि फर्ज़ जे
बिना कोनो देरी के एखनहि
हँसैत - हँसैत
चलि आबू अपन घर
सम्पुर्ण मिथिला केँ
द' दियौ उलहन - उपराग
जे अहाँ सभ
कहिया मनायब
हमर जन्मदिन
हम आबि गेल छी
अप्पन घर
पालन करू हमर जन्मदिन ।
अहाँ देखबै
विदेह - वैदेहीक पावन धरती पर

ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक मिथिला मे
राजकमल आ यात्रीक गाम मे
सोमदेवक वाधित कण्ठ मे
भ' जेतैक कालध्वनिक संचार
अम्बरक भीतरक शून्य सँ
बहराब' लगतैक
भाषायी चेतनाक अमृत - मंत्र
गोबिन्द बाबू टांग मे
आबि जेतैक अजस्र ताकति
साहित्यक मैदान मे
दौड़य लगताह सरपट ।
अहाँक चेतना मे
सदिखन लैत रहैत अछि सांस
मिथिलाक संस्कृतिक पवित्र प्राणवायु
अहाँक कलमक नोक सँ अनायास
टपकय लगैत अछि
दुखित आ पीड़ित लोकक
घाम आ नोर
क्षणहि मे
अहाँक शब्द सँ बहराब' लगैत अछि
आक्रोशक सार्थक धधरा ।
से बनैत अछि अहाँक फर्ज़
जे एखनहि अविलंब
घूरि अयबाक चाही अहाँ कैँ
अप्पन घर ।

4

फगुआ २०२१ आ रामलोचन ठाकुर

रामलोचन जी !
अहाँ कतय छी पता नञि
हम सभ सजल आँखि सँ
खोजि रहल छी अहाँ कैँ
सभ बेर जकाँ एहि बेर सेहो
अहाँक संग
मनाबय चाहै छी हम सभ
फगुआ - ठहक्का प्रेम सँ
अहाँक कलम के पिचकारी सँ
बहराइत कविताक रंग सँ
सराबोर होम' चाहै छी हम सभ ।
रामलोचन जी !
अहाँक अनुपस्थिति मे
सुन्न - सपाट लागि रहल अछि
कोलकाताक कविताक दलान
आजुक बाजारवादी समाज मे
जतय धधकि रहल अछि परोपकारक भावना
अलोपित भेल जा रहल अछि आपकताक भाव
उड़ाओल जा रहल अछि
स्वार्थ आ कुटिलताक अबीर
अहंकारक पिचकारी सँ

बहरा' रहल अछि दमनक कारी रंग
ततय अहाँक उपस्थितिक अनिवार्यता
कहाँ बिसरि रहल अछि
कोलकाताक सुधी समाज ।
रामलोचन जी !
बर्ख मे एक्के दिन सही
प्रेमक रंग सँ सराबोर भ' जाइत अछि लोक
जीवन मे नवल वसंतक
होम' लगैत अछि संचार
सभक ठोर पर
थिरक' लगैत अछि मुस्कानक राग
आपकताक रंग सँ
रंगा' जाइत अछि लोकक मोन
अहाँक थिरकैत ठोर देखि
अहाँक मुँह सँ बहराइत
अमृतवाणीक स्पर्श सँ
सभक कान मे गुंज' लगतैक वसंतक राग ।
रामलोचन जी !
अहाँ कतौ हैब , सकुशल हैब
से करै छी हमसभ कामना
भींजल आँखि सँ
पठा' रहल छी फगुआक शुभकामना
सुनैत छियैक जे
स्मृतिलोपक बेमारी मे
कखनो काल घूरि आबैत अछि स्मृति

से शीघ्रे एखनहि घूरि आबय अहाँक स्मृति
से करै छी हम सभ कामना
कतेक नीक लगतैक हमरा सभ कैँ
जौं आबि जेबै अहाँ
तखन सत्ते हमरा सभक
मोन मे भ' जायत
नवल वसंतक संचार ।
रामलोचन जी !
अहाँक प्राणप्रिय माय मैथिलीक
असंख्य लव - कुश
ताकि रहल छथि अहाँ कैँ
अपन सचेतन आ ऊर्जावान भाइ कैँ
अपन धरोहर कैँ , अपन इतिहास कैँ
अहाँक लेल कानि रहल छथि मैथिली
अहाँ जानैत छी
अहाँक ठोर पर सदिखन
उपस्थित रहैत छथि मैथिली
अहींक कलम सँ
फगुआ मे हँसैत छथि मैथिली
से एहि बेरक फगुआ
कोलकाताक साहित्यिक फगुआ
फगुआ ठहक्काक आयोजन
वेकल भ'
क' रहल अछि अहाँक इन्तिज़ार ।
5
ओ कहैत छथि

रामलोचन जी कहैत छथि जे
एक दिन अचक्के ओ
आंगनक सीमा नांघि
बहरा' गेल छलाह वाट पर
अपन मोन मे ओ
जोगनय छलाह
एकटा क्रांतिकारी आ रचनात्मक सपना
जन - जनक पीड़ा सँ
दग्ध भ' गेल छलैक हुनक आत्मा
एहि पिरथी कैँ
पिरथी विशाल पिरथी कैँ
सुन्दर सँ सुन्दरतम बनेबाक कामना
हुनक हृदय मे
बना' लेनय छलैक अप्पन जग्गह
हुनकर मोन मे
छलन्हि इ अटल विश्वास जे
एहि वाट मे
हुनका भेटि जेतनि
असंख्य समानधर्मा सहयात्री
जे कखनो नञि लिखताह
उजरा कागत पर
करिया मोसि सँ
कोनो कपोल - कल्पित निरर्थक कविता
कोनो कृत्रिम मनोहारी कथा

कोनो अप्रयोजनीय इतिहास ।
रामलोचन जी कहैत छथि जे
ओ अपना हाथ मे
एकटा चमकैत पँचकमिया भाला लेनय
चलि पड़ल छथि इतिहासक वाट पर
एकटा सार्थक कामनाक संग जे
लाल टुह- टुह रक्त सँ
पिरथीक विशाल वक्ष पर
लिखबाक छन्हि हुनका
मनुक्खक सुखमय जीवनक लेल
एकटा सार्थक कविता
एकटा यथार्थ कथा
एकटा रचनात्मक इतिहास
ओ प्रतिवद्धताक संग कहैत छथि जे
हुनका बनबाक छन्हि स्वयं
एकटा घटना
एकटा नाम
एकटा इतिहास ।
सहजतावादक प्रवर्तक
अग्निजीवी कवि सोमदेव कैँ
ओ कहैत छथि जे
आजुक प्रजातंत्री राजतंत्र मे
सत्ता प्राप्तिक लेल
आयोजित होइत अछि यज्ञ
एहि यज्ञ मे देल जाइत अछि
निम्मुधन जनताक देल जाइत अछि वलि

एहि परम्पराक उपटौनीक लेल
हुनका संग मिलि
असंख्य अग्निजीवी कवि संग मिलि
ओ करताह
अग्निकविताक संधान
समाजक जमीन पर जनमल
विषमता आ ईर्षाक घास केँ
जारि केँ सुड्डाह करबाक लेल
संगोर' पड़तैक
प्रगतिकामी विचारक आगि
गाब' पड़तैक विध्वंसक राग
निर्माणक लेल आवश्यक अछि विध्वंस
कुटिलता आ दमनकारी विचारक विध्वंस
एहि विध्वंसक पश्चात
हमर समाज मे
हमर देश मे
गुंज' लगतैक प्रेम आ आपकताक राग ।
जीवकांत केँ इमानदारीक संग
कहैत छथि रामलोचन जी जे
ओ लिखि नञि पाबैत छथि हुनकर भाषा
हुनकर भाषा मे हुनक पत्रक उतारा देब
असम्भव छैक हुनका लेल
हुनका पता नञि छन्हि जे
केना फुलाइत छैक कमलक फूल
ओ बिसरि गेल छथि

ओड़हूल फूलक रंग
हुनका मोन नञि छन्हि जे
केहन होइत छैक खजन चिड़ैया
ओ नहि लिखि पाबैत छथि
प्रकृतिपरक काव्य
वसंतक आशक निरर्थक स्वप्न मे
हुनका नहि छन्हि मिसियो भरि विश्वास
ओ चाहैत छथि जे
आभासी वसंतक स्वप्न
यथार्थ मे भ' जाइ परिवर्तित
एहि धरतीक कोटि - कोटि
पीड़ित - उत्पीड़ित लोकक जीवनक
वसंतक जोगार करबा काल
हुनका बिसरा' गेल अछि
फूल - पत्ती आ प्राकृतिक सौन्दर्य
ओ अत्यंत धैर्यक संग कहैत छथि जे
जखन एहि धरती पर
समस्त मनुक्खक जीवन मे
आबि जेतैक वास्तविक वसंत
तखन ओ जरूर गौताह
प्रसन्नचित्त मुद्रा मे वसंतक गीत ।

संपादकीय-नोट- ई कविता विदेहक "रामलोचन ठाकुर विशेषांक" लेल आएल छल मुदा ओ विशेषांकमे कविता सभ देबाक विचार नै छल आ तकर

बाद रामलोचनजीक मृत्युक समाद आएल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

अनचिन्हार लेल रामलोचन ठाकुर

बर्ख 2000 केर मइ-जूनमे हम पहिल बेर कलकत्ता आएल रही आगूक शिक्षा लेल आ दिसम्बर 2008 मे हम कलकत्ता छोड़ि देने रही नौकरी लेल आ चलि गेल रही दिल्ली। बर्ख 2003 मे हम पहिल बेर अपन कविता पाठ सार्वजनिक मंचपर केने रही। कोन मंचपर केने रही, ओहिमे किनकर-किनकर भूमिका रहै तकर नमहर चर्चा हम अपन पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" मे केने छी। आ अही पाठ केर बाद हमरा कलकत्ताक बहुत लेखक, पाठक ओ संगठनकर्ता सभसँ परिचय भेल जाहिमे एकटा रामलोचन ठाकुर छलाह। ओहि दिनक परिचयक बाद ईहो पता लागल जे कलकत्तामे अन्य कवि सम्मेलन केर अतिरिक्त हरेक मासक दोसर रवि दिन कऽ एकटा "संपर्क" नामक गोष्ठी सेहो होइत छै जाहिमे साहित्यकार लोकनि जुटैत अछि। संपर्क गेल रही। पहिल संपर्क। जहाँ धरि हमरा मोन अछि हमर आ प्रसिद्ध विज्ञान कथाकार योगेन्द्र पाठक वियोगीजीक पहिल संपर्क बैसार एकै छल मने ओहो हमरे जकाँ पहिल दिन आएल रहथि। आ तकरा बादसँ प्राय: कलकत्ताक हरेक साहित्यकारक संगत रहल। आ तकरे बाद बुझने रही जे कोन लेखक कोन बाट ओ कोन लक्ष्यक छथि। जाहिमे हमरा रामलोचनजीक बाट ओ लक्ष्य

नीक लगैत रहए।

हमरा रामलोचनेजीक बाट ओ लक्ष्य किएक नीक लगैत छल से जानब कठिन नै। जे हमरा नीक जकाँ जनैत छथि से हमर स्थिति सेहो जनैत छथि। जे नै जनैत छथि से हमर ओ संस्मरण पढ़थि जे हम फरवरी 2020 मे अपन पिताजीक मृत्युक बाद लिखने रही। कुल मिला सारांश अतबे जे हम अपना गामक महागरीब। किछु अंशमे एखनो छी मुदा स्थिति सम्हरल अछि। आब अहूँ सभ बुझि सकैत छियै जे हमरा रामलोचनेजीक बाट ओ लक्ष्य किएक नीक लगैत छल। दोसर बात ईहो जे हुनका जे कहबाक रहैत छलनि से कहि दैत छलखनि आब लोक जे करए। हुनकर भूमिका हम शिक्षक नै प्रोफेसर जकाँ मानैत छी। शिक्षक हाथ धरा सिखाएत। मुदा प्रोफेसर बाजैत चलि जाएत। आब अहाँपर निर्भर जे ओ नीक चीज पकड़ि सकैत छी की नै। अचानक तँ नै मुदा रामलोचनजीक हरेक बेरक भेंट हमरा किछु एहन सूत्र दऽ जाइत छल जाहिसँ हमरा जीवनमे सहायता भेटैत छल। साहित्यमे सेहो भेटैत छल मुदा बेसी सूत्र हम जीवन बला पकड़लहुँ आ तकर बाद साहित्य बला। एकटा संक्षिप्त नोट दऽ रहल छी--

1) आर्थिक सूत्र- आर्थिक जीवन मुख्यतः शिक्षापर टिकल छै तँइ ओ युवा कविसँ शिक्षा कालमे मात्र शिक्षे लेल समय देबए कहथिन। ओ जीवनमे अर्थक महत्व सेहो कहथि। एक बेर संपर्कसँ निकलि (किशोरीकांत मिश्रजीक प्रेससँ) जाइत रही हुनके संगे। बाटमे किछुए देरक संग रहैत छल कारण हमर घर मात्र पैदल दस मिनटक दूरीपर आ हुनका बस पकड़बाक रहैत छलनि। चलैत-चलैत अर्थेसँ जुड़ल बात-चीतमे ओ हमरा कवि सभहक सीमा एना कहलाह जे मानू अहाँ नीक कविता लिखैत छी आ हम ओकर प्रसंशक छी मुदा अहाँ लग नौकरी नै अछि वा अछियो तँ ओतेक नीक नै अछि। मुदा अहाँक कविताक प्रसंशक रहितो जँ हमरा अपन बेटी लेल वर ताकए पड़त तँ ओहि

काल अहाँक नाम हमर लिस्टमे दूर-दूर धरि नै रहत। बात ओ मात्र उदाहरण लेल कहने छलाह मुदा हम एकरा अपना जीवनमे लेलहुँ आ जहने हो तेहने स्थितिमे अर्थ दिस बेसी फोकस केलहुँ। साहित्य नै छोड़लहुँ। मंचक प्रति रामलोचन जी उदासीन नै छलाह मुदा हम अपना जीवनसँ मंचोकेँ हटा देलहुँ, कारण लगभग ओही भाषामे अर्थक महत्व हमर माँझिल भाए सेहो बजैत छलाह, एखनो बजैत छथि। एकै बात विभिन्न कोण, संदर्भमे सुनलासँ हमरा मंचक प्रति उदासीने नै कठोरो बना देलक। आब हम एकर फायदा बुझि रहल छी।

2) साहित्य सूत्र- हम हुनकर बातसँ दू टा चीज सिखलहुँ पहिल जे हरेक लेखक अपना लेल एकटा केंद्रीय विधा चुनए। ओ बहुविधावादी लेखनकेँ प्रायः संदेहसँ देखैत छलाह। बादमे हम अपना लेल गजल चुनलहुँ। दोसर जे ओ पुरस्कार-सम्मानकेँ लेखनक बाइ-प्रोडक्ट मानै छलखिन। ओ एक बेर कहलाह जे पैखाना घृणित वस्तु छै मुदा जीवन लेल आवश्यक तेनाहिते पुरस्कार लेखन लेल छै। हम पुरस्कार लेल हुनके बात मानै छी। रचनारत लेखककेँ जखन उपेक्षा होइत छै तखन किछु ने किछु दुख अवश्य होइत छै। रामलचोनजीकेँ सेहो कोनो क्षण विशेषमे दुख भेल हेतनि मुदा ओ दुख हुनका लेल अवरोध नै बनलनि से अंतो धरि हुनक सक्रियतासँ बूझि सकैत छी। ओना एहि तरहक दुख हरेक लेखकक जीवनमे अबैत छै। एहन दुख एबाको चाही तखने कोनो लेखक सार्थक रचि सकैए ताहूमे मैथिली भाषामे जाहिमे पुरस्कार भेटिते लेखन बंद भऽ जाइत छै।

3) भाषा सूत्र- आइ हम मात्र मैथिलीमे लीखै छी तँ से गुण हमरा रामलोचन ठाकुरसँ भेटल अछि। एक बेर (प्रायः संपर्केमे) बाजल रहथि जे बंगला छोड़ि आन कोनो उत्तर भारतीय भाषा (मैथिली, हिंदी, उर्दू, नेपाली आदिमे) मे लेखन कऽ अर्थोपार्जन नै कएल जा सकैए। तखन जँ हिंदियोमे पाइ नै भेटत

आ मैथिलियोमे पाइ नै भेटत तखन मैथिलिएमे रचना किएक ने लिखी। कुल मिला हम आब भाषा लेल इएह नीति रखने छी।

बहुत संभव जे आर बात हम हुनकासँ सिखने होइ मुदा जे मुख्य छल से उपरक तीन अछि। कहबाक लेल तँ हम हुनका साहित्यिक गुरू कहैत छियनि मुदा वस्तुतः ओ हमर जीवनक बहुत रास गुरूमेसँ एकटा सेहो छथि। आब जखन कि रामलोचनजी एहि संसारमे नहि छथि, हम ई बात सभ नहियो लीखि सकैत छलहुँ मुदा से कृतघ्नता होइत आ हम बदमाश, असभ्य, अबंड सभ किछु भऽ सकैत छी मुदा कृतघ्न आ बैमान नहि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' सम्पर्क -8789616115

राम लोचन ठाकुर प्रसंग

एखन विदेहमे भाइ राम लोचन ठाकुर जी पर जे विशेषांक आएल अछि, ताहिमे वंदना किशोरजी द्वारा जे साक्षात्कार प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिमे एक प्रश्नक जबाब दैत भाइ कहैत छथि जे हमरा पत्नीकें अक्षरक ज्ञान छलनि, मात्राक नहि |

हमरा लगैत अछि जे इहो प्रश्न पूछल जेबाक चाही जे ओहि स्थितिमे परिवर्तनक हेतु अहाँ द्वारा की प्रयास कएल गेलै | मुदा, बड्ड देरी भ' गेल अछि, आब ई प्रश्न ककरासं पूछब ?

....

....

‘विदेह’मे प्रकाशित विशेषांकमे अग्रज राम लोचन ठाकुर जीक मैथिली साहित्य मे योगदानक विषयमे बहुत किछु जनलाक बाद आश्चर्य होइत अछि जे एतेक कर्मठ लोक एतेक जल्दी कोना अदृश्य भ’ गेलाह ?

कोन एहेन गलती कोन स्तरसं भेलै जे स्थिति ककरो नियंत्रणमे नहि रहि सकलै ? 12 मार्चक’ घरसं निकलला आ एके बेर 6 अप्रैलक’ मृत अवस्थामे पाओल गेलाह | बीचक स्थितिक कल्पनासं मोन बेकल भ’ जाइत अछि | भाइ कत’ खसल-पडल हेताह—कोना दीन-हीन अवस्थामे की भेल हेतनि, एहि जिज्ञासाक समाधान कठिन अछि | आदरणीय राम लोचन जी एहेन साहित्यकारकें एहि तरहें जाएब सभकें व्यथित केलकनि | कते गोटे हुनका खोजमे डेढ़ माससं लागल छलाह |

मुदा अहू प्रश्नक उत्तर लेल शास्त्रक सुनय पडत : विवाह आ जन्म-मरण ....|

ओना भाइ बहुत किछु मैथिली साहित्य जगतकें द’ गेल छथि जाहिसं ओ युग-युग धरि चर्चामे सभ ठाम उपस्थित रहताह |

अपन अनुभव यैह कहैत अछि जे बहुत स्थितिक स्पष्टीकरण लोक अपनहु नै द’ सकैत अछि | गत पन्द्रह मार्च क’ हम अपने बाथरूममे कोना खसि पडलहुँ से नै बुझि सकलिऐ | ने पिच्छर छलै, ने चप्पल स्लिप करबाक कोनो आन कारण बूझ’ मे आएल आ ने बी पीक दबाइ छोड़ने रही | देबालसं टकरयबाक कारण माथक अगिला भागमे चोट बेशी बुझाएल ......

(आँखिमे चित्र हो मैथिलीकेर- आत्म-कथासँ)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**